॥ श्री ॥

बालकृष्ण जी सदा सहाय

चौरासी वार्ता

श्रीमदा

चार्य्यांणां परमानु कम्पा

स्पद भगवदीय चतुराशी

तिसंख्याक वैष्णवा नां

वार्ता

श्री युत मुन्शी नवल किशोर भार्गव

मालिक अवध समाचार पत्र की आज्ञानुसार

स्थान मथुरा

मुन्शी कन्हैयालाल मध्याधिकार बंशीधर

मैनेजर के प्रबंध से मुम्बै उत्तमकलमनाम शिला

यंत्र में छापी गई ॥ दूसरी बार १००० पुस्तक

नवम्बर सन् १८८३ ई.

श्रीकृष्णाय नमोनमः।

श्रीगोपी जनवल्लभाय नमो नमः

अथ श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवकन की चौरासी वार्ता लिख्यते

अथ आचार्य जी महाप्रभून के सेवक दामोदर दास हरसानी तिनकी वार्ता॥

सो एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू पृथ्वी परिक्रमा कौं पधारे हुते तब तहां दामोदर दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के साथ हे सो श्री आचार्य जी महाप्रभू आप दामोदर दास सों अपने श्री मुख सों दमला कहते और कहते जो यह मार्ग तेरे लिये प्रगट कीनों हैं सो श्री आचार्य जी महाप्रभू आप ऐसे कहते सो पृथ्वी परिक्रमा करत श्री गोकुल पधारे सो श्री गोकुल में एक चोंतरा श्री गोविंद घाट ऊपर हुतो तहां श्री आचार्य जी महाप्रभू आप विश्राम करते ता ठौर ऊपर श्री आचार्य जी महाप्रभून की बैठक है और श्री द्वारिकेनाथ जी को मन्दिर है तहां श्री आचार्य जी महाप्रभू बैठे हुते ता समय श्री आचार्य जी महाप्रभून कों महाचिंता उपजी जो श्री ठाकुर जी ने तो आज्ञा दीनी है जो तुम जीवन कों ब्रह्म संबंध करावो तब श्री आचार्य जी महाप्रभू अपने मन में विचारें जो जीव तो दोष वंत हैं और श्री पुरुषोत्तम जी तो गुन निधान हैं तातें ऐसें कैसें संबंध होय तातें चिंता उपजी सो अत्यंत आतुर भए ता समय श्री ठाकुर जी आप तत्काल प्रगट होय कें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों पूछें जो तुम चिंता आतुर क्यों हो तब श्री आचार्य

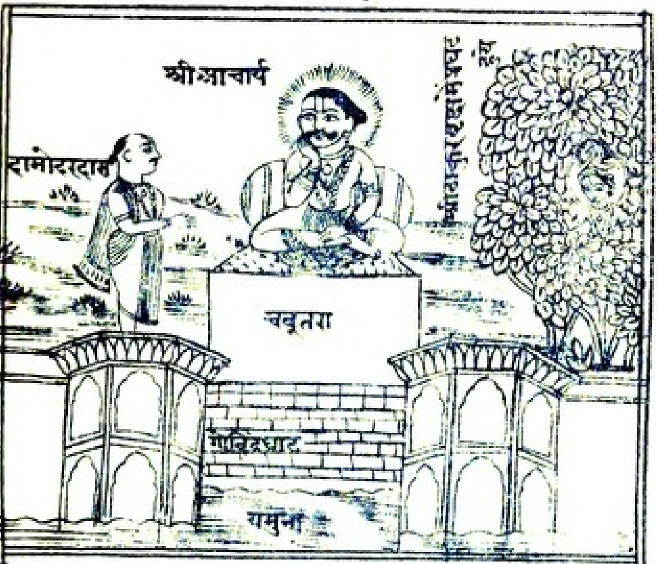

जी महा प्रभू आप कहें जो जीव को स्वरूप तौ तुम जा
नत ही हो दोषवन्त है सो तुम सों संबंध कैसें होय तब
श्री ठाकुर जी आप कहें जो तुम जीवन कों ब्रह्मसंबंध
करावोगे तिन कों हों अंगीकार करूंगो तुम जीवन कों
नाम देउगे तिन के सकलदोष निवर्त होयंगे ये बातें
श्रावण शुदि ११ के दिन अर्द्ध रात्रि कों भई प्रातःकाल
पवित्रा द्वादशी हुती ताते पवित्रा सूत कौ कर राख्यो हुतो
सो पवित्रा श्री पूरन पुरुषोत्तम जी कों पहरायो मिश्री भो
ग धरी ता समय के ये अक्षर हुते ताको श्री आचार्य जी
महा प्रभू आप सिद्धांत रहस्य ग्रंथ को ये है सो श्लोक॥
॥ श्रावणस्यामले पक्षे एकादश्यां महानिशि
साक्षात भगवता प्रोक्तं तदक्षर मुच्यते॥१

ता समय श्री आचार्य जी महाप्रभून ने पूछी जो दमला ने कछु सुन्यों तब दामोदर दास नें बीनती कीनी जो महाराज श्री ठाकुर जी के बचन सुने तो सही परंतु कछु समझ्यो नहीं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कही जो मोको श्री ठाकुर जी ने आज्ञा कीनी है जो तुम जीवन को ब्रह्म संबन्ध करावोगे तिनको हों अंगीकार करूंगो तिन के सकल दोष निवर्त होयगे ताते ब्रह्म संबंध अवश्य करनो ॥

वार्ता प्रसंग ॥ १

बहुर श्री आचार्य जी महाप्रभून ने श्री ठाकुरजी के पास यह मांग्यो जो मेरे आगे दामोदरदास की देह न छूटे और श्री आचार्यजी महाप्रभु दामोदर दास सों कछु गो प्यन राखते और श्री आचार्य जी महाप्रभु श्री भागवत अहर्निस देखते कथा कहते और मार्ग को सिद्धांत भगवद लीला रहस्य श्री आचार्यजी महाप्रभु आप दामोदर दास के हृदय में स्थापन कीयो ॥

वार्ता प्रसंग ॥ २

और एक समय दामोदर दास और श्री गुसांई जी एकान्त में बैठे हुते तब श्री गुसांई जी ने दामोदर दास सों पूछी जो तुम श्री आचार्य जी महाप्रभून को कहा करि जानत हो तब दामोदर दास ने कही जो हम तो श्री आचार्य जी महाप्रभून को जगदीस जो श्री ठाकुर जी तिनहू ते अधिक करि जानत हैं तब श्री गुसांई जी दामोदर सों कहे जो तुम ऐसें क्यों कहत हो तो श्री ठाकुर जी ते श्री आचार्यजी बड़े हैं तब दामो

दर दासनें कहीजो महाराज दान वड़ौ कै दानावड़ौ काहू के पास धन बहुत होय तो राज कहा करै जोदेंय ताकौं जानिये और श्री आचार्य जीमहाप्रभून को सर्वस्व धन श्रीठाकुरजीहैं सो हमजीवन कौंदान किये तातें हमश्री आचार्यजी महाप्रभून कौं सब ते वड़े करि जानत हैं ॥

वार्ताप्रसंग ३

और एक समै श्री आचार्य जी महा प्रभू तथा श्री गुसांईजी अपनी बैठक में बैठे हुते पास द्वै चार वैष्णव हंसिवे खेलवे के बैठे हुते आप उन सों हंसते खेलते मसखरी करते बहुत प्रसन्नता में उन सों खेलवे की वार्ता करत हुते ता समय दामोदर दास आये ता

समय श्री गुसांई जी ने बहुत आदर सन्मान कियो पा-
छें दामोदर दास बैठे तब श्री गुसांई जी सों दामोदर दास
नें कही जो महाराज अपनो मार्ग निश्चंत ताकों नाहीं
यह मार्ग अत्यंत कष्ट आतुरता को है तब श्री गुसांई
जी ने कही जो तुम आछी बात कहत हो परि हम कों
जब श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा होयगी तब
कष्ट आतुरता होयगी यह मार्ग तो श्री आचार्य जी
महाप्रभून की कृपा तें न होय तब दामोदर दास साष्टांग
दंडवत करि कें बीनती कीं जो हम कों तो एकवार राज
सों बीनती करनी है पाछें आप प्रभू हो भली जानोगे सो
करोगे पर यह मार्ग तो या भांति को है तब श्री गुसांई
जी बहुत प्रसन्न भए और कहें जो हम को यह वार्ता श्री
आचार्य जी द्वारा है और कहें जो तुम न कहौ तो कौंन क
हे हम तुम को देखत हैं तब अति प्रसन्न होत हैं आप श्री
आचार्य जी महाप्रभून के सेवक जानि कें दामोदरदास
की सिक्षा मानत भये ताते बड़े सो बड़े ॥

वार्ता प्रसंग ४

और प्रथम श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री ठाकुरजी
के पास यह मांग्यो जो मेरे आगे दामोदरदास की देह
न छूटे ताको हेत यह जो श्री आचार्य जी महाप्रभू सन्न्या
स ग्रहण करिवे को बिचार मन में करें ता समें श्री गोपी
नाथ जी श्री गुसांई जी ये दोऊ भाई बालक हुते ताते
मार्ग को सिद्धान्त वार्ता श्री आचार्य जी महाप्रभू सन्या
स ग्रहण कीये तब कितनेक दिना पीछें श्री गुसांई जी
नैष्ठका जीसों पूछौ जो श्री आचार्य जी महाप्रभून ने मा-

र्ग प्रगट कीयो हे सो उच्छव को कहा प्रकार हे हम तो कछू जानत नाहीं तब श्री आचार्य जी ने कह्यो जो मार्ग तथा उच्छव को प्रकार सब दामोदर दास सों कहे हैं सो तुम उन सों पूछो तुम सों दामोदर दास कहेंगे तब श्री गुसांई जी दामोदर दास ने बहुत सन्मान करि भक्ति भाव सों घर में पधराये पाछें उच्छव को प्रकार श्री गुसांई जी नें पूछो सो दामोदर दास ने सब कह्यो ॥

वार्त्ता प्रसंग ५

और एक समय दामोदर दास के पिता को श्राद्ध दिन हुतो वा दिन श्री गुसांई जी दामोदर दास के घर पधारे और दामोदर दास कों श्राद्ध करवायो पाछें उत्थापन के समे दामोदर दास दर्शन कों आये तब श्री गुसांई जी ने कही जो मो कों श्राद्ध करवाये की दक्षिणा देउ तब दामोदर दास कहे जो दक्षिणा में एक बात कहूंगो सो सिद्धांत रहस्य के डेढ़ श्लोक को व्याख्यान कहे यह ऐसी बात है तब श्री गुसांई जी ने कही जो आगें कहो तब दामोदर दास ने कही जो मेंने तो इतनों ही संकल्प कियो हे तब श्री गुसांई जी चुप कर रहे पाछें दामोदरदासनें गायत्रीके प्रनालिका श्री गुसांई जी के आगें कही श्री भागवत की सुबोधिनी श्री आचार्य जी महाप्रभून के ग्रंथ की टीका और रहस्य बातें श्री आचार्य जी महाप्रभू कहे हें सो सब कहीं ता पाछें श्री गुसांई जी दामोदर दास को नमस्कार करन लगे याते जो श्री गुसांई जी अपने मन में बिचारे जो श्री आचार्य जी महाप्रभून को स्वरूप दामोदर दास के हृदय विषें सदा सर्वदा

विराजमान हैं तो इन पास दंडौत नमस्कार न करावते।
याते नमस्कार न करन देते पाछें श्री आचार्यजी ··
······ महाप्रभून में दामोदर दास को दर्शन दीयो औ
र आज्ञा दी जो अबतें तू श्री गुसांई को चरणोदक नि
त्य लीयो कर तब प्रातःकाल दामोदर दास श्री गुसां
ई जी के पास आये और चरणोदक मांग्यो तब श्री गु
सांई जी ने चरणोदक की नाहीं कीनी तब दामोदर दा-
सने श्री गुसांई जी सों कही जो मोको ······ श्री आचा
र्य जी महाप्रभून की आज्ञा भई है और दर्शन भये हैं औ
र कह्यो जो तू श्री गुसांई जी को चरणोदक नित्य लीजि
यो तब श्री गुसांई जी ने चरणोदक दियो और दामोदर
दास को श्री आचार्य जी महाप्रभु तीसरे दिन दर्शन देते
मार्ग की रहस्य वार्ता कहते ऐसी कृपा करते और कदा
चित तीसरे दिन दर्शन न होतो ता दिन दामोदर दास
के पेट में पीडा होती अत्यंत कष्ट पावते पाछें जब
दर्शन होता तब तत्काल कष्ट निवर्त हो जातो ऐसे
करत कितनेक वर्ष पर्य्यंत दामोदर दास को श्री गु
सांई जी ने दर्शन दीनों तथा श्री आचार्य जी महाप्रभू
न ने दर्शन दीनों ऐसी कृपा करते सो बात होती सो दा
मोदर दास श्री गुसांई जी के आगे कहते और मार्ग के
प्रकार की वार्ता अहर्निस कहते जो दामोदर दास के
हृदय में श्री आचार्य जी महाप्रभू आप विराजमान हैं
ताते दामोदर दास कों दंडौत न करन देते और कहते
जो दामोदर दास की वार्ता को पार नहीं ऐसे मार्ग के
टेक के कृपा पात्र हैं ॥

वार्ता प्रसंग ६

तब श्री आचार्य जी महा प्रभू दामोदर दास कों पूछे जो दामोदर दास तुम श्री गुसांई जी को कहा करि जानत हो तब दामोदर दास नें कही जो महाराज हम तो तुम्हारे पुत्र करि जानत हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें दामोदर दास कों आज्ञा दीनी जो जैसे तुम मोकों जानत हो तैसें इन को स्वरूप जानियो और श्री आचार्य जी महाप्रभून नें शृंगार रस मंडन ग्रंथ कीयो है तामें लिये हैं ताते ये दामोदर दास ऐसे कृपा पात्र भगवदी हैं ॥

वार्ता प्रसंग ७

और प्रथम श्री आचार्य जी महा प्रभू दामोदर दास सों कह्यो जो यह मार्ग मेरे लिये प्रगट कीयो है ताको हेत यह जो जहां लगिन श्री आचार्य जी महा प्रभून के मार्ग की स्थित है तहां तांई दामोदर दास की स्थित गोप्य है पाछें दामोदर दास ने कह्यो जो में श्री ठाकुर जी के वचननों सुने पर कछु समझ्यो नहीं ता समें श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो आजहू दश जन्म को अंतराय है ताको हेत यह जो जब लगन श्री आचार्य जी महा प्रभून के मार्ग की स्थित है तहां तांई दामोदर दास के आगव्य फेर फेर है मार्ग के स्थंभ प्रथमया नें कहे श्री आचार्य जी महा प्रभून नें दामोदर दास के हृदय में भगवद लीला स्थापी संपूर्ण सृष्टि कों सम्बोधन करिवे कों ताको यह हेत जो जब लाग श्री आचार्य जी महा प्रभून के मार्ग की स्थित है तब लाग दामोदर दास की हू स्थिति है सो ये दामोदर दास ऐसे टेक के रूप

पात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता कों पार नहीं तातें
इन की वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ८

॥ वैष्णव १ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के से-॥
वक कृष्ण दास मेघन क्षत्री तिन्की वार्ता

सो एक समें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पृथ्वी परि
कृमा करी तब कृष्णदास मेघन साथ हे सो बद्री नारायण
के परली ओर किरनी नाम पर्वत है सो तहां ते एक बड़ी
शिला गिरी सो कृष्ण दास ने हाथ सो थांभी तब श्री आ
चार्यजी महाप्रभू प्रसन्न भये तब कृष्ण दास सों कहे

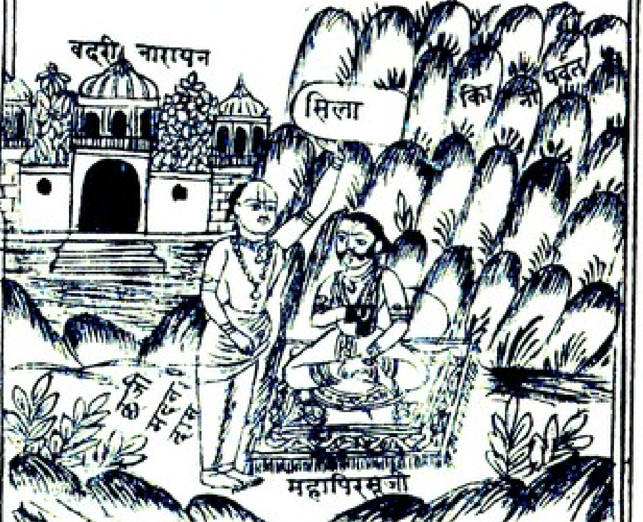

जो मांग कहा मांगत है तब तीन वस्तु मांगी एक तो मुखरता को दोष जाय दूसरे मार्ग को सिद्धांत ममभों तीसरे मेरे गुरू के घर पधारोगे तामें दोय वस्तु दीनी गुरू के घर पधारवे की नाही कीनी तदर बद्रिकाश्रम ते आगें पधारे जहां जीव की गम्य नाही हैं तहां वेद व्यास जी कौ स्थान है तहां पधारे तब कृष्णदास सों कह्यौ जो तू ठाड़ो रहियौ तब श्री आचार्य जी महाप्रभु आगें पधारे तब वेद व्यास जी साम्हें आये सो श्री आचार्य जी महाप्रभून कौं अपने धाम में लै आए पाछें वेद व्यास जी ने श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यौ जो तुमनें श्री भागवत की टीका कीनी है सो मोको सुनावौ तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने जुगल गीत के अध्याय कौ एक श्लोक कह्यौ सो श्लोक

वाम बाहु कृत वाम कपोलो वल्गितभ्रु
धरार्पित वेणुं ॥ कोमलांगुलि भिराश्रित
मार्ग गोप्य ईरयति यत्र मुकुन्दः ॥ १ ॥

या श्लोक कौ व्याख्यान कर्यौ सो तीन दिन में संपूर्ण भयौ तब वेद व्यास जीने बीनती करी जो मैं या भागवत के व्याख्यान की अब धारना करि सकत नाहीं तातें अब क्षमा करौ पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभूनने वेद व्यास जी सों कह्यौ जो तुम वेदांत के ऐसे सूत्र कहा कीये जो माया वाद पर अर्थ लाग्यो तब व्यास जीनें जो मैं कहा करूं मोकों आज्ञा ही ऐसी हती जो ऐसे अर्थ करियो तब श्री आचार्य जी महाप्रभूनने कही जो मैं ब्रह्म वाद पर अर्थ कियो है सो व्यास जी को सुनायो सो व्यास

जो सुन कर बहुत प्रसन्न भए ता पाछें वेद व्यास जी
सों विदा होय के तीसरे दिन ? तब कृष्ण दास सों
कह्यो जो तू गयो नाहीं सो काहे ते तब कृष्ण दास ने क
ही जो महाराज हों कहां जाऊं मो कों तुम्हारे चरणारवि
द बिना और आश्रय नाहीं है तब यह सुनिके श्री आचा
र्य जी महा प्रभू बहुत प्रसन्न भये तब कह्यो जो मांगि-
तब वेंही तीन वस्तु मांगी एक तो सुरवरता को दोय जा
य दूसरे मार्ग को सिद्धांत समझों तीसरे मेरे गुरू के घ
र पांव धारो सो तामें दोय वस्तु दीनी गुरू के घर पधा
रवे की नाहीं कीनी ॥

वार्ता प्रसंग १

वहुर एक समय श्री आचार्य जी महा प्रभू गंगासा
गर पधारे तहां श्री आचार्य जी महा प्रभू पौढ़ हुते तहां
कृष्ण दास पाव दाब त हुते तब श्री आचार्य जी महाप्र
भू मन में विचारे जो धान के सुर सुरा होयतो लीजिये तब
श्री आचार्य जी महा प्रभून के अंतः करन की कृष्ण-
दास सेवक ने जानी इतने में श्री आचार्य जी महा प्रभू
न कों निंद्रा आई तब कृष्ण दास उठि कें गंगा सागर उ
पर आए तब देखें तो पार .. एक दीया वरत है ताकी
अटकर ते पैर कें गंगा जी पार आये तहां गांव हो सो-
खेत में ते गीले धान कटवाये तहां गांव में जाय के भ
र पूजा कों टका की जगह चार टका दे कें सुर सुरा सिद्ध-
करवाए तब लै कें आये तब श्री आचार्य जी महा प्रभून
के चरणारविंद दाब के जगाये और सुर सुरा आगें राखे
तब कह्यो राज आरोगो तब श्री आचार्य जी महाप्रभू

ननैं पूछो जो तू कहां ते लायो तब समाचार कहे जो म
हाराज में पार ते लायो तब श्री आचार्य जी महाप्रभू
बहुत प्रसन्न भये तब कह्यो जो मांग तब वेही तीन व
स्तु मांगी सुखरता की दोय जाय मार्ग को सिद्धांत मेरे ह्र
दय में आवे तीसरे मेरे गुरू के घर पाव धारो तब श्री
आचार्य जी महाप्रभू ने कह्यो सो जीव कहा मांगि
जानैं या समें जो मांगतो सोई देतो जो कहतो तो श्री
ठाकुर जीको स्वरूप दिखावतो तहां ते श्री आचार्य
जी महाप्रभू सोरा पधारे तब कृष्ण दास ने वीनतीक
रिकें कह्यो जो महाराज मेरे गुरू हैं सो बुलाय लाउं
तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कही जो तू खेद पावे
गो पाछें कृष्ण दास उठकेंनें गुरू के पास आयो तब कृ
ष्णदास को गुरू ने देख्यो तब कृष्ण दास सों गुरू नें क
ह्यो जो अरे तेनें और गुरू कीयो तब कृष्ण दास ने क
ह्यो जो मेनें तो और गुरू नाहीं कीयो मेरे गुरू तो तुमही
हो पर तुम्हारी कृपा ते मेनें पूरण पुरुषोत्तम पाये हैं तब
गुरू ने कही जो पुरुषोत्तम कों जानिये तब गुरू के आ
गे अग्नि की अंगीठी धक धकाती हुती तामेंते कृष्ण
दास ने दोऊ हाथ की अंजुली भरि कें अंगार हाथ
में लिये और कह्यो जो श्री आचार्य जी महाप्रभू जो
पूरण पुरुषोत्तम होय तो मेरे हाथ मति जरियो और
जो और भांति होयतो मेरे हाथ भस्म होय जइयो सो
एक मुहूर्त लों अग्नि हाथ में राखी तब गुरू नें भय खाई
और कह्यो जो अग्नि डार देउ पाछें उन गुरून ने कृष्ण
दास के हाथ में सों अपने हाथ सों पकरि कें अग्नि

डर वाय दीनों तब कृष्ण दास उहांते खेद पाय के उठि आयो यह प्रसंग सब श्री वल्लभाष्टक की टीका में श्री गोकुलनाथ जी नें विस्तार करि कें लिख्यो है ॥ १

प्रसंग २

यह मार्ग हृदयारूढ भयो पाछें कदाचित गोप्य वार्ता होय सो सबन के आगें कहे पाछे काहू वैष्णवनें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो कृष्ण दास सबन के आगें गोप्य वार्ता कहत हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कृष्ण दास सों कह्यो जो क्यों रे तू सबन के आगें गोप्य वार्ता कहत है तब कृष्णदास ने कह्यो जो महाराज आप उनही सों पूछिये जो मेंनें कहा कह्यो·

हैं तब उन वैष्णवन सों श्री आचार्य जी महा प्रभून नें पूछो जो तुम सों कृष्णदास नें कहा वार्ता कही है तब वैष्णवन नें कही जो महाराज हम को तो सुधि रही नाहीं तब श्री आचार्य जी महा प्रभू मुसिक्याय के चुप करि रहे ॥

प्रसंग ॥ ३ ॥

और एक समय श्री ठाकुर जी की इच्छा ते श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कृष्णदास ने प्रश्न पूछो जो महाराज श्री ठाकुर जी कों प्रिय वस्तु कहा है सो मोसों कहीं सो ताको प्रति उत्तर श्री आचार्य जी महा प्रभू कहैं जो श्री ठाकुर जी उत्तम वस्तु के भोगता है परंतु गोरस शब्देन वानी कहीयतु है गोरस अति प्रिय है ताके भाव अति वेचनी यहैं और सबन ते भक्ति को स्नेह प्रभाव अतिप्रिय है ता ते भक्ति वत्सल कहावत हैं तब कृष्णदास ने फिर प्रश्न पूछो जो महाराज श्री ठाकुर जी कों अप्रिय वस्तु कहा है तब श्री आचार्य जी महा प्रभून ने कह्यो जो श्री ठाकुर जी कों धूंआं समान अप्रिय वस्तु कछु नाहीं और ताते अप्रिय भक्तन के द्वेषी हैं फिर कृष्णदास नें प्रश्न पूछो जो महाराज श्री रघुनाथ जी संम्पूर्ण स्रष्टि कों लेकें स्वधाम में पधारे हैं और राजा दशरथ कों स्वर्ग दीयो सो काहे ते ताको प्रति उत्तर श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो श्री रघुनाथ जी परम दयाल हैं ताते स्वर्ग दीयो नातर दशरथ कों स्वर्ग की योग्यता न हुती यातें अपनो वचन सत्य करिवे कों बनवास पठाय दीये असो कर्म कीयो ॥

प्रसंग ॥ ४ ॥

और एक समय श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कृष्ण

दास ने प्रश्न पूछ्यौ जो महाराज भक्त होय के श्री ठाकुर जी
की लीला कों भेद नांहीं जानत सो काहेतें तब श्री आचार्य
जी महाप्रभुन नें कह्यौ जो ए विधि पूर्वक समर्पण जो
कह्यौ है सो नांहीं करत अनुभव कों जानें और भग
वद भक्त कों संग करें तो श्री ठाकुर जी की लीला कों
भेद जानें सो तो आप कों योग्यता मान काहू कों संग
नांहीं करत और कछु करत हैं सो अंतःकरन पूर्वक ना
हीं करत हैं सोतें श्री ठाकुर जी के स्वरूप कों तथा लीला
कों भेद नांहीं जानत उत्तम भक्तन को संग करें श्री भा
गवत श्री सुबोधिनी ग्रंथन कों अहर्निश अवगाहन क
रें तब भगवद भाव उत्पन्न होय श्री ठाकुर जी भक्तन
के हृदै विषैं सदैव रहत हैं तथा सेवा करि कें बंधे हैं
तहां एक अन्य मार्गी वैष्णव जाके हृदय में श्री ठाकुर
जी विराजत हैं ताकौ संग करनो तहां राजनधावन वै-
ष्णव कौ दृष्टान्त दिए हैं जिन जिन भाव पूर्वक सेवा क
री तिन के भक्तन निवर्ते भए तातें शास्त्रस्थ व्रज भक्तन
के भाव कों विचार करनों जे वैष्णव श्री ठाकुर जी कौ स्व
रूप जानत हैं तिन कों स्वरूप अलौकिक दृष्टि सों जानों
जाय जो आज्ञा होय सो जानों जे वैष्णव श्री ठाकुर जी
कों जानत हैं सो जो कछु कारज करत हैं और श्री ठाकुर
जी सों विरह भावना पकरत हैं अपनों स्वदोष भाव वि
चार करत हैं अपनों स्वरूप जानें जो हौं कौन हौं पहलें
कहा हुतो भगवद संबंध किये तें कहा भयो अब मोकों
कहा करतव्य रात्रि दिवस ऐसो विचार करत रहें तब अ
पनों स्वरूप जानें ए प्रागट्य व्रज भक्तन के अर्थ तथा ए

तन्मार्गीय के अर्थ नानें उनम संग होय तो एतन्मार्ग
के ए ठाकुर जानें और शस्त्र पुराण अनेक सिद्धान्त
इतिहास हैं नानें ब्रजराज के घर प्रगटे सो श्री ठाकुर
जी न जाने जाय ए श्री ठाकुर जी कों नवही जानें नानें
भगवद भक्त को संग करनो सेवा को प्रकार एतन्मार्गी
वैष्णव जानत हैं तिन सों मिलि तिन कों भाव पूछि कें
सेवा करनी तब भगवद् भाव उत्पन्न होय श्री ठाकुर
जी की स्नेह युक्त सेवा करि जो श्री ठाकुर जी वा कों
सब जतावैं ॥

प्रसंग ॥ ५ ॥

और एक समय श्री आचार्य जी महा प्रभू श्री ब-
द्रीनाथ जी के मन्दिर में पधारे तब वेद व्यास जी साथ
हैं तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें वेद व्यास जी सों
पूछी जो भमर गीत को अध्याय ता में उद्धव जी कों ब्र
ज भक्तन के पास पठाए हैं ता प्रसंग में श्लोक आधो
घटत है तब वेद व्यास जी नें श्लोक आधो कह्यो ॥

श्लोक ॥ आनम त्वात् भक्त वसत्वात
सत वक्तात् स्वभावतः ॥+

या की टीका श्री आचार्य जी महा प्रभून नें पहले ही की
नी हैं सो सुनि कें वेद व्यास जी बहुत प्रसन्न भए तापा
छें श्री आचार्य जी महा प्रभू बद्रीनाथ जी के मन्दिर पध
रे ता दिन वामन द्वादशी को दिन हतो सो ता दिन श्री
आचार्य जी महा प्रभून कों विचार मन में व्रत करिवे
को हतो तब श्री बद्री नाथ जी ने श्री आचार्य जी महा प्र
भून सों कह्यो जो मेनें फलाहार को सबहि योज कीनो

परि पाइयत नाहीं ताते तुम रसोई करि श्री ठाकुरजी
कों भोग धरि भोजन करो श्री ठाकुर जी की इच्छा ऐसें
दीखत है इतने में श्री कृष्णदास ने आय कें कह्यो :
जो महाराज यहां तो कछु पावत नाहीं पाछें ता दिन
ते वामन द्वादशी के दिन रन न करते उत्सवा ने च
पारणा ऐसो वचन है पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभु
बद्रीनाथ जी कों विदा भये तब कृष्णदास साथ ही हे

॥ वार्ताप्रसंग ॥ ६ ॥

प्रथम श्री आचार्य जी महाप्रभु वेद व्यास जी के मंदि
र में पधारे तब कृष्णदास सों कह्यो जो तू ठाड़ो रहियो :
तब कृष्णदास ठाड़े रहे पाछें आप तीसरे दिन पधारे
तब कह्यो जो तू गयो नाहीं सो काहे ते तब कृष्णदा
स कह्यो जो महाराज तुम्हारी आज्ञा न मानों तो
सेवक काहे को सेवक कों आज्ञा में चलनो सो कृ
ष्णदास ऐसे कृपा पात्र भगवदीय प्रभुन की आज्ञा
मानते ताते श्री आचार्य जी महाप्रभु कृष्णदास के :
ऊपर सदा प्रसन्न रहते पाछें मुखरता को दोष मन में
न लावते ऐसे आप उदार राय जीवन को श्रम न दे
खते दया राखते और अपनी ओर ते दया राखि जी
वन को अंगीकार करते जीवन की ओर को विचा
र करते कृष्णदास मार्ग तथा घर में सदैव रहते सो
वे कृष्णदास श्री आचार्य जी महाप्रभुन के ऐसे कृ
पापात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं
सो अब कहां तांई लिखिये ॥

॥ वार्ताप्रसंग ॥ ७ ॥ वैष्णव ॥ २ ॥ सम्बन्ध ॥ ८४ ॥

॥ अथ श्री आचार्य जी महाप्रभून के ॥
सेवक दामोदर दास सम्भलवारे खत्री
कन्नौज के वासी तिनकी वार्ता है

सो दामोदर दास कों एक पत्र नाम कों पायो और स्व
प्न में वासों कह्यौ जो या पत्र कों बांचिना की तू सामा
जैयो सो वह पत्र काहू सों बांच्यो न जाय सो कितनेक
दिन पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू कन्नौज पधारे
तहां गांव के बाहिर आय उतरे और कृस्नदास मेघन
कों गांव में पठायो और कह्यौ जो सीधौ सामग्री लै
आउ परि काहू सों कहियो मती जो श्री आचार्य जी महा
प्रभू यहां पधारे हैं तब कृस्नदास गांव में जाय सीधो साम
ग्री सब लीनों सो लैकें जब चलन लागे तब दामोदरदा
स ताही समय राजद्वार सें आवत हुते सो मार्ग जात
कृस्नदास कों देखे तब दामोदर दास घोड़ा ते उतर
कें कृस्नदास के पास आये और दंडवत कीये पाछें
पूछी जो तुम कहां ते आये और श्री आचार्य जी महा
प्रभू पधारे हैं तब कृस्नदास नें कह्यौ जो आज्ञा नाहीं
तब दामोदर दास नें कह्यौ जो ये श्री आचार्य जी महाप्र
भून बिना काहे कों आवें सो जब कृस्नदास चले तब पा
छें २ दामोदर दास आये और घोड़ा हो सो पठाय दी
यो सो कृस्नदास कों दूर ते आवत श्री आचार्य जी म
हाप्रभून नें देख्यौ पाछें दामोदरदास कों देखे तब दामो
दर दास नें दंडवत कीनी तब कृस्नदास सों श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें पूछी जो तैनें या सें क्यों कह्यौ तब कृ
स्नदास नें कह्यौ जो महाराज मैंने तो इनसों नांही कही

तब

दामोदर दास नें वीनती कीनी जो महाराज इन सों नाहीं कह्यो हुतो इन के पाछें पाछें चल्यो आयो हु ओर श्री आचार्य जी महाप्रभू नाही कीए सोयाने कन्नोज पधारेंगे तब पादल करत हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभू मन में विचारे जो आज्ञा भई है सो आयदा · होयगी ताके लियें नाही कही इतनी पाछें श्री आचार्य महाप्रभून नें दामोदर दास सो पूछो जो पत्र लायो है तब दामोदर दास नें वीनती कीनी जो महाराज पत्र को कहा काम है मोकों शरण लीजिये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कही जो तोकों आज्ञा भई है जो यह पत्र वांचे ता कों तू शरण जइयो तातें तू पत्र लाउ तब पत्र मगायो · तब श्री आचार्य जी महा प्रभून ने पत्र वाच्यो पाछें वा पत्र को अभिप्राय दामोदर दास सों कह्यो दामोदर दास कों पाछें नाम सुनायो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून कों दामोदर दास नें अपने घर पधराये पाछें दामोदर दास तथा दामोदर दास की स्त्री दोउ जने स्नान करिकें श्री आचार्य जी महाप्रभू की शरण आये तब दामोदर दास कों समर्पण करवायो और दामोदर दास की स्त्री कों प्रथम नाम सुनायो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें समर्पण करवायो तब दामोदर दास नें वीनती कीनी जो महाराज अब हम कों कहा आज्ञा है अब हम कहा करें तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें आज्ञा करी सो अबतुम सेवा करो तब दामोदर दास नें कही जो महाराज सेवा कोन भांति करें तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कही जो कहूं श्री ठाकुर जी को स्वरूप देखो सो एक

दरजी के घर श्री ठाकुर जी कौ स्वरूप हुतौ सोताकौं दा
मोदरदास द्रव्य देकै लै आये पाछें सब घर पोतापात्र
सब बदलाये पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून ने वास्व
रूप कौं पंचामृत में स्नान करवायो श्री द्वारका नाथ जी
नाम धरयौ पाछें सिंहासन बैठाये तब दामोदर के माथे
सेवा पधराय के पाछें भोग समर्प्यो समयानुसार भोग
सराय बीडा समर्पन लागे तब देखें तो पान हरे हैं तब
श्री महाप्रभून नें कह्यौ जो दामोदर दास हरे पान कबहू
नहीं समर्पिये उत्तम सामग्री होय सो श्री ठाकुर जी कौ
समर्पिये श्री ठाकुर जी तो उत्तम वस्तु के भोक्ता हैं पाछें
स्त्री पुरुष भली भांति सों सेवा करन लागे तब श्री द्वारि
का नाथ जी की सेवा भली भांति सों होन लागी और श्री
आचार्य जी महाप्रभून नें आज्ञा दीनी जो उतर्यो पर
कालो होय सो श्री ठाकुर जी कूं कबहूं न समर्पिये वह
काम न आवै सार पर काले में ते प्रथम श्री ठाकुर जी
कौं लीजिये और उत्तम कोमल वस्त्र होय सो श्री ठाकु
र जी के काम आवैं पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें
और आज्ञा दीनी जो उत्तम सामग्री होय सो श्री ठाकुर
जी के लिये अपने घर लै आइये श्री ठाकुर जी की सा
मग्री में ते और ठौर खर्च न करिये तब दामोदर दास स्त्री
पुरुष दोऊ जने भली भांति सों सेवा करन लागे और सा
मग्री उज्जल होती जो रूपान के कटोरान में अपरस
राखते सो ऐसी उज्जल कोई जानतौ नाहीं जो या
में सामग्री है या भांति सों सेवा करन लागे ॥

• वार्त्ता प्रसंग १

औैर दामोदर दास श्रीठाकुर जी कों जल आप
भरते सो एक दिन या कौ सुसर दामोदरदास के
घर आय कें दामोदर दास सों कहन लाग्यो जो तुम
जल भरि ल्यावत हौ सो हम कों जाति में लज्या आ
वत है तातें तुम जल मति भरौ लौंडी के हाथ जल
भरावौ तब दामोदर दास ने एक घड़ा तौ आप ली
यो और एक घड़ा स्त्री के हाथ में दीयो सब दोउ
जनें घड़ा लेकें वाकी हाट के आगें होय के निकसे

तब जल भरि कें घर आये पाछें दामोदर दास ५
कौ सुसर आयो सो आय कें दामोदर दास के ५
पायन पर्यो और वीनती करिकें कह्यो जो में चूकै

अबने नुमहो जल भरो परि स्त्री पास जल मंगि मे
गयो आज पाछें हम कछू न कहेंगे तब आपही
जल भरन लागे जो चाहिये सो श्री द्वारकानाथ जी
दामोदर दास से मांग लेने वाने कावने सेवा करि कें
श्रीठाकुर जी कों ऐसे प्रसन्न किये तब श्री आचा
र्यजी महाप्रभू आपने श्रीमुखते कहें जो जिनने राजा
अंबरीष न देख्यो होय सो दामोदर दास कों देखें ॥
राजा अंबरीष तो मर्य्यादा मार्गीय हुते और ये पु
ष्टिमार्गीय हैं इनमें इतनी अधिकता है ॥ ५

वार्ता प्रसंग ॥ ६ ॥

और एक दिन उष्ण काल के दिन हुते तब श्री द्वार
का नाथजी कों पोढ़ाये आप दामोदर दास तायके
चौबारे में सोये सो वादिन गरमी बहुत भयी तब श्री द्वा
रिका नाथ जीनें लौंडी कों आज्ञा दीनी जो किवाड़ खो
ल मोकों गरमी बहुत लागत है तब लौंडी नें किवाड़ खो
ले तब श्री द्वारिका नाथ जीनें लौंडी सों कह्यो जो पंखा
करि तब लौंडी नें पंखा कीयो सो घड़ी १ लौं पंखा कि
यो पाछें लौंडी सों कह्यो जो तू अब जाय के सोय रहि ॥
तब सवारो भयो तब दामोदर दास देखे तो किवाड़ खुले
पड़े हैं तब पूछी किवाड़ किन खोले तब लौंडी नें कही
जो मोकों श्रीठाकुर जीनें किवाड़ खोलन की आज्ञा
करी है तब खोले हैं तब दामोदर दास लौंडी ने बहुत
खीजे और कह्यो जो तेनें किवाड़ क्यों खोले जो मो
कों श्रीठाकुर जीनें किवाड़ खोलन की आज्ञा क्यों न
करी आप क्यों न खोले और लौंडी सों क्यों कही पर प्रभू

१ लौंडी किवाड़ खुले कोउ की माया ही

बड़े दयाल हैं ता विषें स्नेह होय नाही सों संभाषण-
करें श्री आचार्य जी महाप्रभून के अंगीकार में सब-
समान हैं लौकिक में कोऊ ऊंच ..... नींच कहि लेउ
श्री ठाकुर जी तो स्नेह के बस हैं पाछे श्री ठाकुर जी ने-
कह्यो जो मैंने किवाड़ खुलाए हैं तब इन खोले हैं तू-
तो चोबारे में जाय सोयो और मोकों भीतर सुवायो
मोकों गरमी बहुत लगी ताते खुलाए हैं तू लोंडी सों क्यों
खीजत है यों कहि के बहुत खीजे तब दामोदर दासने
कह्यो जो प्रसाद तब लेउ जब मन्दिर सम्हराऊं तब ।-
स्त्री ने कह्यो जो प्रसाद न लेउ तो ऐसो क्यों बनें यह तो
पांच सात दिन को काम नाहीं प्रसाद लीये विना क्यों
चलें तब कह्यो जो प्रसाद तो नाहीं लेउं फलाहार क-
रूंगो तब ऐसें करत २ मन्दिर सिद्ध भयो तब श्री द्वार
का नाथ जी के मन्दिर में पाट बैठाये तब उत्सव कीयो
वैष्णव कों प्रशाद लिवायो ता पाछें आपनें प्रशाद
लीयो ॥ २ ॥ ४ महा

प्रसंग ॥ ३ ॥

और एक दिन दामोदर दास श्री ठाकुर जी कों राज
भोग समर्पि के सइया मन्दिर में समारन गये तब देखें
तो दुलीचा ऊपर बिल्ली ने बिगार दीयो है तब दामो
दर दास ने कही जो श्री ठाकुर जी अपनी सेवा हू रा
ख सकत नाहीं ऐसें कह्यो तब श्री ठाकुर जी ने थार
चोकी ऊपर सों लात मारि के डार दीनी और दामोदर
दास सों श्री ठाकुर जीनें कह्यो जो तू कैसो सेवक है
सेवक होय के याभांति कहत है ऐसे बहुत खीजे-

पाछें दामोदर दास नें वीनती कीनी मनुहार बहुत करी सामग्री सिद्ध करवाय के श्री ठाकुर जी को भोग समर्प्यो तब श्री ठाकुर जी आरोगे पर नांह मास दोय लों बोले नांही तब दामोदर दास नें बीनती बहुत कीनी तब फेर बोलन लागे ॥ ३॥

वार्ता प्रसंग ४

बहुर एक समय दामोदर दास हरसानी इनके घर पाउंने आए सो दामोदर दास संबल वार के घर पांच सात दिन रहे तब इन ने भली भांति सों समाधान कीयो पाछें दामोदर दासहरसानी इन सों विदा होय कें अड़ेल आये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें दामोदर दास सों कह्यो जो दमला तूं कहां उतर्यो हो और कहां प्रसाद लीयो हो तब दामोदर दास हरसानी ने श्री आचार्य जी महाप्रभून सों वीनती कीनी जो महाराज कन्नौज में दामोदर दास संबल वार के घर उतर्यो हो परन्तु अनसखड़ी महाप्रशाद लेतो सखड़ी न लेतो तब श्री आचार्य जी महाप्रभू दामोदर दास संबल वार के ऊपर अप्रसन्न भए और कह्यो जो यह मेरो अंतरंग सेवक याको सखड़ी महा प्रशाद क्यों न लिवायो सो यह बात श्री आचार्य जी महाप्रभून के अंतः करन की दामोदर दास संबल वार नें घर बैठे जानी जो श्री आचार्य जी महा प्रभू आप अप्रसन्न भए मेरे ऊपर तब स्त्री सों कह्यो जो तू श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करियो और में तो श्री आचार्य जी महाप्रभून के चरन दरखवे को अड़ेल जात हों सो तब नहान

चले सो अड़ेल जाय पहोंचे तब श्री आचार्य जी महा
प्रभून के दर्शन करिकें साष्टाङ्ग दंडवत कीनी तब श्री
आचार्य जी महा प्रभू पीठि दै बैठे तब दामोदर दास
संबलवार ने श्री आचार्य जी महा प्रभून सों बीनती
कीनी जो महाराज मेरो अपराध कहा है और जीव
तो अपराध करत ही आयो है परि अपराध
जानियें तो भलो है तब श्री आचार्य जी महा प्रभू
न नें कह्यौ जो तैंने दामोदर दास हरसानी कौ अपने
घर महा प्रशाद अनसखड़ी क्यों लिवायो सखड़ी
क्योंन लिवायो तब दामोदर दास संबलवार ने बीन
ती कीनी जो महाराज दामोदर दास सों आप पूछियें
जो सखड़ी क्योंन लीनी तब श्री आचार्य जी महा प्रभू
न नें दामोदर दास हरसानी सों कह्यौ जो तैंनें सखड़ी
महा प्रशाद क्यों न लीनो तब दामोदर दास ने कह्यो
जो महाराज श्री ठाकुर जी प्रातः काल बाल भोग आ
रोगने पाछें पकवान मिठाई दूध पाक बहुत लेतो सो
सखड़ी की रुचि रहती नाहीं तातें न लेनो तब श्री आ
चार्य जी महा प्रभू न नें कह्यौ जो तूंनें अपनी इच्छा
ते न लेतो परि मोकों तो याके ऊपर बड़ी खुन्स भई
हुती सो भक्तन के अंतः करन की हानि देखवे कों प्रभू
न कों प्रागट्य है काहे ते जो दामोदर दास संबल बार
नें अपने घर कन्नोज में श्री आचार्य जी महा प्रभून
के अंतः करन की जानी तो श्री आचार्य जी महा प्रभू
तौ भक्तन के हृदय में सदां स्थित हैं तो भक्तन के हृ
दय की बात क्योंन जानें परि भक्तन की परीक्षार्थ यह

प्रभून को प्रागट्य है पाछें दामोदर दास संवल वार कों बहुत सन्मान करि कें श्री आचार्य जी महा प्रभून नें वा कों अपने घर को पठायो तब दामोदर दास अपने घर कन्नौज में आए तब दोउ स्त्री पुरुष भली भांति सों सेवा करन लागे ॥ ४॥

वार्त्ता प्रसंग ५

और सिंह नंद के वैष्णव श्री आचार्य जी महा प्रभून के पास जाते सो सब कन्नौज में दामोदर दास कों मिलि कें जाते जो वैष्णव आवतें तिन सबन कों कन्नौज में अपने घर आदर सन्मान करि कें उतारते सबन कों महा प्रशाद लिवावतें पाछें जब अडेल विदा होतें तब तिन वैष्णव प्रति एक एक मोहर एक एक श्री फल आचार्य जी महाप्रभून को भेट पठावतें काहे ते जो मेरी दंडोत खाली हाथन कैसें करेंगे ऐसें श्री आचार्य जी महाप्रभू इन पर सदा प्रसन्न रहते ॥ ५॥

वार्त्ता प्रसंग ६

बहुर दामोदर दास को सुसर बहुत प्रसन्न हुतो तिन नें १०० सो लोंडी बेटी के दायजे में दीनी जो मेरी बेटी बैठी रहेगी काम काज सब लोंडी करेंगी परि ऐसें न करती सेवा सम्बन्धी कार्य्य सब आपु करती सो वह ऐसी भगवदीय ही ॥

वार्त्ता प्रसंग ७

बहुर एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू आप दामोदर दास के घर पोढ़े हुते और दामोदर दास पांव दाबत हुतो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें दामोद

र दास सों पूछी जो दामोदर दास तेरे मन में काहू बात-
को मनोरथ है तब दामोदर दास नें कह्यो जो महाराज
मोकों तो काहू बात कौ मनोरथ आप के अनुग्रह ते र
ह्यो नांहीं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो तू
अपनी स्त्री सों पूछि आउ जो तोकों काहू बात कौ मनोरथ
है तब दामोदर दास जाय कें अपनी स्त्री सों पूछी जो ते
रे काहू बात कौ मनोरथ है तब स्त्रीनें कह्यो जो कोई बा
त कौ मनोरथ र ह्यौ नाहीं एक पुत्र कौ मनोरथ है एक
पुत्र होय तो भलौ तब यह बात दामोदर दास नें जा
य कें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यौ जो महाराज

स्त्री को मनोरथ है जो एक पुत्र होय तो भलो है तब
श्री आचार्य जी महाप्रभू आप कहें जो हां होयगो पाछें
श्री आचार्य जी महाप्रभू आप तो श्री नाथ जी द्वार पधा
रे पाछें जब वाके समय भयो तब स्त्री गर्भ स्थित भई पा
छें वा बाखर में कितनेक दिन में एक डांकोनिया आयो
तब वाको सब माथ की स्त्री पूछन लागी तब तामें तें
काहू नें दामोदर दास की स्त्री सों कही जो अमुकी तू हू
पूछि देखि जो कहा होयगो बेटा होयगो के बेटी हो
यगी पाछें वाकी लोंडी ने जाय कें वा डांकोनिया सों पू
छी जो दामोदर दास की स्त्री कें कहा होयगो बेटा होय
गो कें बेटी होयगी तब वा डांकोनिया ने कही जो बेटा
होयगो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू कितनेक दिन में
कन्नौज में पधारे तब दामोदर दास चरण छूवन लागे
तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो मोको छूवे
मति तोकों अनाश्रय भयो है तब दामोदर दास ने क
ह्यो जो महाराज में तो कछू जानत नाहीं हो तब श्री आ
चार्य जी महाप्रभून ने कह्यो जो तू अपनी स्त्री सों पूछि
आउ तब दामोदर दास ने स्त्री सों पूछो जो तेनें कछू अ
नाश्रय कीनो है सो स्त्री ने जो प्रकार भयो हुतो सो सब
कह्यो सो बात श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कही तब
श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कही जो या के पेट में म्ले
छ होयगो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू आप तो अडेल पधारे
पाछें यह बात दामोदर दास की स्त्री ने सुनी तब ते श्री
ठाकुर जी के पात्रादिक सेवा सम्बन्धी वस्तु स्पर्शन करती
और कहती जो मेरे पेट में म्लेछ है ताते श्री ठाकुर जी के प

अ तथा सामग्री कैसें करुं या भांति सों कहती पाछें जब प्रसूत के दिन आए तब दामोदर दास की स्त्री ने अपनी महतारी सों कहवाय पठाई जो मेरें पुत्र होयगो सो होत मात्र तू अपने घर लै जैयो हम वाको मुख न देखेंगे जो ह मना को मुख देखेंगे तो हमारो धर्म नष्ट होयगो तातें हम वाको मुख न देखेंगे सो उपाय तू करियो पाछें वा की महतारी ने ऐसें ही कीयो प्रसूत मात्र होत अपने घर लै गई पाछें धाय को देकें बड़ो कीयो ॥ ७॥

वार्ता प्रसंग ८

बहुर कितनेक दिन पाछें दामोदर दास की देह छूटी तब वाकी स्त्री ने छिपाय राखा पाछें वा स्त्री नें एक वैष्णव सों कही जो तुम अड़ेल कों एक नाव भाड़े करि ल्यावो सो वह वैष्णव भाड़े करि ल्यायो ता नाव में श्री द्वारिका नाथ जी और घर में की सामग्री तिनूका पर्य्यंत कछु घर में राख्यो नाहीं घर में जो हुतो सो सब नाव में भर्‌यो तब वा वैष्णव सों कह्यो जो यह नाव अड़ेल कों लै जाउ श्री आ चार्य जी महा प्रभून के मन्दिर में पहुंचाय आवो सो वह वै ष्णव नाव लैकें चल्यो सो कोस तीस पर नाव गई ता पा छें स्त्री ने प्रगट करी जो दामोदर दास की देह छूटि गई है तब वैष्णव जुरि आये दामोदर दास को संस्कार कीयो पाछें दामोदर दास को बेटा तुरक भयो हुतो सो आयो आय के घर में देखे तो कछू नाहीं जल को भर्‌यो करवा घर में धर्‌यो है सो देखि के मूंड पीट रह्यो पाछें दामोदर दास को सुसर आयो तिन नें अपनी बेटी सों कह्यो जो बेटी तुमने घर में कछु राख्यो नाहीं सो तू सब कहा वा

यगी तब वानें कही जो तुम देउगे सो में खाउंगी सबी-
लोगन के पास में सगे मांदरे कछू देत हैं ऐसी ग्याति की
कछू रीति है तब दामोदर दास की स्त्री ने अन्न जल कौत्य
ग कीयो सो थोरे से दिन में वाकीहू देह छूटी तब कृत्य दो
उन की साथ ही भयो वह ऐसी भगवदीय ही सो यह बा
त कितनेक दिन पाछें काहू वैष्णव नें श्री आचार्य जी म-
हा प्रभून के आगे आय कही तब श्री आचार्य जी महा
प्रभून ने कही इन कों योंही चाहिये वे दोउ जने ऐसे
भगवदीय हे उन की सराहना श्री आचार्य जी महा प्रभु
श्री मुखने करते तातें इन की वार्ता अनिर्वचनीय है
इन की वार्ता कहां तांई लिखियें ॥८॥

वार्ता प्रसंग ९ संवद ॥२४॥

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून के
सेवक पद्मनाभ दास कन्नोजि
या ब्राह्मण कन्नोज में रहे
ते तिन की वार्ता ॥

सो एक समय श्री आचार्य जी महा प्रभू कन्नोज पधा
रे तब पद्मनाभिदास श्री आचार्य जी महा प्रभून के द-
र्शन कों आए तब पद्मनाभिदास नें श्री आचार्य जी म
हा प्रभून के श्री मुखने भागवत वार्ता को प्रसंग सुन्यो
तब जानी जो एतो साक्षात ईश्वर हे ऐसें श्री आचार्य
जी महा प्रभून के दर्शन भये प्रथम पद्मनाभि दास व्या
स आसन बैठते सो कन्नोज में अपने घर कथा कहते
ऊंचे आसन बैठते श्रोता बहुत कथा सुनिवे कों आ
वते काहू के घर जानों न पड़तो इन घर बैठे चली आ

आवती याभांति सों रहतै सो पद्मनाभि दास श्री आचार्य जी महा प्रभून के श्रीमुखतें भगवत प्रसंग सुन्यों तब ने जान्यों जो ए साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हैं सो पूरन पुरुषोत्तम जानि कें पद्मनाभि दास श्री आचार्य जी महाप्रभून की सरण आये नाम पायो पाछें समर्पण करवायो तब उत्थापन के समय श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पोथी खोली तहां दामोदर दास संवलवार के घर बैठे हुतें ता समय पद्मनाभि दास अपने घर तें आये श्री आचार्य जी महाप्रभून कों दंडवत करि कें बैठे तब श्री आचार्य जी महा प्रभून ने पोथी खोली और श्लोक निबंधन को कह्यो ॥

॥ श्लोक ॥

पठनीयं प्रयत्नेन सर्व हेतुर्विव
र्जिते ॥ वृत्त्यर्थं नैव युंजीत प्राणैः
कण्ठ गतै रपि ॥ तदभावे तथै
वस्या त्तथां निर्वाह सांचरेत ॥

यह श्लोक पढे सो पद्मनाभ दास नें सुन्या पाछें दशमस्कंध की कथा कही सो सुनी तब श्री आचार्य जी महा प्रभू कथा कहि रहे तब पद्मनाभ दास नें जल की अञ्जुली भरि कें संकल्प कीयो जो अब तें कथा कहिवे कों व्रत न करूंगो ऐसे श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगें संकल्प कीयो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्रीमुखतें कह्यो जो श्री भागवत व्रत रथन कहनो और तो तुम्हारी वृत्य हैं तुम ब्राह्मण हो और पुराण महाभारथी तो इत्यादिक कहनो तब पद्मनाभ दास ने कह्यो जो महा

राज हमने अब तौ संकल्प कीयो सो तो कीयो याते क
छु न कह्नो तब श्री आचार्य जी महाप्रभू कहे जो तुम ग
हस्थ हौ सो कौन भांति निर्वाह करोगे तब पद्मनाभ दास
ने कह्यो जो महाराज भिक्षा मांगि के निर्वाह करूंगा
पाछे एक जिजमान के घर क्षत्र्य गए तिन तब बहुत
आदर सन्मान कीयो तब पद्मनाभ दास के मन में ब
हुत ग्लानि आई जो कबहूं पहलें तौ भिक्षा क्षत्र्य करी
नाहीं और अब वैष्णव भये ताकों तौ यह भिक्षाहू उ
चित नाहीं तब फेर संकल्प कीयौ जो अबनो भिक्षा क
तहूं न करूंगा तब फेर श्री आचार्य जी महाप्रभून नें क
ह्यौ जो अब निर्वाह कौन भांति करोगे तब पद्मनाभदास
नें कही जो अब वैष्णव कृत्य करि निर्वाह करूंगा पाछे
कोड़ी बेचने लकड़ी लै आवनें पर और बात न बिचारी
या भांति देहादि पर्य्यंत निर्वाह कीनो ऐसे टेक के कृपा
पात्र भगवदीय है ॥

वार्ताप्रसंग १

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू अडेल में पधारे हैं
तब पद्मनाभ दास साथ हैं रात्रि पहर १ गई ही तब श्री
आचार्य जी महाप्रभून नें पद्मनाभ दास सों कही जो श्री
गंगाजी कों पार ते पधराय लावो सो सुनत ही पद्म
नाभ दास उठि चले तब पांच सात वैष्णव तहां बैठे
हुते सो कहन लागे जो यह ब्राम्हण बावरो भयो है ये
बेर कहां जायगो नाव सब बंधी हैं घटवार सब घर
गये हैं तातें यह बिरियां जाइवे की नहीं पर या को
तो श्री आचार्य जी महाप्रभून की आज्ञा है ताको वि

स्वाम जो यह काम अधिक अवस्य होयगो सो घाट ऊपर आये तब इत उत देखन लागे इतने में देखें तो अकस्मात एक लरिका बर्ष दस कौ एक डोंगी लेकर-आयौ सो वानें पद्मनाभ दास कौं पूछौ जो तू पार जाय-गो तब पद्मनाभदास नें कह्यौ हांहां जाऊंगो तब उन

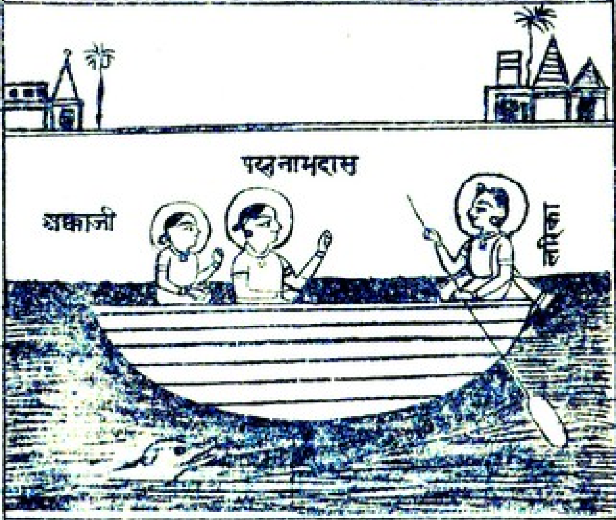

पार उतार दीनों पाछें फेरि पूछौ जो तू फेरि आवेगो तब पद्मनाभ दास नें कह्यौ जो घड़ी दोय पाछें आउं गो तब लरिका नें कह्यौ जो डोंगी राखत हौं तू वेगी आ इयो पाछें अडेल में जाय कें श्री अक्काजी कौं पधरा य लाये तब वाही डोंगी में बैठार पार उतारे तब फिर देखें तो वहां डोंगी हू नाहीं और लरिका हू नाहीं पाछें श्री अक्काजी कौं पधराय कें घर आये पाछें श्री आ-

चार्यजी महाप्रभून नें पद्मनाभि दास कों आज्ञा दीनी जो जाउ सोय रहो जब जहां वैष्णव सोये हते तहां आये तब वैष्णव सब पूछन लागे जो तुम कहा करि आये तब पद्मनाभिदास नें सब समाचार कहे तब वैष्णवन नें कह्यो जो तेनें श्री ठाकुरजी कों श्रम बहुत करवायो पाछें वैष्णवन नें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों पूछी जो महाराज पद्मनाभदास नें श्री ठाकुरजी कों श्रम बहुत करवायो तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कही जो यह जो भयो है कछु सो मेरी इच्छा ते भयो है तातें तुम पद्मनाभिदास सों कछु मति कहो॥

वार्ताप्रसंग २

बहुर एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभू श्रीगोकुल ते अडेल कों जात हते तब एक व्योपारी कछु वस्तु लेके साथ में चल्यो और श्री आचार्यजी महाप्रभू कन्नौज के बीच पधारे तब व्योपारी पीछें रह्यौ ताके ऊपर चोर आय पड़े सो वस्तु सब लूट लीनी और श्री आचार्यजी महाप्रभू आप तो दामोदरदास संभलवार के घर पधारे सो वहां उतरे रसोई करि श्री ठाकुरजी कों भोग समर्प्यो इतने में वह व्योपारी रोवत पीटत आयो तब पूछो जो श्री आचार्यजी महाप्रभू कहा करत हैं तब पद्मनाभिदास ने कह्यौ जो भोजन करत होंयगे तब वा व्योपारी ने कह्यौ जो हमारो माल सब लुटि गयो है और श्री आचार्यजी महाप्रभू भोजन करत हैं तब पद्मनाभदास ने अपने मन में विचार्यो जो श्री आचार्यजी महाप्रभू सुनेंगे तो भोजन न करेंगे

घड़ी दोय की अवार होयगी तातें पद्मनाभ दास वा
व्योपारी की बांह पकिर कें एक साहू की दुकान पर
लेगये ता साहू नें पद्मनाभ दास को बहुत आदर सन
मान कीयो तब वानें कह्यो जो आज्ञा करो केसें पधारे
हो तब पद्मनाभ दास नें वा साहू सों कह्यो जो या
व्योपारी कों इतनों द्रव्य दियो चाहिये या द्रव्य को ख
त पत्र व्याज हम लिख देयंगे तब साहू ने कह्यो जो प
द्मनाभ दास जी तुम कों जितनों द्रव्य चाहिये तितनों
लेउ खत पत्र की कहा बात है तब पद्मनाभ दास नें
कह्यो जो पहिले तो खत पत्र लिखेंगे पीछें द्रव्य
लेंउगो बिना खत लिखे तो लेउंगो नाहीं तब साहू ने
कही जो तुम्हारी इच्छा पाछें पद्मनाभ दास ने खत
लिख दीनों तब साहू नें वा व्योपारी कों द्रव्य दीयो त
ब वह व्योपारी तो अपनो द्रव्य लेकें अपने घर गयो
तब पद्मनाभदास अपने घर आये तब पद्मनाभ दा
स सों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पूछी जो पद्मनाभ
तू कहां गयो हो तब पद्मनाभ दास ने कह्यो जो महा
राज एक काम गयो हो सो श्री आचार्य जी महाप्रभू
आप तो साक्षात ईश्वर सो तत्काल जानि गये तब प
द्मनाभ दास सों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें क
ह्यो जो हम वा व्योपारी कों संग तो लीनों न हुतो
जो वा कों माल देनों वह पीछें रह्यो तो हम कहा क
रे परि तेनें बहुत बुरी करी सो ऋण काढि कें पैसे
दीनों तब पद्मनाभ दास नें कही जो महाराज सो तो
सांच परि वह व्योपारी पुकारतो तो राज भोजन में दो

य घड़ी की असवार होती तौ मेरौ जन्म सब वृथा जा
तौ और चरणनौ कानि देउंगो यह कितनी कबात
है तब श्री आचार्य जी महाप्रभुन नें कह्यौ जो तैंनें
धर्म गहने लिखदीनौ सो काहे तें तब पद्मनाभ दास
नें कह्यौ जो महाराज ऐसो गाढ़ो लिख दीयो जो बिना
दिये न जाय पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभु तो अड़ेल
पधारे पाछें पद्मनाभ दास एक राजा हुतौ ताके पा
स गए तब पद्मनाभ दास कौं वा राजा ने बहुत आदर
सनमान कीयौ पाछें राजा ने कह्यौ जो मो कौं कृपा
करिकें कछु सुनावो तब पद्मनाभ दास ने कह्यौ जो रा
जा श्री भागवत तौ नाहीं सुनांऊ कहौ तौ महाभारत
सुनाउं सो राजा ने कह्यौ जो महाभारत ही सुनावौ
सो महाभारत ही कहन लागे सो जब युद्ध कौ प्रसंग
आयौ तब सबन के हथियार छुड़ाय धरे तब आगें
कहन लागे सो कथा कहन में कोई वीररस ऐसौ
उपज्यौ सो आपस में सब लात मुक्कान सों लरन ला
गे पाछें .... कितेक दिन में महाभारत सम्पूरण
भयौ तब राजा बहुत दक्षिणा दैन लाग्यौ तब पद्मना
भदास नें कह्यौ जो इतनों तौ मैं नाहीं लेउंगो मेरे मांथे
ऋण है तितनो लेउंगो पाछें वा साह कौं मूल ब्याज
दैनो हुतौ तितनों लीनों बाकी कौ फेर दीनों पाछें सा
ह कौं द्रव्य दैकें खत फारि डारौ ॥ २॥

वार्ता प्रसंग ३

और पद्मनाभदास कैं एक बेटी कुमारी हुती ता
कें निमित्त एक बर श्री आचार्य जी महाप्रभुन कौं सेव

कचाहियत हुतो सों वैष्णवन सों पूछन लागे तव वै
ष्णवन नें कह्यो जो एक वर श्री आचार्य जी महा प्रभून
को सेवक है परि सनोढिया ब्राह्मण है सो पद्मनाभ
दास कों लौकिक व्यवहार में विवहार की सुधि रही ना
हीं वैष्णवन कह्यो जो भलो वैष्णव है सो याकों वे
टी दीजिये तव पद्मनाभदास ने कह्यो जो भलो सो
पद्मनाभदास नें वा वैष्णव कों तिलक कीयो विवाह
सही करि कें अपने घर आये तव तुलसा वड़ी वेटी
हुती तासों कह्यो जो अपनी वेटी को विवाह अमुके
वैष्णव सों सही कर आयो हूं तव तुलसा ने कही जो
वह तो सनोढिया ब्राह्मण है और आपुन कनोजिये
ब्राह्मण हैं सो ऐसें कैसें होय तव पद्मनाभ दास नें
कही जो अव तो भई सो भई तव तुलसा नें कह्यो जो
सगाई फेरो तव पद्मनाभ दास ने कही जो सगाई
कैसें फेरी जाय पाछें पद्मनाभदास ने कही छुरीला
वो मेरो अंगूठा काटो तव तुलसा नें कह्यो जो अंगूठा
कैसें काट्यो जाय तव पद्मनाभ दास ने कही जो स
गाई कैसें फेरी जाय जो अंगूठा काटे तो सगाई फेरी
जाय पाछें पद्मनाभदास नें विवाह करदीयो जात
के सव झखमार रहे वैष्णव के कहे को विस्वास ता
ते सगाई न फेरी ॥३॥

वार्ता प्रसंग ४

और एक क्षत्राणि पद्मनाभ दास के घर नित्य
आवती तव एक दिन तुलसा नें कह्यो जो क्षत्राणि
जो तू नित्य क्यों आवत है तव वा क्षत्राणीने कही जे

पद्मनाभ दास बड़े भगवदीय हैं और महा पुरुष हैं और मेरे संतति नाहीं होत है ताते आवत हौं ताते तुम पद्मनाभ दास सों मेरी बीनती करो तब पद्मनाभ दास सों एक दिन तुलसा ने कही जो पद्मनाभ दास एक छत्राणी के संतति नाहीं होत है ताके लिये तुमसों बीनती करत हौं तब पद्मनाभ दास नें कह्यो जो तुलसा जल लाउ तब तुलसा नें जल लाय कें आगे धर्यो तब जल लैकें अगूंठा कौ चरणोदक करिकें पद्मनाभ दास ने वा छत्राणी कों चरणोदक दियौ और कह्यो जो जा तेरे पुत्र होयगो ता कौ तू मथुरादास नाम धरियो पाछें वाके पुत्र भयो ॥

वार्त्ता प्रसंग ५

और एक समें बड़े रामदास जी अपने सेव्य ठाकुरजी कों पद्मनाभ दास के घर पधराय कें आप श्रीनाथजी की सेवा करन लागे श्रीनाथजी के भीतरिया भये तब पद्मनाभ दास श्री ठाकुरजी की सेवा करन लागे सो कितेक दिवस पाछें मुग़ल की फौज आई ताने गांव लूट्यो सो श्री ठाकुरजी कों मुग़ल लेगये तब पद्मनाभ दास वा मुग़ल के पीछे सात दिन लों रहे जल पान न कर्यो तब वा मुग़ल सों वाकी मुग़लानी नें कह्यो जो यह ब्राह्मण जल पान हू नाहीं करत याकों सात दिन भये हैं अन्न जल छोड़ें सो जो यह ब्राह्मण मरेगो तो तेरे माथे हत्या चढ़ैगी तो तेरो संग छोड़ देउंगी नातर देव याके तेरे पास है सो तुम देव याके देउ तब वा मुग़ल नें पद्मनाभदास कों श्रीठा

कुर जी दीये सो लैकें पद्मनाभदास अति आनन्द पा
य कें अपने घर आए पाछें आप स्नान करि श्री ठाकु
र जी कों पंचामृत सों स्नान कराय अंग वस्त्र करि श्रृं
गार कीयो रसोई करि भोग समर्प्यो पाछें समयानु
सार भोग उसराय अनोसर करि पाछें महा प्रशाद
आपु लीयो और जा दिन ते वा कन्नोज में श्री ठाकुर
जी मुगल के हाथ परे सो ता दिन रामदास नें हू यह
बात जानी सो ता दिन ते वड़े रामदास ने हूं सात दिन
तांई महा प्रशाद लीनों नाहीं परि श्री नाथजी की
सेवा सावधानी सों करत रहे यह बात पद्मनाभदा
स नें घर बैठे जानी जो रामदास हू या बात के ऊपर
बहुत दुख पायो सात दिन लों जल पान हू नाहीं
लीयो यह जानि पद्मनाभ दास श्री नाथ जी के द
र्शन तथा रामदास जी सों मिलिबे कों श्री नाथ जी
द्वार आये तब श्री नाथ के दर्शन कीये पाछें राम
दास जी सों मिले तब रामदास जीने पद्मनाभदास
सों कह्यो जो तुमनें बहुत दुख पायो तब पद्मनाभ
दास नें कह्यो जो हूं तो दुख पायो सो तो न्याव है
परि तुम मेरे मांथे सेवा पधराय आये और तुमनें सा
त दिन लों महा प्रसाद नाहीं लीयो सो काहे ते तब
रामदासने कह्यो जो तुम कहत हौ सो तो सांच है परि
मैं हूं तो बहुत दिन लों सेवा कीनी है ताते इतनों तो
सम्बन्ध चाहिये पाछें कितनेक दिन लों उहां रहिकें
पद्मनाभ दास श्री नाथ जी सों तथा रामदास जी सों
बिदा होय कें अपने घर आए पाछें सेवा करन लागे

वार्ता प्रसंग ६

और एक समय पद्मनाभ दास अपने सेव्य श्री ठाकुर जी श्री मथुरा नाथजी तथा अपनो कुटुम्ब लेकर अडेल आय रहे परंतु द्रव्य को संकोच बहुत हुतो ताते श्री ठाकुर जी कों भोग समर्पते सो छोला तलि के समर्पते सो छोला आछी रीति सों चान के पहिले दिन भिजोय राखते दूसरे दिन ताकी भांति सों तलि कें परोसते एक मुट्ठी भरि कें कहै जो यह दारि एक मुट्ठी भरि कें धरें और कहै जो यह रोटी है या भांति जितने सालन होय तितनेन को नाम लेकें एक एक मुट्ठी समर्पते या भांति सों नित्य करते सो श्री ठाकुरजी सोई आरोगते पाछें एक वैष्णव नें श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगे कह्यो जो महाराज पद्मनाभ दास श्री ठाकुर जी कों या भांति समर्पत है सो एक दिन श्री आचार्य जी महाप्रभू भोग समर्पिवे की विरियां आप पद्मनाभ दास के घर पधारे सो जैसें नित्य भोग समर्पते तैसेंई पद्मनाभ दास ने भोग समर्प्यो हो सो जब भोग उसरायो तब पद्मनाभ दास नें कह्यो जो महाराज यह खीर है यह भात है यह दारि है यह साक है यह सिखरन है यह रोटी है यह वरा है ऐसें कहि के सब सामग्रीन के नाम लेके छोलान की ढेरी बनाई तब श्री आचार्य जी महाप्रभून को हृदय भरि आयो और कह्यो जो द्रव्य को संकोच है ताके लिये ऐसें करत है पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू आप तो घर कों पधारे तब श्री अक्का जी सों कह्यो जो पद्मनाभ दास के घर नित

रसोई की सामग्री पठावत रहियो तब दूसरे दिन श्री
आचार्य जी महाप्रभून नें पद्मनाभदास के घर सीधो
सामग्री पठायो तब पद्मनाभदास नें तुलसा सों कह्यो
जो इहां तो प्रभु कौ दुःख होत भये हैं तब पद्मनाभदास
ने दिन द्वै चार को सामान करि पाछें अपने सेव्य
ठाकुर जी श्री मथुरा नाथ जी सों कह्यो जो महाराज
को मन होय तो श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास
पधराय आऊं तहां सकल सामग्री सिद्ध है तब श्री
मथुरा नाथ जी नें कह्यो जो मोकों तेरो ही कीयो भा
वत है तातें तेरे यहां बहुत प्रसन्न हों तू कछू संकोच
मति करे ऐसें श्री मथुरा नाथ जी आप कहे तब पद्म
नाभदास नें नाव भाड़े कीनी तामें श्री ठाकुर जी पधरा
ये और सब कुटुम्ब नाव में बैठाय के आप श्री आचार्य
जी महाप्रभून सों विदा होन गये और सीधो सामग्री
दिन द्वै चार को आयो हुतो सो भंडारी कों फेर देकें
आप श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास विदा होय
के दर्शन करिके दंडोत करि के कह्यो जो महाराज
हम तो चलत हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पूछो
जो श्री मथुरा नाथ जी कहां हैं तब पद्मनाभ दास ने
कह्यो जो महाराज श्री ठाकुर जी तो नाव में विराजत
हैं श्री ठाकुर जी कों नाव में पधराय कें, हों महाराज
के पास दर्शन करिवे कों तथा विदा होयवे कों आ
यो हूं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पद्मनाभ
दास कों विदा कीयो पाछें भंडारी नें आचार्य जी म
हाप्रभून सों आय कें कह्यो जो महाराज पद्मनाभ

दास के घर सीधो सामग्री दिन द्वै चार की पठाई हती सो पद्मनाभ दास फेरि दे गए हैं तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो सीधो सामग्री पठाई तानें पद्मनाभदास गयो तातें न जानी यह बात आप श्रीमुखतें कही सो पद्मनाभदास की वार्ता श्री गोकुलनाथ जी श्री सर्वोत्तम की टीका में लिखे हैं सो पद्मनाभ दास सो विरला कोटि त्यागी दुर्लभ है सो वे पद्मनाभ दास श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं पद्मनाभ दास की ऐसी ऐसी कितनी कवा ती हैं ॥६॥

वार्ता प्रसंग ७
वैष्णव ४ सम्बन्ध ॥३१
अब श्री आचार्य जी महा
प्रभून के सेवक पद्म
नाभ दास की बेटी
तुलसा तिनकी
वार्ता लि०
ख्यते

सो एक समय एक वैष्णव श्री आचार्य जी महा प्रभून को सेवक तुलसा के घर आयो सो श्री ठाकुर जी को दर्शन कीयो तब राज भोग समर्प्यो हो तब तुलसा नें वा वैष्णव सो कह्यो जो उठो स्नान करो महा प्रशाद लेउ तब वा वैष्णव नें कह्यो जो हूं तो घर जाय के महा प्रशाद लेउंगो तब स्नान करूंगो तब तुलसा चुप

है रही पाछें वह वैष्णव उठि कें अपने घर गयो तब तुलसा के मन में बहुत खेद भयो जो देखो मेरे घर तें वैष्णव भूखो गयो बहुरि मन में आई जो ख्याति व्यवहार के लिये सखड़ी न लीनी होंगी पर भलो सकारें पूरी करि महा प्रशाद लिवाउंगी पाछें मेदा छानि सिद्ध करवाई तब सोई पाछें रात्रि कों मथुरा नाथ जी पद्मनाभ दास के सेव्य ठाकुर तिनने स्वप्न में तुलसा सों जनायो जो सकारें वा वैष्णव कों सखड़ी महा प्रसाद लिवाइयो वह वैष्णव अपने घर प्रशाद नाहीं लेइगो पाछें वा वैष्णव सों स्वप्न में कही जो सकारें तू सखड़ी महा प्रसाद तुलसा के घर लीजियो पाछें प्रातः काल स्नान करि तुलसा नें पूरी करी श्री ठाकुर जी कों जगाय सेवा करन लागी इतने में वह वैष्णव आयो श्री ठाकुर जी के दर्शन कर बैठि रह्यो तब तुलसा भोग समर्पि कें बाहर आई तब वा वैष्णव सों कह्यो जो उठो स्नान करो महा प्रशाद लेउ तब वैष्णव नें कह्यो जो भलो तब वा वैष्णव ने स्नान करि तिलक मुद्रा करि कें स्मरन कीयो इतने में राज भोग सर्यो तब वा वैष्णव ने दर्शन कीयो पाछें तुलसा नें श्री ठाकुर जी कों अनोसरि करि तुलसा बाहर आई तब पूरी बूरो समाधी वा वैष्णव के आगें राख्यो और कह्यो जो महा प्रसाद लेउ तब वा वैष्णव नें कह्यो जो यह तो नाहीं लेउंगो हूं तो सखड़ी महा प्रशाद लेउंगो तब तुलसा ने कह्यो जो कछु सकोच मति करो यह तो जानि व्यवहार है तब

वा वैस्नव नें कह्यो जो सोनो सांच पहिले तो ऐसें
हीं मनमें आई हती परि अब तो आज्ञा भई है पा
छें वा वैस्नव नें सखड़ी महा प्रशाद लीयो तब दो
उ जने परस्पर प्रसन्न भये ॥१॥

वार्ता प्रसंग १

वहर एक दिन तुलसा के घर श्री गुसांई जी
पधारे तब तुलसा ने भली भांति सों सेवा कीनी
ताते श्री गुसांई जी वहुत प्रसन्न भये और एक दि
न श्री गुसांई जी भोजन करि के पोढ़े इते तब तुल
साने भगवद वार्ता करी अति प्रसन्नता में श्री गुसं
जी कही जो पद्मनाभ दास की संतति ऐसी ही चा
हिये पाछें श्री गुसांई जी ने तुलसा सों पूछो जो श्री
ठाकुर जी मानु भावना जतावत हैं तब तुलसा नें
कह्यौ जो महाराज अब तो पेट भरि खाइयत हैं
और नींद भरि सोइयत हैं और श्री आचार्य जी
महा प्रभून के ग्रंथन कौ पाठ करि यत हैं तब श्री
गुसांई जी वहुत प्रसन्न भये वह तुलसा ऐसी भ
गवदीय हती ताते श्री ठाकुर जी आर्ति सहि न
सके ताते वा तुलसा के ऊपर श्री गुसांई जी वहुत
प्रसन्न रहते ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये
॥ वार्ता प्रसंग २

वैस्नव ५ सम्बन्ध ३३॥
अब श्री आचार्य जी महा प्रभून के।
सेवक पद्मनाभ दास को वेटा।
ताकी वहू पार्वती की वार्ता

सो पारवती श्रीठाकुर जीकी सेवा नीकी भांतिकरती और पुरुषोत्तम दास मेहरा इनकों नीकी भांति सों जानतौ जब कन्नौज जातौ तब पार्वती के घर उतरतौ तब कितनेक दिन पाछें पार्वती के हाथ पांव सूजन है गये तब ते श्री ठाकुर जी की रसोई करत तथा स्परस करत बहुत बहुत ग्लानि आवती तब पुरुषोत्तम दास मेहरा कों पार्वती ने पत्र लिख्यो तामें लिख्यो जो मेरी बीनती श्री गुसांई जी सों कहियो मेरी देह कों यह प्रकार भयो है तातें मोकों सेवा करत पाक करत बहुत ग्लानि आवत है सो मैं कहा करूं सो पुरुषोत्तम दास मेहरा ने पार्वती कौ लिख्यौ पत्र श्री गुसांई जी कों बांचि सुनायो और बीनती कीनी भेंट की मोहर ही सो आगें राखी पाछें श्री गुसांई जीने पुरुषोत्तम मेहरा कों आज्ञा दीनी जो दिन द्वै चारि में कहेंगे पाछें दिन द्वै चार बीते तब श्री गुसांई जीने पुरुषोत्तम दास मेहरा कों आज्ञा दीनी जो पार्वती को पत्र लिख तामें लिखियो जो तू श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करियो काहू बात की ग्लानि मति लाइयो श्री ठाकुर जी तेरो रोग सब आपही ते दूर करेंगे तब पुरुषोत्तम दास मेहरा ने पार्वती कों पत्र लिख्यो तामें श्री गुसांई जीने श्री मुख ते वचन कहे सो लिख पठाये सो वह पत्र पार्वती पै पहुंच्यो सो पत्र बांचि के श्री गुसांई जी की आज्ञा ते सेवा प्रसन्नता सों करन लागी कछू ग्लानि मन में नहीं लावती पाछें महीना तीन चारि में

हाथ पांव नीके भए तब पार्वती बहुत प्रसन्न भई
सो प्रसन्न तासों सेवा करन लागी बहुर श्री गुसांई
कों पत्र लिख्यो भेट पठाई और कह्यो जो महारा
ज के प्रताप तें नीकी भई हों सो पत्र बांचि कें श्री
गुसांई जी बहुत प्रसन्न भए सो वह पार्वती बड़ी कृ
पा पात्र भगवदी हती प्रभून के प्रमान चलती ता
ते श्री गुसांई जी इनके ऊपर सदा प्रसन्न रहते यह
वार्ता सब पद्मनाभ दास के कुटुम्ब की भई तातें प
द्मनाभ दास बड़े भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता
कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग १॥

वैष्णव ॥ ६॥ सम्बन्ध ३४॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक पद्मनाभ दास की नाती पार्वती को बेटा रघुनाथ दास ताकी वार्ता।

सो रघुनाथ दास बनारस में बहुत शास्त्र पढ़ि
कें श्री गोकुल आयो तब श्री गुसांई जी को दंडौत
कीनी सो गुसांई जी बड़ेन की कानि तें इन के ऊपर
कृपा करते कथा कहते सो रघुनाथ दास सुनते सो एक
दिन परमानन्द सोनी ने इन सों पूछो जो रघुनाथ
दास तुम तो बहुत शास्त्र पढ़े हो पण्डित हो आज
श्री गुसांई जी ने कहा कथा कही हती सो कहो त
ब रघुनाथ दास ने परमानन्द सोनी सों कह्यो जो तु
म तो सांच पूछत हो परि हमें तो कछु समझत नांही

तब यह बात परमानन्द सोनी ने श्री गुसांईजी के
आगे कही जो महाराज रघुनाथ दास तो कछु
समझत नाहीं पाछें श्री गुसांईजी नें रघुनाथ दास
कों ग्रंथ दोय चार पढाए और मार्ग की प्रनालिका
कही पाछें रघुनाथदास समझन लाग्यो बडो पंडित
भयो सो कितनेक दिन पाछें अपने घर कन्नौज
में आयो तब माता सों कही जो हूं तो न्यारो होयगो
श्री ठाकुरजी की सेवा करूंगो तब माता नें कही
जो भलेंई तू सेवा करि पाछें न्यारो भयो वाकी
माता जल भर लावती पार्वती पात्र मांजती श्री
ठाकुरजी की सेवा नीकी भांति सों करती पर चार
गो सब करती जब राज भोग सरतो तब अपनें घर
अकेली लीटी करि श्री ठाकुरजी कों भोग समर्पि
भोग सराय आप प्रशाद लेती या भांति सों करती
ऐसें करत दिन पांच सात बीते तब अपने सेव्य
श्री ठाकुर जी नें कह्यो जो अरी पार्वती मेरो गरो
खरखरात है अकेली लीटीन ते तातें तू दारि तो
कर्‍यो करि तब पार्वती ने कह्यो जो महाराज तुम
तो दारिभात सालन सों आरोगत हो तब श्री ठाकुर
जीने कह्यो जो मैं तो तेरो कीयो आरोगत हों पाछें
दार भात सब सालन करन लागी तातें पार्वती बड़ी
कृपा पात्र भगवदीय हुती ये वार्ता अब पद्मनाभदा
सके परिवार की भई तातें वे पद्मनाभ दास श्री आ
चार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय है
सो इनकी वार्ता ऐसी ऐसी कितनीक है तातें अब

कहां नांई लिखिये ॥

वार्त्ता प्रसंग ॥ १

वैस्नव १ ॥ सम्बन्ध ॥ ३५

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून

को सेवक रजो छत्राणी

अड़ेल में रहती ।

ताकी वार्त्ता

सो व रजो छत्राणी नित्य पकवान सामग्री करि श्री आचार्य जी महा प्रभून के लिये ले आवती सो श्री आचार्य जी महा प्रभू आरोगते वाको नित्य नेम हुतो सो एक दिन लक्षमन भट्ट जी को श्राद्ध दिन आयो सो श्री आचार्य महा प्रभून नें ब्राह्मण भोजन को बुलाये हते तहां घृत थोरो सो चहियत हुतो तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें एक वैस्नव सों कही जो रजो के सें घृत ले आउ तब वा वैस्नव नें रजो सों कही जो रजो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें घृत मंगायो हे तब रजो ने वा वैस्नव सों कह्यो जो घृत काहे को चहियत हे तब वा वैस्नव नें कह्यो जो आज श्री लक्षमन भट्ट जी को श्राद्ध दिन हें सो ब्राह्मण भोजन को बुलाये गये हें सो थोरो घृत र सोई में घट्यो हे ताते मंगायो है तब रजो ने कह्यो जो मेरें तो घृत नाहीं हे तब वह वैस्नव फिर आयें आय के श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कह्यो जो महाराज रजो के घृत नाहीं हे तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो तू फेर जा और खोज के

कहियो जो श्री आचार्य जी महा प्रभून नें घृत-
मंगायो है तब वह वैष्णव फिर गयो और रजो-
सों कह्यो जो श्री आचार्य जी महा प्रभू खोजत हैं
तब वह रजो नें घृत नाहीं दियो तब वह वैष्णव फिर
आयो तब श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कह्यो जो
महाराज रजो घृत नाहीं देत तब श्री आचार्य जी-
महाप्रभून नें कह्यो जो अब कें फेरि जा और क-
हियो जो श्री आचार्य जी महा प्रभू खोजत हैं ता
ते घृत देउ तब वह नाहीं दियो तब श्री आचार्य जी
महाप्रभून सों कह्यो जो महा राज रजो घृत नाहीं दे
त तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें और ठौर तें कै
मचलायो तब रात्री कों रजो पकवान लैकें आई
तब रजो कों देखि क श्री आचार्य जी महा प्रभू पीठ

रजो का पकवान लेकर श्री आचार्य जी महा प्रभू के पास आना और श्री
॥ महा प्रभू का पीठ दे बैठना ॥

दै बैठे तब रजो ने कही जो महाराज मेरो अपराध
कहा है तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ
जो तैरें घृत न हुतो तौ सामग्री कहां ते करवाई
तब रजो ने कह्यौ जो हुं लछमन भट्ट की सौंडानी
नाहीं मेरे घृत न हुतो ताते न दीनों ताते तुम्हारे घृ
त हुतो सो क्यौं न दीनों तब श्री आचार्य जी महाप्र
भून नें कह्यौ जो में श्री ठाकुर जी को घृत क्यौं कर
के देंउ तब रजो नें कही जो में श्री ठाकुर जी को
घृत क्यौं कर कें देंउ तब आप बोले नाहीं तब रजो
नें सामग्री आगें राखी और कही जो राज आरोगो
तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो आज
श्राद्ध दिन है ताते दूसरी बार लेनों नाहीं तब रजो
ने कही जो महाराज तुम्हारे घर को होय सो मति
लेउ यह तौ लीयो चाहियें तब रजो के आग्रह ते
श्री आचार्य जी महा प्रभून नें आरोगी रजो श्री आचा
र्य जी महा प्रभून की ऐसी कृपा पात्र भगवदीय हीं
ताते इन रजो की वार्त्ता कहां तांई लिखियें॥

वार्त्ता प्रसंग १

वैष्णव ८ सम्बन्ध ३६

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून

के सेवक सेठ पुरुषोत्तम

दास छत्री बनारस

में रहते तिन्की

॥ वार्त्ता ॥

सो सेठ पुरुषोत्तम दास को श्री आचार्य जी महाप्रभू

न की आज्ञा हुती जो तुम पास कोई नाम लेन आवे
ताकों तुम नाम दीजियो तानें सेठ पुरुषोत्तम दास ना
म देने और अपने घर श्री मदन मोहन जी की सेवा क
रने परि कबहू विश्वेश्वर नाथ महादेवजी के दर्शन
कों न जाने ऐसें करत बहुत दिन बीते तब एक दिन
विश्वेश्वर नाथ महादेव जीनें सेठ पुरुषोत्तम दास सों
कह्यो जो सेठजी तुम हम सों गांव कौ नातो तो राखो
कबहूं हम कों प्रशाद तो दियो करो ऐसें स्वप्न में
कही तब सवारें सेठ पुरुषोत्तम दास उठि सेवा सों प
हुच कें बाहर आये तब वस्त्र पहर कें बीडा दोय प्र
शादी लैकें डवरा प्रशाद कों लेकें विश्वेश्वर नाथ मह

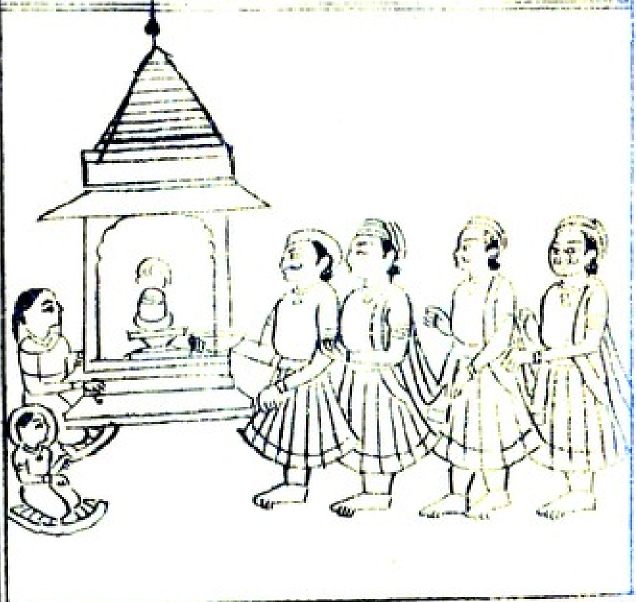

देवजी के दर्शन कों चले तब गांव के लोग आश्च
र्य भए जो सेठ पुरुषोत्तम दास कबहूं दर्शन कों न आ
वते सो आज क्यों आये सो सब लोग माथ आगे सो
सेठ पुरुषोत्तम दास ने देवालय में जाय कें विश्वेश्व
र नाथ महादेवजी के आगे बीड़ा दोय धरि प्रसाद कें
डवरा धरि श्रीकृष्ण स्मरन कहि कें उठि चले तब व
डे बड़े पंडित ब्राह्मण हूते तिननें सेठ पुरुषोत्तम दास
सों कह्यो जो सेठ पुरुषोत्तम दास दंडोत नमस्कार
कछून कीनों श्रीकृष्ण स्मरन कहि कें उठि चले
सो तो तुम कों उचित नाहीं तब सेठ पुरुषोत्तम
दास ने उन ब्राह्मणन सों कह्यो जो तुम महादेव
जी कों पूछि लीजियो तुम सों महादेव जी कहेंगे
पाछें उन ब्राह्मणन में एक महादेव जी कौ बड़ो क
पापात्र भगवदीय हुतो तासों महादेव जी ने स्वप्न
में कह्यो जो हमनें इन सों महा प्रसाद मांग्यो हो
सो देन आये हैं हमारो इन को ब्योहार जैश्रीकृष्ण
कौ है ताते तुम इन सों कछू मति कहो पाछें सेठ
पुरुषोत्तम दास बड़े उत्सव को प्रसाद कबहूं क
बहूं ले जाते तब एक दिन महादेव जी नें काल
भैरव सों कह्यो जो सेठ पुरुषोत्तम दास वैष्णवन के
घर ते सबेरो सबेरो आवत हैं ताते तू इन के घर कों
चौकी पहरा नित्य देत रहियो सो काल भैरव नित्य
इन के घर कौ चौकी पहरा देतो सो एक दिन सेठ
पुरुषोत्तम दास वैष्णवन के घर ते अबारे आवत
हे सो सेठ पुरुषोत्तम दास घर के द्वार आये तब

फिर कैं देखें तौ काल भैरव एक ठौर ठाडो है तब से
ठ पुरुषोत्तम दास नें वा सों पूछी जो तू कौन है तब
वह बोल्यौ जो हूं काल भैरव हौं मोकों महादेव
जीनें आज्ञा दीनी है ताते तुम्हारे घर की चौकी
पहरा देत हौं तब सेठ पुरुषोत्तम दास खिरकी दे
कैं भीतर गए ॥१॥

वार्ता प्रसंग १

बहुर एक दक्षिण देशको ब्राह्मण सेवीहुतो
सो बडो पंडित महादेव जी कौ कृपा पात्र हुतो
सो वा ब्राह्मण कौं महादेव जी कौ साक्षात दर्शन
होतौ सो वह ब्राह्मण नित्य प्रति महादेव जी के
दर्शन करतौ तब जल पान करतौ ऐसौ महादेव

जी कौ भक्त हुतौ सो एक समैं जन्माष्टमी कौ उत्स
व आयौ सो विश्वेश्वर नाथ महादेव जी सेठ पु
रुषोत्तम दास के घर गये जन्माष्टमी कौ उत्सव
देखन कौं सो वा ब्राह्मण ने जन्माष्टमी के उत्सव
के दिना दर्शन न पायौ और नवमी के दिना दुपहर
लों जब सेठ पुरुषोत्तमदास के घर मे महादेव जी
विदा होय के आये तब वा ब्राह्मण ने महादेवजी
कौ दर्शन ‥ पायो तब वा ब्राह्मण ने महादेवजी
सों पूछो जो कालि और आज हम दर्शन दुपहर
लों नाहीं पायौ सो काहे ते तब वा ब्राह्मण सो म
हादेव जी ने कह्यो जो हम कालि सेठ पुरुषोत्तम
दास के घर उत्सव देखन गए हे सो अबही सेठ
पुरुषोत्तम दास के घर ते विदा होय के आवत हैं
तब वा ब्राह्मण ने कही जो सेठ पुरुषोत्तम दास
कौन है जिन के घर तुम उत्सव देखन कौं जात हो
तब महादेव जी ने कह्यो जो बड़े भगवद भक्त हैं
तब वा ब्राह्मण ने कही जो मोहू को भगवद भक्त
करो तब महादेव जी ने कह्यो जो सेठ पुरुषोत्तम
दास के पास तू जाय के नाम लै आउ तब वा ब्रा
ह्मण ने कही जो तुमही मोकों नाम देउ तब महा
देव जी ने कही जो मैं तो तोकों नाम देउंगो सही
परि मेरो दीयो नाम तोकों फलेगो नाहीं ताते तू
सेठ पुरुषोत्तम दास के पास नाम लै आउ वे तोकों
नाम देयगे तब वह ब्राह्मण सेठ पुरुषोत्तम दास
के पास नाम लेबे गयो सो जाय के भीतर खबर

कर वाई जो एक ब्राह्मण आयो है तब सेठ पुरुषो
त्तमदास नें कही जो वैठारो माथो खाली करन
आयो होयगो तब सेठ पुरुषोत्तम दास सेवा
सो पहुंचि के बाहर आये तब वा ब्राह्मण नें दंडोत
कीनी तब सेठ पुरुषोत्तम दास नें कही जो ऐसो स
नुचित क्यों करत हो हम क्षत्री तुम ब्राह्मण ऐसें
यांन घटे है तब वा ब्राह्मण ने सेठ पुरुषोत्तमदास
सों कही जो हमको नाम देउ तब सेठ पुरुषोत्तम
ने कह्यो जो हुं तो नाम नाहीं देउंगो वहोरि ब्राह्मण
ने बहुत आग्रह कीनो परि पुरुषोत्तम दास नें नाम
न दीनो तब वह ब्राह्मण महादेव जी के पास आयो
तब कह्यो जो सेठ पुरुषोत्तम दास नाम नाहीं देत
तब महादेव जीनें कह्यो जो तू फेरि जा हमारो नाम
लीजियो जो मोकों श्री महादेवजीने पठायो है तुम
सों महादेव जीनें कह्यो है तब वह ब्राह्मण फेर से
ठ पुरुषोत्तम दास के पास आयो और कह्यो जो
मोकों महादेव जीनें पठायो है तातें मोकों नाम दे
उ तब सेठ पुरुषोत्तम दास नें वा ब्राह्मण कों नाम
दीयो नाम सुनाय के हाथ जोरि कें श्रीकृष्णस्मरन
कह्यो तब वा ब्राह्मण ने कह्यो जो अब मोकों प्र
नाम क्यों करत हो तब सेठ पुरुषोत्तमदास ने कह्यो
जो अब तुम भगवद भक्त भये सो तुम वंदनीय हो
तुम्हारे और हमारे वंदनीय श्री आचार्य जी महा
प्रभू हैं में तो श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपातें
नाम देत हों पाछें वह ब्राह्मण श्री आचार्य जीम

हाप्रभून के पास आंदल आयौ तब श्री आचार्य श्री
जी महाप्रभून के पास नाम समर्पण करवायौ पाछें
कितनेक दिन रह कें श्री आचार्य जी महाप्रभून के
पंथ पढ़े ॥ ❀

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

बहुरि एक समय सेठ पुरुषोत्तम दास बैठे बैठे मंदि
र वस्त्र करते हुते इतने ही में गोपाल दास बेटा श्री
ठाकुर जी कों सैन भोग सरायवे कों मन्दिर में न्हाय
कें आयौ तब देखें तो सेठ पुरुषोत्तम दास बैठे
बैठे मन्दिर वस्त्र करत हैं तब गोपालदास के
मन में आई जो अब तो सेठ जी वृद्ध भए हैं ताते
में सेवा में तत्पर में होउ तो आछो तब यह बात गो
पाल दास के मन की सेठ पुरुषोत्तम दासने जानि
तब कह्यौ जो बेटा आगें आउ तब गोपाल दास
जाय कें देखें तो वर्ष बीस तथा पच्चीस के बैठे हैं
तब पुरुषोत्तम दास नें कह्यौ जो बेटा यह भगव
दीयन की मन में न ल्यावनी भगवदीय सदा तरुन
हैं परि अवस्था होय ताकों मान दीयौ चाहिये॥

वार्ता प्रसंग ॥ ३ ॥

बहुर एक समय सेठ पुरुषोत्तम दास झाड़ खंड
में मदार मधु सूदन ठाकुर हैं सो पर्वत ऊपर
मन्दिर है पर्वत को नाम मंदार पर्वत है ता ऊ
परते मनुष्य गिरे तो चोट न लगे और अपने स
ब पाप काहू कामना करि गिरै तो देह छूटे पाप

प दूर होय और जो कामना करी होय सो दूसरे
जन्म में सिद्धि होय वह ऐसो स्थल है तहां एक
समय श्री आचार्य जी महाप्रभू पधारे हते तहां
सेठ पुरुषोत्तम दास और एक ब्राह्मण श्रीआ
चार्य जी महाप्रभून को सेवक सो दोउ जने मंदार
मधु सूदन जी के दर्शन कों पर्वत ऊपर चढ़े सो

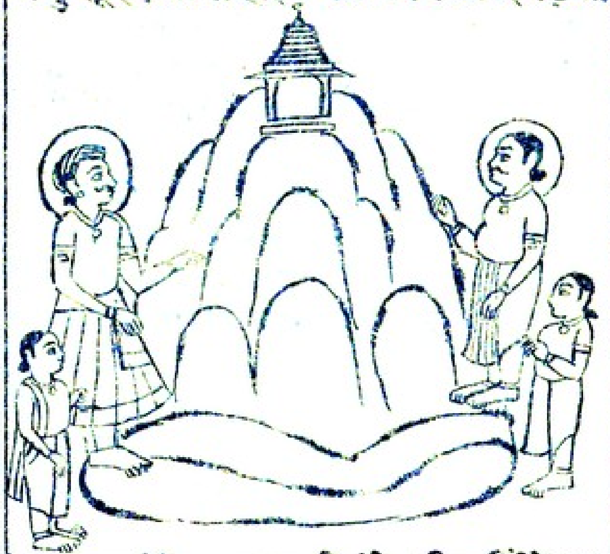

उहां जाय के मधुसूदन जी को दर्शन कीनो पा
छें रात्रि पर गई ताते उहां हीं सोय रहे पाछे रा
त्रि कों एक सिद्ध आयो वह जाति को ब्राह्मण हु
तो वाने सेठ पुरुषोत्तमदास के साथ के ब्राह्मण
सों पूछो जो तुम कौन हो तब वह बोल्यो हम वै
ष्णव हैं श्री आचार्य जी महाप्रभू के सेवक हैं॰

तब वा सिद्ध ब्राह्मण ने कह्यो जो मेरे पास एक म
णि है सो तुम लै जाउ तो लेउ तब वा वैष्णव नें क
ह्यो जो यह मणि कौंन काम आवत है तब सिद्ध ब्रा
ह्मण नें कही जो यह मणि ऐसो है जो मांगे सो देत
है तब वा ब्राह्मण नें कही जो में तो विरक्त हों मैं म
णि लैकें कहा करूं परि मेरे साथ एक सखी है सो
वह गृहस्थ है सो वह सोवत है जो वाकों देउ तो ज
गाऊं तब वा सिद्ध ब्राह्मण ने कही जो जगावो तब वा
वैष्णव ने सेठ पुरुषोत्तम दास कौं जगायो और कही
जो यह ब्राह्मण मणि सो तुम लेउ तब सेठ पु
रुषोत्तम दास नें कही जो यह मणि कौंन कामु आ
वत है तब वा मणि को प्रभाव कह्यो तब सेठ पुरुषो
त्तम दास नें कह्यो जो यह मणि हमारे काम को
नाहीं तातें हम तो न लेंइगे तब सिद्ध ब्राह्मण फिर
गयो तब सेठ पुरुषोत्तम दास के संग ब्राह्मण हतो
तानें सेठ पुरुषोत्तम दास सों कह्यो जो तुम तो गृह
स्थ हो बहुत कुटुम्बी हो तुम्हारे माथे सेवा है तुम
नें मणि क्यों न लीनी तुम को तो मणि लेनो उचित
हो तब सेठ पुरुषोत्तम दास नें कह्यो जो और ब्रा
ह्मण वा वेर में श्री ठाकुर जी कौ तथा श्री आचार्य
जी महा प्रभून कौ आश्रय छोड़िकें कहा मणि को
आश्रय करूं तातें मणि क्यों न लीनी तब वानें क
ह्यो जो मैं तो विरक्त हों मैं मणि लैकें कहा करूं
मोकों जगदीस सेर चून देयगो तब सेठ पुरुषोत्तम
दास नें वा वैष्णव सों कह्यो जो तोकों जगदीस सेर

चूनदेयगी तो मोकों कहा जगदीस दश सेर चून न देयगो जगदीस कें काहू वात की न्यूनता है ऐसें कहि कें दोउ जनेन नें श्री मार्ग न लीनो ते सेठ पुरुषोतमदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हैं ॥ ३ ॥

॥ वार्ता प्रसंग ४ ॥

बहुरि एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू सेठ पुरुषोतम दास के घर पधारे तब दामोदर दास हरिसानी श्री आचार्य जी महाप्रभून के साथ हैं सो श्री आचार्य जी महा प्रभून नें सेठ पुरुषोतम दास के सेव्य श्री ठाकुर जी मदन मोहन को पंचामृत स्नान करवायो और आप पाक करि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो भोग सराय अनोसर करि श्री आचार्य जी महाप्रभून नें आप भोजन कीयें तब दामोदर दास हरिसानी नें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों पूछो जो राज यह कहा तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो यह मेरी आज्ञा तें नाम देत हैं तथापि श्री को याको दूसरो मर्य्यादा मार्ग चाहिये सो ये सेठ पुरुषोतम दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं सो अब कहां तांई लिखियें ॥ ४ ॥

॥ वार्ता प्रसंग ५ ॥

वैष्णव ॥ ८ ॥ सम्बध ४१

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून

के सेवक सेठ पुरुषोत्तम दा
स की बेटी रुक्मनी १
ताकी वार्ता ॥

सो एक समय श्री गुसांईजी कासी में पधारे हु
ते तब तहां सूर्य्य ग्रहण आयो तब श्री गुसांई
जी मनकर्णिका स्नान कों पधारे तब रुक्मनी हू
श्री मदन मोहन जी कौं स्नान कराय कें आप म
नकर्णिका स्नान कौं गई श्री गुसांई जी पधारे जान
कें तब श्री गुसांईजी सों वैष्णवन नें कह्यो जो म
हाराज सेठ पुरुषोत्तमदास की बेटी रुक्मनी आ
ई है तब श्री गुसांईजीनें कह्यो जो रुक्मनी आगें
आउ तब आपने पास बुलाय लीनी तब श्री गुसांई
जीने पूछो जो तू कितेक दिन पाछें गंगास्नान कूं आई

है तब रुक्मनी नें कह्यौ जो महाराज चौबीस वर्ष पर्य्यंत पाछें आई हौं तब यह सुनि कें श्री गुसांई जी कौं हृदौ भरि आयौ और कह्यौ जो ऐसो भाग्यदीय जिन कौ एक क्षण हूं अंतकाल नाहीं है जो गंगास्नान कौं आवे श्री गुसांई जी बहुत प्रसन्न भये और रुक्मनी कौं देखि कें श्री गुसांई जी कहते जो याके श्री ठाकुर जी आरोगत कब होयंगे ॥

वार्त्ता प्रसंग १

बहुर छत्री लोग सब कार्त्तिक मास में गंगास्नान करते तब रुक्मनी नें सेठ पुरुषोत्तमदास सों कह्यौ जो तुम आज्ञा करौ तो मैं हूं कार्त्तिक स्नान करूं तब सेठ पुरुषोत्तमदास ने कह्यौ जो भलें हूं स्नान करि जो चाहिये सो लीजिये तब रुक्मनी ने कह्यौ जो खांड घृत दिवाय देउ मेरा तौ घर मैं है तब सेठ पुरुषोत्तमदास नें खांड घृत दिवाय दीयो तब रुक्मनी पहर रात्रि पिछली रहे जब उठ सोनें तन सामग्री करि कें समयानुसार भोग लों श्री मदन मोहन जी कौं समर्पे फिर उत्थापन सों सामग्री करै सो सेन भोग लों समर्पे ऐसे कार्त्तिक मास में करे और वैशाख में शीतल सामग्री करै श्री ठाकुर जी कौं आरोगावै सो प्रशाद वैष्णवन कौं लिवावे या भांत सों करै सो एक दिन सेठ पुरुषोत्तमदास नें रुक्मनी सों कही जो रुक्मनी तू स्नान कब करत है तोकों तान कबहू देखियत नाहीं तू कार्त्तिक कौन बेर न्हाति है तब रुक्मनी ने क-

हौ जो मोकों स्नान मैं कहा काम है मैं तौ याभां-
ति सों करत हौं तब यह सुनि कैं सेठ पुरुषोत्तमदा
स बहुत प्रसन्न भए श्री गुसांई जी आप श्री मुख
तैं सराहना करते रुक्मनी ऐसी कृपा पात्र भगव
दीय ही ॥

वार्ता प्रसंग २

बहुरि कितेक दिन मैं रुक्मनी की देह असमर्थ
भई तब रुक्मनी नैं कह्यौ जो अब यह देह छूटै तौ
भलौ है श्री ठाकुर जी की सेवा न होय आवै तौ य
ह देह कौन काम की है तब कितेक दिन पाछें रु-
क्मनी देह छूटी सो एक वैष्णव नैं श्री गुसांई जी सों
कही जो महाराज रुक्मनी नें गङ्गा पाई तब श्री गु-
सांई जी श्री मुख तें कहें जो ऐसें मति कहौ जो रु-
क्मनी नैं गङ्गा पाई ऐसें कहौ रुक्मनी गङ्गा ने पा-
ई वह रुक्मनी श्री आचार्य जी महाप्रभून की ऐसी
कृपा पात्र भगवदीय ही तातें इनकी वार्ता अनिर्-
वचनीय है सो कहां तांई लिखियै ॥

वार्ता प्रसंग २।

वैष्णव ॥ ८ ॥ सम्बन्ध ५४

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक सेठ पुरुषोत्तमदास कौ बेटा गोपालदास ताकी वार्ता ॥

सो गोपालदास सों श्री मदनमोहन जी सानुभा
व हुते जो चहियै सो मांगि लेते ऐसें सदैव कृपा क

रते वहुरि गोपाल दास कीर्तन वहुत करते औ
र गोपाल दास की देह आसन्नि भयी तव भगव
द्नाम को उच्चारण करते तव श्री मदनमोहनजी
आप हुंकारी देते औसी कृपा करते श्री आचार्य
जी महाप्रभून के ग्रंथ सुवोधिनी जी श्री भागवत
निवंध और रहस्य ग्रंथ सो सव पाठ करते भग
वद लीला में मग्न रहते सदैव लीला को विचार
करते औसें करि कें सर्व काल व्यतीत कीयो।
पाछें देह छूटी तव श्री गुसांई जीनें सुनी जो गो।
पालदास की देह छूटी है तव आप श्री मुखते
कही जो गोपालदास की सराहना करी सो वे गो
पालदास औसें भगवदीय हैं सो ये वार्ता सव
सेठ पुरुषोत्तम दास के परिवार की भई तातें इन
की वार्ता को पार नाहीं सो अव कहां तांई लिखि
ये ॥ ० ॥ ४ ॥

वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ १९ ॥ सम्वंध ॥ ४५

अव श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक रामदास सार
स्वत ब्राह्मण ता०
की वार्ता है

सो वे रामदास श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भां
ति सों करते अपरस में जल भरते वीड़ा हू अप
रस में राखते या प्रकार सों करते सो रामदास के
पास द्रव्य वहुत हुतो सो कितेक दिन पाछें वह
द्रव्य खरच भयो थोरो सो द्रव्य आय रह्यो तव

मन में विचारी जो कछु आवत होय तौ भलौ है त
व तातिन ते वह द्रव्य तातीन कों व्याज दीनों तव
व्याज वहुत आमन लाग्यो लोभ के लिये तातीन
कों व्यौपार कीयौ पूरव देश में फटे वस्त्र वुनत हैं
तिन सों तातो कहत हैं तव राम दास जी के सेव्य श्री
ठाकुर जी श्री नवनीत प्रिया जीने कह्यौ रामदास
तूतौ हम कौं तातीन पर राखत है तव रामदासजी
यह वात सुनि के चौंकि उठे और कह्यौ जो महारा
ज मोसों चूक परी तव रामदास जी तातीन पर गए
और कह्यौ जो मेरो द्रव्य देउ तव उन तातीन नें
रामदास जीसों पूछौ जो यह कारन कहा है सो द्रव्य
मांगत हो तव रामदास जी नें कह्यौ जो मैं कहा क
रूं मो कों तौ लरिका संग काम पर्यो है तातें लरि
का को मन राख्यो चाहिये तव तातीन नें कह्यौ
जो हम द्रव्य इक ठोरो करत हैं तव कितेक दिन
पाछें उन तातीन नें द्रव्य दीयो सो द्रव्य लैकें घर आ
ए फेर वैसें ही सेवा करन लागे सो सव द्रव्य निवर्यो
तव वनियांन की दूकान ते उचापति करन लागे त
व ऋण वहुत है गयो तव उचापति वनियां की
दूकान ते दूर कीनी और वनियां की दूकान ते उ
चापति करन लागे परि वा वनियां की हाट आगे
होय कें निकसते नाहीं और गैल होय कै जाते तव
एक दिन वनियां नें राम दास सों कही जो भलो तुम
मेरी दुकान के आगे होय कें नाहीं निकसत हो औ
र उचापति नाहीं करत तो मेरो लेखो करि कें मेरो

पैसा चुकाय देउ नगादो बहुत कारडो कीयो तब श्री ठाकुर जी रामदास जी को स्वरूप धारि के वा बनिया की हाट ऊपर गए और श्री मुख ते कह्यो जो लेखो लाउ पैसा चुकाय देहुं तब वा बनिया ने बही देखि लेखो करि के पैसा चुकाय दीनो रुपैया एक सौ अधिक दीए श्री ठाकुर जी आप श्री हस्त सों लिखि आये परि यह बात रामदास जी नें न जानी तब एक दिन रामदास जी को बुलायवे वैष्णव आए तब उन वैष्णवन के पाछें पाछें रामदास जी गए सो रामदास जी वा बनियां की दुकान के आगे होय के निकसे तब आता कानी देके निकसे इतने में वा बनियां नें कही जो रामदास जी तुम मेरी हाट ते उचापति नाहीं करत सो तो मेरो अभाग्य है परि तुमारो मांगे अधिक द्रव्य है सो तो उठाय लेउ तब रामदास जी ने कह्यो जो उहां ते फिर आवत हों तब रामदास नें मन में विचार्यो जो मेंनें याकूं कछु दीयो नाहीं और यह कहत है जो तुम्हारो अधिक द्रव्य है सो तो उठाय लेउ यह कारन कहा है परि जानि यत है जो यह श्री ठाकुर जी की ओर ते काम भयो है पाछें रामदास जी वैष्णवन के घर ते आये तब वा बनियां की हाट पै जाय के लेखो मांगो जो लेख्यो लाउ तब वा बनिया नें कह्यो जो कहा लेखो देखोगे तब वा बनियां ने बही दिखाई तब वा बही में रामदास जी नें श्री ठाकुर जी के हस्ताक्षर देखे तब चुप करि रहे तब घर

आय रामदास जी नें स्त्री सों कही जो हूं नौ घर में नाहीं रहूंगो चाकरी करूंगो नव सिपाहगीरी कौ विचार कीयौ नव घोड़ा मोल लीयौ सव हथियार बांधन लागे नव जल और घोड़ा अपरस में लेत हे सो अपरस छूटो विना अपरस में लेन लागे सो किंन क दिन पाछें रामदास जी अडैल आये सो हथियार बांधे ही जाय कें श्री आचार्य जी महाप्रभून के

दर्शन कीने दंडवत कीनी नव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री मुख ने धन्य धन्य कह्यौ जो राम दास तू धन्य हे नव और वैष्णव पास बेठे हे सो कहन लागे जो महाराज अब याकों धन्य क्यों कहत हौ अब तो यह अपरसता मों नाहीं रहत हे सि

पाहीन में चाकरी करत हैं तव श्री आचार्य जी म
हा प्रभून ने कही जो यह धन्य याते हैं श्री ठाकुर
जी कौं श्रम नाहीं करवावत याकी वरावर काउ
धीरज वंत नाहीं श्री आचार्य जी महाप्रभू आप ना
समें गंगास्नान कों पधारे तव मार्ग में एक खाड़
देख्यो तव श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो
यह खाड़ अजहू भर्यो नाहीं सो इतनों कहत ही
वैस्नव सव खाड़ भरन लागे वागो पहरें ही तव रा
मदास जीहू एक टोकरा लैकें खाड़ भरन लागे त
व श्री आचार्य जी महा प्रभू स्नान करि कें पधारे
तव तांई खाड़ भर दीनों तव रामदास जी कों देखि
कें श्री महा प्रभू जी वहुत प्रसन्न भए ॥

वार्ता प्रसंग । २

और रामदास जी कें कछु संतत न हुती तव
स्त्रीनें रामदास जी सों कह्यो जो तुम और विवाह
करौ तौ तुम्हारे वालक होय तव रामदास जी नें क
ह्यो जो हम कों तो वालक की इच्छा नाहीं तव स्त्री
ने कह्यो जो मोकों तो वालक की इच्छा है तव रा
मदास जी नें कह्यो जो तो कों वालक की इच्छा है
तो हमारे श्री नवनीत प्रिया जी की वाल भाव सों
सेवा करि जैसें वालक कूं खवाइये प्याइये खि
लाइये हित करिये तैसे तुम श्री नवनीत प्रिया जी
को लडावो तव तेरें वालक होयगो तव रामदास
जी की स्त्री नें श्री नवनीत प्रिया जी की वाल भा
व सों सेवा करी सो या प्रकार सों सेवा करि जो वा

लक भयौ है सो वे रामदासजी श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं सो इनकी वार्ता अब कहां तांई लिखिये ॥

वार्ताप्रसंग २

वैष्णव ॥७॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू
न के सेवक गदाधर दास॰
सारस्वत ब्राह्मण कडा
में रहते तिनकी
वार्त्ता ।

सो गदाधर दास के माथे श्री मदनमोहनजी की सेवा हती सो श्री ठाकुरजी बड़े गोर इने सो नित्य

प्रान जैसो उनके जिजमान के में आवतो तैसो श्री
ठाकुर जी कों समर्पते सो एक दिन जिजमान के में
कछु आयो नाहीं तब जल ही छान कें समर्प्यो परि
मन में बहुत खेद भयो छाती में आगि सी उठी ऐसें
करत रात्रि पर गई तब एक जिजमान द्वार पै आ
य पुकार्यो और कह्यो जो किवाड़ खोलो तब गदा
धर दास नें किवाड़ खोले तब वा जिजमान नें एक
वागो और चार रुपैया और कछु सामग्री गदाधर
दास कों दीये और कह्यो जो आज मेरे पिता को श्रा
द्ध दिन हुतो ताको यह दक्षिणा लेउ तब गदाधर
दास नें सीधो सो वागो सामग्री घर में धरि कें आ
प बाज़ार में गये सो एक हलवाई मिठाई आछी क
रत हुतो ताकी हाट पे गए तब जाय कें वा हलवाई
सों पूछी जो तेरे मिठाई आछी है तब वा हलवाई नें कही
जो मिठाई जलेबी अबही कीनी है या मैंने बेची
नाहीं तब जलेबी तुलाय मोल दै कें घर आए त
ब गदाधर दास आप कें स्नान करि श्री ठाकुर जी
कों भोग समर्प्यो समया नुसार भोग सराय अनो
सर करकें पाछें वैष्णवन कों बुलाय महाप्रशाद
सबन कों लिवायो सो अति अलौकिक स्वाद
भयो ऐसो जो कछु कह्यो न जाय सो सब महा प्र
शाद वैष्णवन कों लिवायो और आप भूखे ही सो
य रहे पाछें सवारें उठि सीधो सामग्री लाए तब स्ना
न करि रसोई करी श्री ठाकुर जी सेवा शृंगार करि
श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो भोग सराय वैष्ण-

व फेर बुलाये जब वैष्णव प्रशाद लेने कों आगे बैठे तब पूछन लागे जो रात्रि को महा प्रशाद है सनें भोगों सो बहुत स्वाद भयो सो कैसो कोर सम र्प्यो तब गदाधर दास नें सब प्रकार कह्यो तब स ब वैष्णव बहुत प्रसन्न भए और कह्यो जो गदाध र दास नें सत्य कह्यो ॥

॥ वार्ता प्रसंग २

बहुर एक दिन गदाधर दास नें सब वैष्णव महा प्रसाद कों बुलाए हुते परि साक भाजन कछु न हुतो तब गदाधर दास नें कह्यो जो ऐसो कोइ वै ष्णव है सो साक ले आवे तब तिन में एक वैष्ण व वेणीदास को भाई माधौदास सो बडो विषयी हुतो तातें वेश्या घर में राखी हुती तिन नें कह्यो सो में ले आऊंगो तब गदाधर दास नें कह्यो जो भ ले लै आवो तब माधोदास गयो सो बथुवा की भाजी ले आयो सो माधो दास नें ताको भांतिसों दीनी रसोई में पाछे रसोई सिद्ध भई तब श्रीठा कुर जी को भोग समर्प्यो पाछे भोग सराय अनो सर कर के वैष्णवन कों महा प्रशाद लेन बेठाए पारि वह भाजी अति स्वाद भई तब गदाधर दास ने माधौ दास कों आसीर्वाद दियो जो तू हरिभक्त हृढ होयगो पाछे गदाधर दास के आसीर्वाद ते माधोदास भलो वैष्णव भयो सो वे गदाधरदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भ गवदीय हुते तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं तातें

इनकी वार्त्ता अब कहां तांई लिखिये॥
वार्त्ता प्रसंग १॥
वैस्नव॥८॥ सम्बन्ध॥४८
अब श्री आचार्य जी महा प्रभून
के सेवक वेणीदास माधौ
दास दोऊ भाई ति॰
न की वार्त्ता

सो बड़े भाई वेणीदास छोटे भाई माधौदास सो माधोदास वही जो गदाधर दास के घर बथुवा की भाजी लै आयो हो सो माधोदास बड़ो विषयी हतो तानें घर में वेश्या राखी हती ताते सब वैष्णव माधो दास की निंदा करते सो बात श्री आचार्य जी महा प्रभून नें सुनी जो माधोदास बड़ो विषयी भयो है घर में वेस्या राखी है सो एक दिन श्री आचार्य जी महा प्रभून नें माधौ दास सों पूछो जो क्यों रे माधो॰ दास तेनें घर में वेश्या राखी है तब माधौ दास नें॰ श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कह्यो जो महाराज मेरो मन आसक्त भयो है तासों राखी है तब श्री आ चार्य जी महा प्रभू आप चुप कर रहे सो तीन वेर॰ आपने माधौ दास सों पूछो तब तीन्यो बेर माधौ दास ने योंही कही जो महाराज मेरो मन वासों॰ आशक्ति भयो है तासों राखी है तब वैस्नवन नें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कही जो महाराज अब लों तो आप की कानि ही परि अब तो तुम्हारे आ गें कहेगो तासों तुम नें तो कछू न कही तब श्री आ

चार्य जी महाप्रभून नें उन वैष्णवन मां कही जो वा
कौ मन वासों आसक्त भयो है सो श्री ठाकुर जी कौं
फेर तें कितनो बार लागेगो और गदाधरदासनें
याकों आसीर्वाद दीयो है जो याकों दृढ भक्ति होय
गी सो यह माधोदास है तब किनेक दिन पाछें मा
धोदास की बुद्धि श्री ठाकुर जी ने फेरी तब तौ वानें
वेश्या दूर कीनी पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून
की कृपा ते माधोदास भलो वैष्णव भयो ॥

वार्ता प्रसंग १

बहुर किनेक दिन पाछें एक माला मोतीनकी
बहुत सुन्दर बहुत मोल की विकवे कों आई सो दे
ख कें माधोदासने बड़े भाई वेणीदास सों कह्यो
जो यह माला श्री ठाकुर जी के कंठ लायक है त
ब बड़े भाई वेणीदासनें कही जो यह माला कौन का
हा है हमारे पास जो है सो सब श्री नवनीत प्रिया
जी कौ है ऐसें कहि कें बात टार दीनी तब माधो
दास नें कही जो अपने घर में है सो सब ठाकुर जी
को है तो माला क्यों न लेउ तब बड़े भाई वेणीदा
स ने कही जो हम ग्रहस्थ हैं हम को विवाह का
ज सब करनों है ऐसें क्यों बनें तब छोटे भाई मा
धोदास नें कही जो हूं तो न्यारो होउंगो सो न्यारो
भयो द्रव्य सब बांट लीनो सो द्रव्य की वस्तु लैकें
दक्षिण गयो तब वस्तु सब वेची तब व्यवहार क
र कें द्रव्य बहुत उपज्यो तब एक माला मोतीनु
की पहिले मोल ते उत्तमानम लीनी सो माला ले

कैं घर कों चले सो आवत बाट में एक बड़ी नदी
आई तब नाव में बैठे तब नवनीत प्रिया जी ला
ल छड़ी हाथ में लेकर आये और कह्यो जो नाव
डुबाऊं तब माधौदास नें कह्यो जो निजेच्छातः करि
ष्यति: तब श्री ठाकुर जी नें कही जो तू कौं गयो

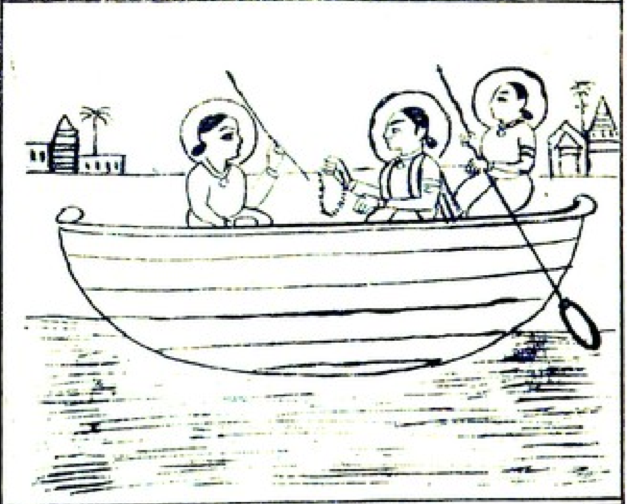

हो तब माधौ दास नें कही जो महाराज में माला
लैन गयो हो तब श्री नवनीत प्रिया जीनें कह्यो
जो हमारे का माला न हुती हमारे माला बहुतेरी
हैं तब माधोदास नें कह्यो जो तुम्हारें माला ब
हुतेरी हैं पर सेवक कों तो उपाय करनो तब ना
वडूबने ने रही जितने मनुष्य नाव में बैठे हुते ते
सब हलकल करन लागे और माधोदास कों।

मन प्रसन्न हुतो तब सबन के मन में आई जो एब
ड़े महा पुरुष हैं पाछें माधोदास उहांते घर आये
तब श्री आचार्य जी महा प्रभून कों दंडवत कीनी
और हाथ में माला दीनी तब श्री आचार्य जी म-
हा प्रभून नें कही जो नाव डूबवेते कैसें रही तब मा
धोदास ने सब समाचार कहे तब और वैष्णव पा
स बैठे हुते तिननें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों-
कही जो वही माधोदास है जो श्री महाप्रभून की
कृपा ते श्री ठाकुर जी ने माधोदास को मन फेर्यो
और भगवद भाव उत्पन्न भयो आस्य ऊपर आ
सक्ति ना हुती सो श्री ठाकुर जी के ऊपर भई सो-
माधोदास ऐसे भगवदीय हैं तातें इन बेणीदा-
स माधोदास की वार्ता को पार नाहीं सो इनकी
वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥२॥ वैष्णव ॥८॥
अब श्री आचार्य जी महा प्रभून
के सेवक हरिवंश पाठक
सारस्वत ब्राह्मण ब-
नारस में रहत ॥
तिनकी वार्ता

सो वे हरिवंश पाठक पटना में गये हे सो वहां
के हाकिम सों बहुत मिलाप हुतो सो वा हाकिम
अपने मन में कहे जो ए मेरे पास कछु मांगे तो मैं
इन कों देउं पर वे कछु मांगे नहीं यों करत डोल
उत्सव के दिन है रहे तब अपने सेव्य ठाकुर जी हु

तै तिनने स्वप्न में जताई जो तू मोकों डोल तू झु
लावैगो। तब हरिवंश पाठक नें मन में विचास्यो जो
अब कहा करूं तब हरिवंश पाठक हाकिम पास
गये सो जाय कें कही जो आप के पास कछु मांग
न आयो हूं सो मोकों दीयो चाहिये तब राजा ने क
ही जो कहा चाहिये तब हरिवंश पाठक नें कह्यो
जो मोकों दिन द्वै में बनारस पहुंचनो है तब हाकि
म नें कह्यो जो भलो तब हाकिम नें घोड़ा और मनु
ष्य साथ दीये पैंडे में डांक चोकी बनाई ऐसे कर
न अपने घर आये पाछें आप मन्दिर में आय कें
डोल सिद्ध कीयो डोल की सामग्री सब सिद्ध क
रकें पाछें श्री ठाकुर जी कों डोल में बैठाये वहते-

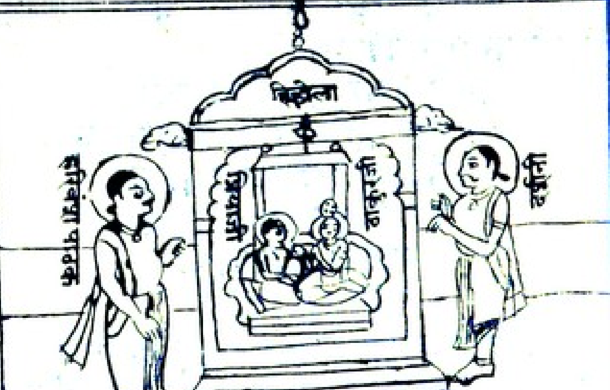

सुख भयो सो थोरे से दिन पाछें फिर पटना गये त
व हाकिम ने कही जो तुम को ऐसी कहा जलदी
हुती। तब हरि वंश पाठक नें कही जो कछु काम
हुतौ परि मन की बात कछु न कही सो ये हरिवं
श पाठक श्री आचार्य जी महा प्रभून के ऐसे कृ
पापात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता अनिर्वच
नीय है सो कहां तांई लिखियें ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैस्नव १०॥ संबंध ५२

अब श्री आचार्य जी महा प्रभू
न के सेवक गोविंद दा
स भल्ला ताकी वार्ता

सो गोविंद दास भल्ला की गांठि में द्रव्य बहुत
हुतो सो श्री आचार्य महा प्रभून के सेवक भये त
ब गोविंद दास ने श्री आचार्य जी महाप्रभून सों
पूछो जो महा राज मेरी गांठि में द्रव्य है सो मैं क
हा करूं तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो
जो श्री ठाकुर जी की सेवा करि तब गोविंद दास
ने कह्यौ जो महाराज सेवा कैसें करूं स्त्री अनु
कूल नाहीं तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें क
ह्यौ जो तू स्त्री को त्याग करि तब गोविंद दास
ने स्त्री को त्याग कीयो पाछें कह्यो जो महा राज द्र
व्य को कहा करूं तब श्री आचार्य जी महा प्रभून
नें कह्यो जो अब द्रव्य को चार विभाग करि तब
गोविंद दास नें द्रव्य के चार बट कीये तब फेरि क
ह्यौ जो महाराज कहा आज्ञा है तब श्री आचार्य

जी महा प्रभून ने कह्यो जो विभाग तो श्री नाथ जी
कौं समर्पि और एक विभाग अपनी स्त्री कौं दै
और एक विभाग सेवा के लिये तू राखि तब गोविं
द दास नें कही जो महा राज करू आप अंगीकार
करिये तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो
जो भलो एक विभाग हमैं दै तब सब विभाग जहां
के तहां देकें अपने वट को द्रव्य लेकें आप महा
वन आय रहे सो महाप्रसाद वैष्णवन कौं लिवा
वते वैष्णव न मिले तो गायन कौं खवावते तामें
ते आप रंचक हूं न लेते आप न्यारी रोटी करि
भोग समर्पि के लेते ऐसी भांति सों सेवा करते
सो सब द्रव्य निवट्यो तब श्री गोवर्द्धन नाथ जी
की सेवा में आय रहे तब श्री गोवर्द्धन नाथजी
की परि चारगी करते रसोई की टहल सब कर
ते दोऊ वार के पात्र मांजते और रात्रि डेढ़ तथा
सवा पहर पाछली रहती तब उठते सो गागरि
तहां तें लेकें चलते सो मथुरा में विश्रांत घाट पै
स्नान करि कें श्री यमुना जल की गागरि भरि कें
चलते सो राज भोग पहिले आय पहुंचते वहां
पात्र मांजि रसोई पोति अपनी सब सेवा सों प
हुंच कें नीचे आवते पाछें तिलक पोंछि माला
उतार गांठि बांधि कें आस पास के गामन तें भि
क्षा मांगि लावते सो सेर चार पांच को आहार क
रते सो आहार माफ़िक जुरतो तब आवतो तब
आप पास रोटी करि श्री नाथ जी की ध्वजा कें

सन्मुख दिखाय तामें चरणोदक मिलाय प्रशाद ले
के ऐसें निर्वाह करते तव ऐसी भांति करत बहुत दि
न बीते परि यह बात श्री नाथ जी कौं न भावै तव श्री
नाथ जीनें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कह्यो जो
तुम्हारो एक सेवक मो कों बहुत दुःख देत है तव श्री
आचार्य जी महा प्रभून अडेल ते चले सो आगरे में
आए तव तहा के वैष्णव सों श्री आचार्य जी महा
प्रभून नें पूछो जो श्री ठाकुर जी किन रुठाए हैं तव
इन वैष्णवन नें कही जो महा राज हम तो कछू जा
नत नाहीं तव वहां ते श्री आचार्य जी महा प्रभू म
थुरा पधारे तव मथुरा के वैष्णवन सों श्री आचार्य
जी महा प्रभून नें पूछो जो श्री ठाकुर जी किन-
रुठाए हैं तव तहां के वैष्णवन नें कह्यो जो महा
राज हम तो कछू समझत नाहीं तव श्री आचार्य
जी महा प्रभू उहां ते श्री जीद्वार पधारे तव श्रीनाथ
जी के दोउ कपोल हाथन सों छुई के कह्यो जो-
बावा अनमने कैसें हो तव कही जो तुम्हारो से
वक मोकों बहुत खिजावत है तव श्री आचा-
र्य जी महा प्रभूननें सब सेवकन सों पूछो जो तुम
कहा कहा सेवा करत हो और कहा प्रसाद लेत हो
तव सबन नें अपनी अपनी सेवा कही और प्रसाद
लेवे को प्रकार कह्यो पाछें गोविंद दास सों पूछो
जो तू कहा सेवा करत है तव जो सेवा करत हुतो-
सो सब कही और प्रसाद लेवे को प्रकार कह्यो
सो सब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें सुनी तव अ-

यने मन में जानी जो इन रुठाए हैं तब श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें गोविंद दास भल्ला सों कही जो
तुम श्री ठाकुर जी की रसोई में प्रसाद लेउ तब गो
विंद दास ने कह्यौ देव अंस कैसें लेउ तब श्री आ
चार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो तू हमारी रसोई
में प्रशाद लै तब गोविंद दास ने कह्यो गुरु अंस
कैसें लेउ तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यो
जो तू सेवा मति करै तब गोविंददास श्री अहंकार
सों सेवा छोडि कें मथुरा गए सो केसोराय जी
की सेवा को इजारो पठान के पास ते लीयो तब
सेवा करन लागो सो एक बार श्री केसोराय जी
की सिज्या निवार ते बुनाई सो सिज्या बहुत अ
द्भुत भई तब श्री केसोराय जी वा सिज्या के ऊप
र पोढन लागे तब तैसी ही निवार वा गाम के हा
किम नें बुनवाई परि वह निवार वैसी न भई तब
वा कारीगर नें कही जो वह निवार तो श्री ठाकुर
जी की है तब हाकिम नें कही जो वह निवार मैं
देखूंगो पाछें हाकिम श्री ठाकुर जी कें दिवाले
में जाय कै सिज्या ऊपर चढि बैठ्यो सो गोविंद
दास नें सुनी तब गोविंददास नें आय कें गुप्ती ले
कें हाकिम को गारी दीनी जो तू कौंन है सो हमारे
श्री ठाकुर जी की सिज्या ऊपर बैठ्यो है ऐसें वा
हाकिम कौं ठौर मार्यौ तब हाकिम के मनुष्यन
नें गोविंददास को ठौर मार्यौ सो यह बात श्री आ
चार्य जी महाप्रभून के आगे काहू वैष्णव नें जाय

कही और कह्यो जो ऐसी गति वैष्नव कों क्यों हू भिये तब श्री आचार्य जी महा प्रभून ने कह्यो जो या के परलोक में तो कछु हानि नाहीं परि इन मेरी आज्ञा न मानी तासों याकी देह या भांति सों छूटी है यह गोबिंद दास पहिले जन्म में श्री नंदरायजी को भैंसा हुतो याते माटी पानी वहन दोयो सो वे गोविंद दास भल्ला श्री आचार्य जी महा प्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं सो कहां ताईं लिखिये ॥

वार्त्ता प्रसंग १ ॥

वैष्नव ॥५१॥ सबन्ध ॥५३

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून की सेवक अम्मा क्षत्राणी जो ।

कडुसे में रहती तिन की वार्त्ता

सो अम्मा के दोय बेटा हते सो दोऊ परम वैष्नव हुते आप वैष्नव हुती और वांके लरिका वासों अम्मा कहते और श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करती सो वाके सेव्य ठाकुर जी श्री बालकृष्ण जी वासों अम्मा कहते सो कितेक दिन पाछे एक बेटा वाको मर गयो तब श्री ठाकुर जी की रसोई करि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्पे समयानुसार भोग सराय पाछे रोवन लागी तब अम्मा को रोवन देखि के श्री ठाकुर जी खेद पावन लागे श्री ठाकुर जी कहे अम्मा तू रोवे मति परि वह रोवन ने रहे नाहीं

ऐसें करत वाकौ दूसरोहू बेटा मरगयौ तब तौ बहुत रोमन लागी तब श्री ठाकुर जी वाकौं रोवेन सों राखें और कहें अम्मा तू मति रोवें तब अम्मा रोवन ते रहे नाहीं तब श्री ठाकुर जीनें श्री गुसांई जी सों कही जो अम्मा रोवति है सो मैं बहुत खेद पावत हौं तब श्री गुसांई जी अम्मा के घर पधारे और कही जो अम्मा तू मति रोवे श्री ठाकुर जी खेद पावत हैं तब रोवन ते रही और अम्मा सेवा को सब साज करि कें पाछें स्नान करि कें पाछें मन्दिर में जाय कें दोऊ हाथ सों सौंधो लगाय कें श्री ठाकुर जी कें लगावे या भांति सों सेवा आछी तरह करती ॥

वार्ता प्रसंग १

बहुर एक दिन दूध कौ कटोरा श्री ठाकुरजी के आगे भर राख्यो हतो ता समय श्री गुसांई जी अम्मा के घर पधारे मन्दिर कौ टेरा सरकाय कें दर्शन करन लागे तब श्री गुसांई जी देखें तो ठाकुर जी दूध पीवत हैं तब श्री गुसांई जी देखि कें पाछें फिर आये तब अम्मा नें कही जो बाबा पाछें क्यों फिर आए तब श्री गुसांई जी ने कही जो श्री ठाकुर जी दूध पावत हैं तब अम्मा ने कही जो श्री ठाकुर जी तो लरिका हैं तुम कहा जानत नाहीं तब श्री गुसांई जी दर्शन करि कें पाछें फिरे और अम्मा सों श्री गुसांई जीनें कह्यो जो यह दूध हमारे घर पठाय दीजियो तब अम्मा नें कह्यो जो राज आपही तो सें

रोगन वारे भावै तौ इहां आरोगो भावै उहां आरो गो पाछें श्री गुसांई जी आपनै घर पधारे तब अम्मा नें वह दूध श्री गुसांई जी के घर पठायदी यौ सो अम्मा सौं श्री ठाकुर जी ऐसें मानु भाव हते प्रत्यक्ष वार्ता करते जो वस्तु चहिये सो मांगि लेते सो अम्मा श्री आचार्य जी महाप्रभून की ऐसी कृपा पात्र भगवदीय ही तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं सो अब कहां तांई लिखियै ॥

वार्ता प्रसंग २

वैष्णव ॥१२॥ सम्बन्ध ५४

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक गज्जन धावन

दाची आगार के वा।
भीतरिन्की वार्ता।

सो गज्जन धावन श्री नवनीत प्रिया जी को मे चा नी को भांन मों करते श्री ठाकुर जी सानु भाव हुते गज्जन के साथ श्री नवनीत प्रिया जी खेलते गज्जन कों कबहूं गाय करते कबहूं बछरा करते तब गाय कौ मुख अपने पीताम्बर सों पोंछते तब बछरा करते तब पकर राखते चलन न देते और जब घोरा करते तब पीठ ऊपर असवारी करते· जब हाथी करते तब ग्रीवा ऊपर असवारी करते·

श्री ठाकुर जी का गज्जन धावन को गाय करना॥

ऐसें करत गज्जन के घूंटरू घिसि गये ऐसी कृपा श्री नवनीत प्रिया जी·· गज्जन धावन के ऊपर ऐ·

सी करने भोग सामिग्री जो चहिये सो मांगि लेने औ
सी कितनीक वार्ता हैं सो कहां तांई लिखिये और
एक दिन श्री नवनीत प्रिया जी ने गज्जन धावन सों
कही जो मोकों श्री गुसांई जी श्री आचार्य जी महा
प्रभून के घर पधराय ता समय श्री आचार्य जी महा
प्रभू गोकुल में हते ताहां गज्जन आय कें श्री आचा
र्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो महाराज श्री नवनीत
प्रिया जी की ऐसी आज्ञा भई है जो मोकूं श्री आ-
चार्य जी महाप्रभून के पास पधराय तव श्री आचा
र्य जी महाप्रभून नें कही जो भलो पधराय तव ग
ज्जन धावन नें श्री नवनीत प्रिया जी श्री आचार्यजी
महा प्रभून के मन्दिर में पधरायें तव श्री आचार्य जी
महा प्रभून नें जैसो प्रस्ताव वन्यो तैसें पधराय भोग
समर्प्यो पाछें रात्रि कों आप वहुत सोंधो लगाय कें
श्री नवनीत प्रिया जी कों अपनी सिज्या ऊपर ले
पोढ़े दूसरे दिन नई सिज्या करवाई ता ऊपर पोढ़े
परि वह सिज्या छोटी भई तव श्री नवनीत प्रिया
जी नें कह्यो जो हूं तो या सिज्या ऊपर न पोढ़ंगो तव
श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कही जो ऐसें कैसें
वनें तव श्री नवनीत प्रिया जी नें कही जो कछू वाध
क नाहीं है तव श्री आचार्य जी महाप्रभू आप सों-
धों लगाय कें पास ही ले पोढ़े पाछें दूसरे दिन
सिज्या वड़ी करवाई ता पर पोढ़ाए तव पोढ़े ता
पाछें थोड़े से दिन रहिकें श्री आचार्यजी महाप्रभू श्री
गोकुल तें अड़ैल को पधारे तव गज्जन हू साथ ग

यो गज्जन धावन विना श्री नवनीत प्रिया जी एक
क्षण हूं न रहते ऐसें ही नवनीत प्रिया विना गज्ज
न एक क्षण न रहते तव एक दिन श्री नवनीत प्रि
या जी के लिये श्री अक्का जी ने गज्जन धावन को
पान लेवे पठायो कह्यो जो पान लै आवो तव
गज्जन ऐसें तो कह न सक्यो जो श्री नवनीत प्रि
याजी मोसों हिले हैं सो में कैसें जाऊं ताते अन
बोल्यो पान लैन को उठि चल्यो सो थोरी सी दूर
गयौ इतनें में ज्वर चढ़ि आयो सो उहां ही पड़ि र
ह्यो और इहां श्री अक्का जी ने श्री नवनीत प्रिया
को भोग समर्प्यो तव अक्का जी सों नवनीत प्रिया
जीनें कह्यो जो गज्जन को बुलावो मेरो गज्जन
आवैगो तव भोजन करूंगो तव श्री अक्काजी नें
मनुष्य दोय बुलावन को पठाये तव वे मनुष्य दे
खें तो गज्जन थोरी सी दूर पै पर्यो है ज्वर चढ़ि र
ह्यो है मनुष्य लहां ते बुलाय ल्यासे तव गज्जन आप
स्नान करि मन्दिर में गयो तव तत्काल ज्वर उतर
गयो तव गज्जन नें श्री नवनीत प्रियाजी सों कह्यो
जो बाबा भोजन क्यों नाहीं करत अब भोजन करो
तव भोजन श्री नवनीत प्रिया जीनें कीयो गज्जन
धावन सों श्री नवनीत प्रिया जी ऐसे सानुभाव हु
ते श्री नवनीत प्रिया जीते एक क्षण न्यारो भयो
जो तत्काल ज्वर चढ़ि आयो और जव निकट
आयो तव तत्काल .... ज्वर उतर गयो
तातें गज्जन धावन श्री नवनीत प्रिया जी के सदा

पास रहते सो ले गज्जन धावन श्री आचार्यजी महा प्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं सो कहां तांई लिखिये॥

वार्ता प्रसंग १॥

वैष्णव १३ सम्बन्ध ५५

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के सेवक नारायणदास
ब्रह्मचारी सारस्वत ब्रा
ह्मण महावन में र
हते तिन्की

॥ वार्ता ॥

सो नारायणदास के सेव्य श्री ठाकुर जी श्री गोकुल चन्द्रमा जी सो नारायण दास श्री गोकुल चन्द्रमा जी की नीकी भांति सों सेवा करते और गायन कों घास खवावते सो धोय पोंछि के खवावते ताको तात्पर्य्य यह जो श्री ठाकुर जी दूध आरोगत हैं जो मति दूध में रज आवै ऐसें करते और श्री आचार्य जी महाप्रभू जब श्री गोकुल पधारते तब नित्य प्रातःकाल श्री गोकुल तें महावन पधारते श्री गोकुल चन्द्रमा जी की सेवा करिवे कों सो सेवा करि भोग समर्पि के पाछें श्री गोकुल पधारते और नारायणदास जहां हाथ पांव धोयवे को वरहे में जाते जा ठौर ते माटी खोदते ता ठौर द्रव्य निकसतो ता ऊपर माटी

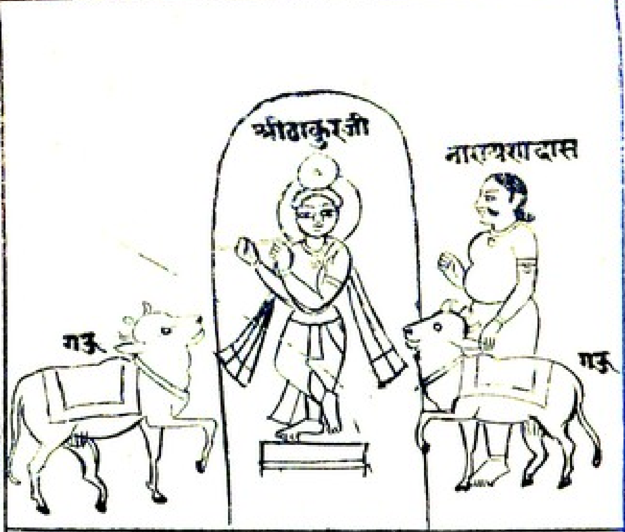

डारि उठि आवते परि द्रव्य कों स्पर्शन करते सो
नारायण दास ऐसे त्यागी हुते सो नारायणदा
स एक दिन सोवत हुतो तहां खाट के आसपास
द्रव्य के ढेर भये हुते तव नारायणदास देखे तो खा
ट के आस पास द्रव्य के ढेर भये हैं तव नारायण
दास ने भतीजी सों कही जो वेटी वेगि उठि ....
घर में विगार वहुत भयो है वुहारि कें कूरो सव
वाहर डारि आउ तव नारायणदास तो वरहे में
देह कृत को गये पाछें भतीजीनें सोई कीयो स
व वुहार कें कूडे की नांई वाहर डार दीनों जगा
सव लीप डारी पाछें नारायणदास स्नान करि
मन्दिर में गये तव सेवा सिंगार सव करिकें श्री

ठाकुर जी के मांम्हें देखें सो श्री ठाकुर जीनें नारायण दास कों अतिसुन्दर दर्शन दीनो तब अति प्रसन्न श्री ठाकुर जी कों देखि कें नारायण दासनें कह्यो जो महाराज यह घटा काहे कों उनही हैं न जानें कहां बरसेंगी पाछें आपही कह्यो जो यह घटा श्री आचार्य जी महा प्रभून को सरवस्व हैं उहां बरसेंगी पाछें नारायणदास श्री गोकुलचन्द्रमा जी कों राज भोग समर्पि कें बाहर आय बैठे तब बेटी भरि आयो जो श्री ठाकुर जो कौन भांतसों आरोगत हैं ऐसो विचार मन में लाए तब भतीजी ने कही जो श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक जहां भोग समर्पत हैं सो श्री आचार्य जी महा प्रभून की कानितें आरोगत हैं सो तुमतो श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक परम कृपापात्र भगवदीय हो ताते तुम्हारो समर्प्यो कों न आरोगेंगे तुम सन्देह कों करत हो तब नारायण दास नें कह्यो जो बेटी आरोगें जब जानियें तब कोई वैष्णव अपने घर आय अचानक महा प्रसाद लेय तब जानियें जो श्री ठाकुर जी आरोगें होंयगे वैष्णव ऊपर नारायणदास को ऐसो भाव हुतो॥ १॥

वार्ता प्रसंग २

बहुरि एक दिन नारायण दास श्री गोकुल चंद्रमे जीको श्रृंगार करि रसोई में गये तहां श्रृंगार भोग कों सिद्ध करि कें सरायवे कों धार धर्यो इतने में एक वैष्णव नें नारायणदास के पास आय कें बधाई दीनी जो श्री आचार्य जी महा प्रभू गोकुल ने पधा

रत हैं सो नारायण दास सुनत ही तातीं खीर कों डब
रा में मेलि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्पि उतावले
श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों आए तब
आय कें श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कर
कें दंडवत कीनी सो श्री आचार्य महाप्रभून के
चरणारविंद ऊपर माथौ मेलि रहे तब नारायण दा
स कों माथौ पकरि आप श्री हस्त सों उठायो और
पूछी जो श्री गोकुल चन्द्रमा जी के यहां कहा समय
है तब नारायण दास नें कही जो महाराज अबही
सिंगार भोग समर्पि कें आयौ हूं सो सुनि कें श्री
आचार्य जी महाप्रभू तत्काल पधारे तब जातही
स्नान करि कें मन्दिर में हाथ धोय आचमन की
झारी हाथ में लैकें भोग सराय वे कों मन्दिर में प
धारे तब भीतर जाय कें देखें तौ श्रीगोकुलचंद्र
माजी के श्री हस्त खीर में भरे हैं और श्री हस्त कम
ल खेंचि रहे हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री
गोकुल चन्द्रमा जी सों कही जो महाराज श्री हस्त
कों क्यों खेंचि रहे हो तब गोकुल चन्द्रमा जी नें क
ही जो तुम कों आये जानि कें मोकों नारायणदा
स तातीं खीर समर्पि कें तुमारे पास गयो सो खीर
मेरे हाथ सों तातीं लागी सो मैनें थोरी सी चाट कें
हाथ झटके सो सब मन्दिर में छींट लागी हैं और
मेरे हाथ और ओंठ राते भए हैं सो श्री गोकुलच
न्द्रमा जी के हाथ और ओंठ अजहूं लाल हैं पाछें
श्री आचार्य जी महाप्रभून नें खीर पंखा सों सीरी

करि भोग समर्पि कें बाहर आये तब नारायणदा
स सौं खीजे और कह्यो जो तैनें श्रीठाकुर जी कौं तै
नो खीर समर्पी तब नारायणदास नें श्री आचार्य
जी महाप्रभून सौं बीनती कीनी जो मैं राज कौं पधा
रे जानि उतावलो राज पास आयौ तब श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें कही जो आज पीछें ऐसौ काम
मति करियो पाछें समय भयौ तब श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें भोग सरायौ तब श्री गोकुलचं
द्रमा जी नें श्री आचार्य जी महाप्रभून के दोउ श्री
हस्त पकरि कें कह्यो जो तुम खीर महाप्रसाद लेउ
तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो मह
राज जानि व्यवहार कौ कठिन है तब श्री गोकुल

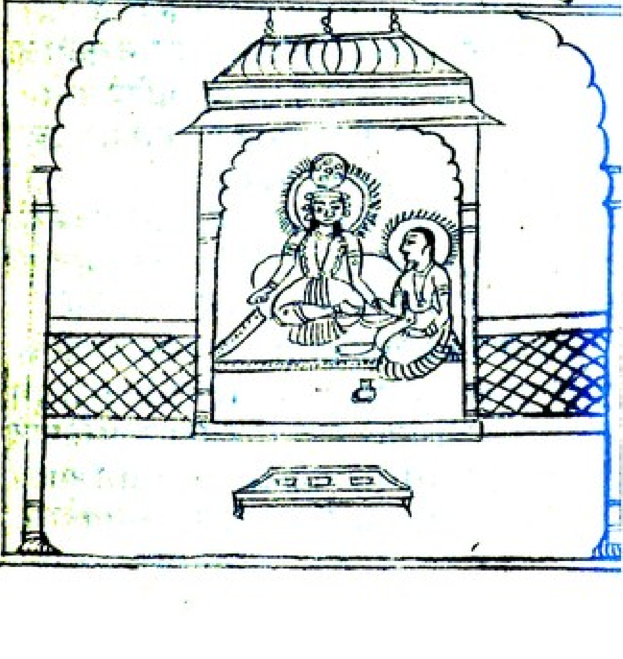

चन्द्रमाजीनें कह्यो जो यह मेरी आज्ञा है ताते तुम
कछु विचार मति करो खीर को महा प्रसाद लेउ
तब श्री गोकुलचंद्रमाजीनें खीर को महाप्रसाद ह्तो
सो अपने आगे ही श्री आचार्य जी महा प्रभून को
लिवायो तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें लीनो
तादिन ते खीर अनसखड़ी में होत हैं नारायणदा
स सों श्री गोकुलचन्द्रमा जी ऐसी भांति सेवा कर
वावते वे नारायणदास ऐसे भगवदीय हैं ताते श्री गो
कुलचन्द्रमा जी ऐसी कृपा करते ॥

वार्ता प्रसंग ॥२॥

बहुरि कितने क दिन पाछे नारायण दास की देह
थकी सो बहुत आशक्ति भई तब एक दिन श्री गो
कुल चन्द्रमाजीने नारायणदास सों कह्यो जो नारा
यन दास तू कछु मांगि तब नारायन दास ने कही जो
महाराज हूं यह मांगत हूं जो तुम श्री गुसांई जी के
घर पधार सेवा करवावो नारायन दास के मन में यह
जो श्री ठाकुर जी और कहूं सुख न मानेंगे सेवा आ
की भांति सो न होयगी सो नारायणदास नें अंत समें
श्री ठाकुर जी के पास यह मांग्यो पाछें कितनेक दि
न में नारायणदास की देह छूटी तब श्री गोकुल
चन्द्रमा जीने कितेक दिन तांई कृष्णदास स्वामी के
पास सेवा करवाई पाछें श्री गुसांई जी के घर मथुरा
में पधारे सो श्री गुसांई जीने श्री रघुनाथ जी के माथे
पधराय दीए सो वे नारायणदास ब्रह्मचारी श्री आ
चार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय

है तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ ✣

वार्ता प्रसंग ३ ॥

वैस्नव १४ ॥ सम्बन्ध ५८

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेव क एक क्षत्राणी महावन में रहती ताकी वार्ता है

सो एक समें श्री आचार्य जी महा प्रभू पृथ्वी परि क्रमा करत करत महावन पधारे सो वा क्षत्राणीकें चारि स्वरूप प्राप्त भए हैं सो चारों स्वरूप श्री आचार्य जी महा प्रभून के आगें आनि राखे सो तिन चारों स्वरूपन के नाम एक तो श्री नवनीत प्रिया जी औा र एक श्री गोकुल चन्द्रमा जी और एक श्री ललित त्रिभंगी जी और एक श्री लाडले जी ये चारों स्वरू प श्री आचार्य जी महा प्रभून नें चार वैस्नवन के माथे पधराय दीए सो या भांति श्री गोकुल चन्द्रमा जी तो नारायणदास ब्रह्मचारी के माथे पधराये औ र श्री लाडले जी सोयदास क्षत्री के माथे पधराये और श्री ललित त्रिभंगी जी देवा क्षत्री के माथे प धराये और श्री नवनीत प्रिया जी गजन धावन के माथे पधराये या भांति चारों स्वरूप चार वैस्नवन के माथे पधराय दीए तब चारों वैस्नवन सों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो यह मेरे सर्वस्व हैं सो स्वरूप तुम्हारे माथे पधराये हैं सो इनकी से वा तुम नीकी भांति सों करियो और तुम सों जब सेवा न होय आवै तब हमारे घर पधराय जैयों

पाछें नवनीतप्रिया जीने तो कछु कदिन गज्जन धावन के माथे सेवा करवाई पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून के घर पधराये सो सब तो गज्जन धावन की वार्ता में लिख्यो है और श्री गोकुलचन्द्रमा जीने किनेक दिन ताई नारायणदास ब्रह्मचारी के माथे सेवा करवाई पाछें कृष्णदास स्वामी के पास सेवा करवाई पाछें श्री गुसांई जी के घर पधारे पाछें श्री गुसांई जीने श्री रघुनाथदासजी के माथे पधराये सो प्रकार नारायणदास ब्रह्मचारी की वार्ता में लिख्यो है और श्री लाडलेजी को प्रकार सब जीयदास की वार्ता में लिख्यो है सो अब श्री आचार्यजी के कुलमें बिराजत हैं सो ललित त्रिभंगी जी अंतर ध्यान भए सो प्रकार देवा क्षत्री कपूर की वार्तामें लिख्यो है सो वह क्षत्राणी श्री आचार्य जी महाप्रभून की ऐसी कृपापात्र भगवदीय हीताकी वार्ता कहां ताई लिखिये ॥+॥

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ९५ सम्बंध ५९८ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक जीयदास क्षत्री सूरतिन की वार्ता लिख्यते

सो जीयदास के माथे श्री आचार्य जी महाप्रभूनने श्री लाडिले जीकी सेवा दीनी सो जीयदास के पास श्री लाडिले जीने चार पहर सेवा करवाई सो जीयदास के चार बेटा हुते तिनमें पुरुषोत्तमदास

कबील दास इन दोऊ भाईन नें कोई एक दिन सेवा
कीनी पाछें दोऊ भाईन के संतति न भई तब इनके
पाछें इन के मामा कृष्णदास चौपडा हुते तिन के
माथे श्री लाडले जी पधारे सो कितनेक दिन तांई
कृष्ण दास चौपडा सों सेवा करवाई सो भली भांति
सों सेवा कीनी सो एक समय महामरी आई सो
कृष्णदास कें घर के सब कुटुम्ब की देह छूटी तब
कृष्णदास अकेले रहे तब कृष्णदास के मित्र हर
जी तथा मथुरामल खत्री हुते सो कृष्णदास तहां
आय रहे सो कितनेक दिन तांई कृष्णदास और हर
जी दोऊ मिल कें सेवा कीनी पाछें कृष्ण दास
की देह छूटी तब हरजी भाईनें डेढ़ वर्ष लों सेवा-

कीनी पाछें श्री गुसांई जी के घर पधारे सो श्री ला
डले जी अब विराजत हैं सो वे जीय दास श्री आ
चार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भग
वदीय हैं सो इनकी वार्ता कौ पार नाहीं सो कहां
तांई लिखियै ॥

वार्ता प्रसंग ॥१॥
वैस्नव ॥९६॥ सम्बन्ध ९६०
अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक देवा खत्री कपूर
तिनकी वार्ता लिख्यते
सो देवा कपूर के माथे श्री आचार्य जी महाप्रभू
ननें श्री ललित त्रिभंगी जी की सेवा पधराय दीनी

सो देवा कपूर की जब लों देह रही तब लों सेवा करी ता पाछें देवा कपूर की स्त्री की देह छूटी ताकों संस्कार कर आये ता पाछें मन्दिर उघार के देखें तो श्री ठाकुर जी नाहीं और सामग्री सब धरी है एक श्री ठाकुर जी नाहीं हैं सो जानें कहां अन्तर ध्यान भए याते यों जानी परी जो देवा कपूर के चार बेटा हुते पर उनके पास सेवा न करवाई श्री ठाकुरजी तो स्नेह के बस हैं सो भगवद इच्छा ऐसी ही भई ताते देवा कपूर तथा देवा कपूर की स्त्री श्री आचार्य जी महाप्रभून की ऐसी कृपा पात्र भगवदी य हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये॥

॥वार्ता प्रसंग॥१॥ वैष्णव १७॥ सम्बन्ध ६१॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक दिन कर दास सेठ तिनकी वार्ता लिख्यते॥

सो दिन कर दास को कथा के ऊपर बहुत रुचि हुती सो श्री आचार्य जी महा प्रभू आप अडेल में कथा कहते तहां दिन कर दास नित्य सुनने सो एक दिन दिन कर दास रसोई करत हुते सो आठी सान्यो हुतो ऊपरा बनाय दीने हे लोटी कोरा रखी हुती इतने में श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक जल घरिया जो श्री ठाकुर जी को जल भरिवे को आयो तब दिन कर दास ने पूछो जो श्री आचार्य जी महा प्रभू कहा करत हैं तब वा जलघ-

रिया नें कह्यौ जो पोथी खोली है अब कथा कहैं
गें तब दिन कर दासनें काची ही अंगाकरी लीनी॰
सेकी नाहीं वैगि उठि वस्त्र पहर कें आयौ आय
कें कथा सुनी श्री आचार्यजी महाप्रभु कथा कह
रहे हैं तब वा जलघरियानें श्री आचार्यजी महाप्र

भून सौं कह्यौ जो महाराज दिनकर दासनें काची॰
अंगाकरी लीनी सेकी हू नाहीं तब दिन कर दास
सों श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कही जो तू काची
अंगाकरी क्यों खाय आयो है तब दिन कर दासनें
कही जो महाराज अंगाकरी तो नित्य लेउंगो परि य
ह अमृत कथा कब सुनूंगो तब श्री आचार्यजी महा
प्रभून नें कह्यौ जो अब ते तू रसोई करि श्री ठा...

कुरजीकौं भोग समर्पि प्रसाद लेइ पहुंचि कें जब आवेंगे तब पोथी खोलूंगो तेरे आए विना कथा न कहेंगे आजते हमारी कथा को श्रोता तू तातें तू निश्चिंत होय कें आइयो तब ता दिन ते दिनकरदास वेगिही रसोई करि भोग समर्पि प्रसाद लेकें जब कथा के समय आवते तब श्री आचार्यजी महाप्रभू पोथी खोलते सो वे दिनकरदास सेठ श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे सो इनकी वार्ता को पार नाहीं तातें अब कहां ताईं लिखिये ॥४

॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैस्नव १८॥ संबंध ६२॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक मुकन्ददास कायस्थ तिनकी वार्ता लिख्यते

सो मुकन्ददास आप कवि हुते सो कवित्त करते सो कवित्त बहुत कीये हे श्री आचार्यजी महाप्रभून के तथा श्री गुसांईजी के तथा श्री ठाकुरजी के बहुत कवित्त कीये हें और मुकंद सागर एक ग्रंथ कीयो सो एक समय मुकन्ददास उज्जैन के कारकुन होय कें आए तब तहां के पंडित सब आय मिले तब पंडितन नें मुकन्ददास सों कह्यो जो तुम हमारे पास श्री भागवत सुनों तो सुनावें तब मुकन्ददास नें कह्यो जो तुम हमारो भागवत जानत हों तब उन पंडितन नें कह्यो तुम

कहा भागवन न्यारो है तव मुकन्ददास नें एक श्लो
क को व्याख्यान कीयो पाछें महीना लों सुनायो
परि आप काहू पास कथा न सुनी कोई पंडित क
दाचित व्याख्यान करतो ताको बहुत भांति दूषण दे
के आवते जो काहे ते सुबोधिनी में बहुत प्रवेश हो
मुकन्ददास को श्री आचार्य जी महाप्रभून के चर
ण कमल पर दृढ़ता हुती ताते सुबोधिनी स्फुर्द
रूप हुती ऐसें करत करत कितनेक दिन में उज्जे
न में मुकन्ददास की देह छूटी तव काहू वैष्णव नें
श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगें आय कही
जो महाराज मुकन्द दास नें अवंतिका पाई तव
श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कही जो ऐसें मति
कहो ताते ऐसें कहो जो मुकन्द दास को अवंति
का नें पाए सो वे मुकन्ददास श्री आचार्य जी महा
प्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इ
नकी वार्ता को पार नाहीं सो कहां तांई लिखिये॥
वार्ता प्रसंग १॥ वैष्णव ९८॥ सम्बन्ध ६३॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के
सेवक प्रभू दास जलोटा।
खत्री सीहनन्द के।
वासी तिनकी।
वार्ता।

सो प्रभू दास के सेव्य ठाकुर श्री मदन मोहन जी
सो राज नगर सिकन्दर पुर में बैठे हे सो जब श्री आ
चार्य जी महाप्रभू मथुरा पधारे तब प्रभूदास साथ हू

तब एक दिन श्री आचार्य जी महा प्रभू आप संध्या
वन्दन करि कें स्नान करत हुते विश्रांत के ऊपर
तहां दो चार वैस्नव और बैठे हे तब तहां रूप सनां

तन कृस्न चैतन्य के सेवक नें श्री आचार्य जी महा
प्रभून सों पूछो जो यह वैस्नव कौन हैं तब श्री आचा
र्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो ये हमारे सेवक हैं तब
रूप सनातन नें कह्यौ जो ऐसे दुर्लभ क्यों रहत हैं
तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यौ जो में इनको
बहुत बरजे जो तुम या मार्ग में मति परो पर इन मेरो
कह्यौ न मान्यौ ताको फल ये भोगत हैं पर रूप
सनातन कछू समझे नाहीं तब श्री आचार्य जी महा
प्रभून के दर्शन करि कें रूप सनातन तो गए पाछें

कितनेक दिन में एक वैस्नव रूप सनातन के साथ
कौ श्रीजगन्नाथजी के दर्शन कौ गयौ तहां कृस्न
चैतन्य मिले तब कृस्नचैतन्य नें वा वैस्नव सों श्री
आचार्यजी महाप्रभून के कुशल समाचार पूछे औ
र कह्यौ जो नाके हैं कहां मिले हुते कहा करत पाये
हुते तब वा वैस्नव नें कृस्न चैतन्य सों कह्यौ जो
श्री आचार्य जी महाप्रभू मथुरा पधारे हुते और
विश्रांत ऊपर मिले हुते बहुत नीके हैं और श्री
आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों रूप सनातन
हू गए हुते विश्रांत ऊपर सो श्री आचार्यजी महा
प्रभून सों रूप सनातन नें और वैस्नवन की बात पू
छी जो ये ऐसे दुर्लभ कों रहत हैं तब श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें कही प्रभूदास की बात कही जो
मैं इनकों बहुत वरजे परि इन मेरो कह्यौ न मान्यौ
ताकौ फल ये भोगत हैं सो यह बात सुनिकें कृ
स्नचैतन्य कौं मूर्छा आई सो एक मुहूर्त लों मूर्छा
रही पाछें सावधान भये तब फेरि पूछी जो तुमनें
कहा बात कही तब वा वैस्नव नें फेरि कह्यौ जो
श्री आचार्यजी प्रभून नें कह्यौ जो या मार्ग में मेंम
ति परौ तब कृस्नचैतन्य कों फेरि मूर्छा आई सो
दोय मुहूर्त लों रही पाछें फेरि सावधान भए ऐसें
तीन बार पूछी सो तीनों बार मूर्छा आई चौथी वा
र फेरि वा वैस्नव सों पूछी जो कहा कही तब वा
ने कृस्नचैतन्य सों कही जो अब मोपे कही न जाय
जो यह बात ऐसी है जो केवल विरही होय सो जा

नें रूप सनातन कहा जानें ॥+

॥ वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥

और एक समय प्रभूदास नें वेगी रसोई करी सो दार तो काची रही और अंगाकरी जरगई तब प्रभूदास के मन में आई जो ऐसी सामग्री श्री ठाकुरजी कूं कहा समर्पूं सो चरणोदक मेलि के प्रसाद लीयो और श्री ठाकुरजी तो वाट देखत ही रहे जो प्रभूदास भोग समर्पेगो और में आरोगूंगो और प्रभूदास नें तो विगरी सामग्री जानि के न समर्पी तब श्री ठाकुरजी नें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कही जो आज मोकों प्रभूदास नें भोग समर्प्यो नाहीं मेनें वाट देखी जो अब मोकों प्रभूदास भोग समर्पेगो और में आरोगूंगो परि प्रभूदास नें भोग समर्प्यो तब उत्थापन के समय प्रभूदास दर्शन कों आये तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें प्रभूदास सों कह्यो जो आज तेनें श्री ठाकुरजी के बिनें समर्पे प्रसाद लीयो तब प्रभूदास नें सांची वात कही जो महाराज दार तो काची रही और अंगाकरी जरगई ताते ऐसी सामग्री जानि भोग समर्प्यो नाहीं चरणोदक मेलि प्रसाद लीयो तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो ऐसी रसोई क्यों करी श्री ठाकुरजी ने तो वडी वार लों वाट देखी जो प्रभूदास भोग समर्पेगो और में आरोगूंगो ताते तेंने ऐसी रसोई क्यों करी सावधान है कें वैसी न करी पाछें सावधान है कें रसोई करन लगे

वार्ता प्रसंग २

और एक समय श्री आचार्य जी महा प्रभु व्रज में पावधारे हुते तब प्रभू दास साथ हे तब एक दिन श्री आचार्य जी महा प्रभून नें व्रज में श्री गोवर्द्धन के निकट स्थल भोग धरायो पाछें भोग सरायो तब प्रभू दास सों श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यौ जो प्रसाद लेउ तब प्रभूदास नें कह्यौ जो महाराज मेनें स्नान नाहीं कीनो तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें प्रभू दास सों कही जो तू देखि तब श्लोक करि कें दिखायो ॥५ सो॥

श्लोक

वृक्षे वृक्षे वेणु धारी पत्रे पत्रे
चतुर्भुजः ॥ यत्र वृन्दावनं तत्र
लक्ष्या लक्ष कथा कुतः ॥१॥
जला दिभिः रजः पुण्यरज सो
पि जलंवरं ॥ यत्र वृंदावनंत
त्र स्नाना स्नान कथा कुतः ॥२॥

यह श्लोक पढ़ि कें प्रभूदास कों दिखायो व्रज को स्वरूप वृक्ष वृक्ष विषें वेणु धारी पत्र पत्र विषें चतुर्भुज देखे या भांति कों प्रभूदास कों दर्शन करवायो ऐसो सादृष्य व्रज को स्वरूप दिखायो पाछें प्रभू दास नें प्रसाद लीयो दंडवत करि कें प्रभूदास के ऊपर श्री आचार्य जी महा प्रभून की ऐसी कृपा हुती सो आप नें कृपा करि कें व्रज को स्वरूप दिखायो ॥ ५ ॥

वार्ता प्रसंग ॥ ३ ॥

और एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू आप मन्दिर में हुते तब ऐसी मन में आई जो श्री ठाकुरजी को भोग समर्पिये सो दही को भोग समर्पिये ता समें प्रभू दास बाहिर हुते सो प्रभूदासनें श्री आचार्यजी महाप्रभून के अंतःकरन की जानी तब प्रभूदास बाहिर गये तब गांव में जायके एक अहीरी मिली तासों पूछी जो तेरें दही है तब वा अहीरी ने कह्यौ जो हां दही है तब प्रभूदास ने कह्यौ जो लाउ तब अहीरी दही ले आई तब प्रभूदास नें कह्यौ या कौ मोल कहि तब वा अहीरी नें कही जो तू मोकों कहा देयगो तब प्रभूदास नें कह्यौ जो तू मांगगी सो देउंगो तब वा अहीरी कही जो एक टका दे और कहा मुक्ति देयगो तब प्रभूदास ने कही जो यह तो टका ले और तोकों मुक्ति दीनी तब वा अहीरीनें कही जो तू मोकों लिख दे जो मुक्ति दीनी तब प्रभूदासनें लिख दीनी और दही लेकें घर आए सो दही भीतर दीयौ तब श्री आचार्य जी महाप्रभूननें वह दही भोग समर्प्यौ सो श्री ठाकुर जी आरोगे सो वह दही अति स्वाद भयौ पाछें गुसांई जी जब सांझ के समय दर्शन कों आये तब यह बात श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कही जो महाराज प्रभूदास नें दही के ऊपर मुक्ति दीनी सो लिखि आये तब श्री आचार्य जी महाप्रभूजी ने प्रभूदास सों पूछी जो प्रभूदास वह दही अति स्वाद भयौ हुतौ

सो तैनें वाकौ मोल कहा दीयौ हुतौ तब प्रभूदास
नें कह्यौ जो महाराज वा अहीरी नें एक टका और
मुक्ति मांगी सो एक टका और मुक्ति दीनी तब श्री
आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो तैनें कछू नहीं
दीनी तब प्रभूदास नें कही जो महाराज हूं कहा करूं
जो मोपै मांग्यौ हुतौ सो दीनौ जो भक्ति मांगती तौ
भक्ति देतौ पाछें वा अहीरी को मरदी नें कह्यौ जो
तोकों तौ ठग लीनौ तब वा अहीरी नें मरदी सों
कह्यौ जो तू कहा जानें ये बड़े भगवद भक्त हैं इन
कौ वचन सत्य है तब कितनेक दिन में वा अहीरी
की देह छूटी तब यमदूत आए इतने में विष्णुदूत
हू आए सो आपुस में झगरन लागे तब यमदूतन
सों विष्णुदूतन नें कही जो याकों तौ श्री आचार्य
जी महाप्रभून के सेवक प्रभूदास नें मुक्ति दीनी है
सो कागद याकी साड़ी की खूंट नें बंध्यौ है सो यह
बात वा अहीरी के संग सोदरेन नें सुनी पर आंखि
न देखे पाछें वा अहीरी कों विष्णुदूत लै जान
लागे तब वा अहीरी नें विष्णुदूतन सों कह्यौ
जो मेरौ मरदी कों दर्शन देउ वाकों अविश्वास
है पाछें विष्णुदूतन नें वाकों दर्शन दीनौ तब
वह कहन लाग्यौ जो मोहू कों लै जाउ तब विष्णु
दूतन नें कह्यौ जो हमारे हाथ कहा है हम तौ आ
ज्ञाकारी हैं ताते तू प्रभूदास सों कहि तब वह म
र्यौ प्रभूदास के पास आई तब प्रभूदास नें वाकों
श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास नाम दिवायौ

तब दाह को कार्य भयो पाछें पिछ्मृदत जा कद्दी
री को लेगये तब वाको मुक्ति भई पाछे जा कद्दी
री के सगे कुटुम्बने वाको माडी के खर ते कागद
खोलि के देख्यो तब बांचि के गदगदहे सो प्रभू
दास कों श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा ते ऐ
सी सामर्थ्य हुतो सो वे प्रभूदास बड़े भगवदीय हे
ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ४ वैष्णव ३० सम्बन्ध ८७

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू
न के सेवक प्रभूदास ॥
भाट सीहनन्द ॥
के तिनकी ॥
वार्ता ॥

सो वे प्रभूदास भाट श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी
भांति सों करते सो बहुत दिन सेवा करत बीते पाछें
वृद्ध भयो तब बहुत आसक्ति भए तब जानी यह
देह दिन चार पांच में छूटेगी तब सावधान ना छूटी
असावधान भए तब सगरे मिल के प्रभूदास को
प्रथोदक तीर्थ है तहां ले गये जब प्रथोदक आयो
तब सावधान भए आंखि खोल के देखें तो प्रथो
दक तीर्थ है तब प्रभूदास ने कह्यो जो मोकों इहां
क्यों लाए हो तब सगरे जनेन नें कह्यो जो यह प्र
थोदिक तीर्थ है तुम्हारी अंत अवस्था देखि कें
लाये हैं तब प्रभूदास ने कही जो मोको प्रथोदिक
में कहा काम है मैंतो श्री आचार्य जी महाप्रभून

कौ सेवक हौं सोकों प्रथ्वादिक कहा क्रतार्थ करेंगे॰ सोकों बरस १ लों इहां राखोगे तोऊ मेरी देह यहां न छूटेगी। ताते मोकों सीहनन्द लै चलौ जब अपने श्री ठाकुर जी के चरण देखूंगो तब देह छूटेगी तब दिन॰ पंद्र सात लों राखे पीर दिन दिन प्रभूदास को शरीर नीको भयो सावधान भए तब फिर सीहनन्द लै गये तब अपने सेव्य श्री ठाकुर जी को देखें दर्शन करि कें दंडवत कीनो तब प्रभूदास नें श्री ठाकुर जी सों॰ कह्यो जो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें तुम को मेरे माथे पधराए हैं और ये तो बावरे लोग तुम्हारो आश्रय छुडाय के मोकों तीर्थ आगें ले गये पीर श्री आचार्य जी महाप्रभू ऐसो क्यों करें जो मेरी देह॰ तीर्थ पै छूटे पाछें श्री ठाकुर जी की सेवा सिंगार करिकें वेगिवेगि भोग समर्प्यो भोग सराय अनोसर कीयो पाछें सबन ते कह्यो जो तुम वेगिवेगि प्रसाद लेउ ता पाछें मेरी देह छूटेगी तब सब प्रशाद लै चुके तब सबन सों प्रभूदास नें जै श्री कृष्ण कह्यो और प्रभूदास नें तत्काल देह छोडी पाछें सीहनन्द में एक कौरन चौधरी हुतो सो प्रभूदास की निन्दा करन लागो और कह्यो जो प्रभूदास प्रथ्वीदिक ते उ॰ लटो फिर आयो और सीहनन्द में देह छोडी ऐसी निन्दा करतो सो एक दिन रात्रि॰ को सोयो हुतो तहां कोऊ चारि जने हाथ में मूदर लैकें आये सो कौरन चौधरी कों बहुत मारयो तब कौरन चौधरी नें कह्यो जो तुम मोकों क्यों मारत हो तब उन नें कह्यो जो प्र

भूदास की निन्दा तू क्यों करत है तब कीरत चौध
री नें कह्यौ जो अब में निन्दा न करूंगो और बहु
त मनुहार करी तब उन कह्यौ जो तू फेरि निंदा करै
गो तौ तोकों याही भांति सों मारेंगे तब कीरत चौ
धरी नें कह्यौ जो अब तें निन्दा न करूंगो भक्ति
करूंगो पाछें स्तुति करन लागे तब प्रभूदास की
बात चले तब कीरत चौधरी कहै जो वे बड़े महा
पुरुष हैं तब और लोग कहन लागे जो पहले तौ
तुम प्रभूदास की निन्दा करत हुते और अब स्तुति
क्यों करत हौ तब सबन कों कीरत चौधरी
ने अपने देह की व्यवस्था दिखाई और कह्यौ
जो रात्रि कौं कोउ चारि जने आय के मार मार हा

ड़ चूरन कीयो तातें भगवदीय की निन्दा सर्वथा न करनी और जो करे तो या लोक में यही हाल होय और परलो कमें अघोर नर्क में जाय सो वे प्रभूदास भाट श्री आ चार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्त्ता कहां तांई लिखियें ॥

वार्त्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ २१ ॥
अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के
सेवक पुरुषोत्तम दास आग
रे में राजघाट ऊपर र
हते हुते तिनकी
वार्त्ता है ॥

सो एक समय श्री गुसांई जी आगरे पधारे हुते तब पुरुषोत्तम दास के घर उतरे तब पुरुषोत्तम दास की स्त्री छिप रही तब पुरुषोत्तम दास सों श्री गुसांई जी नें पूछी जो तेरी स्त्री कहां गई है तब पुरुषोत्तम दास नें कही जो जनेऊ टूटो होयगो पाछें श्री गुसांई जी वे गि बेगि रसोई करि दार भात साक चार पांच करे तब रोटी बेलिवे की बेर पुरुषोत्तम दास की स्त्री आई तब श्री गुसांई जीने पूछी जो अबलों न कहें ही तब पुरुषोत्तम दास की स्त्रीनें कही जो गृहकछु काम करत हुती पाछें पुरुषोत्तम दास की स्त्रीने रोटी बेल बेल दीनी तब रसोई सिद्ध भई तब श्री गुसांई जी ने श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो पाछें समया नुसार भोग सराय पाछें वही थार कटोरा पडगीस व उन पात्रन में श्री गुसांई जी सों कही जो भाजन

करिये तब श्री गुसांई जीनें कह्यौ जो येतो श्रीठाकुर
जी के पात्र हैं इन में भोजन कैसें करें तातें हम इनपा
त्रन में भोजन न करेंगे तब पुरुषोत्तम दास तथा उस
की स्त्री ने कह्यौ जो महाराज की कृपा तें कछु द्रव्य
निवस्यो नाहीं और पात्र नये मंगाये हैं आप इनमें
भोजन करिये तब श्री गुसांई जी भोजन करन कों
बैठे तब पुरुषोत्तम दास की स्त्री गुसांई जी के पास बै
ठि कें पंखा करन लागी और कह्यौ जो महाराज
और सामिग्री आरोगो तब श्री गुसांई जी ने कह्यौ
जो मोकूं रुचेगी सो मैं आरोगूंगो तब पुरुषोत्तमदास
नें कह्यौ जो महाराज श्री नन्दराय जी के घर कैसें
आरोगत हो ऐसें कहि कें स्त्री पुरुष दोउ जनें श्री
गुसांई जी कों बहुत सामग्री निवाय सो तिन के संको
च के लिये श्री गुसांई जी कहे जो तुम कहोगे सो क
रेंगे तब भोजन कीये पाछें अपने मंदिर श्री ठाकुर जी
की सैया ऊपर पिछोरा बिछाय श्री गुसांई जी कों
पोढ़ाये पुरुषोत्तम दास चरण सेवा करन लागे स्त्री
पंखा करन लागी पाछें घड़ी एक रहि कें श्री गुसांई जी
नें दोउन सों कह्यौ जो अब तुम जाय कें महाप्रसाद ले
उ तब उन कह्यौ जो महाराज महाप्रसाद तो नित्य
लेत हैं परि तुम्हारी सेवा कब करेंगे ऐसे वे स्त्री पुरुष
दोउ जने श्री आचार्य जी महा प्रभून के ऐसे कृपा
पात्र भगवदीय है तातें इन की वार्ता अब कहां
ताई लिखिये ॥ ॐ

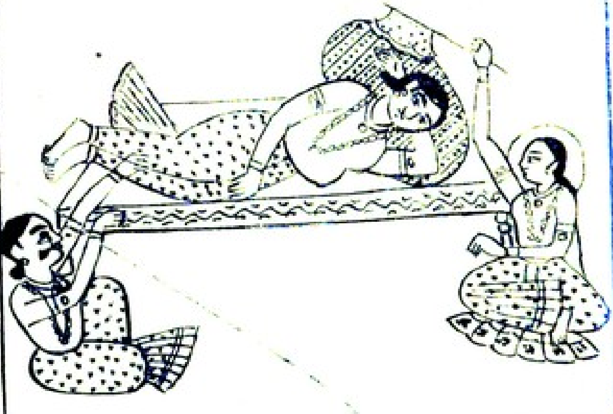

※ ॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥२२॥ ※

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक चपुरदास का
यस्थ घोरगढ़ के ॥
वासी हुते ॥
तिनकी
वार्ता

सो चपुरदास को श्री आचार्य जी महाप्रभून ऊप
र तथा श्री गोवर्द्धननाथ जी के विषें बहुत समस्व
हुतो जहां बैठते जहां ठाड़े होते तहां श्रीनाथ जी
को पीठ न दैकें बैठते पीठ दैकें ठाड़े न होते सो चपु
रदास एक तुरक कें चाकरी करतें परगना बहुत

कमायो जो कछु वस्तु आवतो सो पहिलें श्रीनाथ
जी कों पहुंचावते और मालन साक पहुंचावनेमें
में सदां सर्वदा करते सो एक दिन वा तुरक नें चपुर
दास कों बन्दीखाने में दीए और कह्यौ जो तैंनें मे-
रो द्रव्य बहुत खायो है सो जब वह तुरक सोयो तब
कोउ चार जनें हाथ में मुग्दर लैकें आए सो आय
कें वा तुरक कों खाट नें औंधो पटकि बहुत मारे
तब वा तुरक नें कह्यौ जो तुम मोकों क्यों मारत हो

तब उ नें कह्यौ जो तैंनें चपुरदास कों बन्दीखानेमें
क्यों दियो है तब वह तुरक बहुत बिन बिलातो
हाहा करिकें नाक भूमि में घिस कें उनसों कह्यौ
जो मोकों तुम मारो मति में अबही चपुरदास कों

छोड़त हो तब उन कह्यो जो त्रपुरदास कों न छोड़ेगो तो हम याही भांति सों नित्य मांगेंगे ऐसें कह्योत ब वे तो गये तब वा तुरक नें आय कें अपनें लोगन सों कह्यो जो त्रपुरदास कों बन्दीखाने में ते अबही छोड़ देउ तब मनुष्य त्रपुरदास कों छोड़न गए तब त्रपुरदास नें उनसों कह्यो जो अबतो रात्रि बहुत गई है सवारें छोड़ियो तब वे मनुष्य फिर आये और वा तुरक सों कह्यो जो साहिब त्रिपुरदास कहत हैं जो अबतो रात्रि बहुत गई है सवारे छोड़ियो त बवा तुरक नें अपने मनुष्यन सों कह्यो जो तुम अबही त्रिपुरदास कों छोड़ लावो तब वे मनुष्य वेग ही जाय कें त्रिपुरदास कों छोड़ लाए तब वा तुरक ने त्रिपुरदास सों कह्यो जो तुम आपने घर जाउ तब त्रिपुरदास नें कह्यो जो अबतो रात्रि बहुत गई है सवारें जाउंगो तब वा तुरक नें त्रिपुरदास सों कह्यो जो तू कहा काहू कौ जीव लेयगो ताते तू अबही इतनी वेर अपने घर जाउ तब त्रिपुरदास अपने घर आये॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥

बहुर कितनेक दिन पाछें त्रिपुरदास वाही तुरक के साथ अटक गये पाछें एक दिन रसोया नें त्रपुरदास सों कह्यो जो चरणोदक महाप्रसाद निवर्यो है रंचक हू नाहीं तब त्रिपुरदास ने रसोइया सों कह्यो जो पांडे तेंने हम सों पहिलें क्यों न कह्यो हम चरणोदक महाप्रसाद मगाय देते अब कहा

कहियें नब रसोइया चुपि कर रह्यौ नब मनोरे उठि
कें त्रिपुरदास ज्ञा तुरक के दरबार जान लगे नब क
ह्यौ जो पांडे रसोई करि श्री ठाकुर जी कों भोग सम
र्पि प्रसाद लीजियो मेरी वार मति देखियो मेरी
आवनों न बनेगो और मन में यह निश्चे कीयो जो
जबलों यहां चलेंगो तब लों काम काज करूंगो और
देह जब न चलेंगी तब पड़ रहूंगो परि चरणोदक
महाप्रसाद लीये बिना जल पान न करूंगो यह नि
रधार कीयो तब तुरक के दर्बार गये तब रसोइया
ने स्नान करि रसोई करन लागो तब आधी रसोई
भई इतने में एक लरिका वर्ष दस कौ तीन थैली
लायो सो एक थैली में तो चरणामृत और एक

थैली में श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ चरणामृत और एक थैली में श्री नाथजी कौ महाप्रसाद सो वे तीनों थैली रसोइया कौ दीनी और कह्यौ जो ये तीनों थैली त्रिपुरदास ने पठाई हैं सो थैली देकें वह लरिका तुरंतही चल्यौ गयो पाछें रसोई सिद्ध भई तब श्री ठाकुरजी कौ भोग समर्प्यो पाछें समयानुसार भोग सरायो तब रसोईया नें त्रपुरदास कौ बुलाय वे कौ मनुष्य पठायौ परि त्रिपुरदास आये नाहीं तब दोय तीन वार मनुष्य बुलाय वे कौ पठायौ तब त्रपुरदास ने रसोईये सों कह्यौ जो पांडे तुम मोकौ काहे कौं बुलावत हौ मैंतौ चरणामृत महाप्रसाद लीये विना जलपान करूंगो तब रसोइया नें त्रपुरदास सों कह्यौ जो चरणामृत महाप्रसाद की थैली तौ तुमही नें पठाई है एक लरिका वर्ष दश कौ हुतौ सो तीन थैली देगयौ है तब त्रपुरदास नें कह्यौ जो वह लरिका कहांहै मोकौं दिखाय तब रसोईया नें कह्यौ जो वह लरिको तौ तुरतही थैली देकें चल्यौ गयो तब त्रपुरदास नें जान्यौ जो ये श्री ठाकुर जी के काम हैं तब आप कौ धिक्कार करन लाग्यो जो मेंनें असो हट क्यों कियो जो श्रीठाकुर जी कौ श्रम करनों पड्यौ सो आप धिक्कार बहुत करन लागें जो मेंनें श्री ठाकुर जी को श्रम बहुत करवायौ पाछें स्नान करि चरणामृत महाप्रसाद लीये पाछें समर्प्यो महाप्रसाद लीयो ॥ ०

वार्ता प्रसंग २

बहुरि कितनेक दिन में त्रिपुरदास की चाकरी छूटी

सो शीनकाल के दिन आए तब श्री नाथ जी कों कब
य पठावे सो काहूं ने पठावे हुती सो सबी घर में नाहीं
चपुरदास की कबाय हुती आई सो श्री नाथ जी
आप अंगीकार करते तब चपुरदास नें कह्यो जो अ
ब कहा कीजिये तब एक ढूंढि पीतर की हुती सो अं
ची नाके दामन की गजी मंगाई सो रंगाई ताकी क
बाय बनवाय कें श्री नाथ जी कों पठाई सो रंगी दे-
खि कें भंडारी नें भंडार में डार दीनी तब कितनेक दि
न में श्री गुसांई जी श्री नाथ जी द्वार पधारे सो जब श्री
नाथ जी को श्रृंगार करन लागे तब श्री गुसांई जी सों
श्री नाथ जी ने कह्यो जो मोकों शीत बहुत लागत है
तब श्री गुसांई जीनें कह्यो जो दूसरी अंगीठी लावो-
तब दूसरी अंगीठी लाए तोहू कही जो मोकों सीत
बहुत लागत है तब श्री गुसांई जीनें गहल उठायो-
तवहू श्री नाथ जीनें कही जो मोकों सीत लागत है त
ब श्री गुसांई जीनें तीसरी अंगीठी मंगाई तवहू कही
जो मोकों शीत लागत है तब श्री गुसांई जीनें भन्डारी
कों बुलायो और वासों पूछी जो कौन कौन वैस्नवन
की कबाय आई हुती तब जाजा वैस्नव की आई हु
ती ताता वैस्नव को नाम लीयो तब श्री गुसांई जीनें
कही जो चपुरदास की कबाय नाहीं आई तब भ-
न्डारी ने कह्यो जो चपुरदास की एक रंगीन कबाय-
आई है सो भंडार में पडी है तब श्री गुसांई जी ने क
ह्यो जो वह रंगीन कबाय लै आवो तब भंडारी वह
रंगीन कबाय लै आयो तब श्री गुसांई जी देखें तो मे

सो भरगजी सो होरही है तब वाकों भार पोंछि कें तत्काल दरजी बुलाय कें फरगुल सिद्ध करवाई तब वह फरगुल श्री नाथ जी कों उढ़ाई तब श्री नाथ जी नें कह्यो जो अब मेरो सीत निवर्त भयो ऐसें श्री नाथ जी भक्ति कें पक्षपात जो भक्ति भाव की वस्तु कों या भांति अंगीकार करें सो वे नपुर दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखियें ॥ ❖

वार्ता प्रसंग ॥३॥ वैस्नव २३॥
अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक पूरन मल्ल खत्री।
❖ तिनकी वार्ता लिख्यते

सो पूरन मल्ल की गांठ में द्रव्य बहुत हतो सो पूरनमल्ल कों श्री नाथजी की आज्ञा भई हती जो तू मेरो मन्दिर समराउ तब पूरनमल्ल श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास आयो और आय कें कह्यो महाराज मोकों श्री नाथजी की आज्ञा ऐसी भई है जो तू मेरो मन्दिर समराउ तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो मन्दिर वेग समरावो तब पूरन मल्ल नें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों नाम पायो पाछें मन्दिर उठावन लाग्यो सो द्रव्य हतो सो सब नीव खोदवे में लाग्यो जब सब द्रव्य निवट्यो पाछें पूरनमल्ल पूरब चाकरी कों गये तब राजसी लोगन नें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों पूछी जो महाराज आज्ञा देउ तौ हम मन्दिर समरावें तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री नाथजी सों पूछी जो महाराज ये राजसी लोग मन्दिर सवरावन कहत हैं सो समरावें तब श्री नाथजी नें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कह्यो जो पूरनमल्ल आवेगो तब मन्दिर समरावेगो तब राजसी लोगन सों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें नाहीं कीनी तब वे फिर गये तब किनेक दिन में पूरनमल्ल पूरब तें बहुत द्रव्य कमाय कें लायो तब पूरनमल्ल नें किनेक दिन में मन्दिर समराय कें सिद्ध करवायो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें आछो मुहूर्त देख कें श्री नाथजी के मन्दिर में पाट बैठाये तब पूरन मल्ल ने बहुत द्रव्य खरचो ॥ ❀

वार्ता प्रसंग २

बहुर श्री गुसांई जी श्री नाथ जी द्वार पधारे तब पूरनमल्ल श्री नाथ जी के दर्शन कों आयो सो अति आनन्द सों दर्शन कीयो तब श्री गुसांई जी ने कह्यो जो पूरनमल्ल तेरे मन में और कछु मनोरथ है सो राखि मति तब पूरनमल्ल ने श्री गुसांई जी सों कह्यो जो महाराज मेरे मन में एक मनोरथ रह्यो है जो अति सुन्दर अति सुगन्ध को अरगजा अपने हाथन सों में समर्पूं तब श्री गुसांई जी नें आज्ञा दीनी जो जा समर्पि तब पूरनमल्लने अत्युत्तम सुगन्धि को अरगजा करि कें श्री नाथ जी कों समर्प्यो तब पूरनमल्ल नें अपने मन में अति आनंद पायो ता पाछें पूरनमल्ल श्री नाथ जी के पास नें श्री गुसांई जी के पास आयो तब श्री गुसांई जी पूरनमल्ल के उपर बहुत प्रसन्न भए तब श्री गुसांई जी आपपोढे हैं सो उपरना पूरनमल्ल कों उढायो तब पूरनमल्लनें अति आनन्द पायो पाछें श्री गुसांई जी ने श्री नाथ जी कों पंचामृत सों स्नान करवायो पाछें अंग वस्त्र करि कें सेवा श्रृंगार करि कें रसोई की भोग समर्प्यो समयानुसार भोग सराय के पाछें श्री गुसांई जी ने श्री नाथ जी को प्रसादी गहनो पूरनमल्ल कों पहरायो पाछें प्रति वर्ष प्रसादी गहनो श्री गुसांई जी पूरनमल्ल कों देते सो ये पूरनमल्ल श्री गुसांई जी के तथा श्री आचार्य महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखियै ॥ ❋ श्री

॥वार्त्ताप्रसंग॥२॥वैष्णव॥२४सम्बन्ध॥

अब श्री आचार्य जीमहाप्रभू
नके सेवक पादवेन्द्र
दास कुम्हार॥

तिनकी
वार्त्ता

सो श्री आचार्य जी महाप्रभू तथा श्री गुसांई जी जब परदेश कों पधारते तब पादवेन्द्रदास इनके साथ सामग्री लेकें चलते हुड़वाई कनात बिना बांस की छोटी रावटी तथा एक दिन को सीधो सामग्री इतनो बोझ लेकें संग चलते और रसोई की चाकरी सब करते रात्रि कों पहरो देते॥

वार्त्ताप्रसंग॥१॥

बहुरि श्री गुसांई जी श्री गोकुल में हुते तब रात्र पहर एक गई हुती तब श्री गुसांई जी ने कह्यो जो या विरियां मन्दिर की नींव खोदी जाय तो मंदिर में सो दृढ़ होय सब भलो मुहूर्त है ऐसें कहि कें श्री गुसांई जी तो पोढ़े पाछें पादवेन्द्रदास ने एक पहर में नींव खोदी सो खोदि सिद्धि कर राखी सो जब पिछली रात्रि कों श्री गुसांई जी पोढ़ के उठे तब देखें तो माटीन के ढेर पड़े हैं तब पूछो जो यह माटी कैसी है तब वैष्णवन नें कह्यो जो महाराज पादवेन्द्र दास ने खोदी है तब श्री गुसांई जी ने पादवेन्द्र दास सों पूछो जो यह नींव तेनें खोदी है तब पाद वेन्द्र दास ने कह्यो जो महाराज रात्रि कों

वा बेर आपने आज्ञा करी हुती नाही बेर खोदी है सो नीव ऐसी बड़ी खोदी जो महीना एकलों राज मजूर दश पन्द्रह लगें तोहू भरी न जाय सो ऐसी सामर्थ पादवेंन्द्र दास में हुती ॥४॥

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

और पादवेन्द्र दास ने श्रीनाथ जी द्वार कौ कूआ अपने ही हाथन सों खोद्यो सो माटी निकसी ताकी ईंट पकाई अपने हाथन हीं कूआ चिन्यो परि जल

खारी निकस्यो तब पादवेन्द्रदास सोरों गयो श्रीगङ्गा जी मैंते जल लैकें आंगुली भरि भरि केडारे और कहै जो वा कूआ कौ जल आपसो करो ऐसें कहिकें तर्पण कीयो ऐसें करत जब जान्यो जो जल मीठो

भयौ तव श्री गंगाजी में ते निकस्यौ पाछें श्री नाथ
जी द्वार आए तब वा कृष्णा कौं जल श्री नाथ जी कौं
अंगीकार करवायौ सो पादवेन्द्र दास श्री आचार्य
जी महाप्रभून के परम कृपा पात्र भगवदीय हैं ता
तें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥+

॥ वार्त्ता प्रसंग ॥ ३ ॥ वैष्णव २५ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक गुसांई दास सार
स्वत ब्राह्मण तिनकी

॥ वार्त्ता ॥

सो एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभून कौं श्री ठा
कुर जी कौ स्वरूप प्राप्त भयौ सो स्वरूप गुसांई दास
के माथे सेवा कौं पधराय दीये और कही जो इनकी
सेवा तू नीकी भांति सों करियौ सो गुसांई दास सेवा
नीकी भांति सों करन लागे सो गुसांई दास सौं श्री
ठाकुर जी सानुभाव भए बोलन लागे पाछें कितनेक
दिन में एक वैष्णव सौं गुसांई दास ने कही जो तुम
इहां रहौ तो हम कौं सहायता होय हम तुम मिलि
कैं सेवा करें परि वह वैष्णव हां न करें पाछें एक दिन
श्री ठाकुर जी नें गुसांई दास सों कह्यौ जो तू मो कौं
वा वैष्णव के माथे पधराय पाछें वा वैष्णव सों गुसांई
दास नें कह्यौ जो श्री ठाकुर जी की आज्ञा तो ऐसी भ
ई है जो तू मो कौं वा वैष्णव के माथे पधराय तातें भ
गवद इच्छा ऐसी ही दीसत है तब वा वैष्णव ने गुसां
ई दास सों कह्यौ जो तुम कहा करोगे तब गुसांई दास

नें कह्यो जो हूं तो वद्रिकाश्रम जाऊंगो उहां मेरी दे
ह छूटेगी तब वा वैस्नव नें गुसांई दास सों कह्यो जो
श्री ठाकुर जी की गति नाहीं जानी जात है जो तुम्हा
री देह उहां न छूटे और तुम इहां फिर आवो तो मैं
श्रीठाकुर जी को देउंगो नाहीं तब गुसांई दास नें
कह्यो जो श्री ठाकुर जी ऐसो तो न करेंगे और क
दाचित करेंगे तो तुम्हारो द्वार पौरिया रहूंगो श्रीठा
कुर जी के दर्शन कर्यो करूंगो तब वा वैस्नव नें श्री
ठाकुर जी पधराये सो नीकी भांति सों सेवा करन
लाग्यो पाछें गुसांई दास तो वद्रिकाश्रम गये सो
वद्रिकाश्रम में उहां गुसांई दास की देह छूटी पाछें
वा वैस्नव ने गुसांई दास की देह छूटी की खबर
पाई तब वह वैस्नव सुख सों सेवा करन लाग्यो
तब वह वैस्नव श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृ
पा ते भलो वैस्नव भयो सो वे गुसांई दास श्री आचा
र्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय
हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ +

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैस्नव ॥ २६ ॥ सम्बंध ॥ ❋

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक माधोदास भट्ट
काश्मीर के वासी।
तिनकी वार्ता।
लिख्यते।

सो माधो भट्ट प्रथम केशव भट्ट के सेवक हुते सो
केशव भट्ट श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास आ

ये सो बहुत दिन रहे सो श्री आचार्य जी महाप्रभू कथा
कहने सो केशव भट्ट सुनने सो माधौ भट्ट श्री आचा
र्य जी महाप्रभून के सेवकन में जाय बैठन तब भागव
द वार्ता कहने सो प्रथम प्रसंग चले तब माधौ भट्ट
सों केशव भट्ट ने कह्यो जो तू मेरो संग छांड़ि के उ
हां के सेवकन में क्यों जात है वहां जाय के हांसी ठ
ठोरी करत है तब माधौ भट्ट नें केशव भट्ट सों कह्यो
जो मोकों तुम्हारो संग तथा तुम्हारी कथा ते उहां
की हांसी आछी लागत है तातें हों जात हौं तब केस
व भट्ट नें जान्यो जो अब यह हमारे काम को नाहीं
अब हमारे काम ते गयो पाछें केसव भट्ट ने श्री
आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो मैंने श्री भाग
वत तुम पास ते सुन्यो पर मोकों कछू बोध न भयो
तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो तुम
मेरी बराबर बैठि कें सुनो और जानि को भाव राखे
ताते बोध न भयो और माधौ भट्ट को भागवत की
स्फूर्ति भई यह दैवी सृष्टी को प्रकार जाननो तब
श्री भागवत की कथा सम्पूर्ण भई तब केसव भट्ट
ने श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कही जो कछु गु
रु दक्षिणा लेउ तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने
कह्यो जो हम कछु लेत नाहीं तब केसव भट्ट नें क
ह्यो जो मैं तुम कों एक सेवक समर्पित हों सो माधौ
भट्ट श्री आचार्य जी महाप्रभून कों सोंपे पाछें के
शव भट्ट श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास ते बि
दा होय कें अपने देश कों गयो पाछें माधौ भट्ट नें

श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास नाम पायो पाछें समर्पण करवायो ॥

वार्ता प्रसंग १

और जा गाम में ······ माधौ भट्ट रहत हुतो ता गाम में एक बड़ो गृहस्थ रहत हुतो ताके एक बेटा हुतो सो मरगयो तब वह गृहस्थ बहुत रोवनला ग्यो विलाप करन लाग्यो और कहन लाग्यो जो कोउ याकों जिवावेगो तो मेंहू जीउंगो नाहीं तो मेंहू मरूंगो ऐसें कहि कें बहुत सोक करै तब ए क वैष्णव पेंडे में जात हुतो तब वा गृहस्थ कों वि लाप करतो देखि कें वाने कह्यो जो या गाम में माधो भट्ट के भगवदीय रहत हैं वे बड़े भगवदी य महापुरुष हैं तिन के पास तू जा वे कृपा करेंगे तब तेरो लरिका जीवेगो तब वह गृहस्थ माधौ भट्ट के पास आयो और बहुत विलाप करन लाग्यो और माधौ भट्ट सों कह्यो जो यह लरिका मेरो जीवेगो तो मेंहू जीऊंगो नातर मेंहू मरूंगो या भांति सों बहुत विलाप करै और रोवे तब वा गृह स्थ कों देखि कें माधौ भट्ट कों दया आई तब मन में विचार करने लागे जो याको बेटा जीवे तो आ छौ है यह गृहस्थ भलो है यह बहुत विलाप कर त है बहुत दुख पावत है यह विचार के माधौ भट्ट के मन में बहुत खेद भयो और कह्यो जो याको दु ख दूर होय तो भलो है पाछें माधौ भट्ट मन्दिर में जा य कें श्री ठाकुर जी सों विनती कीनी एक श्लोक-

करि के श्री ठाकुर जी के आगें कह्यौ ।। सो
श्लोक ।। +

दया सर्व समर्थस्य दुखारो व
दयालुना ।। विश्वोद्धारणदक्ष
स्य उत्सवे कस्य सोभिते ।।१।।

यह श्लोक श्री ठाकुर जीने सुनि कें कह्यौ जो यह
कितनीक वात है जो तुम कों दया आई तो वासों क
होजो जा तेरौ बेटा जीवैगो पाछें माधौ भट्ट श्री ठा
कुर जी कौं पोढाय कें बाहर आये तब वा गृहस्थ
सों कह्यौ जो जा तेरौ बेटा जीवैगो परि वा गृहस्थ
कौं विस्वास न परे मन में विचारे जो हूं घर जाउंगो
और जो कदाचित न जीयौ होय तो कहा करूं मुख
ते तौ कछू कह्यौ न जाय परि मन में विस्वास परै
नाहीं इतने में घर के लोग दौरि कें आय वासों क
ह्यौ जो तेरौ बेटा जीयौ है ताकी वधाई देउ तब
वह गृहस्थ माधौ भट्ट को दंडवत करिकें अपने
घर आयौ पाछें वधौया कूं वधाई दीनी और बहु
त हर्षित भयौ पाछें माधौ भट्ट नें अपने मन में वि
चार कीयौ जो बहुत अनुचित कीयौ अब ये लोग
याही भांति सों नित्य दुख देयेंगे याते अब या गां
म में रहिवे कौ काम नाहीं ऐसो विचार कें रात्रि
जब आधी गई तब श्री ठाकुर जी कों जगाय संपु
ट में पधराय कें तुरत ही गांव छोडि कें चले सो
अडेल में श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास आ
य रहे दया आये ते स्थल छुटो श्री ठाकुर जी कौं

आधी रात्रि के समय भाजनों परोसनाते भगवदीय कों जो काम करनों सो विचार कें करनों विना विचारें सर्वथा नहीं करनों ॥

वार्ता प्रसंग २

और श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री भागवत की सुबोधिनी कहते सो माधौ भट्ट वेगि वेगि लिखत जाते और जा ठौर न समझ परै ता ठौर लेखनी छोड़ कें बैठि रहते तब श्री आचार्य जी महाप्रभू माधौ भट्ट कों समझाय कें अर्थ कहते तब माधौ भट्ट समझ के आगे लिखते और श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगें माधौ भट्ट या भांति सों बैठते सो पावन दीसें ऐसी सावधानी सों रहते ॥ ✢

वार्ता प्रसंग ३

और एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू प्रदेस कों पधारें तब माधौ भट्ट साथ हे तब श्री आचार्य जी महाप्रभू पेंडे में एक गांम में उतरे तब रात्रि पहर डेढ़ गई हुती तब माधौ भट्ट उठि कें लघुवाधा कों गाम में आए तहां चोरन नें तीर चलायौ सो माधौ भट्ट कें लाग्यौ तब श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ नाम लेत माधौ भट्ट नें देह छोड़ी तब इतने में श्री आचार्य जी महाप्रभून के साथ के वैस्नव आय गये तब देखें तो माधौ भट्ट की देह छूटी है तब वैस्नवन के मन में सन्देह भयौ जो माधौ भट्ट सारिके वैस्नव की ऐसी गति क्यों वूझिये तब साथ के वैस्नवन नें श्री आचार्य जी महाप्रभून

सों पूछो जो महाराज यह बात कैसें होय जो माधौ स
रिके वैस्नव की ऐसी गति क्यों बूझिये तब श्री आ
चार्य महाप्रभून नें उन वैस्नवन सों कह्यो जो माधौभ
ट्टनें तौ श्रीठाकुर जी के चरणारविंद चांपे सो इनकों
कछु कर्तव्यता रही नाहीं यह बड़ो भगवदीय हो प
रन्तु सों एक भगवद अपराध पर्‌यो हो तब वैस्नवन
नें पूछो जो महाराज ऐसो कहा अपराध पर्‌यो तात
ब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो यह पहलें
अपने सेव्य श्री ठाकुरजी की सैया ऊपर फूल बिछा
वत हो सो एक दिन बिना जानें फूलन में सुई रह गई
सो माधौभट्ट नें नाहीं कीनी सो वा सुई को श्री ठाकु
रजी के श्री अंग में स्पर्श भयो सो ता अपराध तें
ऐसें भयो परि याकी देह सावधानता सों छूटी है
भगवद नाम लेत छूटी ताते यह श्री नाथजी कृपा
रहै मेरी कान ते श्रीनाथ जी बुरी गति कबहू न
करेंगे अपने पास ही राखेंगे यह श्री आचार्य जी म
हाप्रभून नें अपने श्री मुख सों कह्यो ताते वैस्नवन
को श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करनी
बहुत सावधानी सों वे माधौदास भट्ट श्री आचार्य
जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते
इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ ✦

वार्ता प्रसंग ३ वैस्नव ॥ २७ ॥
अब श्री आचार्य जी महाप्रभू
न के सेवक गोपाल दास
तिनकी वार्ता ॥

सो गोपाल दास नें मार्ग चलन वारेन कों अपने
घर के पास विश्राम के लीये अस्थल करि राखे
हुतौ जो मार्ग में विश्राम करे ताकौ हेत यह जो
कोई भगवद भक्त आय रहे तासों भगवद वार्ता
करें ता कारन अस्थल करि राख्यौ हुतौ सो वहां ए
क समय पद्मरावल उज्जैन के वासी सो द्वारिका
आवते हे सो रात्रि कौ वा गांव में आय रहे सो गोपा
लदास सेवा सों पहुंचि कें पद्मरावल के पास आ
ए और पद्मरावल सों पूछौ जो तुम कहां ते आए
हो तब पद्मरावल ने कह्यौ जो हम श्री द्वारिका ते
आए हें तब गोपाल दास नें श्री रणछोड़ जी के
कुशल समाचार पूछे तब उहां के समाचार पद्म
रावल नें गोपाल दास सों कहे पाछें पद्मरावल की
जो बालपने ते अवस्था हुती सो बात चाली जो
पद्मरावल द्वारिका में बहुत रहते श्री रणछोड़
जी के दर्शन बहुत करते सो जब खरची निवड़ती
तब अपने घर आवते सो पद्मरावल के जिजमान
मावजी पटेल आजन कुनबी गांव के देसांई हु
ते सो पद्मरावल द्वारिका जी ने आवने तब मावजी
पटेल खरची देते सो लेकें जब पद्मरावल द्वारिका
जी कों जाते ऐसें बरस दिन में तीन बार जाते पद्म
रावल कों श्री रणछोड़ जी के विषें बहुत आसक्ति
हुती सो श्री रणछोड़ जी की वार्ता पद्मरावल ने
गोपाल दास के आगें कही तब गोपाल दास नें अप
ने मन में कही जो जैसी इनकों श्री रणछोड़ जी के

दर्शन में आसक्ति है तैसी इनकौ श्री महाप्रभून के विषै आसक्ति होय तौ इनको कार्य होय तातें इन सों कछू कहिये तब गोपालदास नें पद्मरावल सों पूछी जो तुम सों कबहू श्री रणछोड़जी बोलत हैं कछू कहत हैं कछू मांगत हैं तब पद्मरावल नें कही जो मो सों तौ कबहू कछू कहत नाहीं तब पद्मरावल ने गोपालदास सों पूछी जो कहा श्री रणछोड़जी काहू सों बोलत हैं तब गोपालदास ने कही जो हांहां बोलत हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून की वार्ता कही जो तुमनें एते दिन श्री रणछोड़ जी सेए हैं सो श्री रणछोड़ जी प्रगट भए हैं तब पद्मरावल ने पूछी जो वे कहां हैं तब गोपालदासनें कही जो वे अडेल में हैं तब पद्मरावल नें कही जो जैसो दर्शन श्री रणछोड़ जी देत हैं तैसो दर्शन श्री आचार्य जी महाप्रभू देंयगे तब गोपालदासनें कही जो हांहां देंयगे तब पद्मरावल के मन में विस्वास आयौ जो यह बात सत्य ताही दिनते पद्मरावल कों आतुरता भई जो कब मैं जाऊं और कब श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन पाऊं सो अवहांही रहे ता पाछें सवारे गोपालदास सों विदा होय कें तहां ते चलो सो मार्ग में विचार करत जाय जो मैं कब जाऊं और कब श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन पाऊं ऐसें विचार करत घर अपने उज्जैन में आए परि चित्त उदास में रहो पाछें माव जी पटेल सों मिले तब माव जी पटेल ने पूछी जो

गुरूजी अब कें तुम्हारो मन प्रसन्न देखियत नाहीं॰
सो काहे तें तब पद्मरावल ने गोपालदास सों सुनीं हु
ती सो बात कही जो श्री रणछोड़जी खेडेल में प्रगट
भए सो मेरो मनोरथ दर्शन करिवे कौ है सो जानों हों
कब जाउंगो तब भावजी पटैल नें कह्यौ जो तुम र॰
णछोड़ जी के दर्शन कौं जात हो सो मोहूं कौं अपने
साथ लेचलौ तब पद्मरावल ने कह्यौ जो तुम राज
श्री मोटा हौ तुम्हारे साथ बहुत मनुष्य होंयगे और
यह दर्शन तो एकांत स्थल कौ है तातें यह बात तो
मोकों भावत नाहीं तब भावजी पटैल नें कह्यौ जो
हूं तौ सर्वथा तुम्हारे संग अकेलो ही चलूंगो तब प
द्मरावल नें कह्यौ जो भलौ तब यह समाचार अपनी
स्त्री सों कहे और कह्यौ जो मैं तौ पद्मरावल के संग
खेडेल दर्शन कौं जात हौं तब स्त्री ने कह्यौ जो वहां
कहा है तब भावजी पटैल नें कह्यौ जो वहां श्रीव
ल्लभाचार्य जी प्रगट भए हैं सो साक्षात श्री रणछो
ड़जी प्रगट भये हैं और जैसो दर्शन श्री रणछोड़
जी देत हैं तैसो दर्शन श्री आचार्य जी महाप्रभू देत
हैं सो यह बात सुनि कें भावजी पटैल की स्त्री के
मन में बहुत उत्साह भयो और कह्यौ जो आप के
संग में हूं चलूंगी तब भावजी पटैल नें कह्यौ जो
मैं तो पावन चलोंगो तू कैसें चलैगी तब स्त्री ने
कही जो मैंहूं पावन चलूंगी मेरें कछु लरिका तो
है नाहीं तब फेरि भावजी पटैल नें कह्यौ जो हम
तुम दोऊ जन चलैंगे तो घर कौन के भरोसे रहैगो

स्त्री नें कह्यौ जो मेरौ घर ते कछू प्रयोजन नांही है हौं सर्वथा तुम्हारे साथ चलूंगी। तब मावजी पटेलनें अपने मन में विचारी जो याकों बहुत आतुरता भई दर्शन की बहुत मनोरथ है तब कह्यौ जो भलौ तूहू चल तब मावजी पटैलने अपनों घर काहू अन्य मनुष्य के हवालें कर दीनों। तब पश्चात मावजी पटैल तथा उसकी स्त्री विरजो ये तीनों चले सो जब प्रयाग पहुंचे तब अड़ेल को दर्शन ··· भयौ तब बहुत आतुरता भई जो श्री यमुनाजी होय के चल्यौ जैये तो समै श्री ······ ··· आचार्य जी महाप्रभू श्री यमुनाजी ऊपर पधारे हुते सो सन्ध्यावन्दन करत हुते तहां सेव·

क दोय चार साथ हुते तब इन तीनोंन कौं श्री आचा
र्य जी महाप्रभून कौं दर्शन भयौ तब तौ बहुत ही आ
तुरता भई ता समें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें इन
कों देख्यौ तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें सेवकन
सौं कह्यौ जो यह नाव पार लै जाउ पद्मरावल श्री र
णछोड़ जी के सेवक आये हैं सो इन तीनोंन कूं ना
व में बैठारि कें वेगि लै आउ सो नाव लैकें वैष्णव
पार आए तब उन वैष्णवन नें कह्यौ जो पद्मरावल
तीनों जने होंय सो आवौ श्री आचार्य जी महाप्रभून
ने नाव पठाई है तब पद्मरावल और मावजी पटेल
तथा उनकी स्त्री बिरजो इन तीनों जनेन कों नाव में
बैठाय के लै आए तब श्री आचार्य जी महाप्रभून
कौ दर्शन भयौ सो जैसो गोपालदास ने कह्यौ हुतो
तैसोई दर्शन भयौ सो दर्शन करि कें मन में बहुत प्र
सन्न भये पाछें पद्मरावल नें श्री आचार्य जी महा
प्रभू पास नाम पायौ सो नाम पाय कें उठे तब पद्म
रावल नें बीनती करिकें कह्यौ जो महाराज अंगीका
र करिये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने प्रसन्न
होय कें कह्यौ जो तू कहा कहत है तब पद्मरावल
ने कह्यौ जो मोकों गोपालदास नें कह्यौ है तासों
निवेदन करवाइये और पद्मरावल ने बीनती कर
कें कह्यौ जो महाराज मावजी पटेल और मावजी
पटेल की स्त्री बिरजो ये दोऊ जने आप की सरणा
ये है सो इन कौं नाम निवेदन करवाइये तब श्री
आचार्य जी महाप्रभून नें कृपा करकें नाम समर्प

ग करवायौ पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू आप भीतर पधारे तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पद्मरावल सों कह्यौ जो तुम महाप्रसाद इहाँ ई लीजिये तब पद्मरावल ने बीनती करि कें कह्यौ जो महाराज मोकों तुमनें श्री रणछोड़ जी को दर्शन दीनो है सो स्वरूप आप कृपा करि कें आरोगोगे तब श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ दर्शन भोजन करतमें पद्मरावल कों श्री रणछोड़ जी को दर्शन भयो सो साक्षात श्री रणछोड़ जी भोजन करत हैं तब पद्मरावल कों दृढ़ विस्वास भयो तब श्री आचार्य जी महाप्रभू आप भोजन करि कें विराजे तब महाप्रसाद की पातर पद्मरावल कों कृपा करकें दीनी पाछें पद्मरावल नें बीनती कीनी जो महाराज मोकों कहा आज्ञा है तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें आज्ञा दीनी जो तुम श्री ठाकुर जी की सेवा करो तब पद्मरावल नें कह्यौ जो जैसो मेरो मन महाराज के स्वरूप में लग्यौ है तैसो मन सेवा में लगे तो सेवा करूं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो तुम श्री ठाकुर जी की सेवा तो करो जो तुम्हरो मनोरथ श्री ठाकुर जी सब पूर्न करेंगे तब पद्मरावल श्री आचार्य जी महाप्रभून सों विदा होयकें अपने देश कों गये तब पद्मरावल अपने देस में जायकें श्री ठाकुर जी की सेवा करन लागे तब अपने सेव्य श्री ठाकुर जी की सैया बनवाई सो सैया छोटी भई तब श्री ठाकुर जी ने कह्यौ जो या सैया

पै भैापै सोयो जाय नाहीं पाछें पद्मरावल नें दूस
री सेया वडी करवाई ताके ऊपर श्री ठाकुर जी
पौढन लागे और श्री ठाकुर जी सानुभाव जनावन
लागे और एक समय पद्मरावल की स्त्रीने श्री ठा
कुरजी कों भोग समर्प्यो तामें खीर ताती समर्पी
तब श्रीठाकुर जीनें खीर में श्री हस्त मेल्यौ तब खी
र बहुत ताती लागी सो श्री ठाकुर जी ने श्री आचा
र्यजी महा प्रभून सों कह्यौ और श्री हस्तकमल दि
खायो सो लाल परि गयो तब पद्मरावल श्री आ
चार्यजी महाप्रभून के पास बैठे हते तब पद्मरा
वल सों श्री आचार्यजी महाप्रभून ने कह्यौ जो ते
री स्त्रीने श्री ठाकुरजी कों ताती खीर समर्पी सो

श्रीठाकुरजी कों ताती खीर न समर्पिये तब पद्म
रावल ने श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कह्यो जो
श्रीठाकुरजी ने एक मुहूर्त लों सीरी करन हों नें
दीनी तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यो जो
श्रीठाकुरजी तो बालक हैं श्रीठाकुरजी कों भोग
धरे पाछें विलंब न सहि सकें याते जो भोग धरिये
सो बहुत तातो न धरिये सो पद्मरावल कों श्री आ
चार्यजी महाप्रभून नें ऐसी आज्ञा दीनी आज्ञा
देकें श्रीठाकुरजी कों ऐसो अनुभव जतायो पाछें
पद्मरावल अपने घर आये तब यह बात अपनी
स्त्री सों कही पाछें पद्मरावल बहुत सावधानी
सों सेवा करन लागे श्री आचार्यजी महाप्रभूनकी
कृपा ते श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे
जो चहिये सो मांगि लेते अपनी सब बात कहते सो वे
पद्मरावल गोपालदास के संग ते ऐसे भगवदीय हैं
ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग १ वैष्णव २८
अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के सेवक पद्मरावल सो
चौरा ब्राह्मण उज्जै
न के बासी ति
नकी वार्ता
लिख्यते

सो पद्मरावल अडेल में आय कें श्री आचार्यजी
महाप्रभून के सेवक भए सो गोपालदास बांसवाडा

के तिनकी वार्ता में लिख्यो है बिस्तार करि कें पाछें अपने देस कौं चलन लागे तब श्री आचार्य जी महाप्रभून सों बीनती कीनी जो महाराज हों तो अति मूर्ख हों जड़ हों कछू जानत नाहीं और मेरी जाति के ब्राह्मण महा कर्मी जड़ हैं स्मार्ती हैं सो मोकों दुख देत हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें अपने चरणारविंद को चन्दन और चरणामृत दीनें और कह्यो जो तोकों सब सिद्धांत स्फुरेगो सो चरणामृत लीनें सो इतने ही में सब सिद्धांत स्फुर्द भये पाछें देश उज्जेन में आए पाछें बड़े २ ब्राह्मण प्रतिष्ठित पूछन लागे तब जितनेन ने पूछो तिनकूं प्रतिउत्तर देकें सब बिदा किये सो पद्मरावल कों श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा ते ऐसी विद्या स्फुर्द भई जो बड़े पंडित जीत कें बिदा कीये वे पंडित प्रति उत्तर देन सके ॥ +

वार्ता प्रसंग १

और पद्मरावल द्वारिका श्री रणछोड़ जी के दर्शन कों चले तब श्री रणछोड़ जी नें स्वप्न में कह्यो जो राज नगर में एक सेवक हमारो है ताके घर तू जैयो और पाक उहांई करियो तब पद्मरावल नें कह्यो जो महाराज मैं तो जानत नाहीं और बिना बुलाए में कौन के घर जाउं तब श्री रणछोड़ जी नें कही जो वह तोकों आपही बुलावन कों आवेगो पाछें श्री रणछोड़ जी ने अपने सेवकन सों कह्यो जो पद्मरावल इहां आवेंगे सो उनकी से

वानू नीकी भांति सों करि यों और अपने घर प-
धराय पद्मरावल कों रसोई भली भांति सों करि
यों तव वा सेवक नें श्री रणछोड़जी सों कह्यो जो
महाराज में उन कूं कैसें जानूंगो तव श्री रणछोड़
जीने कह्यो जो वे तो प्रसिद्ध हैं तू आपहीनें जांनें
गो तव कितनेक दिन में पद्मरावल उहां आये
सो वा गांव के वाहिर उतरे सो पद्मरावल के सा-
थ विद्यार्थी एक हुतो तासों पद्मरावल ने कह्यो
जो तू गांम में जायकें कोरी भिक्षा मांग लाउ तव
वह विद्यार्थी गांव में गयो सो चार पांच ठौर ने कोरी
भिक्षा मांग लायो तव पद्मरावल ने वा विद्यार्थी सों
कह्यो जो तू अन्न जाजा कैसें लायो है ताताकें संउल
टो फेर आउ तव वह विद्यार्थी जाजा को अन्न लायो
हो सो ताकों फेरन लाग्यो तव एक ने कह्यो जो तुम
लेगये हे अव फेरन क्यों आए हो तव वा विद्यार्थीने
कह्यो जो में कहा करूं हमारे वडे गुरू हैं तिनकी
आज्ञा मानी चाहिये तव वा विद्यार्थी सों कह्यो जो
तुम्हारे गुरू को नाम कहा है तव वा विद्यार्थीनेक
ह्यो जो मेरे गुरू को नाम पद्मरावल है तव वह श्री
रणछोड़जी को सेवक विद्यार्थी के साथ चल्यो आ-
यो सो आय के पद्मरावल सों कह्यो जो मेरे घर पधा
रो तव पद्मरावल नें कह्यो जो हूं तो काहू के घर जा-
त नाहीं तव वा ने कह्यो जो मोकों श्री रणछोड़जी
ने आज्ञा दीनी है जो तू पद्मरावल कों अपने घर प
धराइयो सो रसोई भली भांति सों करवाइयो तव-

पद्मरावल कों अपने घर पधराए रसोई भलीभां-
ति सों करवाई सो पद्मरावल ने रसोई करि श्रीठा-
कुर जी को भोग समर्प्यो पाछें प्रसाद लीयो और
रात्रि कों उहांही सोय रहे तब सवारें पद्मरावल च-
लन लागे तब श्रीरणछोड़जी को सेवक राखन ला-
गो तब पद्मरावल रहे नाहीं ॥

वार्त्ता प्रसंग ॥ २ ॥

बहुर एक दिन आटो बहुत मिल्यो और घृत थो-
रो मिल्यो तब जितनी रोटीवा घृत में चुपड़ी गई-
सोतो ऊपर धरी और कोरी हुती सो नीचे राखी त-
ब श्रीठाकुर जी को भोग समर्प्यो और कह्यो जो-
महाराज बिनु चुपरी रोटी तो रहन दीजियें और
चुपरी रोटी आरोगियें तब श्रीठाकुरजी नें तो-
सबही रोटी आरोगी पाछें पद्मरावल सों कह्यो जो
तैने मेरे आगे काहे कों धरीं मेरे आगे जो तू धरे-
गो सो आरोगूंगो पाछें महाप्रसाद लेन कों बैठे तब
रोटी बहुत अद्भुत स्वाद भयी तब पद्मरावलने क-
तनीक रोटी बची सो साथ बांधि लीनी सो नित्य
जब पाक करि भोग समर्पे पाछें प्रसाद लेन कों-
बैठते तब रोटी में ते एक टूक मेलि लेते तब महा-
प्रसाद लेते पाछें कितनेक दिन में द्वारका जाय-
पहुंचे तब श्रीरणछोड़जी को दर्शन कीयो दिन
पांच सात रहि के श्रीरणछोड़जी सों बिदा होय-
कें चले तब मार्ग में गोपालदास बासबाड़ा के घ-
र आये तब रात्रि कों उहांही रहे तब पद्मरावल

ने गोपालदास सों कह्यो जो तुम्हारी कृपा ते मोकों श्री आचार्यजी महाप्रभून कौ दर्शन भयो और तुम्हारी कृपा ते मोपे श्री आचार्यजी महाप्रभूनने कृपा करी सो पद्मरावल श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां ताई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥ ३ ॥ वैष्णव ॥ २६
अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक पुरुषोत्तम जोसी
सांच्योरा ब्राह्मण ति
नकी वार्ता लि
ख्यते ॥

सो एक समय पुरुषोत्तम जोसी यमना रस कों चले सो मार्ग में उज्जैन आये सो उज्जैन आय के पूछो जो पद्मरावल के बेटा कहां रहत हैं .... सो पद्मरावल के बेटा चारि हुते सो तीन बेटा तो इकठोरे हुते और बड़े बेटा कृष्णभट्ट सों न्यारे हुते सो पुरुषोत्तम जोसी जहां पद्मरावल के तीन्यो बेटा इकठोरे हुते तिनके घर गये तिनने पुरुषोत्तम जोसी को थोरो सो अन्न दीयो सो कछु भूखे रहे तब मन में कह्यो जो पद्मरावल के बेटा ऐसे क्यों बूझिये वे तो सूधे ब्राह्मण हे पाछें कृष्णभट्ट ने सुनी जो पुरुषोत्तम जोसी आए हैं तब कृष्णभट्ट ने पुरुषोत्तम जोसी को अपने घर पधराय तब भली भांति सों प्रसाद लिवायो तब

पुरुषोत्तम जोसी बहुत प्रसन्न भये दिन चार राखे
तब पुरुषोत्तम जोसी चलन लागे तब कृस्न भट्ट
साथ चले सो मजल जाय उतरे तब रात्रि कों जब
कृस्न भट्ट सोये तब पुरुषोत्तम जोसी ने अपनी
स्त्री सों पूछौ जो कृस्न भट्ट सोये तब स्त्री ने कही जो
हां सोये तब पुरुषोत्तम जोसी नें श्री आचार्य जी
महाप्रभून की वार्ता कही पाछें कृस्न भट्ट ने मन में
विचारौ जो पुरुषोत्तम जोसी नें मेरे आगें श्री आ-
चार्य जी महाप्रभून की वार्ता नाहीं कही परि हौं
अब कछू चर्चा वार्ता चलाउं सो जब श्री गोकुल
मजल पांच सात रह्यौ तब कृस्न भट्ट ने प्रसंग च-
लायो सो पुरुषोत्तम जोसी घोड़ा पै हुते सो वे तो
विह्वल भए तब कृस्न भट्ट नें पुरुषोत्तम जोसी को

श्री सों कह्यौ जो एक ओर ते तुम थांभे रहो और एक
ओर ते में थामत हौं तब कृस्न भट्ट ने वार्ता चलाई॰
सो भगवद् वार्ता में पुरुषोत्तम जोसी तो विह्वलभ
ये सो घोड़ा ऊपर रह्यौ न जाय तब दोउ जने आसपा
स थामें जाय ऐसे करत मजल आय उतरे तब घो
ड़ा ऊपर ते उतारन लागे तब पुरुषोत्तम जोसी ने॰
कह्यौ जो मोकों तुम क्यों उतारत हो तब कृस्नभ
ट्टनें कह्यौ जो मजल कौ मुकाम आय पहुंचो है
ताते उतारत हैं परि पुरुषोत्तम जोसी कों मंजल
आयवे की खबर नाहीं भगवद् वार्ता में रसाविष्ट
भए सम्पूर्ण दिवस भयो परि प्रसाद लेबेहू को॰
कछु सुधि रही नांही ऐसें करत कितनेक दिनमें
श्री गोकुल आय पहुंचे तब पुरुषोत्तम जोसी ने
श्री गुसांईजी कौ दर्शन कीनों और श्री गुसांईजी
सों पूछो जो महाराज कृस्न भट्ट के ऊपर ऐसी कृपा
काहे ते भई है तब श्री गुसांईजी ने कह्यौ जो याकों
चाचा हरिवंस जी कौ संग है ताते ऐसो भयो तब
पुरुषोत्तम जोसी कौ गर्भ निवर्त भयो और अति
प्रसन्न भये और कृस्न भट्ट सों आप वार्ता पूछन
लागे पाछें कितनेक दिन रहि कें श्री गुसांईजी सों
विदा होय के चले सो उज्जैन आये मार्ग में भगवद्
वार्ता करत चले आये और दोउ जने अति प्रसन्न
भए सो वे पुरुषोत्तम जोसी श्री आचार्यजी महाप्र
भून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी
वार्ता कहां तांई लिखिये॥

॥वार्ताप्रसंग॥१॥वैस्नव ३०॥संबंध ८७।

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू न सेवक जगन्नाथ जोसी तिनकी वार्ता

सो जगन्नाथजोसी ने श्री ठाकुरजी कोंवा
गो पहराय सब सिंगार करि कें राजभोगकोथार
आगे आन राख्यो तब जगन्नाथ जोसी के मन
में आई जो श्री ठाकुर जी वागे पहरेंही आरोगत
हैं ताते थार छूट जायगो तब श्री ठाकुर जीने जग
न्नाथजोसी के मन की जानी तब थार में लात मा
रि केंडार दीनोंतब जगन्नाथजोसी ने और पाक
वेगिवेगि करिकें थार परोसि श्री ठाकुरजीके

आगें आनि राख्यौ तब श्रीठाकुर जी के मनमें आई जो वैसेंही फेर लात मार कें डार दीनों तब फेर तीसरी बेर पाक करिकें श्रीठाकुर जी के आगें आनि राख्यौ तबहू श्रीठाकुर जी ने लात मारिकें डारि दीनों तब चौथी बार पाक करन लागे तब जगन्नाथ जोसी बहुत श्रमित भये पाछें नीचौं माथौ करिकें विचार करन लागे जो कौंन अपराध तें श्रीठाकुर जी आरोगत नाहीं थार डार देत हैं पाछें बहुत बीनती कीनी तब श्री ठाकुर जीनें यह बात जताई जो तू थार छुड वेतें डरपत है तौ तू हमारे आगें काहे कों आनि राखत है इतनें बचन श्री ठाकुर जी को सुनिकें जगन्नाथ जोसी चौंक उठे तब नाक भूमि में घिस बहुत मनुहार करिकें कह्यो जो महाराज मैं तो कछू जानत नाहीं अब मेरो अपराध क्षमा करिये पाछें श्रीठाकुर जी आरोगे परि मास दोय लौं बोले नाहीं फेर बहुत बीनती कीनी तब बोलन लागे ऐसो सरल भाव हुतो ॥ ÷ ॥ ÷ ॥ × ॥ × ॥

वार्ता प्रसंग १ ॥

और जगन्नाथ जोसी श्रीठाकुर जी कों भोग समर्पिवे तामें ताती खीर बहुत समर्पिते सो श्री ठाकुर जी वैसीही ताती खीर आरोगते सो कितनेक दिन पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभू गुजरात पधारे तब खिरालू में जगन्नाथ जोसी के घर उतरे तब श्रीठाकुर जी कौ दर्शन कीयौ तब दे-

रहै सौ श्री ठाकुर जी के ऑरोग रहे हैं तब श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें श्री ठाकुर जी सों पूछी जो [illegible]
जिह्वा और ऑरोग रहे क्यों हैं तब श्री ठाकुर जी ने क
ह्यौ जो जगन्नाथ जोसी सो को तातो खीर वहुत
समर्पन है सो नैमें है मे आरोगत हों तब जगन्नाथ
जोसी सों श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो त
तातो खीर श्री ठाकुर जी को क्यों समर्पन है तब जग
न्नाथ जोसी ने कह्यौ जो महाराज हम तो कछु जान
त नाहीं जो ऐसो वात है हम तो जानत जो तातो खी
र भलो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो
खीर सुहातो भलो खीर वहुत तातो न समर्पियेता
पाछें जगन्नाथ जोसी वैसे ही करन लागे ॥ ÷

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

और एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभून के
दर्शन करिवे कों जगन्नाथ जोसी अड़ेल कों चले
तब मार्ग में अन्नकूट को दिन आयौ तब एक सेव
क साथ हतो तासों कह्यौ जो चामर दार घृत खां
ड़ और कछु आछी सामग्री मिलै सो सब लेआउ
तब वह सेवक गयो तब देखें तो गांव में कछु नाहीं
तब वह सेवक फिर आयो और कह्यौ जो इहां तो
कछु मिलत नांही एक ज्वार मिलत है तब जगन्ना
थ जोसी नें कह्यौ जो भलें ज्वार ही लेआउ तब गां
म में जाय कें ज्वार लीनी तब आछी भांति कूट फ
टक छानि बीन चुनि कें लै आय पाछें जगन्नाथ
जोसी नें वा ज्वार को ठामर कीयो तब वा सेवक नें

कह्यो जो भुसी निकसी है सो ताकों टोकरा में करि ऊपर राख्यो जो ताकी वाफ़ सों जल्दी होय आवेगी तब जगन्नाथ नें कह्यो जो भलें तब वह ठीमर ख दखदान लाग्यो तब वह टोकरा वामें गिर पर्यो सो सब इकठोरो मिलि गयो पाछें भगवद इच्छा मानि कें जैसो तैसो श्री ठाकुर जी कों भोग सम- र्प्यो पाछें भोग सराय महाप्रसाद लीयो तब जोसी रात्रि कों सोयो तब श्री ठाकुर जी ने कह्यो जो मेरे पेट में दूखत है तब जगन्नाथ जोसी ने सुनिवा- और सोंठ और अजवायण समर्पी परि मन में पश्चाताप बहुत भयो पाछें श्री ठाकुर जीनें कह्यो जो अब मेरे पेट में सुख भयो ॥ ✢

वार्ताप्रसंग ३

बहुर एक समय जगन्नाथ जोसी अपने सेव्य श्री ठाकुर जी को उत्थापन करि कें पास ठाडे हुते श्री ठाकुर जी कों मूंग करत हुते और वैस्नव ठाडे द- र्शन करत हुते ता समय एक रजपूत गरासिया आयो सो वे वैस्नव हुतो सो आय कें वैस्नवन में ठाड़ो भयो ता समय एक डोकरी फूल की माला लैकें आई सो वह माला दूर तें श्री ठाकुर जी के ऊ- पर वानें डारी तब जगन्नाथ जोसी कों रिस चढ़ी सो माला वैस्नवन के ऊपर डारी सो वह माला वे- वैस्नव के गले में जाय परी तब वा गरासिया रजपू- त कों रिस आई तब गरासिया नें अपने मन में वि- चारी जो देखो या जोसी ने माला ज़ाको दीनी औ

र धोखैं न दीनों परि भलौ जो राजपूत को जायो हो या
जोसी कों ठौर मारूं तब वह राजपूत तरवार हाथ में
लेके नित्य सकल फिरे दाव पावे तौ घात करे त
ब जगन्नाथ जोसी एक दिन बाहिर्भूमि ते आवत
हते तब वा राजपूत नें जगन्नाथ जोसी के ऊपर पी
छे ते तरवार चलाई तब श्री ठाकुर जीने वह त
रवार श्री हस्त मों थांभी और श्री मुख सों कह्यो

याकों मारं मति वह तब रहि गयो तब जगन्नाथ
जोसी फिर के देखें तो श्री ठाकुर जी आमेन भये
पीछें ठाडे हैं तब जगन्नाथ जोसी ने वा गरासिया
सों कह्यो जो फिटरे पापी तैनें यह कहा कीयो
तब वह राजपूत तरवार डारि कें जगन्नाथ के पा
वन परयो और कह्यो जो मेरे ऊपर कृपा करिये

अनुग्रह करिये और जगन्नाथ जोसी के पाव-
हाथ सों पकर रह्यौ तब जगन्नाथ जोसी कों द-
या आई तब वा कों नाम दीयो सो जगन्नाथ जोसी
ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे तब वा रजपूत कों जग-
न्नाथ जोसी ने नाम दीयो निवेदन करवायो तब
वह भलो वैष्णव दीय भयो वैष्णव के बीच ठाड़ो
रह्यौ ताकों फल सिद्ध भयो वे जगन्नाथ जोसी
ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता
कहां तांई लिखिये ॥ ४ ॥

॥वार्ताप्रसंग॥४॥वैष्णव॥३१॥
अब श्री आचार्य जी महाप्रभून-
के सेवक जगन्नाथ जोसी
की माता तिन
की वार्ता।
लिख्यते

ताके द्वे बेटा हते बड़े बेटा तो नरहर जोसी और छो-
टे बेटा जगन्नाथ जोसी सिंदरमृ के वासी तिन सों
उन सों माता नें कह्यो जो तुम जाय के श्री आचार्य
जी महाप्रभून के पास नाम पाइ आवो और समर्प-
ण कर वाय आवो और बेटान के हाथ में एक एक
मोहर दीनी सो मोहर एक लाटी में मेलि कें वे दोउ भा-
ई अडेल कों चले सो कितनेक दिन में अडेल जाय
पहुंचे सो श्री आचार्य जी महाप्रभू तो अडेल में
हुते नाहीं .. आप तो पुरुषोत्तम क्षेत्र श्री जगन्ना-
थ राय जी के दर्शन कों पधारे हुते सो ए जगन्नाथ जोसी

नरहर जोसी ने विचार कीयो जो हम फिरि चलेंगे
तो हमारी माता खीजेंगी जो नाथ समर्पेण कीये वि
नु तुम कौं आरा नाते आपुन पुरुषोत्तम क्षेत्र च
लैं यह अपने मन में विचार करकें जगन्नाथ जो
सी और नरहर जोसी ये दोउ भाई पुरुषोत्तम क्षेत्र
कों चले सो थोरे दिन में पुरुषोत्तम क्षेत्र जाय पहु
चे जाय के पूछो जो श्री आचार्य जी महा प्रभु आप
कहां रहत हैं तब एक वैष्णव ने घर बताय दी
नों तहां ये दोउ भाई गये तब श्री आचार्य जी मह
प्रभून कौ दर्शन कीरकें बैठे तब श्री आचार्य जी
महा प्रभून ने पूछो जो तुम्हारी माता नाको है तब
इनकों बहुत आश्चर्य भयो जो ये तो हम कों पह
चानत हैं और हम तो कबहू देखे नाहीं और श्री
आचार्य जी महा प्रभून नें फेर पूछो जो श्री ठाकु
र जी के दर्शन कर आये तब इन दोउनें कह्यो जो
महाराज नाहीं किये तब श्री आचार्य जी महा
प्रभून नें आज्ञा दीनी जो जाय कें दर्शन करि आवो
तब ये दोउ भाई दर्शन कौं गये तहां देखें तो श्री
आचार्य जी महा प्रभू जगन्नाथ राय जी के पास खडे
हैं तब इनकों आश्चर्य भयो जो यह कहा हमनें
इनकों अबही घर देखि आये हुते तब मन में फिर
जानी जो दूसरी बार होयगी तहां होयकें आये हो
यगे परि मन में सन्देह भयो पाछें दर्शन करिकें आ
ये तब देखें तो श्री आचार्य जी महा प्रभु बैठे हैं तब
आय कें दंडौत कीरकें बैठे तब दोउ भाई विस्मय

भये आपस में मोंहडो देखन लागे चकृत होय रहे
तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने पूछो जो दर्शन
करि आये और जो तुम्हारे मन में सन्देह आयो
हुतो सो निवर्त भयो तब इन दोउ भाई ने कहो
जो सन्देह तो निवर्त भयो तब श्री आचार्य जी
महाप्रभून ने कह्यो जो तुम्हारी माता ने भेट मो
हर पठाई हैं सो लावो तब नाठि मेते मोहर का
दि कें आगें राखी पाछें नाम निवेदन करवायो
अपनो महात्म इन दोउ भाईन कों आपने ऐसो
दिखायो सो स्वरूपा शक्ति भई ता पाछें वहां कि
तेनक दिन रहि कें आज्ञा मांगि के चले सो मार्ग
में श्री आचार्य जी महाप्रभून के स्वरूप को नि-

चार करत जाय ऐसें करत आपने घर आय पहुंचे
तब माता सों सब समाचार कहे तब माता बहुत प्र
सन्न भई पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून को रूपा
ने भले भगवदीय भए ताते इनकी वार्ता अब कहां
तांई लिखियै ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ३२ ॥
अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के
सेवक नरहर जोसी जगन्ना
थ जोसी के बड़े भाई ।
तिनकी वार्ता ।
लिख्यते ॥

सो एक समय नरहर जोसी पुरुषोत्तम क्षेत्र श्री ज
गन्नाथ राय जी के दर्शन कों चले सो गढ़ा मजल जा
य उतरे तब स्नान करिकें रसोई करी श्री ठाकुर जी
कों भोग समर्प्यो तब देखें तो एक बालक बरस दस
को एक रूख ऊपर ते उतर कें आय ठाढ़ो भयो तब
वा बालक कों देखि कें नरहर जोसी कों आश्चर्य भ
यो जो यहां यह लरिका कहां ते आयो तब वह ल
रिका नरहर जोसी के आगें हाथ पसार कें मांगन ल
ग्यो तब नरहर जोसी ने अपने मन में विचार्यो जो य
ह सुन्दर लरिका मेरे आगें काहे कों हाथ पसारे
तब नरहर जोसी नें द्वै रोटी घी सों चुपरि कें तिनके
ऊपर दारि धरि कें बालक के हाथ में दीनी तब वह
बालक इमली के रूख ऊपर चढि गयो पाछें फेर न
रहर जोसी देखे तो वह बालक नाहीं तब दूसरे दि

न मजल जाय उतरे स्नान करि श्री ठाकुर जी कों
भोग समर्प्यो तब तैसें ही वह बालक इमली के रू
ख ऊपर ते उतर कें आयौ और तैसें ही हाथ पसा
र्यो तब नरहर जोसी कों और सन्देह भयो जो कोउ
छलि वे कों आयो होय तो कैसें देउं और जो भगव
द् स्वरूप होय तो प्रसादी महा प्रसाद कैसें देउं त
ब यह सन्देह करि कें वा बालक कों कछून दीनो
तब वह बालक रूख ऊपर चढ़ि गयो पाछें नरहर
जोसी नें महा प्रसाद लीयौ सो यह बात रिवरालू
में जगन्नाथ जोसी सों श्री ठाकुर जी ने कही जो
आज में नरहर जोसी के पास गयो हो तहां में हाथ
पसार कें माग्यो परि मोकों कछून दीयो तब जग
न्नाथ जोसी ने वह दिन वह महीना वह सम्वत

हवार लिखि राख्यो जो नरहर जोसी आवेंगे तब पूछेंगे तब कितनेक दिन पाछें नरहर जोसी अपने घर आये तब माता सों भाई सों मिले पाछें दूसरे दिन दोऊ भाई सेवा में न्हाए तब जगन्नाथ जोसी ने श्री आचार्य जी महाप्रभून के कुशल समाचार पूछे जो नीके हैं पाछें जगन्नाथ जोसी ने नरहर जोसी सों कह्यो जो अमुके सम्वत में अमुक महीना में अमुकी तिथि में अमुके वार पटना ते आगें पेंडे में मजल उतरे तब रसोई करिकें श्रीठाकुरजी को भोग समर्प्यो तहां कोऊ बालक हाथ पसारत देख्यो तब नरहर जोसी ने कह्यो जो एक दिन तो में सुन्दर बालक देख कें द्वै रोटी घी सों चुपरि ता ऊपर दार धरिकें दीनी और दूसरे दिन तो मोको सन्देह भयो जो कोऊ छलिवे को आयो होय तो कैसें देउ ताते न दीनी तब जगन्नाथ जोसी नें कह्यो जो तुमने बुरी कीनी जो न दीनी वे तो श्री ठाकुरजी आप हुते और जब आपन दोऊ भाई श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों गये हुते तब हमारी माता नें मोहर भेंट पठाई हुती सो आपन सन्देह करि राखी हुती तब आप श्री आचार्यजी महाप्रभून ने मांग लीनी ताते अपने मार्ग में श्री आचार्य जी महाप्रभून बिना श्रीठाकुर जी बिना और संदेह न करनो अपने मार्ग में श्री आचार्य जी महाप्रभू के चरन प्रताप ते उन बिना कछु न संभवे तब दोऊ भाईन के मन में यह निश्चय भयो ॥ +

वार्त्ता प्रसंग ॥ १ ॥

औरु एक समय नरहर जोसी कौं जिजिमान अ
लियान गाव में रहतो ताकौ नाम महीधरजी हुतौ
तथा वाकी बहन कौ नाम फूलबाई हुतौ तिनसों
नरहर जोसी ने कह्यौ जो तुम श्री गुसांईजी के पास
नाम पावौ वैस्नव होउ तब उन कह्यौ जो भलें अ
वश्य तुम श्री गुसांईजी कौं पधरावो तब नरहर जो
सी आगें आय कें श्री गुसांईजी कौं पधराय कें अ
लियान में गये तब महीधरजी तथा फूलबाई
सों कह्यौ जो श्री गुसांईजी पधारे हैं तब दोउ भा
ई बहन अत्यंत प्रसन्न भए तब महीधरजी ने न
रहर जोसी सों कह्यौ जो में श्री गुसांईजी को खालें

हाथन कैसें पधराऊं तव महीधर जीने नरहर जोसी
सों रुपैया मोहरन की खोचरी करवाय कें न्योंछावर
करि कें श्री गुसांई जी कों अपने घर में पधराये ता
पाछें महीधर जी फूलबाई तथा सब बाल गोपा
ल सब कुटुम्ब कों श्री गुसांई जी के पास नाम दि
वायौ निवेदन करवायो और भली भांति सों श्री
गुसांई जी की सेवा करि कें बिदा किए पाछें श्री
गुसांई जी द्वारिका कों पधारे तव नरहर जोसी खि
रालू अपने घर आये ता पाछें कितनेक दिन में
वा अलियान गांव में आगि लगी ता समय नर
हर जोसी खिरालू के तालाव के ऊपर ते नित्य
कर्म करिकें तुलसी फूल की डारी तथा झारी
हाथ में लैकें घर आवत हुते ता समय नरहर जो
सी के मन में आई जो अलियान गाम में आग लगी
तव नरहर जोसी पैंडें ठाड़े होय कें तुलसी दल बीच
में धरि कें झारी में ते जल लैकें अंजुली सों तुलसी द
ल के पास पानी की धारा करिकें कुंडलिया कीनी इतने
ही में अलियान में आग बुझी और महीधर जी की हवेली
घर सव वच्यौ ता पाछें कितनेक दिन में नरहर जो
सी अलियान में गए तव फूलबाई ने नरहर जोसी
सों कह्यौ जो यहां आगि कौ उपद्रव बहुत भयो है सो
श्री गुसांई जी की कृपा ते अपने तौ कल्याण भ
यौ तव नरहर जोसी ने कह्यौ जो प्रभून की कृपा
ते सदा कल्याण ही होय इतनों कहि कें नरहर
जोसी खिरालू आये तव महाप्रसाद लीयो पाछें

दोऊ भाई एकांत बैठे तब नरहर जोसी ने जगन्नाथ जोसी सों कह्यो जो में एक दिन नित्य कर्म कर कें तालाब के ऊपर ते आवतहुतो तुलसी फूलकी डालितथा भारी मेरे हाथ में हुती और अलिमानगांव में आगि लगी सो बात कही तब नरहर जोसी सों जगन्नाथ जोसी नें कह्यो जो आपुन कों इतनों हट कीयौ न चाहिये जो श्री ठाकुर जी कों श्रम करवायो यह अपने मार्ग की रीति नांही तब नरहर जोसी ने कह्यो जो मैंने हठ नाहीं कीयौ परि मेरे मन में ऐसी आयी जो ये अबही वैस्नव भए हैं और आगि लगी ताते मैनें ऐसो कीयौ तब दोउ भाई हंसि मुसिक्याय चुप कर रहे पाछें कह्यो जो प्रभू बड़े कौतुकी हैं इनकी कृपा ते सब भलो होय आपन हठ न कीजे यह अपनों धर्म नाहीं ताते श्री वल्लभ राजकुमार की अद्भुत लीला हैं सरण आये तिनकों अतिही कल्याण होय सो वे नरहर जोसी तथा जगन्नाथ जोसी तथा इनकी माता ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे जो परमार्थ के लिये ऐसें कीयो ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं सो अब कहां तांई लिखिये ॥ + ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥ वैस्नव ॥ ३२ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक एणाव्यास साचोरा। ब्राह्मण गोधरा के बासी तिनकी वार्ता लि० ॥

सो जगन्नाथ जोसी ने प्रथम राणाव्यास पास नाम पायौ हुतो फिर श्री आचार्य जी महा प्रभून पास नाम पायो परि जगन्नाथ जोसी राणाव्यास के पास बहुत रहते सो एक समय राणाव्यास भगवद इच्छा ते गा धरा की वेस्या नें इनसों संग कीयो सो वात राजद्वार में सुनी तब हाकिम के प्यादे राणाव्यास कों लेन आ ये तब जगन्नाथ जोसी ने राणाव्यास को और गाम में करदीनों पाछें जगन्नाथ जोसी तहां अकेले रहे और वे प्यादे आये हुते सो राणाव्यास कों ढूंढन लागे तब जगन्नाथ जोसी नें कह्यो जो राणाव्यास तो इहां नाहीं चलो हो उत्तर देउंगो तब जगन्नाथ जो सी कों लायकें हाकिम के आगे ठाड़ो कीयो तब हाकिम ने कह्यो जो राणाव्यास कहां हे उनने पराई स्त्री सों अन्याव कीयो हे तातें वाकों लावो और मेंतो जगन्नाथ जोसी कों नीकें जानत हों जो जाकों नाम जगन्नाथ जोसी सो कबहूं अन्याव न करे यह तो राणाव्यास नें अन्याव कीयो हे ताते उनकों ला उ तब जगन्नाथ जोसी ने कह्यो जो मेरी कही सुनों तो में कहूं तब हाकिम ने कह्यो जो कहो तब जग न्नाथ जोसी ने कह्यो जो राणाव्यास ने अन्याव नाहीं कीयो राणाव्यास औसो काम कबहूं न करे तब हाकिम ने कह्यो जो क्यों जानिये तब जगन्ना थ जोसी ने कह्यो जो मेरी कही मानें तो में कहूं जो राणाव्यास के बदले जो कछू कहो सो में करूं त ब हाकिम ने एक पैया को मुगदर मगायो सो अ

ग्नि में मेलि कें तातो कीयो तव जगन्नाथ जोसी स्ना
न करिकें आयो तव जगन्नाथ जोसी ने ठाडो होय
कें कह्यो जो राणाव्यास नें अन्याय कीयो होयतो
मोकों अग्नि जराय के भस्म करि डारियो और नाही
अन्याय कियो होयतो मुगदल शीतल होय जर॰
यो पाछें वह मुगदल अग्नि मेंसे काढ़ि कें दोऊ हा
थन मों उठाय अपने गरे में मल्यो सो घड़ी१ लों॰
राख्यो सब जने बोले जो जोसी तू काढ़ि तव जगन्ना
थ जोसी ने कह्यो जो हूं काढ़ि कें कोंन के गरे में डारुं
तव हाकिम नें कह्यो जो मेरे गरे में डारो पाछें जोसी
नें भूमि में डार दीनों तव भूमि जरगई तव सव जने॰
कहन लागे जो जगन्नाथ जोसी तुम धन्य हो तुम
सांचे हो तुमकों तुम्हारे धनी को असो सांच है यों॰
कहि कें जगन्नाथ जोसी को समाधान करिकें क॰
ह्यो जोसी तुम कछू मांगो मेंतेरे ऊपर॰ प्रसन्न भयो हों जो
जोसी ने कह्यो जो इतनों मागत हों जो जानें यह चु
गली करी है तासों कछू मति कहियो तव यह सु॰
निकें हाकिम तथा सव जने वहुत प्रसन्न भये पाछें
जगन्नाथ जोसी अपने घर आये वे असे भगवदी॰
य हे जो श्री आचार्यजी महाप्रभून की कृपाते कहा
न होय ॥ ÷ ॥ ÷

वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥

और पहिले राणाव्यास नें माधोदास सारस्वत
के पास नाम पायो हुतो पाछें श्री आचार्यजी महा
प्रभून के सेवक भये तव परम वैष्णव भये सो वे राणा

व्यास सिद्धपुर में रहते सो गंगाव्यास और जगन्नाथ जोसी सरस्वती में स्नान करत हुते ता समय एक रजपूतानी सती होयबे कों आई तब गंगाव्यास के पास जगन्नाथ जोसी हुते तिनने पूछी जो सती होत है ताको प्रकार कहा तब गंगाव्यास ने कही जो प्रेत के संग वृथा ऐसो शरीर जरावत हैं जो गंगाव्यास नें मूंड हिलाय के कही जो वह रजपूतानी सती होन आई हुती ताने देख्यो तब वा रजपूतानी नें आय के मनुष्यन सों कही जो हूं तो न जरूंगी मोकों सत नाही दे तातें मेरी हत्या चढेगी ऐसें कहि कें बहुत हसि दीनी और जरी नाहीं तब वे लोग वा मृतक कों जराय कें वा स्त्री कों गाम के वाहिर झोंपरी करि दीनी तब स्त्री उहां रही ता पाछें गंगाव्यास न्हायबे कों आये तब वा स्त्री ने गंगाव्यास सों आय कें पूछी जो तुमने मूंड हलाय के कहा वात कही ता वात के देखतें होंन जरी ताते मोसों कहु वात कहो तब गंगाव्यास नें कही जो हम तो आपुस में हंसत वात करत हुते तब स्त्री नें कही जो हमसों काहे कों दुरावत हो जो वात होय सो कहो और बहुत आग्रह कीयो तब गंगाव्यास ने कही जो हम आपस में हंसत हुते जो यह ऐसो उत्तम देह पाय के नाहक प्रेत के साथ जरावत है या देह सों श्रीठाकुर जी की सेवा न कीनी न भजन कीयो ऐसी उत्तम देह धरि कें श्रीठाकुर जी कों न भज्यो तब वा स्त्रीने गंगाव्यास सों कही जो हूं तो तुम्हा

री प्रारणा हैं जो जा भांति यह देह श्री ठाकुर जी के
काम आवै सो करौ तब यह बात सुनिकें राणा
व्यास ने कह्यौ जो अब तौ तोकों सूतक है सूतक उ
तरैगो तब होयगो तब स्त्री अपने स्थल कों गई प
रिवाकों बहुत बिरह उत्पन्न भयौ जो दिन प्रति दि
न आवै सो राणा व्यास कौ दर्शन करि जाय ऐसें क
रत सूतक उतर्यौ तब सुद्ध होय कें राणा व्यास के
पास आई तब राणा व्यास ने कही जो तू सवारें आ
इयो सो वा स्त्रीने वा दिन कछू खायौ नाहीं पहिलें
चना चबाय कें रहती सो वा दिन वा स्त्री ने जल पान
हूं नाहीं कीयौ पाछें प्रातःकाल भयौ तब राणा
व्यास के आयवे को समो भयौ तब आय के बैठि र
ही तब राणा व्यास आये और स्नान करिकें भगवद
स्मरण कीयौ तब वा स्त्री सों कह्यौ जो तू स्नान क
रिकें बैठि रही पाछें राणा व्यास ने श्री आचार्यजी
महाप्रभून कौ ध्यान धरिकें वाके कान में नाम सु
नायौ तब नाम सुनत ही वा स्त्री कों भगवद भाव
उत्पन्न भयौ तब वा स्त्रीनें राणा व्यास सों पूछो जो
अब में कहा करूं तब राणा व्यास ने कह्यौ जो अ
ब भगवद सेवा करि तब वा स्त्री ने कह्यौ जो मेरी
स्थित तौ ऐसी है जो तुम कछू टहल देउ सो में क
रूं पाछें राणा व्यास उपरना परदनी धोयवे कों
देते सो धोयकें सिद्ध करिकें पहुंचावती प्रसाद
राणा व्यास के घर लेती ऐसें करत राणा व्यास के
घर कौ काम काज सब करन लागी पाछें भगवद

सेवाकौ सब काज काम करन लागी सो कितनेक दिन पाछें राणा
व्यास के घर श्री आचार्य जी महाप्रभू पधारे तब राणाव्यास
नें वा स्त्रीकों श्री आचार्य जी महाप्रभून पास नाम निवेदन
करवायो तब वह स्त्री परम वैस्नव भई सो राणाव्यास श्री
आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम भगवदीयहे तातें
इनकी वार्ता कहां तांई लिखियें ॥

॥ वार्ता प्रसंग ।२। वैस्नव ॥ ३३ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक रामदास सारस्व
त ब्राह्मण राजनगर
में रहते तिन०
की वार्ता

सो रामदासजी के मांथे नटवर गोपालजी श्री आचार्यजी
महाप्रभूननें और अपनी पादुकाजी सेवा के लिये पधर
राय दीनी सो सेवा सदैव करें ऐसे कृपा पात्र भगवदीयहे
सो रामदास विवाह करिकें पृथ्वी परिक्रमा कों चले सो
कितनेक दिन में पृथ्वी परिक्रमा करिकें अपने घर
आये परि रामदास स्त्री कों अंगीकार न करतें तब दि
न द्वे तथा चारि रहिकें द्वारिका कोंचले तब रामदास
की स्त्रीहू साथ चली परि रामदास स्त्रीकों साथ न
आवन देहि ईंटन सों मारें परि रामदास की स्त्री तो दूर
दूर साथ ही भई और रामदास के दास की पातर में झूठ
न उबरें सो खाय नाहीं भूखी ही परि रहे परंतु पति के साथ
साथ ही रहे तब एक दिन श्री रणछोड़ जी नें रामदास सों
कही जो तू अपनी स्त्रीकों अंगीकार करि त्याग न देके

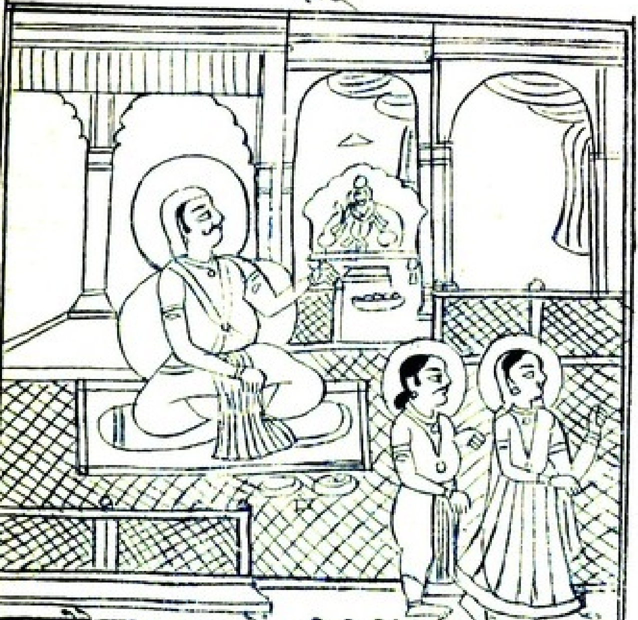

करत हे तब रामदास ने कही जो में विरक्त हों वैरागी
हों मेरो स्त्री सों कहा काम हे तब श्री रणछोड़ जी ने
कह्यो जो तेने विवाह काहे को कियो जो तू श्री आचार्य
जी महाप्रभून को सेवक हे तोकों ऐसी निठुरता न चाहि-
ये जो श्री आचार्य जी महाप्रभून को सेवक जानि कछू क
हत नाहीं अब हों कहत हों तू अपनी स्त्री कों अंगी
कार करि तब रामदास ने अपनी स्त्री सों कह्यो जो
तू मेरे साथ चली आउ तब मार्ग में रामदास के सा
थ जान लागी तब मजल जाय उतरे तब रामदास नें
अपनी स्त्री सों कही जो तू वस्त्र साज लैकें डेरा में
बैठी रहियो और में उपरा बीनि लाउं पाछें आप

स्नानकरि रसोईकरी श्रीठाकुरजी कों भोगसम
र्प्यो भोग सराय पाछें प्रसाद लीयो और स्त्री कों
प्रसाद दियो सो कितनेक दिन मार्ग में चले आये
पाछें एक दिन श्रीरणछोड़जीनें रामदास कों आ
ज्ञा दीनी जो तू अपनी स्त्री कों नामदै तब रामदास
ने कह्यो जोहूं नाम कैसें देउं तब श्री रणछोड़जी
नें कह्यो जोतू नामदै मेरी आज्ञाहै तब श्रीआचा
र्यजी महाप्रभून कौ नामले श्रीरणछोड़जी की आ
ज्ञा ते स्त्री कौ नाम दीयो तब स्त्री केहाथ कौ म
हाप्रसाद लैन लाग्यो पाछें कितनेक दिन में श्री
आचार्य जी महाप्रभू राजनगर पधारे तब रामदा
सनें आयकें श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन
कीये तब रामदास ने कह्यो जो महाराज मेरी स्त्रीन
कों नाम समर्पण करवाइये तब आपने कह्योजो
अबतो तेंनें नाम दीयो है फेरि कहा तब रामदासने
कह्यो जो महाराज मैंतो श्री रणछोड़ जी की आज्ञा
ते नाम दीयोहै और मोकों श्री रणछोड़ जीकी आ
ज्ञा है जो श्री आचार्यजी महाप्रभून पास नामनि
वेदन करवाइयो तबयह सुनि कें श्री आचार्यजी
महाप्रभून ने नाम निवेदन करवायो पाछें घर आ
य गृहस्थाश्रम करन लागे वे रामदास श्री आचा
र्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीयहे
तातें इनकी वार्त्ता कहांतांई लिखिये ॥+

वार्त्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥३४॥
अब श्रीआचार्य जी महाप्रभू

न के सेवक गोविंद दुवे
सांचोरा ब्राह्मण ति
न की वार्ता ।।

सो गोविंद दुवे श्री ठाकुरजीकी सेवा नीकी भांतिसों करें परि मन में विग्रह हुतो नब गोविंद दुवे ने श्री आचार्यजी महाप्रभून कों बीनती पत्र लिख पठायो जो महाराज मेरे मन में विग्रह बहुत रहत है ताते में कहा करूं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने नवरत्न ग्रंथ प्रगट करि गोविंद दुवे कों लिख पठायो और पत्र में लिख्यौ जो या ग्रंथ कौ पाठ तू नित्य करियौ सो तेरी विग्रहता सब मिट जायगी। सो कृपा पत्र आयौ तब गोविंद दुवे नवरत्न को पाठ करन लागे सो पाठ करत गोविंद दुवे की सब विग्रहता मिट गई तब श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करन लागे ।।+

वार्ता प्रसंग १

और एक समें गोविंद दुवे मीरा बाई के घर हुते तहां मीरा बाई सों भगवद वार्ता करत अटके तब श्री आचार्य जी ने सुनी जो गोविंद दुवे मीरा बाई के घर उतरे हैं सो अटके हैं तब श्री गुसांई जी ने एक श्लोक लिखि पठायौ सो एक ब्रजवासी के हाथ पठायौ तब वह ब्रजवासी चल्यौ सो वहां जाय पहुंचौ ता समय गोविंद दुवे संध्या वन्दन करत हुते तब ब्रजवासी नें आय के वह पत्र दीनो सो पत्र वांचि कें गोविंद दुवे तत्काल उठे तब मीराबाई

बहुत समाधान कीयो परि गोविंद दुबे नें फिर पाछें नदेख्यो ॥१॥

वार्ताप्रसंग २

और एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू आप द्वारिका पधारे तब गोविंद दुबे और जगन्नाथ जोसी और पंच सात वैस्नव हुते सो आप के साथ हे तब श्री आचार्यजी महाप्रभून सें द्वारिका में बीनती कीनी जो महाराज कछू कथा कहिये तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें गोविंद दुबे सें कह्यो जो अबही तो मोकों अवकाश नाहीं तब गोविंद दुबे नें बीनती कीनी जो महाराज थोरी सी कहिये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कथा कहिवे कों पोथी

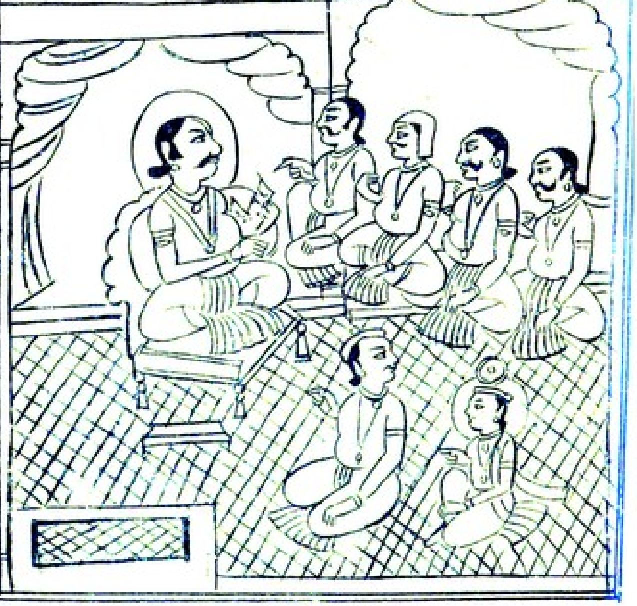

खोली तब इतने में गोविंद दुवे सों श्री रणछोड़ जी बा तें करन लागे तब आपनें गोविंद दुवे सों कह्यो जो पो- थी खुलाय कें बातें कौन सों करत हैं तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें फिर देख्यो जो श्री रण छोड़ जी सों बातें- करत हैं तब आपनें पोथी बांधी और फिर आप- पोढ़े ॥२॥

वार्ताप्रसंग ३

और सब वैस्नव श्री आचार्यजी महाप्रभून के- थार को महाप्रशाद पावते तब एक दिन श्री आचार्य- जी महाप्रभून नें खवास सों कह्यो जो तुम इन वैस्नवन कों थार को महाप्रशाद मति देउ सो ता दिन श्री आ- चार्य जी महा प्रभू भोजन करि कें उठे हुते सो उठत ही खवास नें थार छूय कें मांजि धर्‍यो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून के थार को महाप्रशाद न मिल्यो सो तादिनि सब वैस्नवन नें उपवास कर्‍यो तब श्री रणछो- ड़जी नें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कह्यो जो तुम इन वैस्नवन कों थार नित्य देत हो तैसें इनकों नि- त्य दीजियो तब दूसरे दिन श्री आचार्य जी महा प्र- भून नें गोविंद दुवे और जगन्नाथ जोसी सों कह्यो जो तुम नें कालि महा प्रसाद कों नहीं लीनों भूखे काहे कों रहे तब गोविंद दुवे और जगन्नाथ जोसी ने श्री आचार्य जी महा प्रभून सों वीनती करि कें कह्यो जो महाराज कालि आप के थार को महा प्रशाद न मिल्यो तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो तुमकों अपने थार को महाप्र

साद तो न देते पीर तुम्हारी सिपारस बड़ी ठौर ने भ
ई है ताते अब देनो परयौ पाछें जो नित्य थार को
महाप्रसाद देत हुते तैसेंही देन लागे तब ये वैष्ण
व प्रसन्न होय के रसोई करन लागे तब तहांता
ई श्री आचार्य जी महाप्रभू द्वारिका में विराजे
तहां तांई वैष्णव पास रहे पाछें श्री आचार्यजी
महा प्रभू श्री रणछोड़ जी सों बिदा होय कें अडेल
कों पधारे तब सब वैष्णव श्री आचार्यजी मह
प्रभून के सा थ आए सो श्री आचार्य जी महा
प्रभून कों अडेल में पहुंचाय कें फेर अपने अप
ने घर आये पाछें श्री ठाकुर जी की सेवा करन
लागे सो ये गोविंद दुबे श्री आचार्यजी महा प्र
भून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं तातें
इनकी वार्ता अब कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता ॥४॥ वैष्णव ॥ ३४ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक राजा दुबे माधो।
दुबे दोऊ भाई सांचोरा
ब्राह्मण तिनकी
वार्ता

सो ता गाम में दोऊ भाई सांचोरा ब्राह्मण और
रहते सो एक को नाम हरिकृष्ण हुतो और एक
को नाम राम कृष्ण हुतो सो बड़ो भाई रामकृष्ण
पढ़ो बहुत हुतो और छोटो भाई मूरख हुतो औ
र यह बड़ो जो पढ़ो हुतो सो गाम के चोंतरा ऊपर

बैठि कें पटैल के आगें कथा कहतौ और छोटो भाई-
मूरख हुतौ सो खेती की रखवारी करतौ सब टहल क
रतौ सो वह बड़ो भाई कछु काम गयौ हुतौ दूसरें गां
म में सो तादिन इहां की कथा रहगई पाछें एकदिन
मेह की वर्षा बहुत भई सो वह छोटो भाई खेत तें उठि
कें घर आयौ तब भावज नें कह्यौ जो तुम रोटी जे
लेंउ तब वादेवर नें कह्यौ जो सीत बहुत लागत है
और में बहुत भीज्यौ हूं तातें तू ताती परोसै तो मैं जे
ऊं तब भावज नें कह्यौ जो तू खाय तौ खा नातर-
मैं जाय कें सोय रहत हूं अब तू कहा गाम के चौंतरा
ऊपर बैठि कें पटैल कें आगें कथा कहैगो कै वादे
की ग्रास फरेगो तातें खानो होय तौ खा नातर हूं
तौ जाय कें पड़ि रहूंगी और जैसो है तैसो खा नात
र कहूं उठि जा तब वा देवर के मन में बहुत दुख-
लाग्यौ और अपने मन में विचार्यौ जो हूं या देश
को त्याग करूं कहूं निकस जाऊं ता पाछें घर में
तें निकस कें मन में विचार करन लाग्यौ जो राजा
दुबे माधौ दुबे बड़े महापुरुष हैं तातें इनकों नमस्का
र करि कें जाऊं पाछें तहां गयौ तब राजा दुबे माधौ
दुबे दोउ भाईन को नमस्कार कीयौ और रोवन ला
ग्यौ तब दुबे जी ने पूछौ जो तू कौन है पाछें देखि कें
पहिचान्यौ तब वासों कह्यौ जो तू तौ अमुके कौ
बेटा है हरिरूस्म तेरो नाम है और तू हमारी जाति
कौ है सो तोकों ऐसो कहा दुख है तासों तू रोवत
है तब वाने कह्यौ जो मेरे दुख कौ पार नाहीं तब

दुबेजीने कह्यो जो तू अपनों दुख कहि तोकों क
हा दुख है तब याने कह्यो जो तुम मेरे दुख कों दूर
करो तो मैं कहूं तुम बड़े भी महापुरुष हो तब दुबे
जी ने कह्यो जो श्री ठाकुर जी बड़े हैं वे सब को दु
ख दूर करेंगे तू अपनों दुख कहि तब याने सब
समाचार कहे जो मोकों भावज ने ऐसे ऐसे व
चन कहे हैं सो मेरे हृदय में खटकत हैं याते तुम्हारे
पास आयो हूं सो मेरो दुख तुम से दूर होयगो पाछें दु
बेजीनें याको समाधान कीयो समाधान करि
कें वाकों महाप्रसाद लिवायो पाछें रात्रि को सो
य रह्यो तब प्रातःकाल भयो तब वासों दुबेजी ने
कह्यो जो तू स्नान करि आउ तब वह जाय कें दे
हकृत करि स्नान कर कें आयो तब माधौ दुबे सों
राजा दुबे ने कह्यो जो अब कहा करिये तुमहीं
जानों तुम्हारी जीभ चली है जो तुम करोगे नाहीं
तो कैसें छूटोगे भाड़ लायो है तब माधो दुबे ने कह्यो
जो अब तो तुम्हारी शरण आयो है तुम श्री आ
चार्य जी महाप्रभून के सेवक हो अब तो याको
कार्य कीयो चाहिये तब पहिले तो याको क्षौर
करवायो पाछें स्नान करवाय कें मन्दिर के द्वार
के आगें बैठायो तब माधोदुबे ने राजा दुबे सों
कह्यो जो अब याको कछु नाम होय सो कहो तब
राजा दुबे ने माधो दुबे सों कह्यो जो तुम्हारो यह का
म है मेरो काम नाहीं ताते तुमहीं कहो तब माधो
दुबे ने राजा दुबे सों कह्यो जो तुम बड़े हो ताते

तुमहीं कहो तब राजा दुवे ने माधो दुवे सों कह्यौ
जो मेरी आज्ञा है ताते तुमहीं कहो तब माधौ दु
वे ने वाकूं उपदेश दीयौ अष्टाक्षर मंत्र कान में
कह्यौ पाछें वाकूं अष्टोत्तर सत नाम कौ जप कर
वायौ सो जप कीयौ सो एक एक माला जप की
ये पाछें संस्कृत बोलन लाग्यौ तब माधो दुवे ने
राजा दुवे सों हँसि कें कह्यौ जो अब आज्ञा होय तो
एक वार याकों फेरि जप करवाइये तब राजा दु
वे ने माधौ दुवे सों कह्यौ जो अवश्य करवाइये
पाछें माधौ दुवे ने दूसरी वार जप करवायौ तब
भगवद् स्वरूप स्फुर्त भयौ और पुराण इतिहा
स में ज्ञान भयौ तब माधौ दुवे ने राजा दुवे सों
कह्यौ हँसि के कह्यौ जो आज्ञा होय तो अब फेर
याकों जप करिवाइये तब राजा दुवे नें माधौ दु
वे सों कह्यौ जो अब यह इतने ही कौ पात्र है अ
धिक समाय नाहीं और कह्यौ जो तुम कछु मन
में मति लाइयो जो हम ते भयौ है ताते यह कछु भ
यौ है सो श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा ते भ
यौ है हमारौ तुम्हारौ स्वरूप तौ वे जानत हैं पाछें वाने
उहां ही प्रसाद लीयौ पाछें दुवे जी की आज्ञा मांगि कें
अपने गाम के चौंतरा ऊपर जाय बैठो और कथा क
हन लाग्यौ पहलें बडौ भाई कथा कहतौ सो वह गां
व गयौ जानि कें कोई न आवतौ सो वा दिन अहं तें वा
कौ सेवक आयौ ताने कथा कहत देख्यौ तब वाने
गाम के पटैल सों आय कह्यौ जो तुम कथा सुनिवे

कौं कथा न गयो भट्ट जीनौ कथा कहि रहे हैं तब पटैल आ
य के देखे तौ भट्ट जी कहा कथा रहे हैं तब पटैल नें
कह्यौ जो भट्ट जी अब ताईं तुम कथा कहन कौं नाहिं
आए तब भट्ट जी नें कह्यौ जो पहिले बड़े भाई कथा
कहते ताते मैं नाहीं आवतौ अब वे और गाम गए हैं
ताते मैं कथा कहिवे कौं अब आयौ हूं तब वे भगवद
इच्छा ते भट्टजी भली भांति कथा कहन लाग्यौ ताते
सब कोउ बहुत प्रसन्न भयो और सब कोउ कहन
लागे जो हमारो बड़ो भाग्य है जो अब के ऐसो ब्रा
ह्मण मिल्यौ तब कितने क दिन में वह कथा सम्पू
र्ण भई तब सबनें मिलि कें भट्टजी की पूजा करी
और कह्यो जो अब तो तुमहीं कथा कहिवो करौ
कथा कौं आइयो पाछें वह ब्राह्मण माधौदुबे के
पास आयो आय कें बीनती करी जो तुमारी कृपा
ते मैंनें कही जो जाकी यह पूजा मिली है सो तुम
लेउ यह सब द्रव्य तुम्हारो है तुम मेरे गुरू हो तब
जा दुबे माधौदुबेनें वासों कह्यौ जो हमारे और तुम्हारे
गुरू श्री आचार्यजी हैं ताते यह द्रव्य सब उनकौ
है हमारो यामें कछु नाहीं ताते यह द्रव्य सब अडैल
पहुंचावनो तब वा ब्राह्मण नें सब द्रव्य अडेल
पहुंचायौ सो कितनेक दिन पाछें रामदास सांचौरा
ब्राह्मण और जगन्नाथ जोसी ये वैस्नव श्री आचा
र्यजी महाप्रभून के दर्शन कौं अडेल जात हैं तिन
के साथ वह द्रव्य अडेल पहुंचाय दीयौ तब कित
नेक दिन में वाकौ बड़ौ भाई आयौ वह गांव गयौ

हुतौ सो आयौ तब यानें राजा दुबे माधौ दुबे सों क
ह्यौ जो तुम आज्ञा देउ तौ मेरे पिता कौ ग्राम है सो
फेरौं तब दुबे जी ने कह्यौ जो अब कहा कछु संदेह
है तू जा सब सिद्धि होयगो तब वह दुबे जी सों आ
ज्ञा लैकें वा गाम कौं चल्यौ सो जाय पहुंच्यौ पाछें
वा राजा सों मिल्यौ आशीर्वाद दीयौ तब वह राज
पूत वा भट्ट कों देखिकें बहुत प्रसन्न भयौ और क
ह्यौ जो हमारौ बड़ौ भाग्य जो तुम कृपा करिकें आ
ये और कह्यौ तुम डेरा करौ तब उन डेरा कीयौ पाछें
रसोई की सामिग्री चलती करी पाछें सब जने भट्ट
जी के पास आय बैठे तब भट्टजी नें एक श्लोक कौ
व्याख्यान करौ तब वे सब जने बहुत प्रसन्न भये औ
र कह्यौ जो तुम पांच रात्र कृपा करिकें रहौ पाछें तुम्हा
री विदा करेंगे ऐसें कहि कें वे तौ अपने घर कों
गये पाछें रसोई करि श्री ठाकुर जी कों भोग सम
र्प्यौ भोग सराय कें महाप्रसाद लीयौ तब दूसरे दि
न सब मिलि कें विचार करन लागे जो भट्ट जी कौ
विदा कब करिये और कहा करिये और यह ब्रा
ह्मण बहुत योग्य है और बहुत दिन में आयौ है
तब उन सबन में एक वृद्ध हुतौ तिन नें कह्यौ जो
याकों १००५ मन तौ अन्न देउ और एक सत याकों
मुद्रा देउ और याके पिता कौ ग्राम पुरातन भूमि है
सो एक १०० सौ बीघा है सो याकों लिखि देउ
इतनौ लिखि देउ जो हम हू ब्राह्मण रिण ते छूटें तब
सबन नें कह्यौ जो यह ठीक बात कहे है सो याके

कह्यौ सबन कों करनों चाहियै पाछें सबनें मिल-
कें बैठी निमिर्दौनी और कह्यौ जो याको अन्न
सिद्ध है सो लै आउ तब भट्ट नें कह्यौ जो यह सब-
अन्न मेरे घर पहुंचाओ तब वा अन्न के गाड़ा भ-
रि दीने और कह्यौ जो अपने साथ लिवाय लै जा
उ और सबनें मिलि कें वस्त्र दीने और गाय और
एक भेंस और सत मुद्रा इतनें याकों दीयौ और
कह्यौ जो तुम इतनो प्रति वर्ष आय कें लै जायौ क
रौ तब भट्ट जी सबन सों बिदा होय कें अपने गांव
कूं चले सो आय पहुंचे तब अपने द्वार के आगें आ
य पुकार्यौ और पुकार कह्यौ जो भाभी किवाड़-
खोलि द्यो पटेल के चौंतरा ऊपर कथा कहि कें और

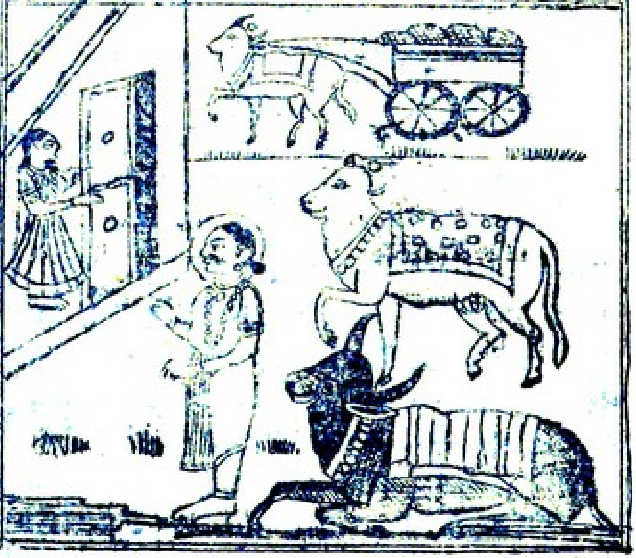

पिता कों गास फेरि कें आयो हें ताते अव हारि खो
लि तव भाभी खोल कें देखें तो देवर मांचें ही ठाढो
है तव देख कें वड़ो भाई उठि आयो तव देखे तो छो
टे भाई के ऊपर भगवद तेज विराजत है तव वह वड़े
भाई डरप्यो जो मति यह कछु मन में वुरी लावे तव
वह छोटो भाई भाभी के पाय लाग्यो औार कह्यो
जो तुम्हारे वचन ते मोकों श्री ठाकुरजी की कृपा भई
है तव वाके वड़े भाई ने कह्यो जो स्नान करो महाप्र
साद लेउ तव छोटे भाई ने कह्यो जो में तो राजा दुवे
माधो दुवे कों नमस्कार कीये विना जलपान न क
रूंगो तव वाके वड़े भाई नें कह्यो जो यह कहा तव
छोटे भाई ने कह्यो जो यह भयो है सो सव उन की
कृपा ते भयो है मोकों तो तुम नीकें जानत हो जेसो
हो तैसो तव वड़े भाई ने कह्यो जो में तुम्हारे साथ
चलूंगो तव दोऊ भाई राजा दुवे माधो दुवे के घर
गये तव जाय कें वड़े भाई ने उन कों नमस्कार की
यो और छोटे ने दंडोत करी तव राजा दुवे ने माधो
दुवे सों कह्यो जो तुम्हारो सेवक आयो है और य
ह प्रसंग वाके वड़े भाई के आगें मति कहियो त
व दुवे जी ने कह्यो आवो वैठो तव वे दोउ भाई वे
ठे ता पाछें दुवे जी सों छोटे भाई नें सव वार्ता निवे
दन करी तव दुवे जी ने कह्यो जो तेरे ऊपर श्री आ
चार्य जी महाप्रभून की हाथ है ताते ऐसो क्यों न
होय तव वाके वड़े भाई नें कह्यो जो हम तो श्री
आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन नाहीं करे हम

ने तौ तुम देखे हौ और जैसें याके ऊपर कृपा करकें
याकों कृतार्थ कीयौ है तैसें मोकूं हूं कृपा करकें कृ
तार्थ करौ तब वाकूं हूं दुवेजी ने कृतार्थ कीयौ नाम
सुनायौ पाछें दोउ भाईन कों महाप्रसाद लिवायौ
पाछें छोटे भाईनें दुवेजी सों कह्यौ जो आज्ञा होय
तौ अन्न ये मुद्रा गाय भैंसि कपड़ा उहां सों जो ला
यौ हौं सो आप के मन्दिर में आवै तब दुवेजी ने क
ह्यौ जो तुम तौ जानत ही हौ जो या द्रव्य के धनी तौ
श्री आचार्यजी महाप्रभू हैं तब वाने कह्यौ जो
आप की आज्ञा प्रमान तब दुवेजी नें कह्यौ जो अ
न्न और गाय भैंस और सब द्रव्य इकठौरौ करौ पा
छें दुवेजी सों दोउ भाई विदा होय कें अपने घर
आये तब सब द्रव्य हतौ सो इकठौरौ कीयौ पाछें
दिन थोरे से में श्री आचार्यजी महाप्रभू द्वारिका
पधारे तब सिद्धपुर में रमा व्यास के घर उतरे तब
राजा दुवे माधौ दुवे और वह सब द्रव्य लैकें श्री
आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों सिद्धपुर में
आये तब आय कें श्री आचार्यजी महाप्रभून
के दर्शन कीये पाछें इन दोउ भाईन कों श्री आचा
र्यजी महाप्रभून पास। नाम निवेदन करवायौ
और वह द्रव्य हतो सो सब भेंट कीयौ तब दिन द्वै
चार रहि कें आप आगें पधारें तब राजा दुवे मा
धौ दुवे और वे दोउ भाई ब्राह्मण श्री आचार्यजी
महाप्रभून सों विदा होय कें अपने घर आये पाछें
वे दोउ भाई ब्राह्मण राजा दुवे माधौ दुवे के संग ते

बड़े भाग्यदीय भए ताते संग करनों से भगवदीय के करनों वे सगा दुवे माधोदुवे ऐसे कृपापात्र भग वदीय है ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥३५॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक श्लोकदास सांचोरा ब्राह्मण तिनकी वा र्ता लिख्यते ॥

सो उत्तम श्लोकदास श्रीनाथजी के सेवकन की रसोई करते और सवन कूं आप परोसने ताते सव सेवक उत्तम श्लोक दास को महतारी करि बोलते सेवकन को प्रीत से परोसने ताते श्री गुसाईं जी इ नके ऊपर बहुत प्रसन्न रहते हे उत्तम श्लोकदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भग वदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥३६॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक ईश्वर दुवे सांचो रा ब्राह्मण तिनकी वार्ता

सो ईश्वर दुवे श्री नाथ जी के सेवकन की रसो ई करते और उत्तम श्लोकदास हू श्री नाथजी के सेवकन की रसोई करते सो तव उत्तम श्लोकदास की देह छूटी तव श्री गुसांई जी नें ईश्वर दुवे को नाम उत्तम श्लोकदास राख्यो सो वे श्रीनाथजी की

सेवकन की रसोई करते सो अपनी गांठि ते घृत म
मगाय कें सबन कें भैंाने अधिक घृत परोसते ताते
याह सों सब सेवक महतारी कह के बोलते सो य
ह वात श्री गुसांई जी ने सुनी सो सुनि कें बहुत प्रसन्न
भये तब ईश्वरदुवे सों श्री गुसांई जी ने पूछी जो तुम
अपनी गांठि ते द्रव्य को घृत मगाय कें काहे को
परोसत हो तब ईश्वर दुवे ने कही जो महाराज दु
न की सेवा में श्रम बहुत होत है तब यह सुनकें श्री
गुसांई जी बहुत प्रसन्न भये और कहे जो याको
सब सेवकन ऊपर ऐसी बात सत्य है तब ईश्वरदु
वे सों श्री गुसांई जी ने कही जो तू मांगि हों तेरे
ऊपर बहुत प्रसन्न भयो हों तब ईश्वर दुवे ने प्रसन्न
होय कें कही जो महाराज मेरो मन तुम ऊपर तें श्र
प्रसन्न होय तब श्री गुसांई जी सूं वैस्नवन नें कही
जो महाराज याने यह कहा मांग्यो तब श्री गुसांई
जी सुनि कें चुप करि रहे तब श्री गुसांई जी सूं हरिदा
स ने पूछी जो महाराज मेरे मन में सन्देह है जो उत्तम
श्लोक ने यह कहा मांग्यो तब श्री गुसांई जी ने क
ही जो यह सन्देह तौ उनहीं सों मिटैगो तब उन
वैस्नवन ने उत्तम श्लोक दास सों पूछी जो तुमने श्री
गुसांई जी पास कहा मांग्यो तब उत्तम श्लोक दास
ने कही जो जब श्री गुसांई जी मोपर प्रसन्न होय
कें कहे जो हूं तेरे ऊपर प्रसन्न भयो हों ताते तू
मांगि तब श्री गुसांई जी मोको प्यारे लागे तब म
न में विचार भयो जो श्री प्रभू जी को प्रसन्न ताते

सबी प्यारो लागत हों और में सेवक हों और जो क
दाचित कोऊ अपराध तें मन प्रसन्न होय जाय त
न मेरो मन कहूं बिगरे तासें यह मांग्यो जो सदा
निरंतर तुमारे चरणारविंद पर मन रहे सो उनके
दीए ते रहे तब यह बात सुनि कें सब वैष्मव प्रसन्न
भए तब विचारें जो सेवक कों औसोई धर्म चाहिये
पाछें श्री गुसांईजी प्रसन्न होय के श्री अंग की से
वा दीनी सो वे मुखिया भीतरिया भये — ते उत्तम
श्लोक दास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे
परम कृपापात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता को
पार नांहीं ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्मव ॥ ३७ ॥
अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक वासुदेव दासछ
कड़ा सारस्वत ब्राह्मण
या सीहनंद के।
तिनकी।
वार्ता

सो एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभून के बड़े
पुत्र श्री गोपीनाथजी सो अडेल ते आगरे पधारे
सो आगरे में वैष्मवन नें एक सो एक मोहर भेट
कीनी पाछे आगरे ते श्री गोपीनाथजी नें आज्ञा
करी जो कोऊ ऐसो वैष्मव है जो एक सो एक मो
हर हमारे घर पहुंचावे तब वासदेवदास नें कह्यो
जो महाराज मोहर मोको देउ में पहुंचाउंगो तब ते

मोहर वासदेव ककड़ा कों दीनी सो मोहर लाय कें मेलिकें गोला कीयो सो गोला की पूजा करत धर्म में चले गये सो दिन पांच में अडेल जाय प्रहुंचे सो गांव के बाहर गोला फोरि कें मोहर काढि पाछें श्री गुसांई जी कों दीनी और श्री गोपीनाथ जी को पत्र श्री गुसांईजी कों दीनों पाछें श्री गुसांई जीनें वह पत्र वांचि कें मोहर गिनलीनी पाछें श्री गुसांई जीनें वासदेव दास कों महाप्रसाद लिवायो पाछें वासुदेव दासने श्री गुसांई जी सों वीनती कीनी जो महाराज पत्र को जुवाव लिखिये और पत्र में मोहरन की पहुंच लिखिये जो हूं तो सवारें जाउंगो तब श्री गुसांई जीनें वा पत्र को जवाव लिखि दीनों जो मोहर पहुंची ताकी पहुंच लिखि ... पत्र दीयो सो वीड कें वासदेव दास को दीनों पाछें वासुदेव दास सोय रहे तब रात्रि घड़ी एक रही तब वासदेव दास उठि कें श्री गुसांई जी के पास आय कें दंडौत करिकें अडेल तें चले सो पांच दिन में श्री द्वार आय श्री गुसांई जी को पत्र श्री गोपीनाथ जी कों दीनों दिन दश में अडेल जाय और गये सो पत्र वांच कें गोपीनाथ जी वहुत प्रसन्न भए और पूछो जो वासदेव दास मोहर कौन भांति सों लेगये हते तब वासदेव दास नें कह्यो जो महाराज मोहरन को गोला करिकें वा गोला की पूजा करत ले गयो तब श्री गोपीनाथ जी नें कह्यो जो या भांति कवहू

न राखिय "जो स्वरूप करि मानियै ताकों या भां
ति कैसें करियै तब वासुदेव दासनें कह्यौ जो महा
राज प्रतिष्ठा तो न भई हुती ॥+

वार्त्ता प्रसंग ॥ २ ॥

बहुर एक समय श्री गुसांईं जी श्री मथुरा में
विराजत हुते सो एक समय श्री गुसांईं जी शृंगार क
रि सेवा ते पहुंचि कें बाहर बैठक में विराजे सो बैठ
क में बैठि कें रूपचन्द नंदा कों पत्र लिख्यो तामें
वसंत की सामग्री मंगाई तब वासदेव सों कह्यौ
जो तू इतनी सामग्री लैकें संध्या कों आइयो तब
भंडारी कों आज्ञा दीनी जो एक टोकरा याकों प्र
साद को देउ तब भंडारी ने ऐसे रीत को आहार
दीयौ टोकरा में तब श्री गुसांईं जी ने वासदेव दा
स कों आज्ञा दीनी जो तोकों पनही पहरें को कछू
चिंता नाहीं पेंडें में प्रसाद खात चल्यो जैयो
तब वासुदेव दास सोई करत आये सो तब आपने आ
प पहुंचे तब नांई प्रसाद खाय चुके तब झारी भ
रि कें रूपचन्द नन्दा के घर गये ता समय रूपचन्द
नन्दा अपने घर प्रसाद लै चुके हे पत्र लैकें बीच
करत हो सो वासदेव दास पत्र लैकें आए तब रूप
चन्द नंदा नें हाथ धोय पोंछि कें वह पत्र माथे च
ढाय के लीनों और भाई सों कह्यौ जो वासदेव दास
आए हैं सो घर में कहौ ये भूखे होंयगे तब वासदेव
दास ने कह्यौ जो मोकों तो मथुरा जानों है तासों मोकों
सखड़ी महा प्रसाद लेवे को अवकाश नाहीं ताते

सामग्री लै देउ तौ मैं जाऊं इहां तौ प्रश्न है औ तोरी
तव रूपचन्द नन्दा वस्त्र पहर कें सामिग्री लैने कूं पै
तव वासदेव दास साथ गये तव रूपचन्द नन्दा नें
छोटे भाई गोपालदास सों कह्यौ जो अपने घर में
जितनों प्रसाद होय सो तू लैकें द्वार कूं दरवाजे बै-
ठि यो हम आवत हैं तव छोटे भाई ने जितनों घर
में प्रसाद हो सो सब लैकें द्वार कूं दरवाजे आय बै
ठ्यौ और रूपचन्द नन्दा बाजार में आयकें सब सा
मग्री लीनी तव वासुदेव दास ने कह्यौ जो मेरो स
गरौ घर तौ प्रसादी है तव सब सामग्री पिछली औ
र कटि सों दृढ़ कर बांधी पाछें रूपचन्द नन्दा औ
र वासदेव दास द्वार कूं दरवाजे आए तव देखें तो
छोटो भाई बैठ्यौ है प्रसाद लीये सो सब प्रसाद सों
वासदेवदास की झोरी भरी और बिदा कीए आप
दोऊ भाई घर कों आए और आप वासदेव मथुरा
कों आए सो तीसरे पहर श्री गुसांईजी स्नान क
रवें कों पधारे हुते ता समय वासदेव दास सामग्री
लैकें आय ठाड़ो भयौ तव श्री गुसांई जी उठि कें वा
सदेवदास की कटि ते सामग्री खोलि लीनी औ
र श्री गुसांई जी वासदेव दास के ऊपर बहुत प्रस
न्न भए और आज्ञा दीनी जो तोकों महा प्रसाद
की सामग्री राखी है सो जाय कें प्रसाद लै तव वा
सुदेव दास विश्रान्त स्नान करि कें आयौ तव प्र-
साद लीनों सो वासुदेव की क्षुधा बहुत हुती मण
डेढ खातो परि जैसो खातो बहुत तैसें ही बहुत-

पराक्रम हुतो मथुरा ते दोय पहर में आगरे गए सौ रेसाए ऐसे पराक्रमी हुते ॥

वार्ता प्रसंग ॥ २

बहुर नित्य प्रति श्री गुसांईं जी श्री ठाकुर जी की सेवा करिकें बाहिर आय कें खवास सों कहते जो तू थैली पीढ़ा लैकें विश्रांत जैयो और आप दर्शनार्थ जन्मस्थान पधारते सो जन्मस्थान दर्शन करकें पाछें श्री गुसांईं विश्रांत स्नान को पधारते या भांति सों श्री गुसांईं जी नित्य करते सो एक दिन मथुरिया चौबे सब मिल कें काजी के पास आय कें चुगली करी जो तुम इनसों लागा बांधी करो सो इनके सेवक आस हैं सो तुमकों दोय चार

हजार रुपैया ये देहुगो तब काजी मनुष्य बीस सौ
हथियार बांधि कें जन्म स्थान आय ठाडौ भयौ इत
ने में श्री गुसांई जी श्री केशोराय जी के दर्शन कों
पधारे तब दर्शन करिकें बाहर आए पाछें घोडा
ऊपर सवार भये तब काजी ने कह्यौ जो अब तु
म कहां जाउगे तब वासुदेव दास ने श्री गुसांई
जी सों बीनती कीनी जो महाराज मोकों बुरी न-
जर दीसत है तब श्री गुसांई जी ने कह्यौ जो ये ते
री कहा करेंगे तोसों होय सो रहू करि तब वासदेव
दास देखें तो एक के हाथ में ढाल और गुरज देखे
सो ताकें वासदेव नें एक थपेड मारी सो थपेड ल
गत मात्र वह तो गिर पर्यौ तब वाकी ढाल और
गुरज लेकें वासदेव दास के पीछे मनुष्य बीस प-
चीस हुते तब वे भाजि कें हवेली में बैठि कें दरवा
जौ देकें छिप रहे तब श्री गुसांई जी घोडा ऊपर स
वार भये और उनके दरवाजे होकर पधारे तब
वासदेव दास ने श्री गुसांई जी सों कह्यौ जो मह
राज अब भले इकठौरे भराहैं जो आज्ञा होय तो
इन सबन कों दरवाजौ तोरि कें मारों तब श्री गुसां
ई जी ने नाहीं करी और कह्यौ जो तेरो ये कहा
लेत हैं पाछें श्री गुसांई जी विश्रांत पधारे तब
दूसरे दिन श्री गुसांई जी स्नान कौं पधारे तब व
ह काजी अपने मनुष्यन कों साथ लैकें गारे में प
दकादेकें आय कें बीनती करी जो महाराज आ
गें तुम कन्हैया देखे और भीम हू देखे जो प्रभु

जीके प्रतापतें सब डरे तब श्री गुसांई जीने कह्यो जो॰ यह ऐसोई हुतो जो फिर यासों बोलतते तो अकेलो यह मयन कों मारतो तुम सब ठौर रहते और याकोंमन में तो बहुत आई हुती परि हमनें तो ऐसीन करनी हुती पाछें काजी कों समाधान करिकें घर कों पठायो सो श्री गुसांई जीकी कृपा ते श्री आचार्य जी महाप्रभु नके सेवक ऐसे सामर्थवान हुते॥ वा॰ प्रसंग २

और सीहनन्द में उत्सव होतो तब वासुदेव दास कों बुलावते नाहीं तब एक समय सीहनन्द के वैस्नव मिलिकें श्री गोकुल श्री गुसांई जी के दर्शन कों आये सो तिनके साथ वासदेव दास हू आये तब वैस्नवन नें श्री गुसांई जीको दर्शन कीयो पाछें उहां रहि कें॰ कोई समें पाय कें वासदेव दास नें श्री गुसांई जी॰ सों बीनती करिकें कही जो महाराज ये वैस्नव मोकों सीहनन्द में उत्सव होत हैं तब बुलावत नाहीं तब श्री गुसांई जी चुप करि रहे तब पाछें उन वैस्नवन कों ज बडेरा कों बिदा कीये तब तिन में तें चार पांच मुखि या रहे सो तिनकों श्री गुसांई जी नें रांखे और सब वैस्नवन कों डेरा पठाये तब श्री गुसांई जीने उन वैस्नवन सों पूछो जो तुम वासदेव दास कों उत्सव कीर्तन में क्यों नाहीं बुलावते हो तब उन वैस्नवन नें बीनती करिकें कही जो महाराज वासदेव दास कों बडे उत्सव में तो नाहीं वत हैं और छोटे उत्सव में नाहीं बुलावते जो ये भूखे रहेंगे तो दोष लागे तब श्री गुसांई जीने उन कों आज्ञा दीनी जो तुम

बंधान बांधो जो १०० वैस्नवन कों बुलावो तो पचा
स ५० तो और वैस्नवन कों बुलावो और पचास में
एक बासदेव दास कों बुलावो और जहां ५० पचास
बुलावो तो २५ पचीस तो और वैस्नवन बुलावो औ
र पचीस में एक बासुदेव दास कों बुलावो और ज
हां पचीस बुलावो तहां तेरह तो और वैस्नवनें बु
लावो और बारह में एक बासदेव को बुलावो औ
सें दशतांई श्रीगुसांई जी नें बंधान बांध्यो ऐसें
पांच तांई बंधान बांध्यो ऐसें जितने बुलावते हा
य तितने तो और वैस्नव बुलावो और आधेन
में एक बासदेव को बुलावो तब उन वैस्नवननें
नें कह्यौ श्रीगुसांई जी सों जो महाराज येतो भूखे
रहेंगे तब श्रीगुसांई जी नें उन वैस्नवन सों कह्यौ
जो दशतांई तुम आधे में बासदेव दास कों बुला
वो तामें चाहे सो होय ताकों तुम कहा करोगे सो
यह प्रकार मैनें तुम कों कर दीनों है सो मेरी आज्ञा
ते तुम कों कछू बाधा नाहीं जो तुम आधे में बास
देव दास कों खुसी सों बुलावों पाछें भूखो रहे तो
तुम कों कछू दोष नाहीं परि यह श्री आचार्यजी
महाप्रभून को सेवक है ताते बुलाए बिना बासदे
व दास कों तुम उत्सव मति करियों तब वैस्नवन
नें कही जो महाराज की आज्ञा होयगी सोई करेंगे
तब वे कोई क दिन श्रीगोकुल रहि कें पाछें सब वैस्न
व सोहनन्द कों गये तब के वैस्नव सोई करन लागे
श्रीगुसांई जी बासदेव कों श्री आचार्यजी महाप्र-

भून कौ सेवक जानि कें ऐसी कृपा करते सो वे वासदेव दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इन की वार्त्ता कहां तांई लिखिये ॥ ४ ॥

वार्त्ता प्रसंग ॥ ४ ॥ वैष्णव ॥ ३८ ॥ संबंध १०८

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के। सेवक बाबा वेणु और कृस्न दास घघरियो देवदास तिन की वार्त्ता लिख्यते।

सो ते बाबा वेणु हृदय के नेत्रन सों देखते सो बाबा वेणु और छोटे भाई कृस्न दास ये दोउ भाई श्री केसौ रायजी के आगें कीर्तन करते तहां यादव दास हू कीर्तन में साथ हुते तब कीर्तन करन लागे सो यह पद गावत हुते जो देखरी नैनन गिरवरध रन सो यह पद गावत कृस्न दास नें अपनी देह छोड़ी तब यादव दासनें बाबा वेणु सों कह्यो जो यह पद गावत कृस्न दास नें अपनी देह छोड़ी तब बावे वेणु नें कह्यो जो हम तो अपनी देह श्री नाथ जी द्वार में छोड़ेंगे पाछें कृस्न दास को संस्कार श्री केसौ राय के पीछे कीयो ता पाछें सूतक उतर्यो तब शुद्ध होय के श्री नाथ जी द्वार चले सो कितनेक दिन में श्री नाथ जी द्वार आय पहुंचे तब पर्वत ऊपर आय कें बाबा वेणु नें श्री नाथ जी के दर्शन कीये पाछें बाबा वेणु नें कीर्तन किये तब श्री नाथ जी के कंठ

ने फूल की मालागिरी सो माला और एक बीड़ा
रामदास भीतरया नें बाबा वेणु कूं दीनों सो बाबा
वेणु ने माथे चढ़ाय कें लीनों तब रामदास भीत
रिया नें बाबा वेणु सों कह्यौ जो तुम्हा री बिदा।
श्री नाथजी नें कीनी तब बाबा वेणु ने श्री नाथ
जी कों दंडोत कीनी पाछें नीचे उतरे सो आन्यौर
की ओर उतरे तब बाबा वेणु नें यादवदास सों क
ह्यौ जो हूं यो पर्वत ते नीचे उतरि कें अपनी देह छो
डूंगो तू सावधान रहियो और तू वेगो आइयो ऐसें
यादवदास सों कहि कें बाबा वेणु पर्वत ते नीचे उ
तरि कें श्री नाथजी कों दंडौत करत मात्र अपनी
देह छोड़ी पाछें यादवदास ने बाबा वेणु कौ संस्का
र कीयौ पाछें सूतक उतर्यौ तब सुद्ध होय कें याद
वदास श्री गुसांई जी के पास आए सो श्री गुसांई
जी कौ दर्शन कीयौ और दंडौत कीनी तब श्री गु
सांई जी यादवदास कों परम भगवदीय जान कें
मन में विचारें जो कोई एक दिन में यादवदास की
हू स्थिति है ताकें लिये श्री गुसांई जी विचारे जो
श्रीनाथ जी की सेवा में यादवदास कों राखियें तो
आछौ है तब श्री गुसांई जी नें कह्यो जो यादवदास
तुम अकेले हो ताते अब श्री नाथजी की सेवा
करौ तब श्री गुसांई जी की आज्ञा ते यादवदास
ने श्रीनाथजी की सेवा नीकी भांति सों करी सो
सेवा सों पहुंचि कें यादवदास नीचे उतरे और नी
की भांति सों सेवा करते सो कहूं बाहिर न्हा में जाय

कै यादव दास लकड़ी परी होंय सो इकठौरी करीपा-
छें जबजान्यौ जो लकड़ी सिद्दि भई तब श्रीनाथजी
पास आज्ञा मांगि कें दंडौत करि कें नीचे उतरे सो आ-
गि लैकें जहां लकड़ी इकठोरी हुती तहां आपसें
ए सो लकड़ीन कौ श्रीनाथजीकी ध्वजा के आगारि
चोंतरा बनायो सो चोंतरा के ऊपर आप पोढे जा दि
शा कौ व्यार चलत हुती ता दिशा कों आगि धरि-
कें ध्वजा कों प्रनाम करि कें श्रीनाथ कौ स्मरण क-
र कें यादवदास नें अपनी देह छोडी पाछें व्यार ते-
अगिन जरि उठी सो जर कें भस्म होगई यादव दासने

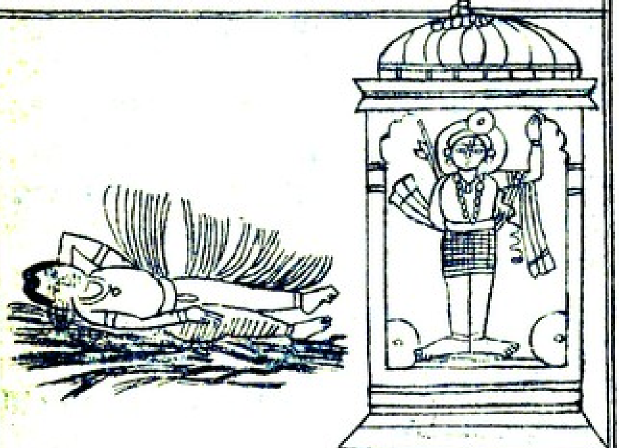

अपने हाथन सों अपनो संस्कार कीयौ तथा बावा-
वैणु को संस्कार कीयौ ताते यादवदास नें अपनों-

यही विचार कीयो जो सब सेवकन कों मेरो संस्कार
करिवे में कष्ट होयगो और सेवा में विरोध होयगो
ताते यादवदास नें अपनों संस्कार अपने हाथन
सों कीयो और पहिलें बाबावेणु ने यादवदास सों क
ह्यो हुतो जो तू वेगो अइयो विलम्ब मति करियो
सो तो श्री गुसांई जी ने श्री नाथजी की सेवा सोंपी
ताते इतने दिन विलम्ब भयो पाछें दिन द्वै भए तब
श्री गुसांई जी नें पूछी जो यादवदास देखियत नहीं
सो कहा गयो है तब सेवकन ने कह्यो जो महाराज
यादवदास कहूं वन में लकड़ी इकठोरी करत हुते
तब श्री गुसांई जी नें कही जो उहां जाय कें देखो
तो तब श्री गुसांई जी के कहत मात्र वैष्णव जाय
कें देखें तो उहां कछू नाहीं राख की ढेरी परी है तब
वैष्णवन नें श्री गुसांई सों आय कें कह्यो जो महा
राज उहां तो कछू देखियत नाहीं राख की ढेरी परी
है तब श्री गुसांई जी अपने श्रीमुख सों कह्यो जो
ऐसो भगवद भक्त जो काहू कों दुख न देतो वे याद
वदास श्री महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भग
वदीय जो स्वइच्छा नें अपनी देह कोंही सो सब ग्वा
लन ने देखो सो चकृत होय रहे ताते बाबा वेणु औ
र कृष्णदास घघरिया और यादवदास बनिया ऐ
से कृपापात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता को पा
र नाहीं सो अब कहां तांई लिखिये ॥ ❀

वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ९९ ॥ संबंध १०९ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के
सेवक जगतानन्द सारस्वत ॥
थानेश्वर के वा
सी तिनकी वार्ता
लिख्यते

सो जगतानन्द सरस्वती ऊपर कथा कहते तब समय श्री आचार्यजी महाप्रभू थानेश्वर पधारे सो जगतानन्द सरस्वती ऊपर कथा कहि रहे हुते सो तहां श्री आचार्य जी महा प्रभू जाय बिराजे तब जगता नन्द सरस्वती नें एक श्लोक को व्याख्यान कीयो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कही जो याको व्याख्यान भावतो बहुत है तब जगतानन्द नें कही जो श्लोक को अर्थ तो कहो जो श्री शुकदेव जीने कही सो कही तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कही जो श्री शुकदेव जी लरिका हैं तब जगतानन्द नें कही जो अधिको व्याख्यान होय तो तुमही आयकें कहो तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कही जो तू नें व्यास आसन बैठो है हम तेरो आनि कम कों करिए कों तब इतनों सुनत मात्र जगतानन्द चोकी छोड़ कें उठि ठाडो भयो तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें चोकी ऊपर वस्त्र बिछाय कें पोथी धरी और फिर आप ताके नीचें बैठे और वा श्लोक को भाव फेरि कें वाको अर्थ कह्यो सो व्याख्यान करत करत तीन पहर व्यतीत भये तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कही जो या श्लोक को व्याख्यान

मास दोय तीन लों बीतेगो परि अब तुम भूखे हो
उगे ताते अब तुम उठो तब जगतानन्द ने कह्यौ
जो महाराज आप तो ईश्वर आप के भाव घटिवे
के नाहीं जहां चाहो तहां तांई करो तब श्री आ
चार्यजी महाप्रभून ने पोथी बांधी तब जगतानन्द
नें साष्टांग दंडवत कीनी और कह्यौ जो महाराज मे
रो घर पावन करिये तुम तो साक्षात् पूरन पुरुषोत्त
म हो तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यौ जो
तू तो अन्य मार्गीय है हम तेरे घर कैसें पधारें
गे तब जगतानन्द सरस्वती स्नान करि कें आ
य ठाड़ो भायो और बीनती करि कें कह्यौ जो म
हाराज मोकों कृपा करि कें नाम दीजिये तब

श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कृपा करिकें नामदीयो
तव श्री आचार्यजी महाप्रभू वाके घर पधारे और ज॰
गतानंद के घर सेव्य ठाकुर जी हुते सो वे तुलसीमांभ
वैठिते तहां वे सदा एक लोटी श्री ठाकुर जी के ऊपर
डारते हे तव श्रीठाकुर जी कूं श्री आचार्य जी महा॰
प्रभून नें तुलसीमेसूं काढ़ि कें पंचामृत सों स्नान कर
वाय न्यारे वैठाये पाछें शृंगार करि राजभोग समर्प्यो
पाछें जगतानंद कों सेवा की विधि सिखाई और क
ह्यो जो नित्य याही भांति सों सेवा करियो तव जगता
नंद भले भगवदीय भये सो श्री ठाकुर जी की सेवा नी
की भांति सों करन लागे सो वे जगतानन्द श्री आचा
र्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हेता
तें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

॥ वार्ता प्रसं॰ ॥१॥ सम्वंध ॥१०॥ वैस्नव ८०

॥ अव श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक आनंददास वि
श्वंभर दास दोउ भाई
क्षत्री हुते तिन॰
की वार्ता॰

सो वे दोउ भाई अति कृपा पात्र भगव
दीय हे सो ये दोऊ भाई एकत्र वैठिकें भगवद्वा
र्ता करते तथा श्री आचार्य जी महाप्रभून की वार्ता
अहर्निस करते कवहूं वार्ता कहत को दे भाई॰
कों निंद्रा आय जाती तव श्री ठाकुर जी चुटकी देते॥ए

वड़े भाई आनंददास सो तो भगवद वार्ता के आ
वेश में जानते नाहीं जो हुंकारी कौन देतहे जब
वार्ता कहि चुकने तब आनन्ददास विश्वंभर
दास सों पूछने जो मैंने तोसूं वार्ता कही सो तूं स
मझ्यो तब विश्वंभर दास ने कही जो मैं तो इहां
तांई सुनी पाछें मोको तो निन्द्रा आई हुती तव
आनन्ददास नें कह्यो जो तू तो अब तांई हुंकारी
देतहुतो तब विश्वंभरदास ने वासों कही जो मैं
ने हुंकारी दीनी नाहीं तब आनन्ददास नेकही
जो श्रीठाकुर जी नें हुंकारी दीनी होयगी तब दोउ
आनन्ददास विश्वंभरदास अपने मनमे बहुत
प्रसन्न भए और कह्यो जो हमारो वड़ो भाग्य है
है श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपाते श्रीठा
कुरजीने हुंकारी दीनी हमारी कही सब वार्ता
सुनी ताते वे दोउ भाई आनन्ददास विश्वंभर
दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा
पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता अब तांई
लिखिये ॥ ॥

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ७१ ॥

॥ अब श्री आचार्य महाप्रभून ॥

॥ की सेवक एक ब्राह्मणी ।

॥ हुती तिनकी वार्ता ।

॥ लिख्यते ॥

सो ब्राह्मणी के मांथे श्री आचार्यजी महाप्रभूनने
श्रीबालकृष्ण जी की सेवा पधराई हुती सो तह

ब्राह्मणी श्री बालकृष्ण जी की सेवा करती परन्तु
अपने घर में निपट निकंचन हुती ताते श्रीठाकुर
जी के आगे मांटी के कूजा भर राखती और रसोई
में मांटी के पात्र और घर निपट संकीर्ण हुतो ही
में सब रसोई मन्दिर आचार हुते और नेत्रन सों
थोरो दीसे वृद्ध भई ताते ऐसी सेवा करती सो और
वैष्णव देखिकें सेवा करत में सो आपुस में सब
चर्चा करन लागे जो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें
या ब्राह्मणी कें माथें कहा जानिकें सेवा पधराई है
यह तो कछू समझत नाहीं ऐसें सब वैष्णव आ
पुस में चर्चा वार्ता करन लागे सो एक दिन श्री आ
चार्य जी महाप्रभून की कोस ऊपर गांव हुतो तहां
पधारे हुते पाछें तहां ते फिरे तब तहां ते वा ब्राह्म
णी के द्वार के आगे होय कें निकसे तब साथ के
वैष्णव हुते तिननें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों
वीनती कीनी जो महाराज आपने या ब्राह्मणी के
माथें श्री बालकृष्ण जी की सेवा पधराई है ताको प
ह घर है सो याके घर पधार कें देखिये याको घ
र याको आचार कैसो है तब श्री आचार्य जी महा
प्रभू आप असरण सरण अंतरयामी वा ब्राह्मणी
के घर पधारे सो तासमें वह ब्राह्मणी रसोई क
रत हुती रोटी करकें घी सों चुपरत जाय और श्री
ठाकुर जी आप आरोगत जाय परि वाकों तो दी
सत कछू नाहीं हाथ सों टटोरे कहै जो रोटी आगें
आसन नाहीं कहा मूसा बिलाई लै जात हैं ऐसें

कहे और रोटी करत जाय और श्री ठाकुर जी
आरोगत जाय सो श्री आचार्यजी महाप्रभू आप
ठाड़े ठाड़े देखें पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभून नें वा
डोकरी सों कह्यो जो अरी बाई तेरो बड़ो भाग्य है जो
तेरी करी रोटी श्री ठाकुर जी आप आरोगत हैं तब व
ह बाई श्री आचार्यजी महाप्रभून करि पाछें बोली
जो महाराज में नाहीं जानी जो राज पधारे हैं मोकों तो
कछु दीसत नाहीं परि तुम्हारी कानि ते श्री ठाकुरजी
मान लेत हैं तब श्री आचार्यजी महाप्रभून ने वैस्नवन
सों कह्यो जो श्री ठाकुर जी तो स्नेह के बस हैं ताते मे

री कानि सों श्री ठाकुर जी आरोगत हैं और उनकी भक्ति

मान लेते हैं तव वैष्णव मुसिक्याय कें चुप करि रहे॰
पाछें श्री आचार्य जी महा प्रभू आपने घर पधारें वा
बाई के ऊपर बहुत प्रसन्न भये वह बाई श्री आचार्य
जी महा प्रभून की ऐसी परम कृपा पात्र भगवदीय
ही तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं सो कहां तांई॰
लिखियें ॥ ❋

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ४२ ॥ सम्बन्ध ॥

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक एक घश्यागी तिन॰ की वार्ता है

सो वह घश्वागी आप चरखा कातती सो सूत के
पैसा दोय तीन आवतें सो ताकी जो सामग्री आव॰
ती सो लै आवती रसोई बाल भोग करि श्री ठाकुर॰
जी कों भोग समर्पती ऐसें निर्वाह करती सो एक दिन॰
ऐसो विचार कर्यौ जो सूत कातें सो थोरो॰ अधिक का
ते सो इक ठौरो करन जाय सो टका दश बारह कौ भेलो कि
यौ सो सूत वेचि कें टका दश बारह आये सो विनकौ घृत
खांड लै आई सो घर आय कें मैदा छानी पाछें दूसरे दिन मैं
व के लडुवा सिद्धि कीये और मन में कही जो दिन दश बारह
कों सामिग्री सिद्धि भई है सो दिन दश बारह कों निश्चिंत भ
ई हों सो ता दिन श्री ठाकुर जी कों आरोगाई और वाकी सामग्री
एक हांडी में करकें मंदिर में धर राखी पाछें श्री ठाकुर जी कों,

समर्प्यौ भोग सराय आरती करिकें आपमहा
प्रसाद लैकें चरखा कातन लगी तब श्रीठाकुरजी
आप सिंहासन ने उतरि कें सामग्री कीहांडी लेकें
सिंहासन ऊपर आय बैठे सोहांड़ी मेंते लडुवा का
ढ़िकें आप आरोगन लागे तब मन्दिर में हांडी खप
टखटान लागी तब वा क्षत्राणीनें कह्यो जो कछू

मूंसा बिलाई होय देखूं तौ सही कौंन हैं तब वह क्ष
त्राणी कातत हुती सो तहां ने उठि कें देखन गई
मन्दिर के किवाड़ खोल कें देखें तौ श्रीठाकुरजी
सिंहासन ऊपर हांड़ी लैंकें बैठे हैं और वा मेंनें ल
डुवा काढ़ि काढ़ि कें आरोगत हैं तब वह क्षत्रा
णी देखि कें छाती कूटन लागी और कहन लागी

जो यह सामग्री तो तुम्हारे ही लिये दिन दसबार
ह को करि राखी हुती यह तुमने कहा कीयो जो
आजही आरोगे तब श्री ठाकुरजीनें कही जो
कहा तू लेखो करि कें आजही निवरी तेने आ
लस कें लिये इकठौरी करि राखी हुती सो कहा
नित्य नई न होती तब वह क्षत्राणी बोली जो म
हाराज मेरो अपराध क्षमा करो अब ते नई सा
मग्री नित्य प्रति करि कें समर्पूंगी सो श्री ठाकुर
जी याके लिये आरोगे जो यह दिन दश बारह
कों निश्चत होती तो याकों आरत रहती नाहीं
और जो नित्य की नित्य सामग्री करे तो याकों
आरति रहे जो मोकों सामग्री करनी है ताते श्री
ठाकुरजीने ऐसें करी ताते श्री ठाकुरजी की सा
मग्री दिन चारि ते अधिकी न करनी और या
क्षत्राणीनें छाती कूटी जो श्री ठाकुरजी आरोगे
ताके लिये कूटी श्री ठाकुरजी तो प्रसन्न होय कें
आरोगे वाने छाती याके लिये नाहीं कूटी जो श्री
आचार्य जी महाप्रभून के मार्ग की तो यह मर्या
दा है जो श्री ठाकुरजी के आगें भोग धरिये सो
आरोगे उठाय धरिये सो सामग्री होय सो नइ
रहो तो श्री ठाकुरजीनें आचार्यजी महाप्रभु
के मार्ग की मर्यादा छोडी तो कदाचित मोहू वे
छोडें याके लिये वा क्षत्राणीनें छाती कूटी तब
श्री ठाकुरजीनें कही जो तू तो आजही लेखो क
रि निवरी नित्य नई कहा न होती तब याकों नि

श्चय भयो जो मार्ग की मर्य्यादा तो श्री ठाकुर जीनें
नाहीं छोड़ी हों दश बारह दिन कों निश्चत होय बैठ
ती ताके लीये श्री ठाकुर जी आरोगे लाते वह सासु पि
ऐसी परम भगवदीय ही तिन कों श्री ठाकुर जी सेवा
ते एक क्षण हूं स्वास्थ होंन देते नाहीं सेवा में सदा
आरति रहे सो कियो वा सासु णी सों श्री ठाकुर जी
ऐसे सानुभाव हुते जो चहिये सो मांगि लेते ऐसी
कृपा पात्र भगवदीय ही तातें इनकी वार्ता कों पा
र नाहीं सो कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ४३॥ सम्बंध ११३

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून।
के सेवक सास वहू दोउ ए
ताणी सास कों नाम गो॰
रजा वहू कों नाम॰
समराई सीहनं॰
द की वासीनि
नकी वार्ता
लिख्यते
॥ हैं ॥

सो इनके मांये श्री आचार्य जी महा प्रभूननें श्री दामो
दर जी की सेवा पधराई हुती सो इन सास वहूनते श्री ठा
कुर जी वहुत सानुभाव हुते सो एक समय श्री आचार्य
जी महाप्रभू थानेस्वर पधारे तब थानेस्वर ही में रहे परि
सीहनन्दन पधारनें जो काहे ते थानेस्वर और सीह नंद के

बीच सरस्वती नदी है सो श्री आचार्यजी महाप्रभू
सरस्वती उल्लंघन न करते काहेते जो आप आचा
र्य हैं ताते याके घर ही में रहते सो श्री आचार्यजी
महाप्रभू याके घर पधारे तब सास नें बहू सों
कह्यो जो में श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन
कों जात हों तू श्री ठाकुरजी की सेवा नीकी भांति
सों करियो सिंगार करि रसोई करिकें भोग समर्पि
यो इतनों बहू सों सास कहि कें श्री आचार्य
महाप्रभून के दर्शन कों गई तब वह न्हाय कें
सेवा करन लागी जब पाक सिद्धि भयो तब श्री
ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो तब समयानुसार
भोग सरावन गई तब देखै तो सामग्री सब यथा
स्थित ज्यों की त्यों है तब बहू नें बीनती कीनी
जो महाराज में तो जानत कछू नाहीं और सास
ने भी मोसों कह्यो नाहीं और तुम आरोगत ना
हीं सो काहे ते अबहू कहा करूं ऐसें बहुत बि
लबिलाय कें खेद करन लागी जो मोसों कछू
चूक परी होयगी रसोई आछी न भई होयगी त
था पात्र मांजिबे में सुद्ध न भये होयगे कछू तो
भयो होयगो जो श्री ठाकुर जी आरोगत नाहीं
पाछें भोग सराय पात्र मांजे आछी भांति सों धोय
पांछि कें फेरि रसोई करि दूसरी बार जब पाक
सिद्धि भयो तब श्री ठाकुर जी को भोग समर्प्यो
ऐसा में कहत जाय जो मोते कछू चूक परी हो
यगी हो तो कछू जानत नाहीं कहा भयो ताते

श्री ठाकुर जी आरोगे न होयंगे तब आछी भांति सों पात्र मांजि कें रसोई करी है सो सब श्री ठाकुर जी आरोगेंगे सो जब समय भयो तब दूसरी बेर भोग सरावन गई तब देखे तो श्रीठाकुर जी के आगे सामग्री यथास्थित है तब फेरि बिलबिलावे रोवे और बीनती करे और कहे जो महाराज हों कछु जानत नाहीं सो तुम क्यों नाहीं आरोगत और अपने मन में बिचार करत जाय जो मोकों रसोई करनो आवत नाहीं के मेरी देह को कछु दोष है ऐसें बिचार करत जाय और भोग सरावत जाय औरकाती भरि आवे और कहे मेरो कौन अपराध होयगो जो श्रीठाकुरजी आरोगत नाहीं पाछें फेरि जब पात्र आछी भांति सों मांजि कें तीसरी बार भोग समर्प्यो समय भयो तब भोग सरावन गई तब फेरि सामग्री यथास्थिति है तब तो महा खेद भयो जो अब हूं कहा करूं श्रीठाकुरजी भूखे रहेंगे सासने तो मोसों कछु कह्यो नाहीं ऐसें कहे तब मूर्छा खाय कें श्रीठाकुर जी के आगे भूमि में गिर परी और बहुत दुख करन लागी श्रमित बहुत भई तातें वाको तनक निद्रा हू आई सवारे सों जल हू नाहीं लीनों सो कंठ जुदो सूखे लगि व्याकुल है कें परी तब श्री ठाकुर जी ने वाको बहुत दुख सह्यो न गयो तब सिंहासन ते नीचे उतरि कें श्री ठाकुर जीने वासों कह्यो जो तू काहे कों खेद करत है हों तीन्यो बेर आरोगो हूं तू कछु संदेह मति करे तब

याने कह्यौ जो में कैसें जानूं तव श्री ठाकुर जीनें क॰
ह्यौ जो तू भूखी है कछु खाय लै तव कह्यौ जो हूं तौ
न खांउगी तव आप कौं आरोगत देखूंगी तव लेउं
गी तव श्री दामोदर जीनें कह्यौ परि यह तौ मानैना॰
हीं तव आप जल की झारी लैकें आए और कह्यौ
अरी तेरौ गरौ सूखौ जात है सु तनक जल पान तौ॰
लै तव श्री ठाकुर जी अपनें श्री हस्त सों वाके मु
ख में जल चुवायौ तव कह्यौ जो सवारें तू देखैगी
तौ में आरोगूंगो तव उठि कें सखडी महाप्रसाद
सव गायन कौं लिवायौ रसोई पोत कें रसोई की
सामग्री सव सिद्धि करि सखी रात्रि कौं उत्साह सों
सोय रही पाछें प्रातःकाल उठि के नित्य कर्म तथा
स्नान करि तथा रसोई करि तव पाक सिद्धि भयो
तव श्री ठाकुर जी कौं भोग समर्प्यौ जव टेरा सरका
वन लागी तव श्री दामोदर जी वोले जो अव तू॰
टेरा अव काहे कौं सरकावत है अव तू देखि मैं॰
आरोगत हौं और सव सामग्री यथा स्थित रहैगी॰
तव समराई तहां ठाडी भई और श्री ठाकुर जी भोज
न करत देखे तव श्री ठाकुर जी आप भोजन कीए
पाछें सव सामग्री थार में ज्यों की त्यों यथा स्थित
रही तव श्री ठाकुर जीनें कही जो याही भांति सों॰
तू नित्य जानि लीजियो तव समराई ने कही जो
हूं तौ देखूं तवही मानूं ता पाछें नित्य भोग धरैत॰
व श्री ठाकुर जी कौं भोजन करत देखै तव श्री ठा॰
कुर जी हू समराई के देखत भोजन करैं जो वाहे

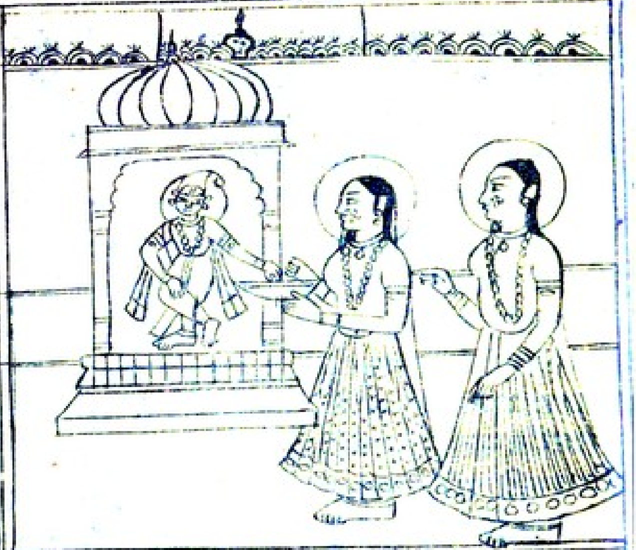

सो मांगि लैंय पाछें रासादिक कौ पाछें वाकौं सब
रसकौ अनुभव करवायौ सो समगाई सकल रस-
कौ अनुभव करन लागी तब यह बात श्री दामोद
रजी नें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यौ तब
श्री आचार्य जी महा प्रभून नें समगाई की सास-
गोरजा सों कही जो श्री ठाकुर जी कछु सानुभाव-
जतावत हैं तब गोरजा तौ कछु बोली नाहीं पाछें-
गोरजा श्री महाप्रभून सों विदा होय कें सीहनंद-
अपने घर आई तब दूसरे दिन सासनें सेवा करि
रसोई करि कें अपनें श्री ठाकुर जी कौं भोग सम
र्प्यो जब भोग सर्यो तब बहू चौंकि उठी जो श्री-
ठाकुर जी आरोगे नाहीं तब सास नें कह्यौ जो सुनि

वहू श्री ठाकुर जी तो लरिका हैं ताते तोही सों हि-
लेहोयगो ताते रसोई तू वेगि करि तव वहू नें रसो-
ई करि भोग समर्प्यो तव श्री ठाकुर जीने कह्यो.
जो में तो सवही आरोगो हों तव वहू ने कह्यो जो हूं
तो देखूं तव मानूं तव भोग समर्पि कें कह्यो जो महा-
राज आरोगो तव समराई के देखत श्री ठाकुर जी
आरोगे सो जव साम रसोई करे तव वहू कों वुल-
वे जो थार ले जाउ सो वहू थार ले जाय कें आरो-
गावे ऐसें नित्य प्रति करे सो यह वात श्री ठाकु-
र जीने श्री महाप्रभून सों कही पाछें वहू श्री आ-
चार्य जी महाप्रभून के दर्शन को याते स्वर गई
तव आय कें श्री आचार्य जी महाप्रभून कों दर्श-
न कीयो ता समय श्री आचार्य जी महाप्रभू पा-
क करत हुते तव समराई रोटी वेलन कों वेठी.
तव श्री आचार्य जी महाप्रभून ने वहू सों कह्यो
जो तेरी सव वात हमसों श्री ठाकुर जी नें कही है.
जो हम कों समराई भलीभांति सों सुख देत है तव
समराई मुसिक्याय रही और कह्यो जो इतनी ह-
वात श्री ठाकुर जी के पेट में नाहीं ठहरी तो क-
हा करिये पाछें कह्यो जो महाराज लरिको क-
हा पूछत हो तव श्री आचार्य जी महाप्रभू सुन कें
वहुत प्रसन्न भये और आप श्री मुख सों कहन
लागे जो देखो इनसों कैसो सम्वंध है श्री ठाकुर.
जी को और कहें जो या वहू के ऊपर वहुत कृ-
पा है और वहू सालन करनो सो नीकी भांति सों

करती सो श्री आचार्यजी महाप्रभूनने कह्योजो नि-
त्य सालन क्यों नाही करत तब वहू बोलीजो ल-
रिका के मन में आवे सो करिये तब यह सुनि कें
श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये याकी
सास गोरजा बहुत उत्तम सामिग्री करती ताते
श्री ठाकुरजीकों बहुत प्रिय लागती तातें इनसां
स बहुन के ऊपर बहुत प्रसन्न रहते ताते इन सास
बहून कों दर्शन देवे कों श्री महाप्रभूजी तथा दे-
खिवे के निमित्त प्रति वर्ष आय याके घर पधार
ते तब श्री आचार्यजी महाप्रभू कहते जो कहा
करिये सो सरस्वती उलंघनी नाहीं नातर इन-
कों सोहनन्द में दर्शन देतो सो वे सास वहू ऐसी
परमकृपापात्र भगवदीय ही ताते इनकी वार्ता क
हांताई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैस्नव ॥ ४४ ॥
अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
की सेवक रुस्मा दासी रु-
क्मिनी वहूजी की दा।
सी हुती ताकी
वार्ता॥

सो रुस्मा दासी अडेल में श्री रुक्मनी वहूजीकी
खवासी करती सो एक समय रुक्मनी वहूजी
कें गर्भ रह्यो हो तब रुस्मा दासी नें कह्योजो अब
कें बेटा होयगो तिनको नाम श्री गोकुलनाथ
जी धरूंगी सो गर्भ के दिन सम्पूरण भये तब रु-

क्मनीजी वहू के पेट में विथा भई तव कुस्मादा
सी नें जाय कें जोतषी सों पूछौ जो अव मुहूर्त कैसौ
है तव वा जोतषी नें दिन नीकौ न कह्यौ तव कुस्मा
दासी फिरि आय कें श्री रुक्मनी वहूजी के पेट पै
हाथ फेर्यौ और कह्यौ जो महाराज अव तौ मति
पधारौ आज कौ दिन नीकौ नाहीं तव पेट की व्य
धि सव दूर भई पाछें दिन दोय तीन वीते तव कुस्म
दासी ने विचार्यौ जो अव फेर पूछिये जो आज दि
न कैसौ है तव कुस्मदासी ने फेरि जाय कें पूछौ
जो आज दिन कैसो है तव वा जोतषी ने कह्यौ जो
आज दिन वहुत नीकौ है तव कुस्मा दासी नें आ
य कें श्री रुक्मनी वहूजी सों वीनती करिकें क-
ह्यौ जो महाराज अव पौढ़िये अव वालक प्रग

ट होयतौ भलौ है तव वहूजी महाराज पौढ़ीं तब कृ
ष्णादासी नें वहूजी महाराज के पेट पै हाथ फेरौ॰
और कह्यौ जो महाराज अब पधारिये तब श्री गुसां
ई जी श्रीनाथ जी द्वार पधारे हुते तब पेट में व्यथा भ
ई और बालक कौ जन्म भयौ तब नाममें कृष्णादासी
नें श्री गोकुलनाथ जी नाम धर्यौ ता पाछें श्री गुसांई
जी कों वधैया पठायौ तब श्री गुसांई जी महाराज ॰
अडेल कों पधारे तव नाम करण कीयौ तव ॰
श्री वल्लभ नाम धर्यौ परि कृष्णा दासी की कानि
तै श्री गोकुल नाथ जी नाम राख्यौ ऐसी कृष्णादा
सी के ऊपर कृपा थी जो जाके कहेते दोउ नाम प्रसि
द्धि भये॥१॥

वार्ता प्रसंग १

पाछें श्री घनश्यामजी कौ जन्म भयौ तव नाम कर
ण विचारन लागे तब श्री वल्लभ जीनें कह्यौ जो॰
श्री गोकुल नाथ जी नाम धर्यौ तव श्री गुसांई जी
नें कह्यौ जो यह नाम तौ तिहारौ है तब दोउ नाम प्र
माण कीये सो श्री वल्लभ कुल के विषें सब कोउ श्री
वल्लभ नाम कहत हैं और सब जगत में श्री गोकुल
नाथ जी नाम प्रसिद्ध भये और जन्म पत्र में श्री कृष्ण
हैं सो गोप्य राख्यौ श्री गुसांई जीनें कह्यौ जो यह ना
म गोप्य रहै ताते कृष्णादासी श्री आचार्य जी महा
प्रभून की ऐसी कृपा पात्र भगवदीयही सो इनकी
वार्ता कहां तांई लिखिये॥ ५

वार्ता प्रसंग ॥ २॥ वैष्णव ॥ ७५॥ ❊ ॥ ❊

॥ अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के॥

सेवक बूला मिश्र पंडित तिनकी वार्ता है

सो बूला मिश्र एक कपूर छत्री के प्रोहित हुते ताकी स्त्री कें संतति न हुती तव वानें दूसरो विवाह कीयो॰ तव ताहु स्त्री कें संतति न भई तव वह नें वा स्त्री सों कह्यौ जो तुम हरि वंश पुराण सुनों तव तुम्हारें संतती होयगी तव वा छत्री नें जाय कें बूला मिश्र सों प्रार्थना करी जो तुम मोकों हरिवंश पुराण सुनावो तव बूला मिश्र नें कह्यौ जो अब तो मोकों अवकाश नाहीं जब अवकाश होयगो तव तुम्हारे घर जाय कें॰॰ सुनाउंगो तव वह छत्री अपने घर आयो जव एक महीना वीत्यौ तव एक दिन अचानक बूला मिश्र वा छत्री के घर पधारे तव बूला मिश्र को वा छत्री ने बहुत आदर सन्मान कीयो तव बूला मिश्र नें॰ कह्यौ जो तुम दोउ स्त्री पुरुष स्नान करि कें आय बैठो तव दोउ स्त्री पुरुष स्नान करि कें आय बैठे॰ तव बूला मिश्र ने देह शुद्ध होवे के लिये एक दान करवायो पाछें हरि वंश पुरान को एक श्लोक॰ अंत को सुनायो ॥ ❊

श्लोक

इदं मया ते हरि कीर्तनं महत् श्री
कृष्ण महात्म्याय परं सुदर्शं एवं॰
गाय च स्त्री पु समामुतत्फले पश्चा
पि लोकेषु स दुर्लभं महत् ॥ १॥

यह हरिवंश पुराण के अंत को श्लोक सो बूला मिश्र ने वा क्षत्री कों सुनायौ और आशीर्वाद दीयौ और मंत्राक्षत पढ़ि कें वा क्षत्री की बड़ी स्त्री की गोद में दीए तब वा क्षत्री नें कह्यौ जो यह मिश्र जी तुमने कहा कीयौ यह तो स्त्री धर्म हूं नाहीं होत है तब बूला मिश्र नें कह्यौ जो श्री ठाकुर जी सर्व साम-

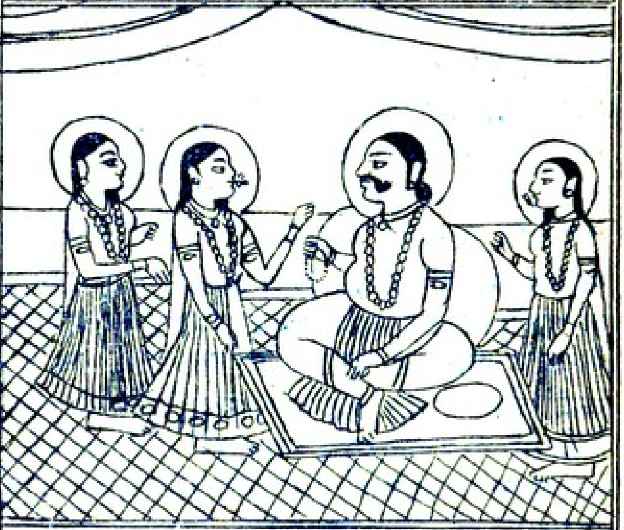

र्थवान है जो देंनहार होयंगे तो याही कों पुत्र देयंगे अब तो मैंने याकों अक्षत दीये सो तो दीये तब इतनों कहि कें बूला मिश्र अपने घर कों चलन लागे तब वा स्त्री नें बहुत वीनती कीनी जो मोकों सम्पूरण हरिवंस पुराण सुनावौ तब बूला मिश्र नें कह्यौ जो तोकों श्री ठाकुर जी सम्पूरण कौ फल-

एक ही श्लोक में देहिंगे ऐसें कहि कें बूला मिश्र तो अपने घर कों आये पाछें वा बड़ी स्त्री कों कर तु आई पाछें गर्भवंत भई तब कितनेक ······
······ दिन में वाकें पुत्र भयो ये मूला मिश्र श्री-महाप्रभून के ऐसे भगवदीय हे तिनके अनुग्रह ते वाकें पुत्र भयौ हरिवंस पुराण को एक श्लोक सुनेते सम्पूर्ण सुने को फल भयो ताते बूलामिश्र ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां ताईं लिखियें।।

वार्ता प्रसंग ।।१।। वैस्नव ।। ७६ ।।

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू
न की सेवक मीरावाई कें
पुरोहित रामदास ति
नकी वार्ता
लिख्यते

सो एक दिन मीरावाई के श्री ठाकुर जी के आगें रा-मदास जी कीर्तन करत हुते सो रामदास जी श्री आचार्य जी महा प्रभून के पद गावत हुते तब मीरावाई बोली जो दूसरो पद श्री ठाकुर जी को गावो तब रामदास जीने कह्यौ मीरावाई सों जो अरे दारी रांड यह कोन को पद हे यह कहा तेरे खसम को मूंड़ हे जो जा।-आज ते तेरौ मुहडौ कबहूं न देखूंगो तब तहां ते स-ब कुटुम्ब को लेके रामदास जी उठि चले तब मी-रा बाई नें बहुतेरौ कह्यौ परि रामदास जी रहे नाहीं पाछें फिरि कें वाको मुख न देख्यो ऐसें अपने प्र-

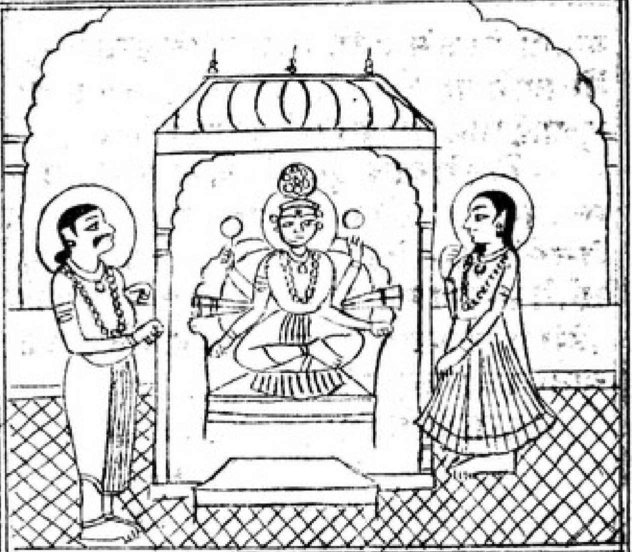

नसों अनुरक्त हुते सो वा दिन ते मीराबाई को मुख
न देख्यो वाकी वृत्ति छोड़ दीनी फेर वाके गांव के आ
गे होय के निकसे नाही मीराबाई ने बहुत बुलाए
परि वे रामदास जी आए नाहीं तब घर बैठे भेट पठा
ई सोई फेरि दीनी और कह्यौ जो रांड तेरो श्री आचा
र्य जी महाप्रभून ऊपर समत्व नाहीं जो हम कों ते
री वृत्ति कहा करनी है हमारे तो श्री आचार्य जी म
हाप्रभू सरवस्व हैं हम तो उन के हैं उन विना हमारें
सर्वस्व त्याग करनों उनके चरणारविंद को आश्रय
राखनों ऐसी वृत्ति कहूं तेरी होयगी वे रामदास श्री आ
चार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय
हैं ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥५॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ८७ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू
न के सेवक रामदास चौ
हान तिनकी वार्ता
लिख्यते

सो रामदास चौहान श्री गोवर्द्धन की कन्दरामें
रहते सो प्रथम श्री आचार्य जी महाप्रभू श्रीनाथ
जी द्वार पधारे तब श्री गोवर्द्धन नाथ जी को पाठ
बैठाये तब रामदास कंदरा में सूं बाहिर आये त
ब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें रामदास जी सों
कहीं जो रामदास श्री गोवर्द्धन नाथ जी की सेवा
सावधानी सों करियों तब रामदास जी ने वहां

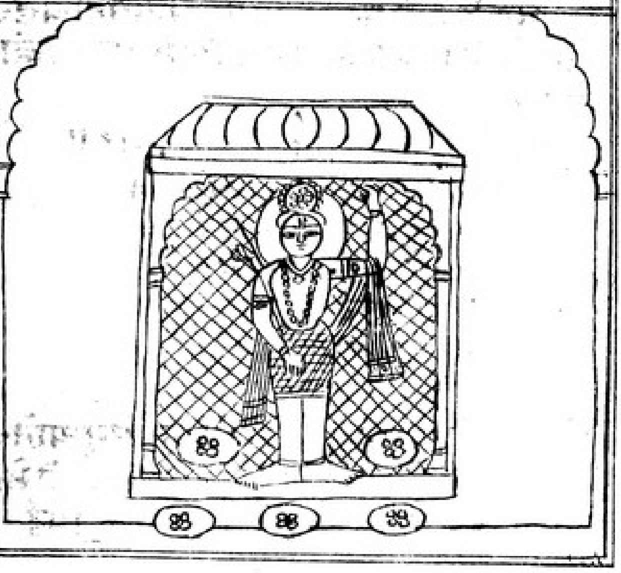

एक मन्दिर छोटो सो ईटन को बनवायो तब श्री-
आचार्य जी महाप्रभून नें वा मन्दिर में श्री नाथ जी
कों पधराये सो पहिलें श्री गोवर्द्धन नाथ जी श्री
गोवर्द्धन पर्वत ऊपर बिराजते सो ब्रजवासी लोगननें
एक फूस की छानि करि राखी हती ता छानि में बै-
ठते और कबहूं कबहूं दूध दही ब्रजवासी समर्प
ते देवदमन यह नाम कहते सो दूध दही माखन
सब आरोगते तथा श्री गोपाल लाल जी यह नाम
कहते सो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री गोव-
र्द्धन नाथ जी कों मन्दिर में पधराय पोछें श्री नाथ
जी नाम प्रगट कीयो तब ते सब कोउ श्री नाथ-
जी कहन लागे वे रामदास जी श्री आचार्य जी म
हाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे
ताते इन की वार्ता को पार नाहीं सो अब कहा
तांई लिखिये ॥ ❖

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ४८ ॥
अब श्री आचार्य जी महाप्र
भून के सेवक रामानंद
पंडित सारस्वत ।
ब्राह्मण ति-
नकी वा
र्ता हे

सो एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू थाने-
स्वर पधारे तहां रामानन्द पंडित के घर पधारे सो
रात्रि को उहां रहे हते सो जब पिछली रात्रि भई

तब रामानन्द पण्डित नें आपनी स्त्री सों कह्यौ॰
जो वेगि उठि गोवरि औौर लै चौका कौं म्हांड़ियेंगो
नातरि सवारें ये वैष्णव उठेंगे सो लै जायंगे तब य
ह वात श्री आचार्य जी महाप्रभून नें सुनी ता समय
श्री आचार्य जी महाप्रभू हाथ पांव धोय वे कौं॰
उठे हुते तब अति क्रोधवंत भये तब श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें रामानन्द पण्डित कौं बुलायो तब
आपने गड़ुआ में ते जल लैकें वाकें हाथ में मेलि
कें मंत्र पढ़ि कें वा जल कौं वा ऊपर छिरक्यौ और

आपने श्री मुख सों कह्यौ जो मैं तेरौ त्याग कीयो॰
तैनें मेरे सेवकन सों यों कह्यौ जो तू वेगि उठि गो
वर औौर ले नातर वैष्णव उठेंगे तो लै जायंगे तौ तू

रसोई को सामान कहांते करेगो ऐसो कहिके तहांते
उठि चले दृमा एक रहे नाहीं सो थानेस्वर ते एक गां
व ता ऊपर मही नाथे है सो तहां आये फिर वहां
आप ने स्नान कीयो सो जब श्री आचार्य जी महाप्र
भू रामानन्द पण्डित के घर ते चलन लागे तब थाने
स्वर के वैस्नव ने बहुत बीनती कीनी परि श्री आचा
र्यजी महाप्रभू रहे नाहीं और कह्यो जो मैं इहां रहि
कें जलपान न करूंगो ता पाछे काहू ने रामानन्द
पण्डित पास नाम पायो हो तिनसों श्री गुसांई जी
गंगोज्ञ कहते तब श्री आचार्य जी महाप्रभू थाने
स्वर पधारे पाछें रामानन्द की अवस्था विकल
भई तब बाजार में जो वस्तु देखतो सो खातो कछु
मर्यादा न रही परि इतनी मर्यादा तो करे जो खाय
सो समर्पि कें खाय यों कहे जो श्री गोवर्द्धननाथ
जी तुम आरोगियें इतनो कहि कें मुख में मेले
सो एक दिन हलवाई की दुकान पे जलेबी बहुत
आछी देखीं सो जलेबी दाम ने लेकें कह्यो जो श्री
नाथजी तुम आरोगियें ऐसें कहि कें खाई ता स
मय श्रीनाथजी नें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों क
ह्यो जो आजतो हमनें जलेबी बहुत आछी आरो
गीहें तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यो जो
कौने समर्पी है तब श्री नाथ जी नें कह्यो जो तुम्हा
रे सेवक रामानन्द ने समर्पी हें तब श्री आचार्यजी
महाप्रभून नें कह्यो जो महाराज मैंने वाको त्याग
कीयो तुम वाके यहां क्यों आरोगे हो तब श्री नाथ

जीने कह्यो जो तुम मोकों काहु कों सोंपत हो हम तुम्हारी कांनि ते अंगीकार करत हैं तुम हम कों जाकों सोंपत हो ताको तुम त्याग करत हो परि हम तुम्हारे सोंपे कों नाहीं छोड़त हैं तब श्री आचार्यजी महाप्रभू चुप करि रहे तब यह वात श्री आचार्यजी महाप्रभूनने दामोदरदास हरसानी सों कही तब दामोदरदास हरसानी नें वीनती की नी जो महाराज आप याकों अंगीकार कब करोगे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें दामोदरदास सों कह्यो जो यासों अब वैस्नव कौ अपराध पड्यो तो हम याकों लक्षजन्म पाछें अंगीकार करेंगे श्रीनाथजीने अंगीकार कीयो तोहू परि दूतनों अंतराय भयो ताते वैस्नव सों बोलनो सो विचार के बोलनों विना विचारें सर्वथा न बोलनों ऐसें वैस्नव कों रहनों ॥ ❖

॥ वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥ वैस्नव ॥ ८९ ॥ ❖

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
नके सेवक विस्नुदास
छीपी तिनकी वार्ता
लिख्यते ॥

सो विस्नुदास वृद्ध भए तब श्री गोकुल में श्री गुसांई जी की बैठक के द्वारे की द्वार पालकी करते और कोई पंडित आवते तासों विस्नुदास पूछते जो तुम क्यों आए हो और कहां जात हो तब उन पंडितन नें कह्यो जो हम श्री गुसांई जी के पास वा

द करन आवहैं तब विष्णुदासने उन पंडितन सों कह्यौ जो तुम मोसों वाद करलेउ तब विष्णुदास उन पंडितन सों वाद करिकें निरुत्तर करदेते व्याकरण शास्त्र पुराण इतिहास सब शास्त्रन के वचन लेकें निरुत्तर करि देते तब ते पण्डित आपने मन में समाधान करिके पाछें फिर जाते और ते कहते आपने मन में जो जिनके द्वार पालक ऐसे हैं तो तिनके धनी की कहा बात होयगी सो श्रीगुसांईजी लों काहू पंडित कों न जान देते द्वार ही ते पंडित निरुत्तर होय कें फिरि जाते तब एकदिन श्रीगुसांईजीनें कह्यौ जो कोई पंडित अब वाद करन को नाहीं आवत सो काहेते तब वैष्णवननें

कह्यौ जोमहाराज उन पण्डितन कों विस्नुदास॰
निरुत्तर करदेत हैं ताते पण्डित अपने मनमें समा
धान करिकें फिर जात हैं तब श्रीगुसांई जी श्री
मुखसों कह्यौ जो विस्नुदास तुमकों तो श्रीमहाप्र
भून की कृपा ते ऐसी सामर्थ्य है जो तुम पंडितन
कों जीत कें निरुत्तर करदेत हो परि उन ब्राह्मणों
कों अतिक्रम होत है ताते अब जो कोई पंडित
बाद करन कों आवे ताकों हमारे पास आवन॰
दीजो तब उन पंडितन कों॰॰ जान देते विस्नुदा
स श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा
पात्र भगवदीय हे उन कों ऐसी सामर्थ्य हुती जो
पंडितन कों निरुत्तर करि दूषण करते ॥

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

और एक भट्ट हुतो सो श्रीगुसांई जी सों कहतो
जो तुम्हारे सेवकन कों मैं जिमाउंगो तब श्री गुसांई
जी चुप करि रहते सो वह श्री गुसांई को सुसरहु
तो श्री घनश्याम जी को नानाहुतो सो एक दिन॰
वा भट्टनें श्रीगुसांई जी कों न्यौत्यौ तब श्रीगुसांई
जी उन के घर भोजन कों पधारें तब तहां विस्नुदा
स जलपान कों गडुआ लेकें साथ गये तब श्रीगु॰
सांई जी भोजन करिकें उठे तब श्री गुसांई जी कों
विस्नुदास नें शुद्ध आचमन करवायो पाछें श्रीगु
सांई जी मन्दिर में पधारें तब विस्नुदास कों श्री॰
गुसांई जी ने आज्ञा दीनी जो तुम प्रसाद लेकें चाणि
आइयो सो जा थार में श्री गुसांई जी भोजन कीए

हुते ता थार में नें प्रसाद आपनी पातरमें धरि कें
थार धोय धर्यो पाछें आप प्रसाद लेवे कों बैठे न
व भट्ट जी और सामिग्री लेकें आए तब विष्णुद
ासनें कह्यौ जो मोकों नाहीं चहियत तब भट्टनें कह्यौ
जो कुछ काहे कों लेत हो नेक सामिग्री लेउ तब विष्णु
दासनें कह्यौ जो माकों नाहीं चहियत मेरी पातर में डारो
गे तो मेरी पातर छूय जायगी तब भट्ट जी अति क्रोध
वंत भये पाछें उन भट्ट जीने श्रीगुसांई जी सों कह्यौ

जो तुम्हारे शूद्र ने मोसों ऐसें कह्यौ जो मेरी पातर
में मति डारो और डारोगे तो मेरी पातर छूय जायगी
तब श्री गुसांई जी चुप करि रहे पाछें श्रीगुसांई
जी मुसिक्याय कें भट्ट जी सों कह्यौ जो तुम हमारे
सेवकन कों जिमावन कहत हुते सो तुम सों हम
मारो १ शूद्र न जिमायो गयो और सेवकन को कै

सें जिमाओरो नवभट्ट जी मुसिक्याय के चुप क
रि रहे सो वे विष्णुदास श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हैं ताते इन
की वार्त्ता को पार नाहीं सो अब कहां ताई लिखि

॥ वार्त्ताप्रसंग ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ ५० ॥ सम्बंध ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक जीवनदास क्षत्री
कपूर सीहनन्द के वा
सी तिनकी वा ४
र्त्ता लिख्यते

सो एक समय सीहनन्द के सब वैष्णव मिलि
कें श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों अड़े
ल आवत हुते सो मार्ग में एक दिन मजल जाय उ

तेरे तहां सब वैष्णव अपने अपने चौका देत हुते ता स
मय मेह चढ़ि आयो तब वैष्णवन नें कह्यो जो वर्षा
आई ऐसो कार्य भयो तब जीवन दास बोले जो तुम
चिंता मति करो तब जीवनदास नें श्री आचार्य जी
महाप्रभून कौ नाम लेकें मेह कों आनि दीनी जो तो
कों श्री आचार्य जी महाप्रभून की आनि है जो तब
यै भांति तब वह मेह रहि गयो पाछें सब वैष्णवन नें
भोग समर्पि महाप्रसाद लीयो तहां रात्रि कों सोये
ता पाछें सब वैष्णव अड़ैल आये तब श्री आचा-
र्य जी महाप्रभून कौ दर्शन कीयो पाछें यह वात-
सवनने श्री गुसांई जी सों कही जो महाराज एक
दिन सब हम वैष्णव पाक करत हुते ता समय मेह
चढ़ि आयो तब जीवन दास नें आप की आनि दै
कें ऐसें कहि कें मेह कों वरजो तब यह सुनि कें
जीवन दास सों श्री आचार्य जी महा प्रभून नें पूछौ
और कह्यो जो क्यौं रे हमारी तेंनें आनि दीनी और
कदाचित वर्षा होती तो तू कहा करतो तब जीवन
दास नें कह्यौ जो महाराज वह कौन है जो आपकी
आनि दिये उपरांत वर्षे वह इन्द्र की कहा सामर्थ्य
है तब यह वात जीवनदास की सुनि कें श्री आचा
र्य जी महाप्रभू मुसिक्याय कें चुप कर रहे तब उ
न जीवन दास पै श्री आचार्य जी महाप्रभून की
ऐसी कृपा हुती उन जीवन दास कों श्री आचार्य
जी महाप्रभुन के स्वरूप कौ ऐसो ज्ञान हुतो सो आ
नि दैकें मेह वरजो तिन की कहा कहिये ....

तब वैष्नवन नें कह्यो ये बड़े भगवदीय हैं वे जी
वनदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे प
रम कृपा पात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता अब
कहां तांई लिखियै ॥

वार्ता प्र० ॥ वैष्णव ॥ ५१ ॥
अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के
सेवक भगवानदास सारस्व
त ब्राह्मण तिनकी वा-
र्ता लिख्यते

सो उन भगवानदास नें श्री आचार्य जी महाप्रभू
नकी सेवा नीकी भांति सों कीनी तब श्री आचार्य
जी आप भगवानदास के ऊपर बहुत प्रसन्न भये ।
तब भगवानदास कों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें
आप कृपा करिकें अपनी श्री पादुका जी कौ से
वा दीनी जो तू इनकी सेवा नीकी भांति सों करियो ।
तब भगवानदास श्री पादुका जी की सेवा नीकी भां
ति सों ऐसी भांति सों सेवा करते जो श्री ठाकुर जी ।
इनसों सानुभाव ह्वै के वातें करते सो एक समय श्री
आचार्य जी महाप्रभू भगवानदास के घर पधारे
सो जा ठौर श्री आचार्य जी महाप्रभू बिराजते हे ता ठौ
र नित्य उठि कें सवारें भगवान दंडौत करते सो ता
ठे वा ठौर पर कोऊ पाव न धरतो ऐसो उनको भा
व हो सो ये भगवानदास श्री आचार्य जी महाप्रभू
न के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे तातें इनकी वा
र्ता कहां तांई लिखियै ॥ ५१ ॥

॥वार्त्ताप्रसंग॥१॥वैष्णव॥५२॥
अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
नके सेवक भगवानदा
स श्रीनाथजी के भी
तरिया तिनकी
वार्ता है॥
सो एक समय श्रीनाथजी के बालभोग की सा
मग्री करत भगवानदास सों कछु सामग्री दाझी

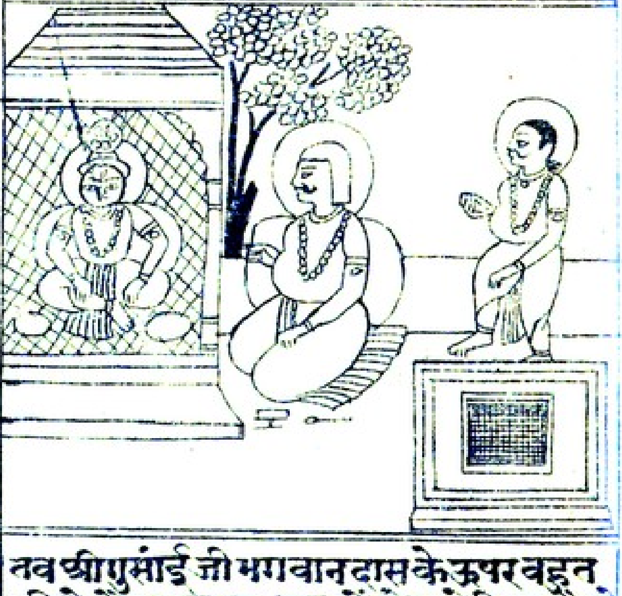

तब श्रीगुसांई जी भगवानदास के ऊपर बहुत
खीजे और भगवानदास कों सेवा तें भिन्न बैठागे
सो भगवानदास गोविंदकुंड ऊपर आय अच्युत
दास के पास आय बैठे पाछें श्रीगुसांईजी आप·

स्नान करिवे कों गोविंद कुंड ऊपर पधारे और भगवानदास तो पूछरी की और अच्युत दास के पास इने सो भगवानदास ने सब समेंचार कहे पाछें तव श्री गुसांई जी गोविंद कुंड स्नान करिकें अच्युतदास कों दर्शन दैंन पधारे तव श्री गुसांई जीके दर्शन करिकें अच्युत दास की आंखन में से आसून कौ प्रवाह चल्यौ सो देखि कें अच्युत दास कों श्री गुसांई जीने अच्युतदास सों पूछी जो अ

च्युतदास तुमकों ऐसो दुःख कहाहै तव अच्युत दास में श्री गुसांई जी सों कह्यो जो महाराज श्री आचार्य जी महाप्रभून कों तो श्री नाथजी ने आज्ञा दीनीहै जो तुम जीवन कौ ब्रह्म सम्वन्ध करावो।

सो साठ लाख जीवन कों तुम द्वारा अंगीकार क
रनो है और श्री आचार्य जी महाप्रभूनें तो तुमकों
सोंपे हैं और तुम जीवन को अपराध देखन लागे
और जीव तो सदा अपराधही ते भरयो है और जी
वन कों अंगीकार करनों तुम्हारे हाथ है ताते अ
व जीवन कों अंगीकार ...... कैसें होयगो तब
श्री गुसांई जी यह बात सुनिकें आप भगवानदा
स कों हाथ पकरि कें श्री गोवर्द्धन पर्वत ऊपर ले
चढ़े और श्री गोवर्द्धननाथ जी की सेवा जा रीति
सों करते ता रीति सों सेवा करन की आज्ञा दीनी
और कही जो अबते सावधानी सों सेवा करियो
और सामग्री आछी भांति सों करियो तब भगव
नदास ने तासमय श्री गुसांई जी के आगे नयो प
करिकें गायो ॥ सोपद ॥ रागसारंग
श्री विठ्ठलेस चरण कमल ॥ सो यह पद गायो
सो सुनि कें श्री गुसांई जी बहुत प्रसन्न भये पाछें
भगवानदास सावधानी सों सेवा करन लागे तातें
भगवानदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे
कृपा पात्र भगवदीय हे सो इनकी वार्ता कहां ताई
लिखिये ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैस्नव ॥ ५३ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू
न के सेवक अच्युतदास
सनौड़िया ब्राह्मण ति
नकी वार्ता है ॥

सो वे अच्युतदास मोनसी गंगा ऊपर रहते तहां
चक्रतीर्थ है तहां रहते सो नित्य शृंगार के समय
श्रीनाथ जी के दर्शन कौं आवते सो दर्शन करि के
अपने स्थल कौं आवते सो उन अच्युत दास जीनें
श्री नाथ जी की तीन परिक्रमा दंडौती करी हुती तब
श्री गुसांई जी अच्युत दास के ऊपर बहुत प्रसन्न
भए और श्रीगुसांई जी अपने श्री मुख सों कहते
जो अच्युत दास बड़े भगवदीय हैं और बड़े महा
पुरुष हैं सो वे अच्युतदास श्री आचार्य जी महाप्र
भून के तथा श्री गुसांई जी के ऐसे परम कृपा पा
त्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहां तांई लि
खिये ॥ ❀

॥ वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ५८ ॥ ❀

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक अच्युतदास गौ
ड़ ब्राह्मण तिनकी वा
र्ता लिख्यते

सो वे अच्युतदास बड़े भगवदीय हैं और श्री
आचार्य जी महाप्रभूननें इनके माथे श्री मदन
मोहन जी की सेवा पधराई हुती आप कों पाटनें
करे हुते सो अच्युतदास श्री मदनमोहन जी की
सेवा नीकी भांति सों करते तब श्री मदनमोहन जी
आप अच्युत दास सों सानुभाव हुते बातें करते
और अच्युतदास ऊपर श्री ठाकुर जी ऐसी कृपा
करते और एक दिन अच्युत दास श्रीनाथ जी के

दर्शनकों आवत हुते तब श्री गोवर्द्धन नाथ जीकी
एक दंडौती परिक्रमा करते ऐसे भगवदीय हे और
एजब श्री गुसांई जी के पास आवते तब श्री गुसाई
जी अच्युतदास कों दंडौत न करन देते और कहते

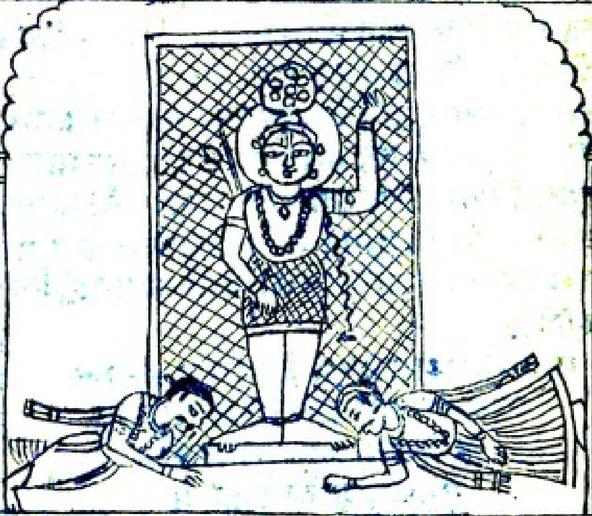

जो ऐसे श्री आचार्य जी महाप्रभून के कृपापात्र भ
गवदीय हैं तातें इनकों दंडवत न करन दीजिये या
तें जब श्री आचार्य जी महाप्रभूननें लौकिक करी
सो आसुर व्यामोह लीला दिखाई तब अच्युत
दासनें श्री मदनमोहन जी कों श्री आचार्य जी म
हाप्रभून के घर पधराये आप श्री बद्री नाथ जी के
दर्शन कों उठि गये तब उहां जायकें श्री बद्रीनाथ
जीके दर्शन करि कें अन्नजल को त्याग करि कें

अपनी देह छोड़ी पाछें श्रीमदनमोंहनजी कों क-
हैं गोपीनाथजीने श्रीगोवर्द्धननाथजी के पास
पधराए वे अच्युतदास श्री आचार्यजी महाप्रभु
न के ऐसे भगवदीय हे जिन श्री आचार्यजी महा
प्रभून कौ स्वरूप साक्षात् करि जान्यो और उन-
की श्री महाप्रभून के ऊपर बडी आसक्ति हुती औ
परोक्ष भए पाछें अन्नजल को त्याग कीयो तब
देह छोडी भक्ति मार्ग को स्वरूप केवल विरहात्
किहै सो वे अच्युतदास ऐसे भगवदीय हे तातें
उनकी वार्ता कहांतांई लिखिये॥ ❋

॥ वार्ताप्रसंग॥ १॥ वैष्णव॥ ५५॥

अब श्री आचार्यजी महा ❋
प्रभून के सेवक अच्यु
तदास सारस्वत ब्रा
ह्मण तिनकी ❋
वार्ता है॥

सो एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभून के संग
अच्युतदास नें पृथ्वी परिक्रमा कीनी हुती सो श्री
आचार्यजी महाप्रभून नें अच्युतदास कों अपनी
पादुकाजी की सेवा दीनी सो अच्युतदासनें आ
ति उत्तम रीति सों श्रीपादुकाजी की सेवा कीनी
तातें श्री आचार्यजी महाप्रभू अच्युतदास कों
नित्य दर्शन देते और जो श्री आचार्यजी महाप्रभू
नें सन्यास ग्रहण कीयो सो केवल उनके भावार्थ
कीयो तब एक वैष्णव सों श्री आचार्यजी महा

प्रभून नें कह्यौ जो एक डोंगी कासी कों भाड़ें करलीं
उ तब वह वैस्नव डोंगी भाड़ें करि लाये नाके ऊप
र श्री आचार्य जी महा प्रभू चढ़ि कें बनारस पधारे
तहां सन्यास डेढ़ महीना नांईं राख्यौ तब वह वैस्न
व जो काशी में गयौ हो सो कासी ने कंडा में आयौ
तब अच्युतदास तथा सब वैस्नवन सों कह्यौ
जो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें सन्यास ग्रहण कीं
यौ फेरि कासी पधारे सो उहां डेढ़ महीना नांईं रहे
पाछें असुर व्यामोह लीला दिखाई तब अच्युत
दासनें वा वैस्नव सों कह्यौ जो तोकों भ्रम भयौ हो
यगो तब वा वैस्नवनें कह्यौ जो में श्री आचार्य जी
महा प्रभून के साथ हतो सो कासी ने देखि कें अब

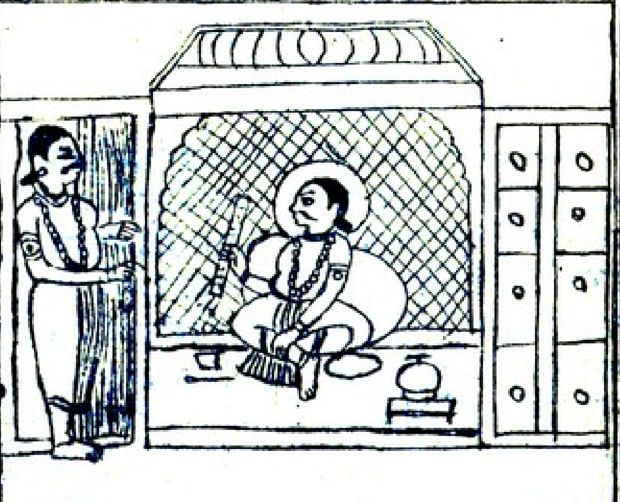

हीं हौ आयो हौं तब अच्युतदास नें कह्यौ जो ऐसी प्रभु
कबहू न करें जो जीवन कौं आसुर व्यामोह लीला॰
दिखावत हैं तब अच्युतदास नें मन्दिर के किवाड़ खो
लिकें वा वैष्णव कों श्री आचार्यजी महाप्रभून के॰
दर्शन करवाये तब देखें तो श्री आचार्यजी महाप्रभु॰
विराजे हैं और पोथी देखत हैं तब वा वैष्णव नें दंडौ
त कीनी तब श्री आचार्यजी महाप्रभु नें कह्यौ तुम॰
कछू सन्देह मति करौ यह प्रागट्य लौकिक रीति सौं
देह धरे की लीला है और सिंहासन बैठिकें अलौकि
क लीला नित्य है तातें यह लीला आवर्स अमनाम
अपट है तातें तहां आए हैं तातें सन्देह न करौ यह
आसुर व्यामोह लीला है सो श्री गुसांई जी सर्वोत्तम
में लिखे हैं जो प्राकृतानुकृत व्याजमोहित असुरा
नुष: मनुष्य देह धरे ताकी यह लीला है सो अच्युत
दास ऐसे स्वरूपनेष्ठ के जिनकों श्री आचार्यजी
महाप्रभून के स्वरूप कौ ऐसो दृढ़ विश्वास हो॰
वे अच्युतदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे
कृपापात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता कहां लों
है लिखिये ॥९॥
वार्ताप्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥५८॥ सम्बन्धी ॥१८९

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के से॰
वक नारायणदास अम्बाले
के वासी हुते तिनकी
वार्ता लिख्य
ते हैं ॥

सो वे नारायणदास देशाधिपती के चाकर हुते तिनकों राजद्वार कौ काम बहुत हुतौ ताते श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों आय सकते नाही परि अंतः करन में श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन की आतुरता बहुत जो श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों कब जाउंगो परि आय सकते नाही ताते नारायणदास नें एक चाकर राख्यौ ताकौ महीना रुपैया ४) चारि कौ कीनो और वासों कह्यौ जो तेरौ यह काम है जो मोकों छिनछिन में सुरत दीवायौ करि जो भैया जी श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों कब चलोगे यह कहि कें सुनाउ जो हम कों श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन की सुधि रहे सो वह चाकर यों ही कह्यौ करै

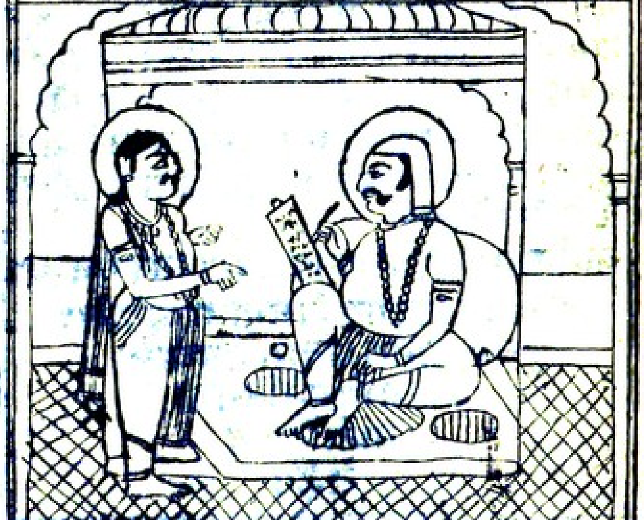

तब नारायणदास अपनेकार्य में बैठे तब आगें आयकें ठाडो होयकें एक१ घडीउपरांत कहेजो भैयाजू श्री आचार्यजी महा प्रभूनके दर्शन कों कब जाउगे ऐसेंही नित्य प्रतिकहे औरनाराय णदास श्रीआचार्यजी महाप्रभून कोभेट बहुत पठावते नारायणदास ऐसे भगवदीयहे सोउन कोचित सदा श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके चर णारविंद में रहतौताते श्रीआचार्यजी महाप्रभू बहुतही प्रसन्न रहते हे नारायणदास ऐसेक पापात्र भगवदीयहे तातेइनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥५७॥ सम्बन्ध १२६

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभून
के सेवक नारायणदास मा
ट मथुरा में रहते ति
नकी वार्ता
लिख्यते

सो नारायणदासकों श्रीमदनमोहनजीनें आज्ञा दीनी हुतीजो वृन्दावन में अमुकीठौर हौं मो वहां सों काढि कें मोकों बाहिर पधराउ तब नारायण दास जायकें श्री मदन मोहनजीकों बाहिर पधरा यकें पाछें जब श्री गोपीनाथजीनें श्री मदनमोह नजीकों पाठ सिंहासन बैठारे तब कितनेक दिन तांई नारायणदास नें सेवा कीनी तब उनके पाछें उनको कोउ नहती ताते बङ्गाली गौडिया सेवा

करन लागे श्री गोपीनाथजी ने पाट बैठारे ताते सब
कोउ दर्शन कों आवहै वे नारायणदास ऐसे भग
वदीय हैं तिन कों श्री मदनमोहनजी आप कृपा क
रिकें वृन्दावन पधारे श्री मदनमोहनजीने श्री आचा
र्यजी महाप्रभून को सेवक जानि कें नारायणदास
के ऊपर कृपा कीनी ताते वे नारायणदास श्री आ
चार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय
हैं ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ *

वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ५८ ॥ सम्बंध १३० ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून *
के सेवक नारायणदास चौ
हान ठठ्ठे के वासी ति

नकी वार्ता है

सोवे नरायणदास ठट्ठे के पात्साह के दीवान कुल
कु स्यां हुते जो नारायणदास दीवान करै सो होय पाछें
कितनेक दिन में वह पात्साह नारायणदास के ऊपर कोप्यौ
तव नारायणदास को पकर्यो तव वहुत मार्यो
और वन्दीखाने में दे दीयो पाछें पचास लाख रुपैया
वाके माथे दंड कौ कीयो सो दिन प्रति पांच हजार भ
रने और जादिन रुपैया न भरे तादिन नरायनदास कें
पांचसौ कोरड़ा मारने पात्साह ने ऐसो वंधान कीयौ
तव एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक
दोउ भाई ब्राह्मण तिननें अपने मन में विचार कीयौ
जो ठट्ठे में नारायणदास दीवान है सो हम उनके पास
चलें हम कों अपनी कन्या कौ विवाह करनों है ताते
जो वे कछू देंय तो कन्या कौ विवाह करें सो ऐसो
विचार कें वे दोउ भाई अपने घर ते ठट्ठे को चले सो ठ
ट्ठे में जाय कें पहुंचे तव वहां जाय कें सुन्यो जो नराय
णदास तो वन्दीखाने में पर्यो है तव वे दोउ भाई अ
पने मन में विचार करन लागे जो अव कहा करिये
ऐसो विचार इन दोउ भाईन नें कीयो जो अव यहां
सों चलिये तव प्रातःकाल यह वात नारायणदास
नें सुनी जो दोउ भाई श्री आचार्यजी महाप्रभून के
सेवक गाम में आये हैं सो उननें सुनी जो नारायण
दास तो वन्दीखाने में परे हैं ताते अव यहां से प्रातः
काल चलेंगे तव नारायणदास नें उनके पास मनु
ष्य पठायौ और कहि वाय पठाई जो तुम आये सो

मेरौ बड़ौ भाग्य है मेरे पास तुम प्रातःकाल होय के दर्शन अपने मोकूं दे कें जैयो तब वे दोउ भाई प्रातःकाल उठि देहकृति करि तिलक मुद्रा करि नित्य कर्म सों पहुंच कें श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ चरणामृत और महाप्रसाद लैकें जहां नारायणदास बन्दीखाने में हुते तहां दोउ भाई नारायणदास के पास जाय मिले तब नारायणदास वें उनकौं देखि कें परम आनन्द भयौ और बहुत प्रसन्न भए तब उन दोउ भाईनिनें चरणामृत और महाप्रसाद नारायण कौं दीनों तब नारायणदास ने लीनों और कह्यौ जो मोकों बन्दीखाने में वैष्णवन कौ दर्शन भयौ तब नारायणदास नें श्री आचार्य

जी महाप्रभून के कुशल समाचार पूछे पाछें भगवद्‌-
वार्त्ता के प्रसंग करन लागे इतने में नारायणदास के -
घरते पांच हज़ार रुपैयान की थैली आई सो द्वार पा
लनें थैली के ऊपर मोहर छाप करि के नारायणदास
के पास पठाई तब नारायणदास नें ये पांचौ थैली उ
न दोउ भाईन कों सौंपि दीनी और दंडौत कीनी और
कह्यौ जो अब तुम वेगि पधारो और श्री आचार्यजी
महाप्रभून कों मेरी दंडौत करियो और तुम अपनी -
कन्या को विवाह या द्रव्य ते भली भांति सों करि -
यो तब वे दोउ भाई ब्राह्मण नारायणदास ते विदा
होय के चले तब इतने में पात्साह बोल्यौ जो पांचौ
थैली नारायणवारी लावौ तब दरवान बोल्यौ जो
पांचों थैलीन ऊपर मोहर छाप करि कें नित्य नाराय
णदास के पास पठावत हैं त्योंही पठाई हैं तब पात्सा
ह बोल्यौ जो खजानची कों बुलावौ तब मनुष्य जा
य कें खजानची कों बुलाय लाये तब खजानची आगें
आय ठाड़ो भयो तब पात्साह नें खजानची सों पूछ
यौ जो क्यों रे तेरे पास नारायणदास के पास ते पांचौं
थैली आई हैं तब खजानची नें कही जो साहब मेरे
पास तौ नाहीं आई तब पात्साह कों बहुत क्रोध
भयौ और कह्यौ जो नारायणदास कों बुलावो तब
नारायणदास कों बन्दीखाने में ते बुलाय सो लाय कें
पात्साह के आगें ठाड़ो कीयो तब नारायणदास में
पात्साह ने पूछ्यौ जो नारायणदास आज थैली क्यों
नाहीं आई पाछें थोड़ो सो गाढ़ो कोरड़ा करि कें -

कोरड़ा वारौ बुलायौ और पातसाह नें पांचसौ कोर
ड़ा कौ हुकम दीयौ और पातसाह बोल्यौ जो नारायण
दास सांच कहि जो आज थैली क्यों नाहीं आई ।
द्वारपाल नें तौ मुहर छाप करि कें तेरे हवालें कीनी
और तैनें यह कहा कीयौ तू सांच कहि नाहीं कोर
ड़ा लागत हैं तब नारायणदास सलाम करि कें बो
ल्यौ जो हजरत आज मेरे गुरू भाई आये हुते सो ।

वे पांचौं थैली उनकों दीनी और मैनें अपने मन में
कह्यौ जो मैं आज मार खाय रहूंगो परि यह घड़ी
कहां है तब पातसाह चुप करि रह्यौ पाछे एक घ
ड़ी बिचार कें कह्यौ जो स्याबास तू अपने गुरू के
मार्ग में ऐसो सांचौ है सो मैं तेरे ऊपर बहुत प्रसन्न

तबपात्साह ने वाही समय बेड़ी कटवाइ के वा-
ही समय घोड़ा तथा सिरोपाउ मगायकें नारायण
दास कौं पहरायौ घोड़ा दीयौ और निवाज्यौ तब
फेरि कें अपनों कुल कुसादीमान राख्यौ जैसो पह
लें हुतो मैसैंई कीयो काम सब सोप्यैं और नारायन
दास के मांथे दंड कीयौ हुतौ सो सब माफ़ करि कें
सिरोपाव पहराय कें कह्यौ जो जा घर होय आउ मे
सिरोपाव पहरिकें घोड़ा ऊपर चढ़िकें नारायणदा
स घर कों गये सो वे दोउ भाई वैस्नव गांम में ही
हुते सो वे दोउ भाई वैस्नव सुनि कें नारायणदास
सों मिलिबे कों आये तब नारायणदास उनसों
मिले भेंट और कह्यौ जो मेरे गुरू के सेवक आये
तौ मैं छूटौ तब उन वैस्नवन नें कह्यौ जो श्री आ
चार्यजी महाप्रभून की कृपातें वेगे छूटे तब ना
रायणदास ने १००० हजार मौहरन की एक थै-
ली वैस्नवन के हाथ श्री आचार्यजी महाप्रभून
कों भेट पठाई पाछें वे दोउ भाई उहां सों चले सो
कितनेक दिन में श्री गोकुल आये तब श्री आचा
र्यजी महा प्रभू श्री गोकुल में हुते सो उन दोउ भा
ई वैष्णवन नें आय के श्री आचार्यजी महाप्रभून
कौ दर्शन कीयो और नारायणदास की हजार मो
हरन की थैली आगें राखी तब श्री आचार्य जी म
हाप्रभून नें नारायणदास के कुशल समाचार पू
छे तब उन वैष्णवन नें सब समाचार कहे तब श्री
आचार्य जी महाप्रभू अपने श्री मुख सों कहें जो

जाकों वैष्णव ऊपर ऐसो दृढ स्नेह है ताको कहि-
वो रहे पाछें वे वैष्णव ब्राह्मण श्री आचार्यजी-
महाप्रभून ते विदा होय कें अपने घर को गये सो
बेटी को विवाह आछी भांति सों कीयो और यह
सेउन को नाम नरिया हतो सो सेवक भए पाछें श्री
आचार्यजी महाप्रभूननें नारायणदास नाम ध-
रो ताको ऐसो मन होय तापै श्री ठाकुरजी ऐसी
कृपा करें प्रभूजी को नाम भक्त वत्सल है सो अपने
को थोरे ही मे कृपा करत हैं सो वे नारायणदास-
ऐसे कृपा पात्र हते इनकी वार्ता कहां तांई लि-
खियें ॥ +

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ५९ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक एक क्षत्राणी
अकेली सीहनन्द ॰
मे रहती तिन ॰
की वार्ता

सो वा क्षत्राणी कें श्री नवनीत प्रीया जी विराजे हैं
श्री ठाकुरजी सानुभाव हैं सो वह बाई अकिंचन-
सेवा जब करि पहुंचे तब सूत काते तामें जो कछु
बढ़ती आवे तासों निर्वाह करे सो घर के द्वारे का
छिल तरकारी बेचन आवे तब श्री ठाकुरजी मन्दि
र मेंने पुकार कें कहें अरी अमुकी तरकारी विक
ने आई है तू ले ऐसें श्री ठाकुरजी कहें तब वह-
क्षत्राणी सब भांति की तरकारी लेहि सो केतिक

नौकरवी समर्प्य कैलिक रसोई में ढांकि कैं समर्प्य
और कवहूं काछिन को शब्द श्री ठाकुरजीन सु
ने और वह काछिन आगें निकस जाय तब वह
बाई सामग्री कछु लैन सकै तब श्री ठाकुर जी वा
सों बहुत रारि करें जैसे लौकिक लरिका रार करें
तैसे श्री ठाकुर जी वा क्षत्राणी सों झगरो करें और
एक दिन कछु पकवान वाल भोग कौं होय न आ
यो तब रोटी घी सों चुपरि कें रात्री के लिये ढांकि
रखी सो जब रात्रि आधी भई तब श्री ठाकुर जी
बोले वा क्षत्राणी बाई कौं जगाई और कहें जो
हों भूखो हों तब वा बाई नें कह्यो जो लालजी प-
कवान तो कछू नाहीं है और रोटी घृत सों चुपरी
धरी है तब श्री ठाकुर जी कहें जो भलो रोटी ही
लाउ तब वा बाई ने रोटी आगें आनि राखी तब
श्री ठाकुर जीने वा बाई सों कह्यो जो तूमो कों रो-
टी की तुतुरी कर कें दे तब वह बाई श्री ठाकुरजी
के हस्त में देन जाय तब अपने श्री हस्त में लेकें
कतरि कतरि कें आरोगन जाय पाछें जब पानक
रकें पोढ़े परि वा क्षत्राणी के मन में क्षोभ भयो ब-
हुन सो और कह्यो जो सवारे उधारे लाय कें पक
वान करि धरोंगी जो रात्रि कों श्री ठाकुर जी नें फी
की अकेली रोटी आरोगी पाछें दूसरे दिन पकवा
न करि धर्यो तब रात्रि कों श्री ठाकुर जी नें मांग्यो
तब पकवान लैकें आगें धर्यो तब श्री ठाकुर जी
आरोगे तब कह्यो जो अमुकीनें पकवान तो ध-

सो परि मोकों पकवान वीच रोटी की हुतरी अ
ति अद्भुत स्वाद लगी तव वा सनवारी ने कह्यो ।
जो महाराज में कहा करूं मेरें कोई कमावन हा
रो तो है नाहीं मैं तो अकेली हों मोते तो कव
हूं कछू होय आवत नाहीं तव श्री ठाकुरजीनें
वा सनवारीसों कह्यो जो तू नित्य पकवान काहे
को करत है तू मोकों रोटी चुपरिकें धरि राख्यो क
रि मोकों तो तेरी रोटी वहुत रुचित हैं तातें तू सं
कोच मति करै हमकों तो तेरी रोटी चुपरी वहुत
स्वाद लागत है पाछें वह रोटी करि राखती सो श्री
ठाकुर जी आरोगते वह सनवारी श्री आचार्य
जी महाप्रभून की ऐसी कृपा पात्र भगवदीय ही।

ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं सो अब कहांताई लिखिये ॥ ❋

वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥ वैस्नव ॥ ६० ॥ ✤ ॥ ✤

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक दामोदरदास का
यस्थ सेरगढ के वा
सी तिनकी वा
र्ता है ॥

सो तिनकी सेव्य ठाकुर श्री कपूर रायजी सो बहुत गौर स्वरूप हतो तिनके पास श्री नवनीत प्रिया जी बैठिते सो एक समय दामोदरदास की स्त्री वीरबाई ताके गर्भ रह्यौ पाछें प्रसूत भई सो पुत्र जन्म भयो सो घर की बहू बेटी सब प्रसूत के काम काज करन लागी सो श्री ठाकुर जी की सेवा में विलम्ब भयो वीरबाई प्रसूतक में ते बहुत कहे जो कोउ सेवा में न्हाउ श्री ठाकुर जी की सेवा में अबेर होत है परि कोऊ नाहीं न्हाय तब श्री ठाकुरजी ने वीरबाई सों कह्यौ जो न स्नान करि कें सेवा क्यों नाहीं करत है तब वीरबाई प्रसूतक में ते उठि कें श्री ठाकुर जी सों कह्यौ जो महाराज मेरी तो यह व्यवस्था है मोको तो सेवा में आपनो नाहीं प्रसूतिका में हूं अपरस छूट जाइगी तब श्री ठाकुर जी महाराज ने वीरबाई सों कह्यौ जो मोकों तो सेवा में विलम्ब होय है मोको इतनी अबार भई है और कोउ न्हात नाहीं ताते तू ही न्हाउ तब यह वीरबाई

श्री ठाकुरजी के आसन ते उठिकें प्रसूनका में ते न्हा
यके कारु देकें श्री ठाकुर जी की सेवा करिकें पाछें
भोग समर्प्यो पाछें समयानुसार भोग सराय कें अ
नोसर करिकें आप भोजन करिकें खाट में सोय
रही श्री ठाकुर जी की आज्ञा सों सेवा कीनी सो ऐ
से चालीस दिन तांई नित्य करती तब श्री ठाकुरजी
ने कह्यो जो तें ने मेरी आज्ञाहू मानी और वेद मार्ग
की रीतिहू राखी याते श्री ठाकुरजी बहुत प्रसन्न
भए तब चालीस दिन बीते तब शुद्ध स्नान करकें
सेवा करन लागी पहले पात्र वस्त्र सब अपरस
दूर कीने और दूसरे सब नये मंगवाए पाछें भली
भांति सों सेवा करन लागी याते वह वीर बाई श्री
आचार्यजी महाप्रभून की ऐसी कृपा पात्र भग
वदीय ही ताते इनकी वार्ता अब कहां तांई लि
खिये ॥ *

वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६१ ॥ *

अब श्री आचार्यजी महाप्रभु
न के सेवक स्त्री पुरुष दोउ
क्षत्री हुते तिन की ॥
वार्ता लिख्यते

सो वे स्त्री पुरुष दोउ जने सीहनन्द में आय रहे सो
वह घर निपट छोटो हुतो ताते श्री ठाकुर जी ता स
मय बैठिने सो आधी कोठरी में तो रसोई करते औ
र आधी में रहते और सैया कों ठौर न हुती ताते एक
बांस कौ मेंडा कर राख्यो हुतो ताके ऊपर श्री ठाकु

रजी पोढ़ने आप .... स्त्री पुरुष दोउ जने रात
कों आगन मे सोय रहते ऐसें करत तब चातुर-
मास के दिन आये तब मेह बरसनो तोउ वे आ
गन में सोय रहते परि भीतर न सोवते तब श्रीठा-
कुर जी भीतर सों बोलते जो अरे असुका अमु
को हो तुम भीजत क्यों हो भीतर क्यों नाहीं सोव-
त हो बाहिर काहे कों पोढ भीजत हो तातें तुम भी
तर आवो और हम तो ऊंचे मेंडा पर हैं तुम नीचे-
क्यों नाहीं सोवत हो तब वा क्षत्राणी ने कह्यो जो
महाराज तुम तो ऊंचा मेंडा ऊपर पोढत हो और
में नीचे कैसे सोऊं तब श्रीठाकुर जी प्रसन्न होय
कें कहें जो कछु बाधक नाहीं तुम कछु संकोच
मति करो हम तुमते प्रसन्न होय कें कहत हैं तातें

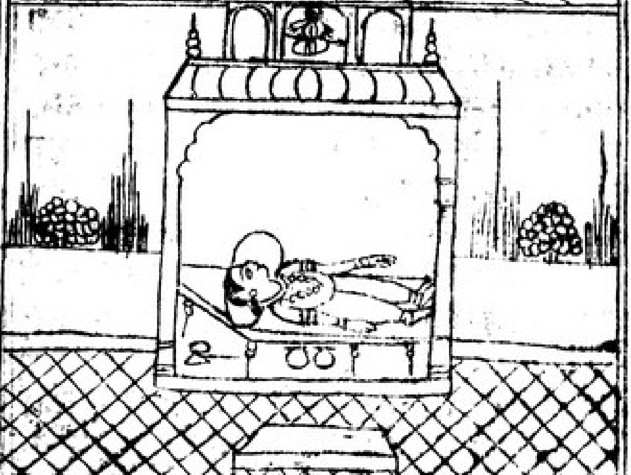

तुम भीतर खुसीसों सोय रहो पाछें तब वे दोउ जने भीतर सोवन लागे परि ऐसी भांति सों सोव ते मति कहूं स्वास वाजे ऐसे सावधानी सों सोव ते सो वे स्त्री पुर्ष श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६२ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक सूतार कोगर अडेल में रहते तिनकी वार्ता हे ॥

सो उन सूतार ऊपर श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत कृपा करते वा सूतार के ऐसो नेम हुतो जो श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन बिना एक दिन न रहतो ताते वह सुतार सब घर को काम काज छोडि के नित्य श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों आवतो तब घर के मनुष्य दुखवचन पावते ताके लिये श्री आचार्यजी महाप्रभू आप वा सूतार के घर पधारते तामों श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत वार्ता करते और श्री आचार्यजी महाप्रभून की माता इल्लंमागारुजी सो श्री आचार्यजी महाप्रभून की माता खीजती और कहें जो तुम ऐसे अनुचित क्यों करत हो ऐसे उचित नांही ऐसे कहि के इल्लंमागारुजी बहुत रिस

करती परि श्री आचार्यजी महाप्रभू चौथे पाव रे
दिन नौ पधारते ऐसी कृपा श्री आचार्यजी महाप्र
भू वा सुतार के ऊपर करते सो वह सुतार श्री आ
चार्यजी महाप्रभून को ऐसो कृपा पात्र भगवदी
य हो ताते इनकी वार्ता कहां नांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैस्नव ॥ ६३ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
नके सेवक एक छत्री हते
ताको अन्यमार्गीय
सों सनेह हुतो

सो वा छत्रीकों अन्य मार्गीयि कों स्नेह हुतो सो
एक दिन वह छत्री अन्यमार्गी के घर गयौ तब व
छत्री सो कह्यौ जो तुम आज यहांई पाक करियें
तब वाके आग्रह ते वा छत्री वैस्नव ने पाक उहां
ई कीयो तब पाक करिकें वा अन्य मार्गीय ठाकु
र के आगे श्री नाथजी को नाम लेकें भोग सम
र्प्यो पाछें समयानुसार भोग सराय वाको प्रसाद
दीयो पाछें आपने लीयो पाछें वहांई विश्राम
कीयो सो निद्रा बस भए तब वा अन्य मार्गीय के
सेव्य स्वरूपने स्वप्न में कह्यौ जो आज तो हम भूखे
रहे तब वा अन्यमार्गीय नें कह्यौ जो तुम कों तो
वा वैस्नव ने पाक भोग समर्प्यो हो और तुम भूखे
कैसें रहिगये तब उनके सेव्य श्री ठाकुरजी ने कै
हो जो वह तो श्री नाथ जी आप आरोगे हैं हम
को तो श्री नाथ जी ने अरोगते न.....

तब वह अन्य मार्गीय कौ मित्र सोयो हौ ताकौं
जगायो तब वह जाग्यो तब सब समाचार कहे तब
वा क्षत्री ने कह्यो जो मैं तो सों केताक बार कह्यो
और श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ सेवक होय
सो याही के लिये हमारे प्रभू जी श्री आचार्य जी
महाप्रभून की कृपा ते सेवक के हाथ कौ आरो
गत हैं पाछें वह अन्य मार्गीय सब कुटुम्ब सहित
श्री आचार्य जी महा प्रभून की सरण आये सब
सौंन सेवक भयो पाछें वाके स्वरूप कों श्री आ
चार्य जी महाप्रभून ने पंचामृत सों स्नान करवा
यो पाछें पाट बैठारे ता पाछें भोग समर्प्यो समया
नुसार भोग सराय कें सब वैष्णवन कों बुलाय
महाप्रसाद लिवायो पाछें वह अन्य मार्गीय
श्री ठाकुर जी की सेवा भलीभांति सों करन लाग्यो
पाछें वह क्षत्री भलो वैष्णव भगवदीय भयो
या क्षत्री वैष्णव के संग ते भलो भगवदीय भयो
ताते संग करनो तो वैष्णव कौ करनो भगवदीय
कौ करनो वह क्षत्री वैष्णव श्री आचार्य जी म
हाप्रभून कौ ऐसो कृपा पात्र भगवदीय हो ता
ते इनकी वार्ता कहा तांई लिखिये ॥ ❈

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६४ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्र
भून के सेवक लघु पुरु
षोत्तमदास क्षत्री
तिनकी वार्ता

सोवे लघु पुरुषोतम दास श्री आचार्यजी महाप्रभून को तथा श्री नाथजी को एक सारजानते श्री आचार्य जी महाप्रभून को स्वरूप साक्षात् पुरुषोतम करि जानते लघुपुरुषोतमदास को श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऊपर बड़ी आसक्ति हुती ताते श्री महाप्रभूजी लघुपुरुषोतमदास के ऊपर बहुत प्रसन्न रहते लघु पुरुषोतम दास दूसरो स्वरूप जानते नाहीं श्रीठाकुरजी को तथा श्री महाप्रभूजी कों एक जानते वे लघुपुरुषोतमदास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ ❖

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६५ ॥ ❖

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक कविराज भाट तिनकी वार्ता हैं ॥ ०

सोवे कविराज भाट ब्राह्मण हुते सो तीन भाई हुते सो तीन्यों भाई श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे उनको नाम समर्पण करवायो पाछें श्री नाथजी के सन्निधान बहुत कवित पढ़े नये २ कवित्त करिकें श्रीनाथजी के सन्निधान कवित सुनावते पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभून के कवित बहुत कीये ताते श्री आचार्यजी महाप्रभू कविराज भाट के ऊपर बहुत प्रसन्न रहते सोवे कविराज भाट श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय

है तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैस्नव ॥ ६६ ॥ ✦

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू
नके सेवक गोपालदास॰
ठेरा के वासी तिनकी
वार्ता लिख्यते ॥

सो गोपालदास के कीये छन्द बहुत हैं सो गोपालदास को श्री आचार्य जी महाराज के ऊपर बहुत आसक्ति हुती सो एक समें गोपालदास अडेल आये सो दूसरे दिन श्री आचार्य जी महाप्रभून को जन्मोत्सव हुतो सो श्री आचार्यजी महाप्रभु मार्कन्डेय पूजा कों बैठे हुते ता समय गोपालदास नें एक नयो छन्द करि के गायो ॥ सो पद

राग बिलावल

माधौ मास धरि वैसाख श्री वल्लभधीर जन्म लीयो ॥ यह सुनिकें श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भए पाछें गोपालदासनें बहुत छन्द कीये सो वे गोपालदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ ✦

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैस्नव ॥ ६७ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्र
भून के सेवक जनार्दन
दास चोपडा क्षत्री
तिनकी वार्ता

एक समें श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री नाथ जी
द्वार पधारे हुते पाछें श्री गोकुल आये तब जना
र्दन दास ने श्री महाप्रभून कौ दर्शन कीयो तब क
ह्यो जो ये साक्षात पूर्ण पुरुषोत्तम हैं ईश्वर हैं त
ब जनार्दन दास नें वीनती कीनी जो महाराज मो
कों शरण लीजिये तब श्री आचार्य जी महाप्रभू
न ने जनार्दन दास कों आज्ञा दीनी जो स्नान करि
कें आउ तब जनार्दन दास स्नान करिकें आयो
और दंडवत कीनी और वीनती कीनी जो महा
राज मोकों नाम समर्पण करवाइये तब श्री आचा
र्य जी महाप्रभून नें श्री नाथ जी के सन्निधान ज
नार्दन दास कों समर्पण करवायो पाछें श्री आ
चार्य जी महाप्रभून की कृपा ते जनार्दन दास म
हो वैष्णव भयो सो श्री आचार्य जी महाप्रभू ज
नार्दन दास के उपर बहुत कृपा करते थे जनार्दन
दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा
पात्र भगवदीय हे सो इनकी वार्ता कहां तांई
लिखिये ॥ ✣

✣ ॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६८ ॥
अब श्री आचार्य जी महा
प्रभून के सेवक गडु स्वा
मी मनोडिया ब्राह्म
ण तिन की वा
र्ता ॥

सो वे गडु स्वामी आप स्वामी कहावते सो एक स

मय श्री आचार्यजी महाप्रभू वृन्दावन में पधारे हुते तब गडु स्वामी कों आज्ञा भई श्री ठाकुरजी ने कृपा करि कें रात्रि कों स्वप्न में जनायो जो सबारे श्री आचार्यजी महाप्रभू इहां पधारेंगे सो तू उन की सरण जैयो तू सेवक हूजियो तब श्री आचार्यजी महाप्रभू आप सबारे पधारे तब गडु स्वामी स्नान करिकें जहां श्री आचार्यजी पधारे हुते तहां गये तब जायके गडु स्वामी ने दंडोत कीनी और वीनती करिकें यह कह्यो जो महाराज मोकों सरण लीजिये तब श्री आचार्यजी महाप्रभू मुसिक्याय कें कहें जो तुम तो आप स्वामी हो तुम कों सेवक कैसे करियें तब गडु स्वामी ने श्री आचार्यजी महाप्रभून सें वीनती कीनी जो महाराज मोकों भगवद् आज्ञा भई है जो तू श्री आचार्यजी महाप्रभून की सरण जैयो ताते महाराज मोकों सरण लीजिये तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें गडु स्वामी कों नाम दीयो पाछें निवेदन करवायो ता पाछें जो गडु स्वामी ने जो सेवक कीये हते तिन सबन कों श्री आचार्यजी महाप्रभून पास नाम दिवायो पाछें वे गडु स्वामी बड़े भगवदीय भये श्री आचार्यजी महाप्रभू आप गडु स्वामी के ऊपर बहुत प्रसन्न रहते सो वे गडु स्वामी ऐसे भगवदीय हैं ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैस्नव ॥ ६८ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्र

भून के सेवक कन्हैया सा
ल क्षत्री तिनकी
वार्ता है ।।

सो उन कन्हैया साल क्षत्री के ऊपर श्री आचा
र्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न रहते बड़ी कृपा कर
ते श्री आचार्यजी महाप्रभून नें आप कृपा करि
कें अपने ग्रंथ कन्हैया साल कौं पढ़ाए सोई ग्रं
थ कन्हैया साल के पास ते श्री गुसांईजी नें पढ़े
सो श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपाते सब
स्फुर्द रूप भये सो वे कन्हैया साल क्षत्री श्री आ
चार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भग
वदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ।।
।।वार्ता प्रसंग ।।१।। वैस्नव ।।७०।।

अब श्री आचार्यजी महा
प्रभून के सेवक नरहर
दास गौडिया तिन
की वार्ता है

सो एक दिन श्री आचार्य जी महाप्रभून नें नरहर
दास के घर श्री मदन मोहन जी पाट बैठारे हुते
सो श्री मदन मोहन जी की सेवा नरहर दास नेंनी
की भांति सों कीनी पाछे सरीर जब परयो तब सेवा
न होय आई तब नरहर दास नें श्री ठाकुर जी
श्री गुसांईजी के घर पधराये सो श्री गुसांईजी
श्री रघुनाथ जी कें पधराये सो श्री गोकुल चन्द्र
माजी के पास जुरे बैठत हे ग्यारे सिंघासन ऊपर

विराजते सो श्री गुसांईजी नरहर दासके ऊपर ब
हुत प्रसन्न भये थे ऐसे भगवदीय है और नरहर
दासनें आपने मन में बिचारी जो श्री ठाकुर जीके
यहाँ न सुख पावेंगे श्री गुसांईजीके घर सुख पा
वेंगे सो वे नरहरदास श्री गुसांईजीके ऐसे परम
कृपापात्र भगवदीय है सो इनकी वार्ता कहांतो
ई लिखियै ॥+

॥वार्ता प्रसंग॥१॥वैस्नव॥७१॥

अब श्री आचार्यजी महाप्र
भून के सेवक चादराय
गादास तिनकी वा
र्ता लिख्यते

सो वादरायण दास और उनकी स्त्री मोरवी में
रहते सो वादरायणदास को पहिलौ नाम वादा
हुतौ सो एक समय आछे भट द्वारका श्रीरणछोड़
जी के दर्शन कौ जात हुते सो मोरवी में रात्रि कौं व
से सो वादरायण दास नें उनकों राखे तब वाद॰
रायण दास ने उन पास नाम पायौ पाछें आछे भ
ट के पास श्री भागवत श्रवण कीयौ तब श्रीभाग
वत सम्पूरण करि कें वादरायण दास ते विदा हो
यकें आछे भट द्वारिका श्री रणछोड़ जी के दर्श
न कौं गये तब कित्नेक दिन पाछें श्री आचार्य॰
जी महाप्रभू आप द्वारिका श्री रणछोड़जी के॰
दर्शन कों पधारे हुते तब मोरवी में उतरे सो वाद
रायण दास और उनकी स्त्री दोउ जनेननें श्री आचा
र्यजी महाप्रभून के पास फेरिकें नाम पायौ पा
छें समर्पण करवायौ पाछें श्री आचार्यजी मह
प्रभू मोरवी में दिन द्वै रहे ता पाछें श्री आचार्य
जी महाप्रभू आप श्री रणछोड़ जी के दर्शन कों
पधारे तब वादरायणदास और उनकी स्त्री श्री
आचार्य जी महाप्रभून के संग गये तब दोउ॰
स्त्री पुरुष श्री आचार्य जी महाप्रभून की सेवा में
रहे सो उन दोउन नें ऐसी सेवा कीनी जो श्री॰
आचार्यजी महाप्रभू उनके ऊपर बहुत प्रसन्न
भये तब याकौ नाम वादरायणदास धर्यौ ता
पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू द्वारिका सें चले
तब वे दोनों जने श्री आचार्यजी महाप्रभून सें

५ पहले वादा हुतौ सो श्री आचार्यजी महाप्रभूननें याको नाम

साथ गये सो मोरवी लों साथ आए पाछें श्री आचा
र्यजी महाप्रभून ते आज्ञा मांगि के मोरवी में रहे पा
छें श्री आचार्य जी महाप्रभू आप श्री गोकुल पधा
रे वे वादरायण दास श्री आचार्यजी महाप्रभून के
ऐसे कृपा पात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता क
हां नाई लिखिये ॥ +

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ७२ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक सदू पांडे मानिक
चंद पांडे इनकी स्त्री
तथा नरो बेटी आ
न्योर में रहते
हुते

सो जब श्री आचार्यजी महाप्रभू पृथ्वी परिक्र
मा करत झारखंड में पधारे तब श्री नाथजी ने
श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कही जो तुम मेरी से
वा कों चलावो व्रज में श्री गोवर्द्धन पर्वत है तहां
हम तीन दमन हैं देवदमन, नागदमन, इन्द्रदमन
तिनके मध्य में हम देव दमन हैं सो देवदमन मेरो
नाम हैं सदू पांडे को बडो भाई मानकचन्द पांडे
हैं तहां हम प्रगट भये हैं तब श्री आचार्यजी महा
प्रभू परिक्रमा झारखंड में राखि के व्रज कों पाउ
धारे सो सेवक हू पांच सात साथ है दामोदरदा
स हरसानी कृष्णदास मेघन रामदासजी माधो
दास इत्यादिक श्री आचार्यजी महाप्रभून

कें सेवक सब आन्योर में आए सो सन्ध्या समय
श्री आचार्य जी महाप्रभू आप सद् पांडे के घर पां
व धारे सो एक बड़ो चोंतरा सद् पांडे के घर के द्वारे
हुतो ताके ऊपर श्री आचार्य जी महाप्रभू विराजे
तब सद् पांडे ने श्री आचार्य जी महाप्रभून सों क
ह्यौ जो स्वामी कछु खांउगे तब श्री आचार्य जी म
हाप्रभून नें कह्यौ जो हम तो कछु न खांयगे तब
कृष्णदास मेघन नें कह्यौ जो ये तो आपने सेवक
के हाथ को लेत हैं बिना सेवक तो ये काहू के हा
थ को लेत नाहीं इतने में श्री गोवर्द्धन पर्वत ते
श्रीनाथ जी पुकारे जो नरो मेरो दूध लाउ तब न
रो ने कह्यौ जो महाराज आज तो हमारें पाउनें आ
ये हैं ताते दूध नाहीं तब श्री नाथ जी नें कह्यौ जो

तैरे पाउंने आए हैं सो तो भली भई हम कहा करैं
परि मेरौ दूध तो लाउ तब नरो बोली जो बारी लाल
लाई तब नरो कटोरा भरिकें लैगई श्री नाथ जी
कौं प्यायौ तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें दामोदर
दास सौं पूछी जो दमला तें कछु सुन्यौ तब श्री आ
चार्यजी महाप्रभून सौं दामोदर दास नें कह्यौ जो
महाराज यह शब्द और भारखंड कौ शब्द एक
मिलत है सो ऐसो जान्यौ परत है जो इहांई प्रगटे
हैं सवारें चलेंगे तब इतने में नरो दूध प्याय कें आ
ई तब श्री आचार्यजी महाप्रभून ने नरो सौं पूछी
जो तू कहां गई हुती और कहा लैगयी हुती तब न
रो बोली जो राज देवदमन कौं दूध प्याय आयी
हौं तब नरो पै मांग्यौ जो यामें दूध है तब नरो नें
कह्यौ जो रंचक है तब श्री आचार्यजी महाप्रभून
नें कह्यौ जो यामें तें बच्यौ है सो हमकों दे तब नरो
बोली जो महाराज घर में बहुत दूध है तब सद्दू पां
डे नें श्री आचार्यजी महाप्रभून सौं बीनती कीनी
जो महाराज हम हारे आप जीते अब हम कों ना
म दीजिये तब श्री आचार्यजी महाप्रभून के मानि
कचन्द तथा सद्दू पांडे तथा इनकी स्त्री तथा नरो
ये सब सेवक भए उनके ऊपर आपने हाथ फेरयौ
और नाम दीयौ ता पाछें वह दूध लीयौ पाछें उ
नके हू घर कौ दूध दही अंगीकार करौ सो ऐसे भ
ले भगवदीय हे तब श्री आचार्यजी महाप्रभून
नें सद्दू पांडे सौं पूछी जो कहो पांडे यहां ऊपर दे

व दमन प्रघट भए हे सो कोन भांति सों प्रघट भये हैं तिनकौ प्रागट्य तुम हमसों कहो सो श्री आचार्यजी तो साक्षात ईश्वर हैं आप ही करत हैं और आपही पूछत हैं सो काहे ते जो आप जीव के ऊपर कृपा करिवे के लीये तब सद्दू पांडे ने श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो महाराज एक हमारे गांव को ग्वाल हुतो सो सब गांव की गायन कों चरावतो सो सब प्रकार सद्दू पांडे नें श्री आचार्यजी महाप्रभून के आगें कह्यो। सो सब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें सुन्यो सो श्री आचार्यजी महाप्रभु तो आप पूरणपुरुषोत्तम हैं आपही करत हैं सो वे सद्दू पांडे तथा मानिकचन्द पांडे और सब श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदी पहे जिनके पास ते श्री आचार्यजी महाप्रभू तथा श्री नाथजी जो चहियें सो मांगि लेते और आप जिन के घर पधारते ॥+

वार्ता प्रसंग ॥१॥

और एक दिन श्री नाथजी इन के घर दूध पीवे कों सोंने को कटोरा ले आए तब श्री नाथजी ने नरो सों कह्यो जो दूध लाउ तब नरो तो वा कटोरा में दूध डारत जाय और श्री नाथजी आप आरोगत जाय सो दूध पीकें श्री नाथजी आप तो प धारे और कटोरा वहांई भूलि आए तब सवारे भए पाछें मंगला आरती के समय भीतरियानें देखो तो मन्दिर में कटोरा नाहीं तब इतने में नरो के

टोरा लै आई और कह्यो जो यह कटोरा लेउ गत्रि
को लरिका भूलि आयो है तब सबजनें बहुत प्र
सन्न भए वह नरो ऐसो भगवदीय हो ॥ ६

वार्ता प्रसंग २

और एक समय श्री आचार्य जी महा प्रभून सों
श्री नाथजी नें कह्यो जो मोकों गाय मगाय देउ
तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें दामोदर दास
हरसानी सों कह्यो जो श्री नाथ जी नें गायनके ली
ये आज्ञा . . . दीनी है सो श्री आचार्य जी महाप्र
भून नें अपने हस्त को छल्ला सुवर्ण को दीनो और
दामोदरदास हरसानी सों कह्यो याके दामनको
गाय लै आवो तब दामोदर दास नें वह छल्ला स
दू पांडे को दीनो और कह्यो जो याकों वेचि के या
के दामन की गाय लै देउ श्री आचार्य जी महाप्र
भून नें गाय मगाई है तब सदू पांडे ने कह्यो जो
श्री आचार्यजी महाप्रभू आप गायन को कहा क
रेंगे तब दामोदरदास नें कह्यो जो श्री नाथजी नें
श्री आचार्य जी महाप्रभून सों गाय मंगाई है ताके
लिये उननें कह्यो है तब सदू पांडे नें कह्यो जो मेरे
यहां गाय हैं सो कौन की हैं वह तो श्री आचार्य
जी महा प्रभून की हैं जो चहिये सो लीजिये तब दा
मोदर दास नें कह्यो जो श्री आचार्य जी महाप्रभू
न की ऐसी ही आज्ञा है ताते याकों वेचि के गा
य लै देउ तब सदू पांडे नें वह छल्ला वेचि कें ताकी
गाय दो लै दीनी सो ढोटा गाय श्री आचार्य जी म

हाप्रभून नें श्री नाथजी कौं समर्पी पाछें दस गाय
सद पाडे नें श्री नाथजी कौ भेंट कीनी पाछें सब

वैष्णवन कौं खबर भई जो श्री नाथ जीनें गायन
के लिये श्री आचार्य जी महाप्रभून सों आज्ञा
करी है सो वैष्णवन नें गाय पठाई काहू नें दोय
काहू नें चारि काहू नें दश पठाई ऐसें करत दो
यसै के आसरे गाय भेली भई सो श्री नाथ जी
कौं गाय बहुत प्रिय हैं तव ते श्री नाथजी कौ ना
म गोपाल श्री आचार्य जी महाप्रभून ने धर्यौ है
तब श्री गुसांई जी ने गोपाल नाम ते गोपालपुर गां
व वसायौ ताही ते सूरदास जी ने श्री आचार्य जी
महाप्रभून के प्रगट गोपाल नाम कीये हैं प्रथम

गाय सुर गायै। सो वे सह पंडे तथा नरोसव को उ श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय है सो इनकी वार्ता को पार नाहीं ता तें इनकी वार्ता कहां तांई लिखियें ॥

॥ ३ ॥ वार्ता प्रसंग ॥ वैस्नव ॥ ७३ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक नरहरदास सन्यासी तिनकी वार्ता लिख्यते है

सो एक वेंना कोठारी हुतो ताने प्रथम नरहरदास सन्यासी के पास नाम पायो हुतो सो एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभू आप द्वारिका प धारे हुते तब नरहरदास सन्यासी और वेना को ठारी श्री आचार्यजी महाप्रभून के साथ हुते सो द्वारिका गये तहां श्री आचार्यजी महाप्रभू आप नरहरदास सन्यासी के ऊपर बहुत प्रसन्न भये तब नरहरदास सन्यासी नें वीनती कीनी जो महाराज मेरे ऊपर कृपा करियें तो में प्रार्थना करत हों तब श्री आचार्यजी महाप्रभू मुसिकाय कें चुप कर रहे पाछें कहें जो कहा प्रार्थना करत है त ब नरहरदास सन्यासी नें कह्यो जो महाराज वेना कोठारी को सरणा लीजिये तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कृपा करिकें नाम दीयो समर्पण करवायो। पाछें वे नरहरदास सन्यासी के ऊपर प्रसन्न बहुत भये सो वे नरहरदास सन्यासी श्री

आचार्यजी महाप्रभून के असे कृपा पात्र भग
वदीयहैं ताते इनकी वार्ता कहांतांई लिखियें
॥वार्ता प्रसंग॥१॥वैस्नव॥७४॥सं॰१४७॥
अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक गोपाल दासजटा
धारी श्री नाथजी
की खवासी
करत
हुते
सो श्री नाथजी उनसों सानुभावहुते और
गरमी के दिन में श्री नाथजी कों भोग आवतें
तब गोपालदास आप नेत्र मूंदि के पंखा कर
ते तब रात्रि कों श्री नाथजी जगमोहन में पोढ़
ते तहां गोपालदास ठाड़े होय कें आंख मूंदि
कें पंखा करते चार पहर ठाड़े रहते परि देह की
लस कछू वाधा न करती रात्रि के विषें श्रीठा
कुर जी के श्री स्वामीजी के वचन सुनतें तब
आप कहते.... जो गोपालदास आंख खो
ल देउ तेरी परवा कैसी तब गोपालदास कह
ते जो महाराज मोकों श्री आचार्यजीमहाप्रभु
न की आज्ञा नाहीं ताते में क्यों करि खोलों त
ब कबहु श्री नाथजी अपने श्री हस्त सों गोपा
लदास के मुख में मेलते असी कृपा करते त
ब असे करत कितनेक दिन वीते तब एक
दिन गोपालदास ने वीनती करिकें कही जो

महाराज मोकों पृथ्वी परिक्रमा करिवे की आज्ञा
दीजिये मेरो मनोरथ पृथ्वी परिक्रमा करिवे को
है तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो अब
पृथ करिये पाछें गोपालदास आज्ञामांगि कें
पृथ्वी परिक्रमा कों गये तब और वैस्नवनने क
ह्यो जो महाराज ऐसे कृपा पात्र को ऐसो मन क्यों
कर होय तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यो
जो यह गयो तो है परि जाय सकैगो नांही मजल
दोयचारि जायगो तब याकों विरह होयगो ता
विरह करिकें याकी देह छूटैगी तब सब वैस्नव
ननें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों वीनती कीनी
जो महाराज इन की देह या भांति क्यों पड़े तब
श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो महद अ
पराध इन श्री ठाकुर जी सों विगाड्यो ताको नाम
महद अपराध कहिये इनसों एक महद अपरा
ध पड़्यो है तासों इनकी यह गति भई तब सब
वैस्नवन नें पूछ्यो जो महाराज इनकी देह या भां
ति सों पड़ै तो सही पर महद अपराध काहे सों
कहियतु है तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें
कह्यो जो यह गोपालदास पहिलें श्री नाथजी
के बाग की रखवारी करतो सो एक श्री ठाकुर
जी को सेवक ब्राह्मण को लरिका हुतो सो ए
कों वा बाग में ते फूल चुराय कें लै जातो सो ए
क दिन गोपालदास ने वाकों पकर्यो सो वह
भाज्यो सो वह अपने मन्दिर में दुबक्यो सो गो

पालदासनें जाय कें वाकें मुक्की की मारी सोवान अब श्री ठाकुर जी कें वहवात सुध जो याकें महद अप राध पर्यो है ताते पृथ्वी परिक्रमा की इच्छा भई है सो गोपाल दास पांच्चारि मजल गयें पाछे विर ह भयो सो विरह करिकें गोपाल दास ने देह छोड़ी तब यह बात श्री आचार्य जी महाप्रभून नें सुनी त ब अपने श्री मुख ने कहे जो गोपाल दास के परलो क में तो हानि नाहीं जो यह श्री नाथ जी के चरणान पास पहुंचो ताते भगवदीय को सर्वथा विगाड़ न करनो भगवदीय को विगाड़ करे तो या भांति सो होय भगवदीय के विगाड़े ते गोपाल दास की यह गति भई ये गोपाल दास श्री आचार्य जी महाप्रभू न के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय है ताते इन की वार्ता अब कहां तांई लिखिये ॥+

॥ वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ७५ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के सेवक कृष्णदास
ब्राह्मण तिनकी
वार्ता है

सो वे कृष्ण दास वा गांम में रहते परि अकिंचन रहते सो एक समय वैष्णव दस पन्द्रह मिलिकें श्री आचार्य जी महाप्रभून कें दर्शन कों अडेल कों आत हुते सो जा गांव में कृष्ण दास रहते ता गांम में आए सो कृष्णदास के घर आए तब कृष्णदास के तो घर हुते नाहीं कछू कायार्थ के लिये कोसती

न गुसर गये हुते और कृस्नदास की स्त्री घर हुती तब वा स्त्री नें उन वैस्नवन कों साष्टांग दंडवत कीनी श्री कृस्न स्मरण कहि बहुत आदर सनमान करिकें अपने घर में बैठारे पाछें मन में बिचारे जो अब कहा करिये तब सुधि आई जो वह बनियां नित्य टोक करत है जो तू मोसों मिलि तू मांगेगी सो देउंगो सो आज वासों सीधो सामिग्री लाउं ऐसें बिचार के स्त्री चली सो वा बनियां की हाट पै गई तब वा बनियां ने टोकी तब वा बनियां सों स्त्री ने कही जो मैं तोसों कालि मिलोंगी तू मोकों आज सीधा चहियत है सो दे तब वा बनियां नें कह्यौ जो तू मोसों कौल करै तो मैं मानूं तब वा स्त्री नें वासों कौल करि दीनों तब वा स्त्री कों सीधो सामग्री चहियत हुतो सो दीनों सब लैकें घर आई तब घर आय के रसोई करि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो समयानुसार भोग सराय अनोसरि करि के पाछें वैस्नवन कों महाप्रसाद लिवायो तब वैस्नवन नें महाप्रसाद भली भांति सों लीनो पाछें कृस्नदास घर आए सब वैस्नवन सों मिले दंडौत करिकें भीतर गये तब स्त्री सों कह्यौ जो कहा खबरि है वैस्नवन कों महाप्रसाद लिवाइये तब स्त्रीनें कह्यौ जो प्रसाद तो लिवायौ है तब कृस्नदास नें कह्यौ जो सीधो सामग्री कहां ते लाई कहा प्रकार कीयो तब जो प्रकार कीयो हुतो सो सब कह्यौ और कह्यौ

जो यह वनियां मोसों नित्य टोको करतो जो तू मोसों
एक दिन मिलि तू कहैगी सो देउंगो तब आज ग्र
वासों कौल करार करिकें सीधो सामग्री लाई
हैं तब कृस्नदास वा स्त्री के ऊपर बहुत प्रसन्न
भए पाछें स्त्री पुरुष दोउ जनेन ने सीरो महाप्रसा
द लीयौ पाछें कृस्नदास वैस्नवन के पास आप
बैठे सवरी रात्रि भगवद वार्ता करत बीती जब स
वारो भयौ तब सब वैस्नव विदा होय कें चलें तब
कृस्नदास थोरी सी दूर पहुंचावन गयौ पाछें आप
घर आय स्नान करि श्री ठाकुर जी की सेवा करि
कें यावत कों गये पाछें वा स्त्री नें रसोई करि श्री
ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो भोग सराय अनोसरि
करि महाप्रसाद ढांकि धर्यो तब कृस्नदास घर
सांझ कों आए तब वही सीरो महाप्रसाद दोउ ज
नेन नें लीयो तब कृस्नदास ने अपनी स्त्री सों कही
जो तुमनें कालि वा वनियां सों कौल कीयो हुतो
सो वह वनियां पैंडो देखत होयगो तातें वाको
कौल पूरो करिये सो भलो है तब वह स्त्री उबटनों
करि न्हाय कें स्त्री जन के शृंगार होत हैं सो सब
करि कें वह स्त्री चली सो वर्षा के दिन हुते सो मेह
वरष गयो हुतो सो मार्ग में कीच भई हुती ताके
लिये कृस्नदास नें अपनी स्त्री सों कही जो तू मे
रे कांधे पे बैठि ले में पहुंचाय आउं मार्ग में की
च बहुत भई है तेरे पांय कीच में भरि जायंगे सो व
ह वनियां देखि कें तेरो अनादर करेगो तब वा स्त्री

कों अपने कांधे ऊपर चढ़ाय कें लै चले सो वा वनियें
की हाट के आगें उतार दीनी तव वा स्त्री नें वा वनि-
यां कों हेला पार कें कह्यौ जो किवाड़ खोलि तव
वा वनियां नें किवाड़ खोलि दीने और वा स्त्री कों
भीतर लीनी तव वह वनियां पांय धोयवे कों पा
नी लै आयौ और कह्यौ जो पांय धोय तव वा स्त्री
नें कह्यौ जो मेरे पांय कीच सों भरे नाहीं तव वा व
नियां नें कह्यौ जो मार्ग में तौ कीच वहुत भई है
और तेरे पांय कोरे कैसें रहे तव वा स्त्री नें कह्यौ
जो तू पूछि कें कहा करेगो तू तेरो काम करि तव वा
वनिया नें कह्यौ जो यह तौ वात कही चाहिये।
तव वा स्त्री नें कह्यौ जो मेरो भरतार मोकों कांधे
ऊपर .... चढ़ाय कें लायौ है तव यह वात सु
नि कें वा वनियां कों वड़ौ आश्चर्य भयौ और स
व वृतांत वा सों पूछ्यौ जो यह कहा कारन है सो सव
मेरे आगें कहि तव वा स्त्री ने जो प्रकार भयौ हो
सो सव कह्यौ सो सुनि कें वह वनियां अपने मन
में धिक्कार करन लाग्यौ और कह्यौ जो धन्य जन्म
तुमारो जो जिनको ऐसो मन सांच्यो है और धिक्का
र जन्म मेरो है तव दोउ हाथ जोरि कें दंडौत कीनी
और कह्यौ जो मेरो अपराध क्षमा करिये और मे
रे ऊपर कृपा राखिये मेरी तुम वहन हो ऐसें कहि
वा वनियां नें वहुत दुख मान्यौ पाछें वा वनियां नें
स्त्री कों कपड़ा पहराय कें वाके घर पहुंचाय दी
नी और कृष्णदास सों वा वनियां नें वहुत वीनती

की नीजो तुम मेरो अपराध क्षमा करौ यह मेरी बहन है और तुम मेरे पूज्य हौ तब कृस्नदास ने कही जो तेरो कहा अपराध है तू संकोच मति करै फेरि वह वनियां कितनेक दिन पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून को सेवक भयो नाम समर्पण को यो तब वा वनियां को नाम श्री आचार्यजी महाप्रभून ने ग्यानचंद धर्यो पाछें वह वनियां बडो भगवदीय भयो सो कृस्नदास के संग ते भयो ता ते संग करनो तो भगवदीय को करनो जासों भगवद भक्ति उतपन्न होय पाछें वह वनियां सदा कृस्नदास सो ममत रहतो उन को स्त्री सों बहन कहतो सो ऐसो सम्बंध राखतो सो वे कृस्नदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ ०

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १॥ वैस्नव ॥ ७६ ॥ ०

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक संतदास चोपडा क्षत्री आगरे के तिनकी वार्ता लिख्यते

सो वे संतदास पहिले बहुत संपतवान हुते व्योपार बहुत हुतो लाखन को व्योपार करते सो द्रव्य सब व्योपार ही में खोयो पाछें सेउ के बाजार में कौडी वेचन लागे टका २४ की पूंजी हुती सो

जबतांई पैसा ढाई कमावते तबतांई उहां बैठे र
हते कौड़ीन की ढेरी पैसा की करि राखते सो गा
हक पैसा धरिकें कौड़ीन की ढेरी ले जाते और
संत दास आप पोथी बांचते मार्ग में काहू सों
बोलते नाहीं भगवद रस में छिके रहते और जो
कोउ भगवद भक्ति आवतो तासों बड़े भगवद
वार्ता करिकें और सों संभाषण न करते रसोई
कों टका एक लगावते और धेला की चबैनी
आनि राखते सो रात्रि कों वैष्णव आय कें बैठ
ते भगवद वार्त्ता कीर्तन करते सो सब चबैनी म
हाप्रसाद बांटि देते सो वैष्णव लेकें उठते औ
सै ढाई पैसा में निर्वाह करते ऐसें करत कि

तनेक दिनवीते तव नारायणदास गौड़ देसकेजं सु
नी जो संत दास के द्रव्यको वहुत संकोच है ताते ना
रायणदास नें संत दास को पत्र लिख्यो और एक
मोहरन की थेली पठाइ सो हुंडी कासद लैके आ
यो तव संतदास कों पत्र दीनां तव वह पत्र संत
दास नें वाच्यो और तामें हुंडी ही सो वांची तव हुं
डी ही सोतो श्री गुसांई जी के पास पठाई और ए
कटका कासद कों दीनी और संतदास नें नारा
यणदास कों पत्र लिखो तामें लिख्यो जो तुमनें
हुंडी पठाई ही सोतो अडेल श्री गुसांईजी को पठा
यदीनी और तुम्हारी प्रभुता में हमारे एक दिन
की रसोई न भई ता दिन की कमाई कासद कोंदी
नी जव हुंडी पहुंची तव भंडारी नें श्री गुसांई जी कों
वचाई सो एक सो मोहरन की है सो नारायणदा
सनें गोड़देस ते संतदास को पठाई सो संतदास
नें इहां पठाई है तव श्री गुसांई जी नें कह्योजो सं
तदास तो श्री आचार्य जी महा प्रभून के वड़े ही
कृपापात्र भगवदीय है ताते वैस्नव को द्रव्यका
हे कों राखेंगे ॥+

वार्ता प्रसंग ॥१॥

वहुरि कितनेक दिन पाछें श्री गुसांई जी नें श्रीगो
कुल वास कीयो तव संतदास उत्सव के दिन
आगरे ते दर्शन को आवते और श्री गुसांई जी
आप आगरे पधारते तव संतदास के घर विना
वुलाए पधारते आप श्री गुसांई जी श्री आचा

र्य जी महाप्रभून के सेवक जानि ऐसी कृपा करते
तब किननेक दिन पाछें संतदास की देह थकी
तब श्री गोकुल नें चापा भाई कों बुलायो सो चापा
भाई श्री गुसांई जी की आज्ञा मानि कें आगरे आ
ए तब संतदास ने चापाभाई सों कह्यौ जो यह घर
तुम्हारो है जानो तो कोई एक दिन स्त्री कों रहन
दीजियो और जानों तो गहने धर दीजियो अथवा
बेचि कें दाम ले जाउ ऐसें कहि के घर के पत्र ख
त चापा भाई कों सौंप दीनों तब चापाभाई खतप
त्र लैकें श्री गोकुल आए तब श्री गुसांई जी सों स
ब समाचार कहे पाछें संतदास बहुत आसक्ति भ
ए तब वैस्नव सब आय जुरे तब संतदास सों कह्यौ
जो तुम कहो तो रेणुका स्थल अथवा मथुरा जहां
कहो तहां लै चलें तब संतदास नें कह्यौ जो मोकों
कहा रेणु का स्थल कृतार्थ करेंगो तब वैस्नवन
ने कह्यौ जो श्री गोकुल लै जांय तब संतदास नें
कह्यौ जो श्री गोकुल जांय कें कहा राख भड़ा
उंगो ऐसें कहि कें आगरे ही में देह छोड़ी पाछें
वैस्नवों नें कृत्य उठांई कीयो पाछें यह बात वै
स्नवन ने श्री गुसांई जी के आगें कही तब श्री
गुसांई जी आपने श्री मुख ते कहे जो वे संतदास
ऐसे भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तां
ई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥ वैस्नव ॥ ७७ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू

न के सेवक सुन्दर दास श्री ज
गन्नाथ रायजी के दस को
स परे एक गांव में रह
ते तिनकी वार्ता

सो सुन्दर दास उहां रहते तहां कृस्नचैतन्य को सेवक माधोदास सो उहां रहतो सो सुन्दर दास के और माधोदास कें परस्पर स्नेह बहुत हुतो सो सुन्दर दास जब श्री आचार्यजी महा प्रभून की सराहना करतो तब माधो दास कहतो जो मेरे जो कछू हे सो सब कृस्न चैतन्य को है सो जहां एक समय श्री आचार्य जी महा प्रभू पाउ धारे हुते त च सुन्दर दास नें आपने घर पधराये तब श्री आ चार्यजी महा प्रभून ने उहां रसोई करि कें श्री ठा कुर जी कों भोग समर्प्यो पाछें भोग सरायो तब माधोदास नें थार आवत देख्यो ता पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू आप तो भोजन करि कें पोढे तब माधोदास ने सुन्दर दास ते कही जो तेरे गुरू के हाथ ने श्री ठाकुर जी आरोगे नाहीं और मैं श्री ठाकुर जी कों आरोगावत हों सो तो एक हू ग्रास रहत नाहीं तब सुंदर दास ने श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कही तब श्री आचार्यजी महा प्रभून ने माधोदास को बुलाय कें पूछी तब माधोदा सने जो कृतान्त हुतो सो सब कह्यो जो कालि हम तेरे घर आवेंगे सो देखेंगे मेरें आगें श्री ठाकुर जी आरोगेंगे तब जानूंगो तब दूसरे दिन श्री आ

चार्यजी महाप्रभू माधौदास के घर पधारे और
कह्यो जो अब थार श्री ठाकुर जी के आगें आ
न राखि तब माधौदास थार लेगयो श्री ठाकुर
जी के आगें भोग धस्यो फिर बाहिर आयो तव
श्री आचार्यजी महाप्रभू मन्दिर के द्वार ऊपर
बैठे रहे सो उहां एक प्रेत नित्य आय कें श्री

ठाकुर जी के आगेते खाय जातो सो वह प्रेत
वाहू दिन आयो तब देखे तो श्री आचार्य जी
महाप्रभू विराजे हैं तब वह प्रेत खिस्यानो औ
र कह्यो जो राज अबहूं भूखो रहूंगो तब श्री आ
चार्यजी महाप्रभून ने कह्यो जो तैनें अब तांई
खायो सो तो खायो परि अब न खान पावेगो

ताते अब इहां सों जा तब वह प्रेत फिर गयो तब
माधोदास भोग सराचन गयो तब देखें तो थार
ज्यों का त्यों भस्यौ है तब माधोदासने कह्यो जो
तुम्हारे आगे मेरे श्रीठाकुर जी आरोगे नाहीं असे
सामान्य वचन बहुत बोले परि श्री आचार्यजी
महाप्रभू आप चुपकर रहे कछू बोले नाहीं
तब माधोदास रात्रि कों सोयो तब श्रीठाकुर
जी के अनुचर आए सो बहुत मास्यो और खाट
ते औंधो परक मास्यो तब माधोदास ने उन सों
कह्यो जो तुम मोकों काहे कों मारत हो जब ज
गन्नाथ राय जीनें कह्यो जो तू श्री आचार्य जी
महाप्रभून सों असो सामान्य वचन क्यों बोल्यो
में तेरे इहां कब आरोगत हों जो तू भोग धरतो
सो तो प्रेत खाय जातो हो आज श्री आचार्यजी
महाप्रभू भी द्वार ऊपर बैठे हुते ताते न खाय सक्यो
तू उनसों कों बुरो बोल्यो वे तो मेरो स्वरूप हैं तब
माधोदास ने उनसों कह्यो जो में सवारें श्री आ
चार्यजी महाप्रभून सों अपराध क्षमा कराय दे
उंगो मेंनें असें न जान्यो तब माधोदास प्रातः के
ल उठि कें श्री आचार्यजी महाप्रभून के पास आ
यो और साष्टांग दंडवत कीनी और बीनती करि
कें कह्यो जो महाराज मेरो अपराध क्षमा करि
ये सो श्री आचार्यजी महाप्रभू आप तो परमद
याल हैं सब प्रसन्न होय कें कहें जो तेरो कहा अप
राध है हम तेरे उपर बहुत प्रसन्न हैं तब माधो दास

नें वीनती कीनी जो महाराज मेरे घर पाव धारी॰
तब श्री आचार्यजी महाप्रभू माधौदास के घर
पाव धारे और प्रसन्न होय के माधौदास कोंना
म सुनायो ता पाछें माधौदास कों निवेदन करवायो
पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभून नें माधौदास॰
के ठाकुर कों पंचामृत से स्नान करवायो ता पा
छें श्री ठाकुर जी कों सिंगार करिकें सिंहासन पर
बेठारे पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पाक॰
करिकें भोग समर्प्यो तब समयानुसार भोग सरा
य अनोंसरि करिकें पाछें श्री आचार्यजी महाप्र
भू नें माधौदास सों कह्यो जो तू वैस्नवन कों बु॰
लाय लावो तब माधौदासनें कह्यो जो महाराज
पांच सात वैस्नव बुलाय लाउं तब श्री आचार्यजी
महाप्रभून नें कह्यो जो पांच सात की कहा हे जि
तने तेरे मन में आवे तितने वैस्नव बुलाय लाउ
तब माधौदासनें श्री महाप्रभू जी सों कह्यो जो महा
राज प्रसाद तो थोरो हे और वैस्नव बहुत आमें
गे तो कैसें होयगी तब श्री आचार्यजी महाप्रभून
नें कह्यो माधौदास सों जो अरे तेरी अकल मारी
गई हे प्रसाद कबहू न घटे तेरे या गांव में जितने
वैस्नव होय तिन सब कों बुलाय लाउ पाछें जि
तने वैस्नव हे तिन सबन कों बुलाय लायो तब॰
सबन कों महाप्रसाद लिवायो तोहू वह थार॰
भर्यो रह्यो तब माधौदास सों श्री आचार्यजी महा
प्रभून नें कह्यो जो वैस्नव कें विषें विस्वास चहिये

जो भगवद प्रसाद सदां अटूट रहे या भांति सों माधों
दास कों श्री महाप्रभू जीने अंगीकार कर्यो सो सु
न्दर दास के संगते भयो ताते संग करनो तो भगव
दीय को करनो सो वे सुन्दरदास श्री आचार्य जी
महाप्रभून के असे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते
इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥+

॥वार्ता प्रसंग॥१॥ वैस्नव॥७८॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू
न के सेवक माधजी पटेल
तथा इनकी स्त्री विरजो
तिन की वार्ता हे

सो वे माधजी पटेल तथा इनकी स्त्री विरजो ग
रस दिन में दोय वेर श्री गोकुल आवते श्री नाथ
जी के दर्शन कों तथा श्री गुसांई जी के दर्शन कों
आवते सो श्री गुसांई जी इनके उपर वहुत प्रस
न्न रहते वहुत कृपा करते पाछें उनकों कृस्न भट्ट
को संग भयो तब विरजो ने कृस्न भट्ट सों कह्यो जो
तुम हमारे माथे सेवा पधरावो तो भलो हे तब कृस्न भट्ट ने महाराज
गुसांई जी सों वीनती करि कें कह्यो और उन कें
माथे सेवा पधराई सो श्री गुसांई जीने श्री ठाकु
र जी कों पाट वेठार्यो सो स्नेह पूर्वक सेवा करते
सामग्री भलीभांति सों करते श्री महाप्रभू जी के
सेवक दस कोस पर रहते तिन कों प्रसाद लिवा
वते असें भली भांति सों सेवा करी कृस्न भट्ट आ
दि देकें करी ॥+

॥ वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

और एक समय वैस्नव सब प्रसाद लैंन कों उत्सव के दिन वैठे हते तव विरजो नें वैस्नवन कों अनसखडी महा प्रसाद परोसो तव विरजो नें कृस्न भट्ट सों वीनती कीनी जो मोकों ऐसो मनोरथ है जो सब वैस्नव मंडली वैठी होय और में सखडी महाप्रसाद सबन कों लिवाऊं तव कृस्न भट्ट नें कह्यो जो यह मनोरथ है सो तो भक्ति भाव सों होय परि यह द्रव्य साध्य है तव विरजो ने पूछो जो द्रव्य साध्य सो कहा ताको अर्थ मोकों समझाय कें कहो तव कृस्न भट्ट नें कह्यो जो यह वैस्नव मंडली लैकें श्री गोकुल श्री गुसांई जी के पास जैये पाछें श्री गुसांई जी आज्ञा देंय सो करियें जो श्री गुसांई जी आज्ञा देंय तो सखडी महा प्रसाद लीयो जाय तातें यह द्रव्य साध्य है जो मार्ग में सब खरच करियें और वैस्नवन की आज्ञा लेनी तव विरजो नें माधजी पटेल ते कह्यो जो मोकों यह मनोरथ है सो मनोरथ कियो चाहिये तव माधजी पटेल नें कह्यो जो मेरे पास दो लाख मुद्रा हैं इनसों काम होय तो भलेंई करियें तव कृस्न भट्ट नें कह्यो जो इनसों काम अवश्य होयगो आपन श्री गुसांई जी पास चलें तव श्री गुसांई जी आज्ञा देय सो करिये सो माधजी की गांठि में द्रव्य वहुत हतो सो सव लैकें उज्जेन आये पाछें कृस्न भट्ट नें वैस्नव सब इकठौरे करि कें श्री गोकुल श्री गुसांई जी के दर्श

न कौं आये पाछें श्री गोकुल आय कें श्री गुसांईजी
के दर्शन कीये पाछें कृस्न भट्टनें श्री गुसांईजी सें
वीनती कीनी जो महाराज विरजो कौ ऐसो म
नोरथ है जो सखडी महाप्रसाद मेरे हाथ सों
सब वैस्नवन की मंडली बैठी होय तिनकों ये
परोसें तब श्री गुसांईजी नें कही जो यह मनोर
थ तो पुरुषोत्तम क्षेत्र विना न होय तब सब वै
स्नवन की मंडली लेकें विरजो चली श्री जगन्ना
थ राय जी कूं सो कितनेक दिन में जाय पहुंची
तब श्री जगन्नाथ जी के दर्शन कीये पाछें जो
मनोरथ हुतो सो सब नाना प्रकार की सामिग्री
करवाय कें श्री जगन्नाथ राय जी कों भोग सम
र्प्यौ पाछें वह प्रसाद सखडी अनसखडी सब वै

स्नवन कों विरजो नें अपने हाथसों परोसि कें लि
वायौ विरजो नें अपनो सव मनोरथ पूरन कीयो
पाछें विरजो उहां कछूक दिन रहि कें सव वैस्नवन
सहित श्री गोकुल आई तव श्री गुसांई जी को द
र्शन कीयो दंडवत कीनी तापाछें जो वातकरी सो
सव श्री गुसांई जी के आगें कही पाछें और जो द्रव्य
क्ष्यो सो सव गुसांई जी की भेट कीनों तव श्री गुसां
ई जी विरजो को भाव देखि कें वाके उपर वहुत प्रस
न्न भये पाछें सव वैस्नवन कों महाप्रसाद लिवा
यो तव श्री गुसांई जीनें आप प्रसाद लीयो ताप
छें विरजो तथा सव वैस्नव श्री गुसांई जी के सा
थ श्री नाथजी द्वार आए तव श्री नाथ जी के द
र्शन कीये सव विरजो तथा श्री गुसांईजी सव वैस्नवन
सहित श्री नाथजीते विदाहोय के अपने देस
कों गये वह विरजो ऐसी भगवदीय ही ॥

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

और विरजो वरस दिन में दोय वेर श्री गोकुल
आवती तव एक गाड़ा तो गुड़ को भर लावती
और एक गाड़ा घृत को भर लावती सो एक मही
ना लों रहती ता में पन्द्रह दिन तो श्री गोकुल रह
ती और पंद्रह दिन श्री नाथजी द्वार रहती तो या
भांति सों विरजो रहती तव सामग्री करि कें भो
ग समर्पि भोग सराय कें सव ढांकि धरे जव गायन
के ग्वाल आवते तव महाप्रसाद दूध अंगीकार
करते और खिरक में लिवावती और आवती

न कों आये पाछें श्री गोकुल आय कें श्री गुसांईजी
के दर्शन कीये पाछें रूपमटनें श्री गुसांईजी सें
बीनती कीनी जो महाराज चिरजो कों ऐसो म
नोरथ है जो सखडी महाप्रसाद मेरे हाथ सों
सब वैस्नवन की मंडली बेठी होय तिनकों में
परोसों तब श्री गुसांईजीनें कही जो यह मनोर
थ तो पुरुषोत्तम क्षेत्र विना न होय तब सब वै
स्नवन की मंडली लेकें चिरजो चली श्रीजगन्ना
थ राय जी कूं सो कितनेक दिन में जाय पहुंची
तब श्रीजगन्नाथजी के दर्शन कीये पाछें जो
मनोरथ हुतो सो सब नाना प्रकार की सामिग्री
करवाय कें श्री जगन्नाथ रायजी कों भोग सम
र्प्यो पाछें वह प्रसाद सखडी अनसखडी सब वै

स्नवन कों विरजो नें अपने हाथसों परोसि कें लि
वायौ विरजो नें अपनो सब मनोरथ पूरन कीयौ ।
पाछें विरजो उहां कछूक दिन रहि कें सब वैस्नवन
सहित श्री गोकुल आई तब श्री गुसांईजी कौ द
र्शन कीयौ दंडवत कीनी ता पाछें जो बात करी सो
सब श्री गुसांईजी के आगें कही पाछें और जो द्रव्य
बच्यौ सो सब गुसांईजी की भेंट कीनों तब श्री गुसां
ईजी विरजो कौ भाव देखि कें वाके उपर बहुत प्रस
न्न भये पाछें सब वैस्नवन कों महाप्रसाद लिवा
यौ तब श्री गुसांईजीनें आप प्रसाद लीयौ ता पा
छें विरजो तथा सब वैस्नव श्री गुसांईजी के सा
थ श्री नाथजी द्वार आए तब श्री नाथ जी के द
र्शन कीये तब विरजो तथा श्री गुसांईजी सब वैस्नवन
सहित श्री नाथजी ते विदा होय के अपने देस
कों गये वह विरजो ऐसी भगवदीय ही ॥

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

और विरजो बरस दिन में दोय बेर श्री गोकुल
आवती तब एक गाड़ा तौ गुड़ कौ भर लावती ।
और एक गाड़ा घृत कौ भर लावती सो एक मही
ना लों रहती ता में पन्द्रह दिन तौ श्री गोकुल रह
ती और पंद्रह दिन श्री नाथजी द्वार रहती या
भांति सों विरजो रहती तब सामग्री करि कें भो
ग समर्पि भोग सराय कें सब ढांकि धरे जब गायन
के ग्वाल आवते तब महाप्रसाद दूध अंगीकार
करते और खिरक में लिवावती और आवती

जब देरु पधरावती करती सो वह बिरजो ऐसो
भगवदीय ही सो नयनतल के संगते ताते संग
करनों तो भगवदीय को करनों सो इनकी वार्ता
को पार नाहीं ताते अब कहा तांई लिखिये ॥
॥ वार्ता प्रसंग ॥ ३ ॥ वैस्नव ॥ ७८ ॥ सम्पूर्ण ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के
सेवक गोपालदास रेढ़ा
में रहते तिनकी
वार्ता है

सो श्री आचार्य जी महाप्रभूननें उनकों आ
ज्ञा दीनी हती जो तुम सबन कों नाम दीजियें ताते
वे गोपालदास नाम देते सो एक समय श्री आ
चार्य जी रेढा में पधारे हुते तब गोपालदास तो घर
न हुते गोपालदास के बेटा घर हुते गोपालदास
कछू यावृति कों गए हुते तब श्री आचार्य जी महा
प्रभून नें गोपालदास के बेटान सों पूछी जो गोपा
लदास कहां गए हैं तब गोपाल दास के बेटाननें
कही जो कछू श्री ठाकुर जी के काम गयो है तब
यह सुनि कें श्री आचार्य जी महाप्रभून को मन
अप्रसन्न भयो जो गोपालदास के बेटा ऐसे कैसे
से बोलत हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें
कही जो ये कैसे वैस्नव हैं तब श्री आचार्य जी
महाप्रभून नें कही जो यहां रहनों उचित नाहीं है
तब फिर आपने मन में बिचारे जो गोपालदास
कों तो आवन दीजिये वह कैसें बोलत है तब प

हैं संध्या समै गोपालदास आए तब गोपालदास
ने संध्यासमय श्री आचार्य जी महाप्रभून को द
र्शन कर्यो तब गोपालदास सों श्री आचार्य जी
महाप्रभून ने पूछे जो गोपालदास तुम कहा ग
ये हते तब गोपालदास नें कही जो महाराज पेट
लागो है ताते वा वृत्ति कों गयो हुतो तब यह
सुनि कें गोपालदास के ऊपर बहुत प्रसन्न भये और
आप श्री मुख सों कहें जो यह वैष्णव को लक्ष
ण है जो वा वृत्ति में श्री ठाकुर जी को नाम न लेय

वार्ताप्रसंग ॥ ११ ॥

और एक समय गोपालदास श्री नाथ जी के
दर्शन कों आये सो साथ एक सेवक हुतो तहां
ज्वर चढि आयो सो लंघन द्वै चारि कीये तब रात्र

कों गोपाल दास कों प्यास लागी सो वा सेवकके पास जल मांग्यो सो सेवक तो सोयो हुतो सेवक नें तो सुनी नहुती तब श्री ठाकुर जी जल पान के झारी लेंकें आये सो गोपाल दास कों जल पिवा यो और वह झारी उहां ही धरि आये श्री नाथजी को हृदय अति कोमल है ताते भक्ति की आर्ति सहि न सकें ॥

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

और एक समय गोपाल दास नें चोपरा विरह करिकें गाये सो चोपरा वेकी + सिखंडी श्याम घन सखी कंठ मनि हर हार + धन्य दिन जेनोंदे खसूं नयनन नन्द कुमार ॥ १ ॥ ऐसे चोपरा बहु त कीये ॥ २ ॥

वार्ता प्रसंग ॥ ३ ॥

और एक समे श्री गुसांई जी आप रोड़ा में पधारे तब बाहिर डेरा कीये हुते पाछें जब गोपालदास उ स्थापन के समय श्री गुसांई जी के दर्शन कों आए तब है वैस्नवन नें कह्यो जो हम कों श्री गुसांई जी के पास नाम दिवावो तब गोपाल दास नें कह्यो जो हम नाम देत हैं सो नाम श्री गुसांई जी देत हैं ताते तुम कों घर चलि कें नाम देयंगे परि उन वैस्नव न को मन श्री गुसांई जी पास नाम पायवे कों सो तीन वेर उन वैस्नवन नें कह्यो सो तीनों वार गोपा ल दास नें वेसें हीं कह्यो जो तुम कों घर चलिकें ना म देयंगें सो यह वात श्री गुसांई जी नें अपने कान

न सों सुनी पाछें उन वैस्नवन सों श्री गुसांईजीनें कही जो तुम कहा कहत हो तब उन वैस्नवनने कह्यौ जो महाराज हम कौ नाम दीजिये तब श्रीगुसांईजीने उन कौ नाम सुनायौ उनकों कृतार्थ करे पाछें गोपालदास सों श्री गुसांईजी यों कहें जो गोपालदास तुम्हारो अंगीकार श्री आचार्यजी महाप्रभून ने कीयौ है सो तो दृढ भयो है परि जिनने तुम्हारे पास नाम पायो है सो तो हमारे कबहूं न होंयगे सो श्री गुसांईजीने क्षोभ करिकें गोपालदास सों कह्यौ पाछें गोपालदास नें जितनेन कौं नाम दीयो हुतो तिन सबनकें फिर सबन कों सांईजी के पास नाम दिवायो तब वे सब कृतार्थ भये तिन सों श्री गुसांईजी गंगाबा कहते उन गोपालदास कों सामित्व आयो तातें इन जीवन कों अकाज भयो तातें वे गोपालदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हे सो इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ ॐ

वार्ता प्रसंग ॥ ४ ॥ वैस्नव ॥ ८० ॥ संबन्ध ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के सेवक सूरदासजी
गऊघाट ऊपर रह
ते तिनकी वा
र्ता लिखय
ते हैं ॥

सो एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभू अडै
लते व्रज कौं पाव धारे सो कितनेक दिन में ग
ऊघाट आए श्री गऊघाट आगरे और मथुरा
के बीचा बीच है तहां श्री आचार्यजी महाप्रभू
पाव धारे सो गऊघाट ऊपर श्री आचार्यजी म
हाप्रभू उतरे तहां श्री आचार्यजी महाप्रभू आ
प स्नान करि कें संध्यावंदन करि कें पाक क
रन कौं बैठें और श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवकन कौ समाज बहुत हुतौ और सेवक
हू आपने आपने श्री ठाकुरजी की रसोई करन
लागे सो गऊघाट ऊपर सूरदासजी कौ स्थल
हुतौ सो सूरदासजी स्वामी हे आप सेवक क
रते सूरदासजी भगवदीय हैं गान बहुत आछौ
करते तातें बहुत लोग सूरदासजी के सेवक
भये हुते सो श्री आचार्यजी महाप्रभू गऊघा
ट ऊपर उतरे सो सूरदासजी के सेवक देखि कें
सूरदासजी सों जाय कही जो आज श्री आचा
र्यजी महाप्रभू आप पधारे हैं जिननें दक्षिण
में दिग्विजय कीयौ है सब पंडितन कों जीते हैं भ
क्ति मार्ग स्थापन कीयौ है सो श्री वल्लभाचार्य
यहां पधारे हैं तब सूरदासजी नें आपने सेवक
सों कह्यौ जो तू जाय के दूर बैठि जब आप भोजन क
रि कें बिराजैं तब खबरि करियो हम श्री आचार्य
जी महाप्रभून के दर्शन कौं जांयगें सो यह तनक

दूर जाय बैठौ तब श्री आचार्यजी महाप्रभु आप
पाक करत हुते सो पाक सिद्ध भयो तब श्री आ
चार्यजी महाप्रभुन नें ठाकुरजी कों भोग सम
र्प्यो पाछें समयानुसार भोग सराय अनोसर
करिकें महाप्रसाद लैकें श्री आचार्यजी महाप्र
भु गादी उपर बिराजे तहां सब सेवक हू पहुंचि
कें श्री आचार्यजी महाप्रभुन के आस पास आ
य बैठे तब वह भगवद्दास को सेवक आयो सो सू
रदास सों कही जो श्री आचार्यजी महाप्रभु पधारे
हैं तब सूरदास अपने स्थल ते आय कें श्री
आचार्य जी महाप्रभुन के दर्शन कों आये तब
श्री आचार्यजी महाप्रभुन नें कह्यौ जो सूर आवो
बैठो तब सूरदासजी श्री आचार्यजी महाप्रभुन

कौ दर्शन करिकें आगें आय बैठे तब श्री आ-
चार्यजी महाप्रभून में कही जो सूर कछू भगवद
जस वर्णन करौ तब सूरदास नें कही जो आज्ञा
सो सूरदास नें श्री आचार्यजी महाप्रभून के आ
गे एक पद गायो ॥ (सोपद)

राग धनासरी ॥

हों हरि सब पतितन को नायक ॥ को करि सकै
बराबर मेरी इते मान कौ लायक ॥ १ ॥ जो तुम
अजामेलि सौ कीनी जो पाती लिखि पाउं ॥
होय निस्वास भलो जिय अपने और पतित बु
लाउं ॥ २ ॥ सिमिटे जहां तहां ते सब कोउ आय
जुरे इक ठौर ॥ अब कें इतने आनि मिलाउं बे
र दूसरी और ॥ ३ ॥ होड़ा होड़ी मन हुलास करि
करे पाप भरि पेट ॥ सब हिन लै पायन तरि परि
हों यही हमारी भेट ॥ ४ ॥ ऐसी कितनी कबना
उं प्रान पति सुमरन है भयो आडो ॥ अब की बे
र निवार लेउ प्रभू सूर पतित कों टाडो ॥ ५ ॥

और पद गायो राग धनाश्री

प्रभू में सब पतितन को टीको ॥ और पतित सब
दौस चारि के मैतो जन्म तही को ॥ १ ॥ बधिक अ
जामिलि गनिका त्यारी और पूतना ही कौ ॥ मोहि
छांडि तुम और उधारे मिटे सूल कैसे जी को ॥ २ ॥
कोउन समरथ सेव करन कों खेचि कहत हौं ली
को ॥ मरियत लाज सूर पतितन में कहत सबन
में नीको ॥ ३ ॥ ऐसो पद श्री आचार्य जी महाप्र

भून के आगे सूरदास जी ने गायो सो सुनि कें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो सूर ह्वै कें ऐसो घिघियात काहे कों हे यत्कु भगवल्लीला वर्णन करि तब सूरदास नें कह्यो जो महाराज होतो समझत नाहीं तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यो जो जा स्नान करि आउ हम तो कों समझावेंगे तब सूरदास जी स्नान करि आये तब श्री महाप्रभूजी नें प्रथम सूरदास को नाम सुनायो पाछें समर्पण करवायो और फिर दशमस्कंध की अनुक्रमणिका कही सो। ताते सब दोष दूर भये ताते सूरदासजी कों नवधा भक्ति सिद्धि भयी तब सूरदासजी ने भगवद लीला वर्णन करी अनुक्रमणिका ते सम्पूर्ण लीला फुरी सो कों जानियें सो दसमस्कंध की सुबोधिनी में मंगलाचरण को प्रथम कारक कीये हें सो यह श्लोक सूरदासजीनें कह्यो

सो श्लोक

नमामि हृदये शेषे लीला क्षीराब्धि शायिनं लक्ष्मी सहस्र लीलाभिः सेव्य मानं कलानिधि और ताही समय श्री महाप्रभून के सन्निधान पद कीये सो पद ॥

॥ राग बिलावल

चकई री चलि चरण सरोवर जहां न प्रेम वियोग ॥ यह पद सम्पूरण करि कें सूरदासजीनें गायो सो यह पद दसमस्कंध के मंगलाचरण को ५

कारिका के अनुसार कीयो सो याते कहयो है ॥ जो तहां श्री सहस्त्र सहित नित क्रीडत शोभित सूरदास या भांति पद कीये ताते जानी जो सूरदास कों सम्पूर्ण सुबोधिनी स्फूरी सो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें जान्यो जो लीला को अभ्यास भयो पाछें सूरदास जी नें नंद महोत्सव कीयो सो श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगे गायो ॥

राग देव गन्धार

ब्रज भयो महर के पूत जब यह बात सुनी ॥ सो यह श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगें गायो सो सुनिकें श्री आचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये और अपने श्री मुखतें कहे जो सूरदास मानों निकट ही हुते पाछें सूरदास जी नें अपने सेवक कीये हुते तिन सबन कों नाम दिवायो पाछें सूरदास जी नें बहुत पद कीये पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें सूरदास जी कों पुरुषोत्तम सहस्त्र नाम सुनायो तब सूरदास जी कों सम्पूर्ण भागवत स्फुर्तना भई पाछें जो पद कीये सो श्री भागवत प्रथम स्कंध ते द्वादस स्कंध तांई कीये ताते वे सूरदास जी श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हैं पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू गऊघाट ऊपर दिन दोय तीन बिराजे पाछें फेरि ब्रज कों पाव धारे तब सूरदास जी हू श्री आचार्य जी महाप्रभून के साथ ब्रज कों आये ॥ +

॥ वार्ताप्रसंग ॥ १

अब जो श्री आचार्यजी महाप्रभू व्रज कों पधारे सो प्रथम श्री गोकुल पधारे तब श्री आचार्यजी महाप्रभून के साथ सूरदासजी हू आए तब श्री आचार्य महाप्रभुन नें अपने श्री मुख सों कह्यो जो सूरदास श्री गोकुल कौ दर्शन करो सो सूरदास नें श्री गोकुल कों दंडवत करी सो दंडवत करत मात्र श्री गोकुल की बाललीला सूरदासजी के हृदे में फुरी और सूरदासजी के हृदय में प्रथम श्री महाप्रभून नें सकल लीला श्री भागवत की स्थापी हैं तातें दर्शन करत मात्र सूरदासजी कों श्री गोकुल की बाललीला स्फुरनी भई तब सूरदासजीनें बिचार्यौ मन में जो श्री गोकुल की बाललीला कौ वर्णन करिकें श्री आचार्यजी महाप्रभून के आगें सुनाइये जन्मलीला को पद तो प्रथम सुनायो है अब श्री गोकुल की बाललीला कौ पद गायो ॥ सो पद

॥ राग बिलावल

सोभित कर नवनीत लियें ॥ घुटुरुवन चलत रेणु तन मंडित मुख लेप किये ॥ १ ॥ चारु कपोल लोल लोचन छबि गोरोचन कौ तिलक दियें ॥ लट लटकन मानों मत्त मधुप गन माधुरी मधुर पियें ॥ २ ॥ कठुला कंठ वज्र केहरि नख राजत हैं सखी रुचिर हिये ॥ धन्य सूर एको पल यह सुख कहा भयो सत कल्प जिये ॥ ३ ॥

यह पद सूरदास नें गायौ सो सुनि कें आप बहुत प्रसन्न भए पाछें और हू पद गाए तब श्री महाप्रभूजी आपने मन में विचारे जो श्री नाथजी के यहां और तौ सब सेवा कौ मंडान भयौ ॥ और कीर्तन कौ मंडान नांही कीयौ है तातें अब सूरदास जी कौं दीजिये तब आप श्री जी द्वार पधारे सो सूरदास जी कौं साथ लीए हीं सो श्री नाथजी द्वार जाय पहुंचे तब आप स्नान करिकें मन्दिर में पधारे तब सूरदास जी सों कह्यौ जो सूरदास ऊपर आउ स्नान करि कें श्री नाथजी कौ दर्शन करि तब सूरदास पर्वत ऊपर जाय कें श्री नाथ जी कौ दर्शन कीयौ तब आपने कह्यौ जो सूरदास कछु श्री नाथ कौं सुनावौ तब सूरदास ने प्रथम विनयप्र कौ पद गायौ ॥ सो पद

राग धनासरी

अब हौं नाच्यौ बहुत गुपाल ॥ यह पद सम्पूरण करि कें श्री नाथ जी के आगें गायौ तब श्री महाप्रभूजी नें कह्यौ जो अब तौ सूरदास तुम में कछु अविद्या रही नाहीं तुम्हारी अविद्या तो श्री प्रभून नें दूर कीनी तातें कछु भगवद जस वर्णन करौ तब सूरदास ने महात्म और लीला कैसौ जस करि कें भाव सुनायौ ॥ सो पद

राग गोरी ॥ +

कौन सुकृत इन ब्रज वासिन कौ यह पद संपूरण करिकें गायौ सो सुनि कें श्री महाप्रभूजी बहुत प्र

न भये सो जैसो श्री आचार्यजी महाप्रभून नें मार्ग प्रकास कीयो है ताके अनुसार सूरदासजीनें पद कीये श्री आचार्यजीमहाप्रभून के मार्ग को कहे स्वरूपहे महात्म ग्यान पूर्वक सुदृढ स्नेह की यो परम काष्टाहे और स्नेह आगे भगवानको महात्म रहत नाहीं ताते भगवान बेरबेर महात्म्यजनावतहें नाम प्रकरन में पूतना करि संकट तृनावर्त करि गर्गाचार्य करि यमलार्जुन करि बैकुंठ दर्शन करि असें करिकें भगवान नें बहुत महात्मजतायो परि इन व्रजभक्तन को स्नेह परम काष्टापन्न हे ताते ताही समें तो महात्म्य रहे पाछें बिसरत हो जाय ॥ ✦

वार्ता प्रसंग ॥२॥

और सूरदासजीनें सहस्रा विधि पद कीये हैं ताकों सागर कहिये सो सब जगत में प्रसिद्ध भए सो सूरदासजी के पद देशाधिपत ने सुने सो सुनिके यह विच्यारी जो सूरदासजी काहू विधिसों मिलें तो भलो सो भगवद इच्छाते सूरदासजी मिले सो सूरदासजी सों कह्यो देशाधिपति नें जो सूरदासजी मे सुन्यों हे जो तुमनें विसन पद बहुत कीये हें जो मोकों परमेश्वर नें राज्य दीयो है सो सब गुनीजन मेरो जस गावत हैं ताते तुमहूं कछु गावो तब सूरदासजीने देशाधिपति के आगें कीर्त्तन गायो ॥ सो पद

राग बिलावल

मना रे तू करि माधौ सों प्रीति ॥ ✣ ॥ यह पद देशा-धिपति के आगे सम्पूरण करि कें सूरदासजी नें गायो सो यह पद कैसो है जो या पद कों अहर्निस ध्यान रहे तो भगवद अनुग्रह की सदां सांति रहे और संसार ते सदां वैराग्य रहे और कुसंग को सदां भय रहे और भगवदीय के संग की सदा चाह रहे और श्रीठाकुरजी के चरणार्विंद ऊपर सदा स्नेह रहे देहाधिक ऊपर आसक्ति न होय ऐसो पद देशाधिपति कों सुनायो सो सुनि के देशाधिपति बहुत प्रसन्न भयो और कह्यो जो सूरदास जी मोकों परमेश्वर ने राज दीनो है सो सब गुनीजन मेरो जस गावत हैं ताते मेरो जस कछु गावो तब सूरदासजीनें यह पद गायो ॥ ✣ सो पद ✣

राग केदारा

नाहिंन रह्यो मन में ठौर ॥ ✣ ॥ यह पद सम्पूर्ण करिकें सूरदासजी नें गायो सो सुनि कें देशाधिपति अकबर बादशाह अपने मन में विचारी जो ये मेरो जस काहे कों गावेंगे जो इनकों मेरी कछू वा त को लालच होय तो गावें ये तो परमेश्वर के जन हैं और सूरदासजी ने या पद के समाप्त में गायो है जो सूर ऐसे दर्श कों चूमरत लोचन प्यास ✣ यह गायो है सो देशाधिपति नें पूछी जो सूरदास जी तुम्हारे लोचन तो देखियत नाहीं सो प्यासे कैसें मरत हैं और बिन देखें उपमा कों देत हौ ✣

तुम

सो तुम कैसे देत हो तब सूरदास जी कछु बोले नाहीं तब फेरि देशाधिपति बोलो जो इनके लोच न हैं सो तो परमेश्वर के पास हैं सो उहां देखत हैं सो दर्शन करत हैं तब देशाधिपति नें सूरदास जी के समाधान की मन में विचारी जो इनकों कछु दीयो चाहिये परि यह तौ भगवदीय हैं इन कौं कछु काहू बात की इच्छा नाहीं पाछें सूरदा सजी देशाधिपति सो विदा होय कें श्रीनाथजी द्वार आये ॥ ॥

वार्ता प्रसंग ३॥

एक समें सूरदासजी मार्ग में चले जात हैं सो कोउ चौपड़ खेलत हुते सो वा चौपड़ खेल में ऐसे लीन हैं जो कोउ आवते जाते की सुधि नाहीं ऐसे खेल में मान हैं सो देखें सूरदास जी के संग के भगवदीय हैं तिनसों सूरदासजी नें कह्यो जो देखो वह प्राणी कैसो अपनों जमारो खोवत हैं भगवान नें तो मनुष्य देह दीनी है सो तो अपनी सेवा भजन के लिये दीनी है सो ये तो या देह सों हाड कूटत हैं यामें यह लौकिक सिद्धि नाहि सो काहे तें जो या लोक में तो अपजस और परलोक में भगवान ते वहिर्मुख ताते श्री ठाकुरजी नें इन कों मनुष्य देह दीनी है तिनकों चौपड़ ऐसी खेलनी चाहिये सो ता समय एक पद सूरदास ने अपने संग केन सों कह्यो॥ सो पद

राग केदारो॥

मन तू समझ सोच विचार ॥ भक्ति बिन भगवान दुर्लभ कहत निगम पुकार ॥ साध संगति डारि पांसा फेरि रसना सारि ॥ दाव अब के पर्यो पूरो उतरि पहिली पार ॥ २ ॥ वाक सत्रे सुनि अठारे पंचही कों मारि ॥ दूर ते तजि तीन काने चमकि चौक विचार ॥ ३ ॥ काम क्रोध जंजाल भूल्यो ठग्यो ठगनी नारि ॥ सूर हरि के पद भजन बिन चल्यो दोउ कर झार ॥ ४ ॥

यह पद सूरदासजी नें अपने संग के भगवदीयन सों कह्यो सो या पद में सूरदासजी नें कहा कह्यो मन तू समझि सोच विचार ये तीन्यो वस्तु चौपड़ में चहिये सोई तीनों वस्तु भगवान के भजन में चहिये काहे ते जो समझि न होय तो पासा कहा करेगो ताते पहिलें तो समझ चाहिये और सोच कहिये चिंता सो भगवान के प्राप्त की चिंता न होय तो संसार उपर वैराग्य कैसें आवें ताते सोच कहिये और विचार जो या जीव कों विचार ही नहीं तो संग कुसंग में कहा करेगो ताते विचार चहिये सो ये तीनो वस्तु होंय तो भगवदीय होय ताते ये तीनों वस्तु भगवदीय कों अवश्य चाहिये और चौपड़ में हूं ये तीनों वस्तु चहिये समझि कहेंगिनवो न आवतो गोट कैसें चले और सोच आगम जो मेरे यह दाव पड़े तो यह गोट चलूं विचार जो वाही में तन मन जो येती नो वस्त होय तो चौपड़ खेली जाय सो ये सूरदासजी श्री आचार्यजी

महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे

वार्ता प्रसंग ॥ ५ ॥

वहुर सूरदासजी श्री नाथजी द्वार आय कें वहुत दिन तांई श्री नाथजी की सेवा कीनी वीचवीच में श्री गोकुल श्री नवनीत प्रियाजी के दर्शन कों आवते सो एक समय श्री सूरदासजी श्री गोकुल आये श्री नवनीत प्रियाजी के दर्शन कीये और वाल लीला के पद वहुत सुनाये सो श्री गुसांई जी सुनिकें वहुत प्रसन्न भये पाछें श्री गुसांईजी ने एक पालना संस्कृत में कीयो सो पालना सूरदास जी कों सिखायो सो पालना सूरदास जीनें श्री नवनीत प्रियाजी झूलत हुते ता समय गायो सो पद ॥

राग रामकली

शेष पर्यंक सयनं ॥ यह पद सूरदास जीने सम्पूर्ण करिकें गाय सुनायो श्री नवनीत प्रियाजी कों पाछें या पद के भाव के अनुसार वहुत पद कीये सो सुनिकें श्री गुसांईजी वहुत प्रसन्न भए पालना के भाव अनुसार पद गायो ॥ सो पद

राग विलावल

वाल विनोद आंगन में की डोलनि ॥ मणिमय भूमि सुभग नंदालय वलि वलि गई तोतरी वोलनि ॥ १ ॥ कठुला कंठ रुचिर केहरि नख व्रज माल वहु लई अमोलनि ॥ वदन सरोज तिलक गोरोचन लट लटकन मधु गनि लोलनि ॥ २ ॥ लीन्यो कर परसत आ

नन पर कछु खाय कछु नायो कपोलनि ॥ कहै जन सूर कहां लों बरनों धन्य नंद जीवन जग तो लोंने ॥३॥ ✣

गोपाल दुरे हैं माखन खात ॥ देखि सखी सो भा जो बढ़ी अति स्याम मनोहर गात ॥१॥ उठि अ वलोकि ओट ठाढी ह्वै जिह विधि नहिं लखि लेत ॥ चकृत नैन चहुं दिस चितवत और सवन कों देत ॥२॥ सुन्दर कर आनन समीप हरि राजत य ह आकार ॥ ✣ ॥ जनु जलरुह तजि वेर विधि सों नायें मिलत उपहार ॥३॥ गिरि गिरि परत वदन ते ऊपर ह्वै दधि सुत के विंदु ॥ मानहु सुधा कन खैर वत पिय जिय दंदु ॥ बाल विनोद विलोक सूर प्रभु वित भई ब्रज की नारि ॥ फुरत न बचन बरजिवे कों मन रही विचार विचार ॥ ✣

राग जैत श्री

कहां लगि वरनों सुन्दरताई ॥ खेलत कुमर क नक आंगन में नैन निरखि सुख पाई ॥१॥ कुल है लसत श्याम सुन्दर कें वह विधि रंग विवनाई ॥ मानु नवघन ऊपर राजत मघुवा धनुष चढ़ाई ॥ सेत पीत अरु असति लाल मणि लटकनि भा ल रुराई ॥ मानहुं असुर देव गुरु मों मिलि भूमि ज सों समुदाई ॥३॥ अति सुदेस म्रदु चिहुर हर त मन मोहन मुख वगराई ॥ मानहु मंजुल कंज ऊपर वर अलि अवलि फिर आई ॥ दूध दंत छ वि कही न जात कछु अलि पल लप झलकाई

॥ किलकत हंसत दुरति प्रगटत मानों विधु में विपुलतांई ॥५॥ खंडित वचन देत पूरन सुख अद्भुत यह उपमाई ॥ घुटुरुन चलत उठत प्रमुदित मन सूरदास बलिजाई ॥६॥

राग रामकली

देखो सखी एक अद्भुत रूप ॥ एक अम्बुज मध्य देखियत बीस दधि सुत जूप ॥१॥ एक अवली दोय जलचर उभे अर्क अनूप ॥ पंचवार बदि गहि देखियत कहो कहा स्वरूप ॥२॥ सिसु गन में भई सोभा कोऊ करो विचार ॥ सूर श्री गोपाल की छबि राखो यह निरधार ॥३॥

ऐसे पद सूरदास जीनें गाये पाछें फेरि श्रीनाथ जी द्वार आये ॥ ❊

वार्ता प्रसंग ५॥

अब सूरदास जीनें श्रीनाथजी की सेवा बहुत कीनी बहुत दिन तांई ता उपरांत भगवद इच्छा जानी जो अब प्रभून की इच्छा बुलायवे की है यह विचारिकें जो नित्य लीला फलात्मक रासलीला जो जहां करे हें ऐसी जो परासोली तहां सूरदास जी आए श्रीनाथजी की ध्वजा कों दंडोतन करिकें ध्वजा के साम्हें सन्मुख करिकें सूरदास जी सोये परि अंतःकरन यह जो श्री आचार्य जी महाप्रभू दर्शन देयंगे अब यह देह तो थकी ताते अब या देह सों श्रीनाथजी को दर्शन होय तो जानिये परम भाग्य हैं श्री गुसांई जी को नाम कृपा सिंधु है भक्तन के मनोरथ पूरन

कर्ता हैं ऐसे विचार कें सूरदासजी श्री गुसांईजी
को चितवन करत हैं और श्री गुसांई जी कैसे कृपा
सिंधु हैं जैसें सूरदास जी उहां स्मरण करत हैं तैसेंही
श्री गुसांई जी इनकों छिनहूं नाहिं भूलत हैं श्रीना
थजीकों सिंगार होतो तासमय सूरदासजीमणि
कोठा में ठाडे ठाडे कीर्तन करते सो तादिन श्रीगु
सांई जी श्री नाथ जी कौ सिंगार करत हुते और
सूरदासजी कों कीर्तन करत न देख्यो तब श्री गुसां
ई जीनें पूछी सूरदास जी नाहीं देखियत सो काहे
ते तब काहू वैस्नवनें कह्यो जो महाराज सूरदास
जी तो आज परासोली को ओड़ी जात देखे हे तब
श्री गुसांई जीने जान्यौ जो भगवद इच्छा ते अवसा
न समें है ताते सूरदासजी परासोली गये हैं तबश्री
गुसांई जी नें अपने सेवकन सों कह्यो जो पुष्टिमा
र्ग को जिहाज जात है जाकों कछु लेनों होयसो ॥
लेउ और जो भगवद इच्छा ते राजभोग आरतीपा
छें रहत है तो मेंहू आवत हों पाछें श्री गुसांई जीने
खेर सूरदासजी की खबरि मंगायो करें जो आवे
सोई कहे जो महाराज सूरदास जीतो अचेत हें कछ
हू बोलत नाहीं ऐसें करत श्री नाथजी के राज
भोग को समय भयौ सो राजभोग आरती करि
कें श्री गुसांई जी श्रीगिरि राज ते नीचे उतरे सो ॥
आप परासोली पधारे भीतरिया सेवक रामदा
सजी प्रभृत और कुंभनदासजी और श्री गुसांई
जी के सेवक गोविंद स्वामी चत्रभुजदास प्रभृत॥

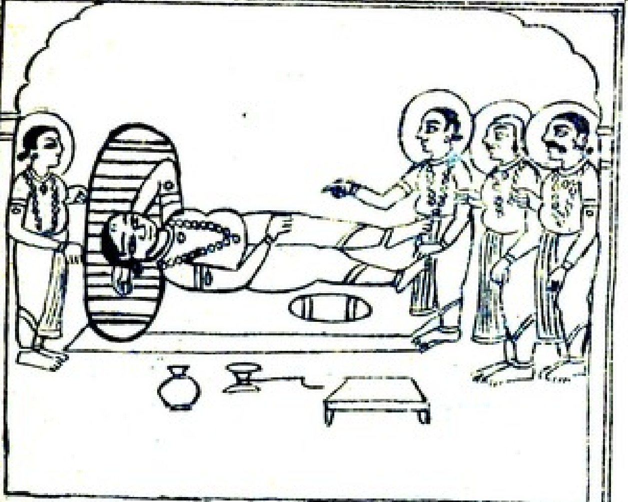

और सब श्री गुसांईं जी के साथ आए सो आव
तही सूरदासजी सों श्री गुसांईं जी नें पूछो जो सूर
दासजी कैसें हौ तब सूरदासजी नें श्री गुसांईंजी कों
दंडौत करिकें कह्यौ जो महा राज आए हौ महारा
ज की बाट देखत हुतौ यह कहि कें सूरदासजी ने
एक पद गायौ सो पद ॥

राग सारंग ॥ ❋

देखौ देखौ हरि जू कौ एक सुभाव ॥ अति गंभीर
उदार उदधि प्रभू जानि सिरोमन राय ॥ १ ॥ राई
जितनी सेवा कौ फल मानत मेरु समान ॥ समझि
दास अपराध सिंधु सम बूंद न एकौ जानि ॥ २ ॥
बदन प्रसन्न कमल पद सनमुख दीखत ही है ❋

ऐसे ॥ ऐसे विमुख हु भए कृपा या मुख कीजब देखो तब तैसे ॥३॥ भक्त विरह करत करुणामय डोलत पाछें लागें ॥ सूरदास ऐसे प्रभू कों कत दीजै पीठ अभागे ॥ ४

यह पद सूरदास जीनें कह्यो सो सुनि कें श्रीगुसांई जी बहुत प्रसन्न भए और कह्यो जो ऐसो दैन्य श्रीप्रभू अपने सेवकन कों देहि या दैन्य के पात्र एही हैं तब वा वेर श्री गुसांई जी पास ठाडे हुते और चत्रभुजदास हू ठाडे हुते तब चत्रभुजदास नें कह्यो जो सूरदास जीनें बहुत भगवद् जस वर्णन कीयो परि श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ जस वर्णन ना कीयो तब यह वचन सुनि कें सूरदास जी बोले जो मैं तो सब श्री आचार्य जी महा प्रभून को ही जस वर्णन कीयो है कछु न्यारो देखूं तो न्यारो करूं परि तेरे साथ कहत हो या भांति कहि कें सूरदास जीनें एक पद कह्यौ ॥ सो पद

राग विहागरो

भरोसौ दृढ इन चरणन केरो ॥ श्रीवल्लभ नख चंद्र छटा विनु सब जग मांझि अंधेरो ॥१॥ साधन और नहीं या कलि में जासों होत निवेरो ॥ सूर कहा कहि दुविधि आंधरो विना मोल को चेरो ॥२॥५

यह पद कह्यो पाछें सूरदास जी कों मूर्छा आई तब श्री गुसांई जी कहें जो सूरदास जी चित्त की वृत्ति कहां है तब सूरदास जीने एक पद और कह्यो ॥ ४

सो पद

रागविहागरो ॥

वलिवलिवलि हौ कुमर राधिका नंद सुवन जासें रति मानी ॥ वे अतिचतुर तुम चतुर सिरोमन प्रीत करी कैसें होत है छानी ॥ १ ॥ वे जु धरत तन कनक पीत पट सोतौ सव तेरी गति ठानी ॥ तें पुनि स्याम सहज वे सोभा अंवर मिस अपने उर आनी ॥ २ ॥ पुलकित अंग अवही है आयौ निरखि देखि निज देह सियानी ॥ सूर सुजान सखी के बूझें प्रेम प्रकाश भयौ विहसानी ॥ ३ ॥

यह पद कह्यौ इतनौं कहि कें सूरदास जी कौ चित्त श्री ठाकुर जी कौ श्री मुख तामें करुणा रस के भरे नेत्र देखे तव श्री गुसांई जी पूछौ जो सूरदास जी नेत्र की वृत्ति कहां है तव सूरदास जी ने एक पद और कह्यौ ॥ सो पद

रागविहागरो

खंजन नैन रूप रस माते ॥ अति सै चारु चपल अनियारे पल पिंजरा न समाते ॥ चलि चलि जात निकट श्रवनन के उलटि पुलटि ताटंक फंदाते ॥ सूरदास अंजन गुण अटके नातर अव उडि जाते ॥

इतनौं कहत ही सूरदास जीनें या शरीर कौ त्याग कीयौ सो भगवद लीला में प्राप्त भये पाछें श्री गुसांई जी सव सेवकन सहित श्री गोवर्द्धन आये तातें सूरदास जी श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय है सो इनकी वार्ता कौ पार नाहीं तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखियें ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ ६ ॥ वैष्णव ८१ ॥ सम्बन्ध ॥ ❖

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के
सेवक परमानन्द दास कनौ
जिया ब्राह्मण तिनकी
वार्ता लिख्यते
हैं

सो परमानन्द दास जी परम भगवद् लीला मध्य या ती श्रीठाकुर जी के परम सखा हैं सो जब श्री आचा र्यजी महाप्रभू आप भूतल पर प्रगट भये तब श्रीगो वर्द्धन नाथजी की आज्ञा ते दैवी जीवन के उद्धारार्थ और तैसेंई श्री आचार्यजी महाप्रभून को श्रीठाकु रजी को परकार सब प्रगट भयो और आप श्रीगो वर्द्धन पर्वत में प्रघट भए सो गोपाल दास जी वल्लभा ख्यान में गाये हैं जो अपने क जीव कृपा करें यादे प्रांतर पर देस ताते परमानन्द दास जी को जन्म कनौज में हैं क नौजया ब्राह्मण के घर भयो सो वे परमानन्द दासजी बहुत योग्य भए और कवि भये भगवद कृपा के पात्र भये कीर्तन बहुत आछो गावते ताते परमानन्द दास जी के संग समाज बहुत रहतो आप स्वामी कहावते आप सेवक करते सो भगवद इच्छा ते एक समय परमानन्द दास जी कन्नौज ते आप प्रयाग को आ ये सो प्रयाग में उतरे सो वहां कीर्तन बहुत आछे गावते ताते बहुत लोग कीर्तन सुनिवे को आवते और अडेल तें कार्यार्थ लोग बहुत आवते सो इ न के कीर्तन सुनि कें पार अडेल में जाय कहते

जो परमानन्द दास जी इहां प्रयाग में आये हैं सो की
र्तन बहुत आछें गावत हैं सो श्री आचार्यजी महाप्र
भून के सेवक जल घरिया कपूर छत्री सो उनके रागऊ
पर बहुत आसक्ति परि वे अवकाश नाहीं ..... पा
वें जो परमानंद दासजी के कीर्तन सुनिवे कों आवें
सेवा में अवकाश नाहीं जो प्राण जाय सकैं सो एक
दिन एक वैष्णव आगरे ते अडेल में आयौ सो याने क
ह्यौ जो आज एकादशी है सो परमानन्द दास जी
आज जागरन करेंगे सो यह सुनिकें वा जल घरि
यानें अपने मन में विचार्यौ जो आज परमानन्द जी
के कीर्तन सुनिवे कों चलनों सो वे छत्री कपूर जल
घरिया अपनी सेवा सों पहुंचि कें रात्रि कों अपने
घर आए सो घर आय कें अपने मन में विचार की
यौ जो या बेर नाव तौ मिलैगी नाहीं ताते कहा कर्त
व्य परि वे पैरवे में भले निपुन हुते सो मन में विचारी
जो पैर कें पार जैये पाछें अपने घर ते चले सो श्री य
मुना जी के तीर ऊपर आय ठाड़े भये तब पर्दनी प
हर कें वस्त्र सब माथे सों बांधि कें श्री यमुना जी में
पैर कें पार प्रयाग आये पाछें वस्त्र पहर कें जा ठौ
र परमानन्द स्वामी उतरे हुते तहां आये सो इनकों
कछु मिलाप तौ परमानन्द स्वामी सों हुतो नाहीं
जहां और सब जने बैठे हुते तहां एउ जाय बैठे परि
एउ श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक हे सो सब
कोउ जानत हुते ताते सबन ने इनकों आदर कर
कें बैठाये सो ए बैठे ता पाछें परमानन्द स्वामी ने

कीर्तन कों प्रारंभ कीयो सो परमानन्द स्वामी ने बिर
ह के पद गाये सो बिरह के पद काहे कों गाए सो
प्रथम इनकों स्वरूप कहि आये हैं कही जो ये ली
ला मध्यपाती श्रीठाकुर जी के परमानन्द स्वामीपर
म सखा हैं सो उहां सों बिछुरे और इहां तो अबही
श्रीठाकुर जी कों दर्शन नाहीं भयो और श्री आचा
र्यजी महाप्रभून कौ दर्शन अब होयगो श्री आचा
र्यजी महाप्रभून के मार्ग कौ यह सिद्धांत है जो भग
वदीन कों संग होय तो श्रीठाकुर जी कृपा करें ता
ही के लियें श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें परमान
द स्वामी के ऊपर अनुग्रह करि कें अपने कृपापा
त्र भागवदीय के अंतकरन में प्रेरना करिकें परम

नंद स्वामी के इहां पठाये सो ये श्री आचार्य जी महा
प्रभून के सेवक कैसे हैं जो जिनकों श्री ठाकुर जी ए
क क्षन हूं नाहीं छोडत इनके संगही रहत हैं काहे
ते सूरदास जी गाए हैं भक्ति विरह करत करुणा म
य डोलन पाछें पाछें और जगन्नाथ जोसी की हूवा
र्ता में लिख्यो है जो जब रजपूत नें तरवार चलाई त
व श्री ठाकुर जी नें हाथ पकर्यो ताते श्री आचार्य
जी महाप्रभून के सेवकन के सदा श्री ठाकुर जी नि
कट ही रहत हैं ताते परमानन्द स्वामीने विरह के प
द गाये सो पद ॥

राग विहागरो ॥+

ब्रज के विरही लोग विचारे ॥ बिन गोपाल ठगे से ठा
ड़े अति दुर्वल तन हारे ॥१॥ मात जसोधा पंथ निहा
रत निरखत सांझ सकारे ॥ जो कोई कान्ह कान्ह
कहि बोलत अंखियन बहत पनारे ॥२॥ यह मथु
रा काजर की रेखा जे निकसे ते कारे ॥ परमानन्द
स्वामी बिनु ऐसें जैसें चन्दा बिनु तारे ॥३॥+

और पद गायो सो राग विहागरो

सब गोकुल गोपाल उपासी ॥ जो गाहक साधन
के ऊधो सो सब बसत ईस पुरवासी ॥ जद्यपि हरि
हम तजी अनाथ करि अब कौंडन क्यों रति जासी ॥
अपनी सीतलता नहीं छांडत जद्यपि विधु राहु है
ग्रासी ॥२॥ किंह अपराध जोग लिखि पठयो प्रेम
भजनते करत उदासी ॥ परमानन्द ऐसी को वि
रहन मांगें मुक्ति गुन रासी ॥३॥

राग कान्हरौ

कौन रसिक है इन बातन को ॥ नंदनंदन बिन का
सों कहिये सुनरी सखी मेरे दुखिया मनको ॥१॥
कहा वे जमुना पुलिन मनोहर कहां वह चंद सरद
राति को ॥ कहां वे मंद सुगंध अमल रस कहां वे
षट पद जलजानन को ॥२॥ कहां वे सेज पोढ़िवो
बनको फूल बिछौना मृदु पातन को ॥ कहां वे दर
स परस परमानन्द कोमल तन कोमल गातन को
॥३॥+

राग कान्हरौ

माई कौं मिलवे नंद किसोरे ॥ एक बार को नैन
दिखावे मेरे मन कौ चोरे ॥१॥ जागत जाम गनत नहीं
खूटत क्यों पाउंगी भोरे ॥ सुनरी सखी अब कैसे
जीजे सुनत मधुर खग रोरे ॥२॥ जो यह प्रीति स
त्य अंतर गति जिन काहू बन हेरे ॥ परमानन्द प्र
भू आन मिलेंगे सखी सीस जिन ढोरे ॥३॥+

इत्यादिक पद बिरह के जैसे परमानंद स्वामीनें
सगरी राति गाए पाछिली घ डी चारि रात्र रहीस
व जोजो जागरन में आए हुते सो सब अपने घरको
गये तैसेंई श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक ए
जल घरिया कपूर हू परमानंद स्वामी सों जैसी कृ
ष्ण स्मरण कहिकें चले और परमानंद स्वामी के
कीर्तन सुनिकें बहुत प्रसन्न भये और परमानन्द
स्वामी सों कह्यो जो जैसे हमने सुने हुते तातें अ
धिक देखे तुम परम भगवद अनुग्रह पूरण हो

ये जलघरिया क्षत्री कपूर श्री महाप्रभून के परमभ
गवदीय हैं सो ऐसे जो चलि आए सो परमानन्द स्वा
मी के उपर अनुग्रह करिवे कों आए हैं नातर भ
गवदीय काहे कों काहू के घर जांय और यह उ
पर कहि आये हैं जो श्री आचार्य जी महाप्रभून के
निकट ही रहत हैं सो याकों हेत यह जो निकट रहत
हैं सो इन जलघरिया क्षत्री कपूर की गोद में बैठि कें
श्रीनवनीत प्रियाजीने परमानंद स्वामी के पद सुने
जो श्री आचार्य जी महाप्रभून के मार्ग की मर्य्यादा
है जो श्री आचार्यजी महाप्रभून के अनुग्रह विना
श्रीठाकुर जी कृपा न करें सो उन जलघरिया क्षत्री
कपूर उपर श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ परम अनु
ग्रह है ताते श्रीनवनीत प्रियाजी इनकी गोद में
बैठि कें परमानन्द स्वामी के पद काहे कों सुनने
पड़े सो ताकौ हेत यह जो भगवदीय परमानन्द
स्वामी के उपर श्री नवनीत प्रयाजी अनुग्रह क
रवे कों आप पधारे हैं तातें सुने सो श्री आचार्य
जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री परमा
नन्द स्वामी सों जैसी कृस्न कहि कें चले सो श्रीय
मुनाजी के तीर उपर आये सो वहां आय कें विचा
र कीयो जो नाव की वाट देखें तो अवार होयगी
और सेवा कूटेगी और श्री आचार्यजी महाप्रभू
भी खीजेंगे ताते जैसे पैर के आये हुते तैसे ही चले
सो पैर के पास गये सो पार आवत ही स्नान कर
कें अपनी सेवा में तत्पर भये पाछे वहां प्राग में १

परमानन्द स्वामी की रात्रि के जागरन के श्रमित
सों आंखि लगी निंद्रा आई सो छतनि में स्वप्न आ
यो सो स्वप्न में देखे जो जैसें रात्रि के जागरन में श्री
आचार्यजी महाप्रभून के सेवक जल घरिया ए
श्री बैठे हैं और उनकी गोद में श्री नवनीत प्रिया
जी के दर्शन भये और स्वप्न में श्री नवनीत प्रिया
जी परमानन्द स्वामी सों कहैं और परमानंद स्वा
मी की निद्रा खुली सो ता श्री मुख को कौउ सों
दर्ये कोटिकं दर्पणावरग्य परमानन्द स्वामी नें
देख्यो सो स्वप्न में तो हृदय में धरि लीये और मन में च
टपटी लगी सो यह दर्शन फेरि कब होयगो तब यह
मन में विचार्यो जो यह दर्शन उन श्री आचार्यजी
महाप्रभून के सेवक श्री जल घरिया बिना न हो
यगो तातें होय तो उनके पास जैये जो उनसों मिलें
तब कार्य सिद्धि होय ऐसो परमानन्द स्वामी नें अ
पने मन में विचार कियो सो तत्काल प्रागसें अ
डेल कूंच ले सो श्री यमुनाजी के तीर ऊपर आय
ठाढे भये सो प्रातःकाल को समय भयो सो प्रथम
नाव चली तापर बैठि के पार उतरे तब आगें जाय
कें देखें तो श्री आचार्यजी महाप्रभूजी स्नान संध्या
वंदन करत हैं सो परमानन्द स्वामी कों श्री महाप्र
भूजी को कैसो दर्शन भयो साक्षात पूरन पुरुषोत्तम
श्रीकृष्णचंद्र सों श्री गुसांईजी वल्लभाष्टक में लि
ख्यो है सो वस्तुतः कृष्ण एव ऐसो दर्शन भयो
जो श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरि

या छत्री कपूर की गोद में श्रीठाकुर जी काढ़ें कौंवे
दे यह कारण जिन के माथे ऐसे प्रभू विराजत हैं पर प
रमानन्द स्वामी के मन में यह जो छत्री कपूर मिले
तौ खाछी सो काढ़ते जो जिन के माथे ऐसे प्रभू औ
र जिन के दर्शन त श्री आचार्य जी महाप्रभून कों
दर्शन भयो तापाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून
ने अपने श्री मुख सों कह्यो जो परमानन्द कछु भग
वदीयजस वर्णन करि तब परमानन्द स्वामी ने वि
रह के पद गाये ।। सो पद

रागसारंग ।। ❋

कौन वेर भई चलेरी गोपाले ।। हों ननसार गई ही न्
योते वार वार बूझत व्रजवाले ।। १ ।। तेरो तन को रू
प कहां गयो भामिन अरु मुख कमल सुखायरह्यो।
सब सोभा गयो हरि के संग इंदे सो कमल विरह दह्यो।
।। २ ।। को वोले को नेन उघारे को प्रति उतर देहि वि
कल मन ।। जो सर्वस्व अक्रूर चुरायो परमानन्द
स्वामी जीवन धन ।। ❋

रागसारंग

जिय की साधन जिय ही रहीरी ।। वहुरि गोपाल दे
खि नहीं पारा विलपन कुंज अहीरी ।। १ ।। एक दि
न सों ज समीप यह मारग वेचन जात दहीरी ।। प्री
त के लिये दान मिस मोहन मेरी वांह गहीरी ।। २ ।।
बिन देखे घडी जात कलप सम वि रहा अनल द
हीरी ।। परमानंद स्वामी बिन दर्शन नेनन नींद व
हीरी ।। ३ ।। ❋

राग सारंग ॥

वह बात कमल दल नैनन की ॥ बार बार सुधि आ
वत रजनी वह दिरदैनी सैनी सैन की ॥ वह ली
ला वह रास सरद की गोरज रजति आवनि ॥ अ
रु वह ऊंची टेर मनोहर मिस करि मोह सुनावनि
॥ २ ॥ वसन कुंजमें रास खिलायौ विथा गमाई
मैन की ॥ परमानन्द प्रभू सों क्यों जीवै जे पोखी
मृदु बैन की ॥

या भांति परमानन्द स्वामी ने बिरह के पद गाए
सो सुनि कें परमानन्द स्वामी सों कह्यौ जो कछू बा
ल लीला वर्णन करि तब परमानन्द स्वामी नें कह्यो
जो महाराज में कछू समभत नाहीं तब श्री महाप्र
भून ने कह्यौ जो स्नान करि आउ हम तोकों सम
झावेंगे तब परमानन्द स्वामी नें श्री महाप्रभून
सों पूछी जो महाराज आप के सेवक विरक्त कहां है
तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो कछू व
हल करत होयगो तब परमानन्द स्वामी स्नान कों
गये सो तब परमानन्द स्वामी आगे जाय कें देखें तो
यमुन जल की गागर लेकें वह कपूरछत्री आव
तहे तब निकट आए सो साम्हें मिले सो उनकों दे
खकें परमानन्द स्वामी बहुत प्रसन्न भए और पर
मानन्द स्वामी नें उनकों नमस्कार करी और कह्यौ
जो रात्रि कों जागरन में आप पधारे हते सो श्री ठा
कुर जीनें आप की गोद में बैठि कें मेरे कीर्तन
सुने सो आप की कृपा ते श्री ठाकुर जी नें मोसों क

है जो में श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक जल
घरिया स्त्री की गोद में बैठि कें तेरे कीर्तन सुने
हैं और आप की कृपा ते मेरो भाग्य सिद्ध भयौ है
सो आवत ही तुम्हारी कृपा ते मोकों दर्शन भयौ
इतनी बात सुनि कें उन जल घरिया नें कह्यौ जो ए
सें मति कह्यौ जो श्री आचार्यजी महाप्रभू सुनेंगे
तो खीजेंगे सो सेवा छोड़ कें क्यों गये ताते यह वा
त मति कहौ तब इतनी सुनि कें परमानन्द स्वामी
कों आश्चर्य भयौ और कह्यौ जो ए धन्य हैं जिन
ऊपर श्रीठाकुर जी कों ऐसो अनुग्रह है और ये

अपनौ स्वरूप छिपावत हैं पाछें परमानन्द स्वामी
तो स्नान कों गये और जल घरिया जल की गागर

लैकें मन्दिर में गयै पाछें परमानन्द स्वामी श्रीज
मुनाजी में स्नान करिकें ततकाल आप श्री आ
चार्यजी महाप्रभून के आगें आय ठाडे भये तव
श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यौ जो परमानन्द
स्वामी आगें आउ वैठि तव परमानन्द स्वामी आ
प आगें आय वैठे तव श्री आचार्यजी महाप्रभून
नें परमानन्द स्वामी कौं नाम सुनायौ पाछें मन्दि
र में पधार कें श्री नवनीत प्रियाजी के सन्निधान
परमानन्द स्वामी कौं ब्रह्म संवध करवायो पाछें
अनुग्रह करिकें परमानन्द स्वामी कौं अनुक्रमः
णिका सुनाई काहे तें जो प्रथम परमानन्द स्वामी
सों श्री आचार्यजी महाप्रभून नें अपने श्री मुख

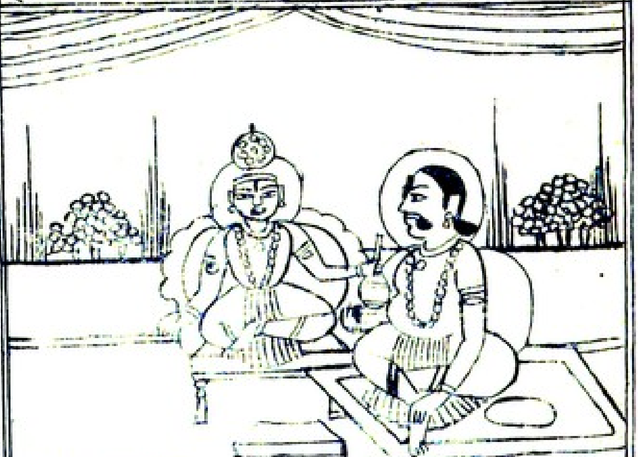

सों कह्यौ जो भगवद जस वर्णन करि सो परमानं
द स्वामी नें विरह को पद गायो तब श्री आचा
र्य जी महाप्रभून ने कह्यो जो परमानंद स्वामी बा
ल लीला गाउ तब परमानन्द स्वामी ने कह्यो जो
राज में कछू समभ्भत नाहीं सो परमानन्द स्वामी
नें काहे ते कह्यो जो ऊपर कहि आए हैं जो ये श्री
ठाकुर जी सों बिछुरे हैं सो बिछुरे के दुख की तो
स्फुर्ति रही और संयोग जो सुख भयो ताको बि
स्मरन भयो जो काहे ते जो सब लीला विसिष्ट ...
... पूरण पुरुषोतम तो श्री आचार्य जी महाप्रभून
सों घर पधारे हैं सो परमानन्द दास कों श्री आचा
र्य जी महाप्रभून नें अनुक्रमणिका सुनाई तब सब
लीला की स्फुर्ति भई और अनुक्रमणिका सुना
ई ताको कारण कहा जो श्री आचार्य जी महाप्र
भून को नाम है श्री भागवत पीयूष समुद्र मथनः
क्षमः सो श्री भागवत को श्री गुसांई जी अम्रत
को समुद्र करिकें वर्णन कीये हैं सो अनुक्रमणि
का द्वारा श्री भागवत रूपी समुद्र श्री आचार्य जी मः
हाप्रभून नें परमानन्द स्वामी के हृदय में धर्यो ता
ते वाणी तो सब अष्ट काव्य की समान हैं और ये
दोउ परमानन्द स्वामी और सूरदास जी सागर भये
सो याते जो श्री भागवत रूपी अम्रत को स्वरूप
इनके हृदय में श्री आचार्य जी महाप्रभून ने ध
र्यो सो काहे ते जो सब कोउ सूरसागर और पर
मानन्द सागर कहते अब परमानन्द दास सों श्री

आचार्य जी महाप्रभू श्री मुख में कहें जो बाल
लीला वर्णन करि सो परमानन्द जी नें तनकाल
बाललीला के पद करिकें श्री नवनीतप्रिया जी के
सन्निधान गाये ॥ सो पद

राग सांमरी

माईरी कमल नैन श्याम सुंदर झूलत हैं पलना ॥
बाल लीला गावत सब गोकुल के ललना ॥१॥
अरुण तरुण कमल नख मनि जस जोती ॥ कुं
चित कच भवराकुल लटकत गज मोती ॥२॥
अंगूठा गहि कमल पान मेलत मुख माहीं ॥ अ
पनों प्रतिविम्ब देखि पुनि पुनि भुमिकाहीं ॥३॥
जसुमति के पुन्य पुञ्ज वार वार लाले ॥ परमानन्द
स्वामी गोपाल सुत स्नेह पाले ॥४॥

यह पद सुनि कें श्री आचार्य जी महाप्रभू बहुत प्र
सन्न भए फेरि और पद गायो ॥ सो पद

राग विलावल

जसोधा तेरे भाग्य की कही न जाय ॥ जो मूरति ब्र
ह्मादिक दुर्लभ सो प्रघटे हैं आय ॥१॥ शिव नारद
सनकादिक महा मुनि मिलवे करत उपाय ॥ ते नं
द लाल धूर धूसरे व पु रहत गोद लिपटाय ॥२॥
रतन जटित पौढ़ाय पालने बदन देखि मुस्किाई
॥ झूलो मेरे लाल बलिहारी परमानन्द जस गाई
॥३॥

राग विलावल

मणि मय आंगन नंद के खेलत दोउ भैया ॥ सो कैसे

बाललीलाके पद परमानन्द दास नें गाए सो सुनिकें
श्री आचार्यजी बहुत प्रसन्न भए से। परमानन्द दास
जी श्री आचार्यजी महाप्रभून के पास हे सो परमा
नन्द दास कों आपने कीर्तन की सेवा दीनी सो पर
मानन्द दास जी श्री नवनीतप्रियाजी कों नित्य नये
पद करिकें भांति भांति के सुनावते जब अनोंसर
होतो तब परमानन्द दास जी श्री आचार्यजी महा
प्रभून के आगें पद कीर्तन करें श्री आचार्यजी म
हाप्रभू नित्य कथा कहते सो परमानन्द दास जी
नित्य सुनंते सो ताही प्रसंग के कीर्तन करिकें पर
मानन्द दास जी सुनावते सो एक दिन परमानन्द
दास जी नें श्रीठाकुर जी के चरणारविंद को महात्म
सुन्यौ सो चरणारविंद के महात्म को कीर्तन करि श्री
आचार्यजी महाप्रभून कों सुनायो सुनिकें श्री
आचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भए सो पद॥

राग कान्हरो

चरणकमल वंदौं जगदीस गोधन के संग धाए। जे
पद कमल धूरि लपटाने करि गहि गोपीन के उर
लाए॥१॥ यह पद संपूरण करिके परमानन्द दास
जी नें गायो और श्री आचार्यजी महाप्रभून के
स्वरूप को और प्रार्थना को पद गायो॥ सो पद

राग कान्हरो

यह मागों गोपीजन वल्लभ यह परमानन्द दास स्वा
मी नें संपूरण करिकें गायो सो सुनिकें श्री आचा
र्यजी महाप्रभू अपने मन में जाने जो यह मिसकर

कें परमानन्द दास या पद कों सुनाय के व्रज के दर्श
न की प्रार्थना कीनी है ताते व्रज कों अवश्य चल
नों ॥५॥

वार्ता प्रसंग ॥१॥

अब श्री आचार्यजी महा प्रभू यह विचार करेंजो
व्रज कों पधार वे कौ उद्यम कीयौ सो दामोदरदास
हरि सानी कृष्ण दास मेघन परमानन्द दास और ५
यादव दास हलवाई तथा रसोई की सामिग्री संग

लेकें चले और सब वैस्नव संग ले आप श्री आचा
र्य जी महा प्रभू व्रज कों पधारें सो व्रज कों आवत
परमानन्द दास कौ गांव कन्नोज आयो तब परमा
नन्द दास नें श्री आचार्यजी महा प्रभून सों वीनती

कीनी जो महाराज मेरे घर पधारिये आप के अनु
ग्रह तें मेरो भाग्य सिधि भयो है अब मेरो घर हू पा
वन करिये तब श्री आचार्यजी महाप्रभू आप अं
तरयामी कृपानिधान भक्त मनोरथ पूर्वक आप
कृपा करिकें पधारे सो परमानन्ददास के घर आ
छी भांति सों श्री आचार्यजी महाप्रभूनने रसोई
करि श्री ठाकुरजी को भोग समर्प्यो पाछें भोग सरा
य कें आप प्रसाद लीयो पाछें आप गादीतकिया
न के उपर बिराजे तब परमानन्द दास सों कह्यो जो
कछु भगवद जस गावो तब परमानंद दासजी नें
मन में विचारी जो या समय श्री आचार्यजी महा
प्रभून को मन तो ब्रज में श्री गोवर्द्धननाथजी के
पास है ताते विरह के पद गाउं सो विरह को पद
ऐसो गायो जामें छिनहू कल्प समान जाय ॥

सो पद राग सोरठ ॥

हरि तेरी लीला की सुधि आवे ॥ कमलनैन मन
मोहनी मूरत मन मन चित्र बनावे ॥ १ ॥ एकबार जा
य मिलत माया करि सो कैसें बिसरावे ॥ मुख मुः
सिकान बंक अविलोकन चाल मनोहर भावे ॥
कबहुक निबड़ तिमर आलिंगन कबहुक पिक
सुर गावें ॥ कबहुक सभ्रम क्वासि क्वासि कहि
संगहीन उठि धावें ॥ ३ ॥ कबहुक नैन मूंदि अं
तर गति मणि माला पहरावे ॥ परमानंद प्रभु ध्या
न करि ऐसें विरह गवावे ॥ ४ ॥

यह पद परमानन्ददासनें गायो सो सुनिकें श्री

आचार्यजी महाप्रभून कों मूर्च्छा आई सो जा ली
ला को पद परमानन्द दास ने गायो ता लीला विषें॥
श्री आचार्यजी महा प्रभू मान भये सो देहानु सं
धान न रह्यो सो तीन दिन लों श्री आचार्य जी महा
प्रभून कों मूर्च्छा रही सो सवारे सेवक दामोदरदास
हरसानी प्रभृति श्री आचार्यजी महा प्रभून के॥
दर्शन करे सो वैसें ही वैठे रहे चतुर्थ दिन के प्रातः
काल श्री आचार्य जी महा प्रभू सावधान भए
तब सब वैष्णव प्रसन्न भए तब परमानन्द दासजी
मन में डरपे जो फेरि ऐसो पद न गाउं फेरि सूधे
पद गाए॥ सो पद

राग विभाग

माई री हों आनंद गुन गाउं॥ गोकुल की चिंता
मणि माधो जो मांगो सो पाउं॥ जब ते कमल नैन
व्रज आये सकल संपदा वाढ़ी॥ नंद राय के द्वारे
देखो अष्ट महा सिद्धि ठाढ़ी॥ २॥ फूले फले सदां
वृंदावन काम धेनु दुहि दीजे॥ मारग मेघ इंद्र
वरखावें कृस्न रूपी सुख लीजे॥ कहत जसोधा
सखियन आगें हरि उत कये जनावे॥ परमानंद
दास कों ठाकुर मुरली मनोहर भावे॥

और हू पद गायो॥ सो

राग गौरी

विमल जस वृंदावन के चंद्र को॥ यह पद सम्पूर
ण करि कें गायो फेरि और गायो॥

राग सारंग

धनिनी नन्द गांव जाय बसिये ॥ यह पद सम्पूरण क
रिकें गायो सो पद में यह कह्यो जो बलरी नंद गांव जा
य बसिये सो श्री महाप्रभू जी मुनि के ब्रज कों पधारे
सो प्रथम श्री गोकुल पधारे सो श्री गोकुल आवत ॥
हो श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री यमुना जी के तीर ऊ
पर छोंकर के नीचे बैठक में तहां श्री आचार्य जी महा
प्रभू बिराजे और एक बैठक श्री द्वारिकानाथ जी के
मन्दिर के पास है सो भीतर की बैठक है सो गांव के बि
च्याम मध्य रमाई का ठोर है उहां श्री आचार्य जी महा
प्रभून को घर हुतो जब आप श्री गोकुल पधारते तब
उहां ई उतरते सो यह भीतर की बैठक है पाछे सब ये
स्मबनने श्री यमुना जी स्नान कीये और परमानन्द
दासजी हू श्री यमुना जी को जस वर्णन कीये सो पद

राग रामकली

श्री यमुना जी यह प्रसाद हों पाउं ॥ तिहारे निकट र
हों निस बासर राम कृस्न गुन गाउं ॥१॥ मंजन बिमल
पावन जल चिला कुलखं वहाउं ॥ तिहारी कृपा भान
की तनया हरि पद प्रीत बढ़ाउं ॥२॥ बिनती करो य
ही बर मांगों अधम संग बिसराउं ॥ परमानन्द दास
फल दाता मगन गोपाल लड़ाउं ॥३॥

राग रामकली

श्री यमुना जी दीन जान मोहि दीजे ॥ सो ऐसे पद
सम्पूरण करिकें श्री यमुना जी के परमानन्द दास जी
में बहुत गाए श्री आचार्य जी के आगें तीर विषें गा
ए ता उपरांत श्री महाप्रभू जीनें परमानन्द दासकों

कों बाललीला विसिर श्री गोकुल के दर्शन करवा ये सो परमानन्द दास कों ऐसे दर्शन भये। सो सब व्रज भक्त श्री यमुना जल की गागरि भरि लै जात हैं और श्री ठाकुर जी मार्ग में खेलत हैं और व्रजभक्त न कों जल की गागरि उठाय देत हैं और उनकों कंचु तोरे हैं या भांति सों दर्शन भए सो तैसोई पद श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगें गायो सो पद

राग बिलावल

जमुना जल घर भरि चली चन्द्रावलि नारी॥ मारग खेलत मिले घनस्याम मुरारी॥१॥ नैनन सों नैंना मिले मन रह्यौ है लुभाई॥ मोहन मूरत जिय बसी पग धर्यौ न जाई॥२॥ नव की प्रीति प्रगट भई यह पहली भेंट॥ परमानन्द ऐसी मिली जैसी गुड़ में चेंट॥३॥

राग सारंग

ग्वाल नेंक टेकौ मेरी बैंया॥ औघट घाट चल्यौ नहिं जाई रपटत हों कालिन्दी महियां॥१॥ यह पद सम्पूरण करकें ऐसे पद गाये ता पाछें परमानन्द दास नें बाललीला के पद बहुत गाये और श्री गोकुल कौ स्वरूप जा में आवे ऐसो पद गायो॥ (सो पद)

राग कान्हरौ

गावत गोपी मधु व्रज बानी॥ जाके भुवन बसत त्रिभुवनपति राजा नन्द जसोधा रानी॥१॥ गावत वेद भारती गावत गावत नारदादि मुनि ज्ञानी॥ गावत गुन गंधर्व काल शिव गोकुलनाथ महातम जानी॥२॥ गावत चतुरानन जद नायक गावत शेष सहस्र मुः

स्वंरास ॥ मन क्रम वचन प्रीत यह अम्बुज अंब गावत
परमानन्द दास ॥ ३ ॥ यह पद परमानन्द दास नें गाए
यो पाछैं और पद गायौ सो पद ॥

राग कान्हरौ

जसुमति गृह आवति गोपी जन ॥ वासर ताप निवार
न कारन बार बार कमल मुख निरखन ॥ १ ॥ बाहन
पकरि देहरी उलंघन किलक किलक हुलसन मन
हीं मन ॥ लोंन उतारि दोउ कर वारि फेर आंचल तन
मन धन ॥ २ ॥ लैन उठाय आपन हीये भीरे प्रेम वि
वस लागे द्रग ढरकन ॥ ललीलै पलना पोढावन कें
अरु कमाय पोढ़े सुन्दर घन ॥ ३ ॥ देत असीस सक
ल गोपीजन चिरं जीवौ लोग राज सुन ॥ परमानन्द
दास कौ ठाकुर भक्त वछल भक्त मन रंजन ॥ ४ ॥

राग हमीर ॥

चितै चितै चित चासौरी माई ॥ यह पद सम्पूरण कर
कें गायौ सो असे पद परमानन्द दास नें बहुत गाये
ता पाछैं श्री गोकुल नाथ जी के दर्शन करि कें परम
मन्ददास श्री गोकुल उपर बहुत आसक्ति भये सब
असे पद गाये जा में श्री आचार्य जी महाप्रभून को
वर्नन कीनो जो मो कों श्री गोकुल में आय कें चरणा
विंद के नीचें राख्यो नित प्रति प्रभून के दर्शन करौं भ
लीला विसिष्ट पूरन पुरुषोत्तम हैं और यह पद गा
यौ सो पद ॥

राग कान्हरौ

यह मांगो जसोदा नंदन ॥ चरण कमल मन मन मधु

र याछवि मैंनन पाउं दर्शन ॥१॥ चरणकमल की से
वा करूं तन रज्जन विजे लता घन नंदन ॥ वृषभानु
[illegible] सु [illegible] पन ॥२॥ ब्रजवास था
जमुना जल अचिवो श्री वल्लभ को दास यही पन ॥
महाप्रसाद पाउं हरि गुन गाउं परमानन्ददास जीवन
धन ॥३॥

रागकान्हरो

अब लगि जमुना गाय गोवर्द्धन तब लग गोकुल गांव
गुसांई ॥ यह पद सम्पूरण करके प्रार्थना के पद गा
ये तब कितनेक दिन श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री
गोकुल में विराजे ता पाछें सब वैस्नवन को संग लेके
श्री गोवर्द्धननाथ जी के दर्शन को पधारे ॥

वार्ताप्रसंग ३

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू स्नान करि कें पर्वत उ
पर पधारे सो आवत ही परमानन्द दास नें श्रीनाथ
जी कौं श्री मुख देखि कें वहां के वहां रहे तब श्री महा
प्रभु जी ने श्री मुख सों कह्यौ जो परमानन्द दास कछु
भागवत लीला गावौ तब परमानन्द दास अपने म
न में विचार जो कहा गाउं तब ऐसें विचारो जो जामें
प्रथम अवतार लीला ता पाछें चरणार्विंद की वंदना
पाछें भागवद वर्णन को स्वरूप ता पाछें बाल क्रीड़ा
ता पाछें श्री ठाकुर जी को महात्म ऐसो पद परमा
नन्द दास नें गायो सो पद ॥

रागकान्हरो

मोहन नन्द राय कुमार ॥ प्रगट ब्रह्म निकुञ्ज नायक

क भक्त हित अवतार ॥१॥ अथ मच चरणसरोज वन्दों श्याम घन गोपाल ॥ मकर कुंडल गंड मंडित चारु नैन विसाल ॥२॥ बालराम सहित विनोद लीला सें करहेता दास परमानन्द प्रभू हरि निगमबोलन नेन ॥३॥ और आसक्ति को गायो।

रागपूरवी ॥

मेरो माई माधो सों मन लाग्यो ॥ मेरो नैन और कमल नेन कों दू कठोरो करि साग्यो ॥१॥ लोक वेद की कानि तजी मे न्योंतो अपने आन्यो ॥ एक गोविंद चरण के कारण वैर सबनसों ठान्यो ॥२॥ अब कों भिन्न होय मेरी सजनी दूध मिल्यो जैसें पान्यो ॥ परमानन्द प्रभु मिली गिरधर सों है पहली पहचान्यो ॥३॥

ऐसे पद परमानन्द दास नें गाए ता पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू सेन आरती करि श्रीनाथजी कों पोढ़ाये तब अनोसर करि आप नीचें पधारे तब परमानन्द दास हू नीचे आय बैठे तब रामदास भीतरियानें परमानन्द दास कों महाप्रसाद दूध पठायो सो दूध परमानन्द दास जी लेवे लागे तब तातो लाग्यो तब परमानन्द दास जीनें सीरो करि कें लीयो ता पाछें रामदास नें पूछो जो तुम कों महाप्रसाद दूध पठायो हो सो आयो तब परमानन्द दास नें कही जो हां आयो परि दूध बहुत तातो हुतो सो ऐसो दूध श्री ठाकुर जी कैसें आरोगत होंगे ताते दूध नेंक सुहातो भलो तब रामदास नें कह्यो जो बहुत आछो आप भगवदीय हो जैसें आज्ञा करोगे तैसें करेंगे तब सकारें सब सेवक

स्नान करि कें श्रीगोवर्द्धन नाथजी की सेवामें तत्पर भये तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें स्नान करिकें श्रीगिरराज उपर पधारे तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ जगाए तब तासमय परमानन्ददासजीजाय कें श्रीठाकुरजी के जगायवे कौ पद गायो सो पद ॥

राग विभास

जागो गोपाल लाल मुख देखों तेरो ॥ पाछें गृहका ज करौं नित्य नेम मेरो ॥१॥ विगसत निसा अरुण दिसा उदित भयो भान ॥ गुंजत अलि पंकज वन जागिये भगवान ॥२॥ द्वारे ठाडे वंदीजन करतहें पुकार ॥ वंस प्रसंग गावत हरि लीला सार ॥३॥ परमानंद स्वामी दयाल जगत मंगलरूप ॥ वेद पुराण पढत महिमा लीला अनूप ॥४॥

यह पद परमानन्द दास नें गायो फिर कलेउ कौ पद गायो ॥ सो पद

राग रामकली

पिछवारे ह्वे ग्वालन टेर सुनायो ॥ कमल नैन प्यारो करत कलेउ कोटन मुखलों आयो ॥१॥ अरी मैया मैया एक वन ब्याय रही हे बछरा उहांही बसायो ॥ मुरली लईन लकुटिया न लीनी अरवराय कोउ सखान बुलायो ॥२॥ चकृत भई नंद जू की रानी सत्य आयकि धों अपनो पायो ॥ फूलीन अंगस मातर सब त्रिभुवन पति सिर छत्र जो छायो ॥३॥ मिल बैठे संकेत सघन वन विविधि भांति कीयो मन भायो ॥ परमानन्द सयानी ग्वालनि उलटि अंग मि

रधर पिय प्यायौ ॥४॥

ऐसे पद परमानंद दास नें गायौ ता पाछें श्री गोवर्द्धननाथ जी के मंगला के दर्शन खुले तब परमानन्द दास नें श्री गोवर्द्धन नाथ जी सों पूछी जो आप तो दूध क्यों आरोगत हो तब श्री नाथ जी नें कह्यौ जो थे हम कों समर्पत हैं सो आरोगत हैं ता पाछें परमानन्द दास जी नित्य कीर्तन करि कें सुनावते तब ता समय एक राजा दर्शन कों आयौ सो श्री गोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करे तब फेरि आय कें रानी सों कही जो श्री गोवर्द्धननाथ जी ठाकुर बहुत सुन्दर हैं तातें तू जाय कें दर्शन करि आउ तब रानी ने कही जो जैसें हमारी रीति हैं सो होय तौ दर्शन करें तब राजा ने कही जो श्री गोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन में काहे को परदा है तब रानी ने मानी नहीं तब राजा नें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों दीनता कीनी जो महाराज में तो रानी सों बहुत कहत हों परि वह आवत नाहीं तातें आप कृपा करि कें दर्शन करावो तो वह करे तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कही जो यहां से आवो जो प्रथम वाकों एकांत में दर्शन करवावेंगे ता पाछें और लोग दर्शन करेंगे तब राजा अपनी रानी कों लिवाय कें श्री गोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करवाये सो सब लोग सरकि गये तब रानी दर्शन करिबे लागी तब इतने में श्री गोवर्द्धन नाथ जी नें सिंह पौर के किवाड़ खोल दीये सो सब भीर दौरि कें रानी के ऊपर परी सो रानी के सब वस्त्र निकस परे

और बहुत लज्जित भई तब राजा नें रानी सों कही जो मैं
नें तो तोसों पहिलेंही कह्यौ हुतो जो श्रीठाकुर जी के द
र्शन में काहे कों परदा है ये ब्रज के ठाकुर हैं इन नें का
हू कौ परदा राख्यौ नाहीं तब वा समय परमानन्द
दास जीनें पद गायौ ॥

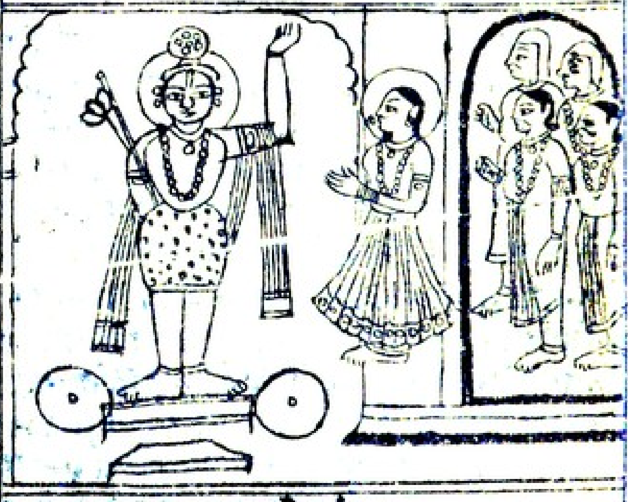

राग देवगंधार

कौन यह खेलबे की बानि ॥ मदन गोपाल लाल का
हू की राखत नाहिन कानि ॥१॥ यह एक तुक परमा
नन्द दास जी नें गाई हुती तब श्री आचार्य जी महा
प्रभून नें कह्यौ जो परमानन्द दास ऐसें कहौ जो
भली यह खेलबे की बानि ॥ तब परमानन्द दास
नें ऐसो ही पद गायौ ॥ (सो पद)

राग देवगंधार

भलीयह खेलवे की वानि ॥ मदन गोपाल लाल का हू की नाहिन राखत कानि ॥ १ ॥ अपने हाथ लै देत हैं चन वर दूधदही घृत सानि ॥ जो वरजों तो आंख दिखावे पर धन को दिन दान ॥ २ ॥ सुनरीजसोधा सुत के करतव पहले मांट मथानि ॥ फेर डारि दधि डारि आजर में कौन सहै नित हानि ॥ ३ ॥ ठाडी देख त नंदजू की रानी मूंदि कमल मुख हानि ॥ परमा नंद दास जानत हैं वोलि वूझि धों आनि ॥

यह पद परमानन्द दास नें गायो ता पाछें कितेक पद गाए जो जो लीला श्री ठाकुर जी नें करी सो ता ता लीला के पद परमानन्द दास ने गायो सो एक दिन भगवदीय रामदास जी और कृस्नदास जी कुंभन दास जी सव वैस्नव मिलकें परमानंद जी जहां रह तहुते तहां आये सो भगवदीय आए जानि कें परमा नन्द दास जी वहुत प्रसन्न भये जो आज मेरे घर भ गवदीय आये हैं सो मेरो वडो भाग्य है और आज मेरो भाग्य सिद्धि भयो है सो काहे ते जो श्री ठाकुर जी भगवदीय के हृदय में सदा सर्वदा विराजत हैं ताते भगवदीयन की कृपा होय तो श्री ठाकुर जी अनुग्रह करें जो ये सव भगवदीय मेरें घर पधारे हैं सो प्रथम भगवदीय की न्योछावरि करी चाहि ये जो ऐसो तो कछु नाहीं जो न्योछावर करों ज व यह विचार कें परमानंद दास ने ऐसो ही पद ग ह्यो सो पद ॥

रागहमीर

आये मेरे नन्द नंदन के प्यारे ॥ मालातिलक मनो
हर बानों त्रिभुवन के उजियारे ॥१॥ प्रेमसहत वसत
मन मोहन नेकहुं टरत न टारे ॥ ह्रदय कमल के मध्य
बिराजत श्री व्रजराज दुलारे ॥२॥ कहाजानों कौन
पुराय प्रगट भयो मेरे घर जो पधारे ॥ परमानंद प्र
भु करी न्योछावर वार वार हों वारे ॥३॥

यह पद भगवदीय न को भेट करि अपने आए
भगवदीयन को बिदा कीये ता पाछे ऐसी रीत सों पर
मानन्ददास नें श्रीनाथजी की भली भांति सों सेवा
कीनी सो वे परमानन्द दास जी श्री आचार्य जी म
हाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे सो इनकी
वार्ता कहां तांई लिखियें ॥ ०

वार्ता प्रसंग ॥५॥ वैस्नव ८२॥ संबंध ॥१९६॥

अब श्री आचार्य जी महा
प्रभून के सेवक कुंभ
नदास गोरवा ति
न की वार्ता
है॥

सो वे कुंभनदास जी श्री गोवर्द्धन पर्वत के पास
जमुनावतो गांव है तामें रहते सो जमुनावतो नाम
या गाम को काहेते है जो जमुनाजी को प्रवाह सा
रस्वत कल्प में याके निकट हुतो ताते जमुनावतो ना
म या गाम को है तामें कुंभनदास जी रहते और प
रासोली चंद सरोवर के ऊपर उनकी नदास जी की
धरती हुती सो वहां खेती करते सो कुम्भनदास

जी श्री गोवर्द्धननाथ जी के परमसखा हुते और कृपा पात्र हुते सो अबही श्री गोवर्द्धननाथ जी प्रगट होय कें श्री महाप्रभूजी कों बुलावेंगे तब ये भगवदीय प्रसिद्ध होयंगे सो एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू पृथ्वी परिक्रमा करत झार खंड में पधारे सो झारखंड में श्री गोवर्द्धन नाथजी नें आज्ञा दीनी जो हम गोवर्द्धन में तीन दमन हैं ॥ नागदमन, इन्द्र दमन, देव दमन, तिनके मध्य में हम देव दमन हैं सो मेरो नाम है ताते तुम आय कें हमको पधरावो और हमारी सेवा को प्रकार प्रगट करो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पृथ्वी परिक्रमा उहां ही राखि के वेग पधारे तब दामोदर दास हरसानी कृष्ण दास मेघन गोविंद दुबे जगन्नाथ जोसी रामदास ये पांच वैष्णव संग हुते सो श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री गोवर्द्धन की तरहटी आय कें सद्दू पांडे के चौंतरा उपर बिराजे सो आगें श्री गोवर्द्धन नाथ जी के प्रागट्य में यह सद्दू पांडे भवानी नरो श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक भये हुते तिनको श्री आचार्यजी महाप्रभून नें श्री गोवर्द्धन नाथ जी की सेवा सोंपी और ब्रजवासी ब्रज में श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक बहुत भए और कुम्भनदास जी श्री आचार्य जी महाप्रभून की सरण आये सो श्री आचार्यजी महाप्रभून नें श्री गोवर्द्धननाथ जी को एक छोटो सो मन्दिर सिद्ध करवायो तामें श्री नाथजी को पधराये और रामदास चौहान कूं सेवा की आज्ञा

दीनी और सब व्रजवासी लोग दूध दही माखन लावते सो श्री गोवर्द्धन नाथजी आरोगत हुते और रामदास कों जो भगवद इच्छा ते जो आप पास होय सो भोग धरते और आप प्रसाद लेते और जे व्रजवासी लोग श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक भये हुते तिन कों श्री आचार्यजी महाप्रभून नें आज्ञा दीनी जो यह मेरो सर्वस्व हे सो तुम सब वातन सों यत्न राखियों और सेवा में तत्पर रहियो और कुंभनदास कों और सब सेवकन कों श्री आचार्यजी महाप्रभून नें आज्ञा दीनी जो तुम देवदमन के दर्शन किये बिना महाप्रसाद मति लीजियो तब या भांति सों आज्ञा करि कें श्री आचार्यजी महाप्रभून नें पृथ्वी परिक्रमा झारखंड में राखी हुती अब कुंभनदासजी नित्य श्री आचार्यजी महाप्रभून की कृपा ते श्री गोवर्द्धननाथजी के दर्शन कों आवते सो कुंभनदासजी कीर्तन बहुत नीके गावते जो श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कुंभनदासजी कों नाम सुनायो और ब्रह्मसंबंध कराया तब कुम्भनदासजी नित्य नए पद करि कें श्री ·· नाथजी कों सुनावते और श्री नाथजी कुंभनदासजी के घर पधारते और बहुत क्रीड़ा करते खेलते वार्ता करते और बहुत कृपा कुंभनदासजी के उपर करते अब रामदासजी श्री गोवर्द्धननाथजी की सेवा करन लागे सो एक समय म्लेछ कौ उपद्रव भयो सो यहां मानिकचंद पांडे सद्दू पांडे रामदास चौहान कुंभनदास सब मिल कें विचार कीयो

जो यह मलेछ आयौ है सो यह धर्म कौ द्वेषी है सो
कहा कर्तव्य है तब सबने कही जो यामें कहा क
र्तव्य कहा पूछनों आपनें विचारसों कहा होत है ता
ते श्रीनाथजी कों पूछो जो महाराज कहा करें तब श्री
नाथजी नें आज्ञा दीनी जो हम कों यहां ते ले चलो हम
यहां ते उठेंगे तब सबन नें पूछो जो महाराज कहां प
धारोगे तब आपनें श्री मुख सों कह्यो जो टोंड के घ
ने में चलेंगे तब एक भैंसा मंगायो ता पर श्री गोवर्द्धन
नाथजी कों बैठारे तब एक ओर ते तो रामदास पक
रें रहे और एक ओर ते कुंभनदास जी पकरें रहे और

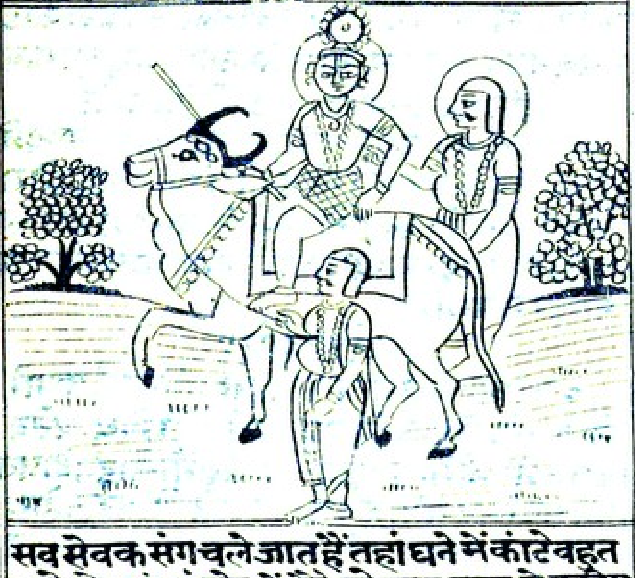

सब सेवक संग चले जात हैं तहां घने में कांटे बहुत
हुते सो उन्हां कांटेन में बैठे सो वस्त्र सबन के फटिग

ये ओर सरीर में कांटे लगे दुख बहुत पायो सो घनेमें एक तालाब हुतो तहां रूखन कौ एक चौक हे त हां वांहे रूखनीचे श्री नाथजी विराजे सो कछूक सा मिग्री संगहह हुती सो रामदास ने भोग धरि जल को करूआ भरि के आगें धरि कें सब वैष्णव वेठे तब श्री गोवर्द्धन नाथजी नें कुंभनदास सों कह्यो जो कुंभन दासजी कछू गावौ तव कुंभन दासजी तो मन में ५ कुढ़ रहे हुते तब एक पद नयो करिकें गायो ।। सो प द

राग सारंग

भावत हे तोय टोड़ को घनों ।। कांटे लगे गोखरू फूटे फटी जात यह तनों ।।१।। सिंहों कहालोक टी कौ डे र यह कहा वानक बन्यो ।। कुंभनदास प्रभु तुम गोव र्द्धन धर वह कोंन रांड ढेडनी को जन्यो

यह पद कुंभन दास ने गायो सो सुनि कें श्री नाथजी मुसिकाय कें चुप करि रहे इतने में श्री गोवर्द्धनतें स माचार आये जो वह मलेछ की फ़ौज आई हुती सो पाछी फिर गई तब श्री गोवर्द्धननाथजी पर्वत उपर मन्दिर में पधारे ।।

वार्ताप्रसंग १

अब श्री नाथजी पर्वत उपर मन्दिर में पधारे सो ब्रज के लोगन कों बहुत हर्ष भयो जो धन्य देव दमन जो ऐसो उपद्रव आयो हुतो सो इनके प्रताप तें सब मिट गयो तब कुंभनदास जी प्रसन्न होय कें पद गाए सो पद श्री गोवर्द्धन नाथजी कों सुना ये ।। ✢

रागश्री ॥ चर्चरी

जयति जयति हरि दास सर्व धरने ॥ यह पद सम्पूरन करिकें गायो पाछें और पद गाये सो पर

रागसारंग ।

कुसुम तंनतर या तीर ॥ यह पद सम्पूरन करकें कुंभनदास नें गायो पाछें नित्य ऐसे पद कुंभनदासजी देव दमन कों सुनावते तव कुंभनदासजी के पद सव जगत में प्रसिद्धि भये सो सब लोग इनके पद गावते तव इनको पद काहू कलामत ने सीख्यो सो फतेपुर सीकरी में देसाधिपति के आगें कुंभनदासजी को पद कीयो भयो पद वा कलामतने गायो सो सुन कें देसाधिपत को चित्त वा पद में गड गायो और माथौ धुन्यो जो ऐसे हू महापुरुष हें गये हैं जिनकों ऐसे दर्शन परमेश्वर के होत हैं तव वा कलामतने कह्यो जो अजी साहव अवहू हैं सो सुनि के देशाधिपति वहुत प्रसन्न भयो और वा कलामत सों कह्यो जो वे कहां हैं तव वा कलामत नें कही जो श्री गोवर्द्धन के पास जमुनावतो गांव है तहां वे रहत हैं तव देसाधिपतिनें कही जो यहां बुलावो हम उनसों मिलेंगे तव देसाधिपति ने मनुष्य और असवारी कुंभनदासजी के बुलायवों कों भेजे तव कुंभनदासजी तो घर हुते प रसोली में बैठे हुते सो मनुष्यन नें उहां वताय दीये तव कुंभनदास जी घर तो हुते नाहीं पातसाह ने याद कीये हो तव कुंभनदास दास ने कही जो भैया में कछू देशाधिपति को चाकर तो नाही मेरो देसाधिपति सों

कहा काम है तब देसाधिपति के मनुष्यन नें कही जो
बावा हम तौ काम कछु समझत नाहीं परि हम कों
देसाधिपति कौ हुकम है जो कुंभनदास कों ले आवो
तातें यह पालकी है यह घोड़ा है जा पर चाहो ता पर बै
ठि कें चलिये हम तौ आये हैं सो आप कों ले जायगे
तब कुंभनदास ने मन में विचार कीयो जो विना जाये
तो निर्वाह न होय गो सो कुंभनदास जी ततकाल उ
हां ते पनहीं पहरि कें चले तब कुंभनदास जी कों जो ले
वे कों आये हुते तिन नें कही जो बावा सवारी में बैठि
ये तब कुंभनदास नें कह्यो जो भैया मैं तो कबहूं बैठ्यौ
नाहीं पाऊं ऐसें ही चले सो फतेपुर सीकरी आय पहुं
चे सो देसाधिपति के डेरा हुते तहां गए तब मनुष्य न
नें देसाधिपति सों कह्यो जो कुंभनदास जी आये हैं त
ब देसाधिपति नें कुंभनदास सों कही जो कुंभनदास जी
आवो बैठो सो आय बैठे सो वह स्थल कैसो है जामें
जड़ाव की रावटी तामें मोतीन की झालरि लगी है
ऐसो स्थल हो तामें बैठे तब मन में बहुत दुख लाग्यो
और कह्यो जो यासों तो हमारे व्रज के हींसन के रूख
आछे हैं सो जिनमें श्री गोवर्द्धननाथ जी खेलत हैं
तब इतने में देसाधिपति बोल्यो जो कुंभनदास जी तु
मने विसनपद बहुत कीये हैं सो मैंनें तुम कों बुलायो है
तातें तुम कछु विसन पद गावो तब कुंभनदास जी
तो मन में कुढ़े हुते जो विचारें जो कहा गाउं मेरी वाणी
के भक्ता तो श्री गोवर्द्धनधर हैं और कछु पारा बिना
औरे काम चलेगो नाहीं तातें ऐसो गाउं जो कबहूं

मेरो नाम न लेय काहे ते जो याके संगते मेरे प्रभू छूटे हैं तातें कछू कठोर वचन कहूं जो बुरो मानेगो तो कहा करे गो तब यह मन में आई जो जाको मन मोहन संग करे ॥ कोके सब ते नहीं मिरत जो जग बैर परे यह विचारिकें ता समय कुंभन दासजीनें एक नयो पद करि कें गायो। सो पद ॥

राग सारंग

भक्तन को कहा सीकरी काम ॥ आवत जात पन्हैया टूटी बिसर गयो हरि नाम ॥१॥ जाको मुख देखे दुख लागे ताको करन परी परनाम ॥ कुंभनदास लाल गिरधर बिन यह सब झूंठो धाम ॥२॥

यह पद गायो सो सुनि कें देसाधिपति अपने मन में बहुत कुढ्यो और कह्यो जो इनको काहू बात को लालच होयतो ये मेरो जस गामें इनकों तो अपने परमेश्वर सों सांचो स्नेह है इतनो कहि कें देसाधिपति नें कुंभनदास को सीख दीनी तब कुंभनदास जी उहां ते चले सो मार्ग में आवत आति क्लेश जो कबहों प्रभून को मुख देखों सो ऐसो विचार कें कुंभनदास जी आवत हें ता समय पद गायो सो पद ॥

राग धनाश्री

कबहूं देखिहों इन नैनन ॥ सुन्दर श्याम मनोहर मूरत अंग अंग सुख दैनन ॥१॥ वृन्दावन विहार दिन दिन प्रति गोप वृन्द संग लैनन ॥ हंसि हंसि हरग्व पतो वन पावन बांटि बांटि पय फेनन ॥२॥ कुंभनदास कि ते दिन बीते किये रेणु सुख सैनन ॥ आवगिरधारि

न निस और वासर मन न रहत कोां चैननु ॥ ३॥

यह पद मार्ग में गावत आए सो आय के श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन कीये और दोय दिन सों दर्शन न भए सो कुंभनदास जी को दोय जुग की यरावर बीते सो श्री मुख देखत ही सब दुख विसर गयो तब एक पद गायो सो पद ॥

राग धनाश्री

नैन भरि देखौ नन्द कुमार ॥ ता दिन ते सब भूलि गयौ हौं विसर्यौ मन परवार ॥ १॥ विन देखें हौं विकल भयौ हौं अंग अंग सब हारि ॥ ताते सुधि है सामरि मूरति की लोचन भरि भरि वार ॥ २॥ रूप रास पर मित नही मानों कैसें मिमैलों कन्हाई ॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्द्धन धर मिलिये बहुर री माई ॥ ३॥

राग धनाश्री

छिनगन कठिन है या मन को ॥ जाके लिये देखि मेरी सजनी लाज गई सब तन को ॥ १॥ धर्म जाउ अरु लोग हंसो सब अरु पावो कुल गारी ॥ सो क्यों रहे ताहि विन देखें जो जाको हितकारी ॥ २॥ रस लुब्धक निमख छांडत ज्यों आधीन मृग गानों ॥ कुंभनदास सनेह मरम श्रीगोवर्द्धन धर जानों ॥

ऐसे पद बहुत कुंभनदास जी ने गाये सो सुनि के श्रीनाथ जी बहुत प्रसन्न भए और कह्यो यह मो विन रहत नाहीं ॥ ❀

वार्ता प्रसंग ॥ २॥

और एक समय राजा मानसिंह सब ठौर ते दिग्विजय

करि कें अपने देस कूं चले तब मन में विचारे जो बहुत
दिन में आये हैं ताते मथुरा विन्द्रावन होय कें चलनों
सो यह विचार कें आगरे ते चले सो मथुरा आए तब
विश्रांत स्नान करि कें श्री केसोरायजी के दर्शन करि
कें वृन्दावन चले सो उष्णकाल के दिन हुते तब वृन्दा
वन के सब महंतन ने जानी जो आज यहां राजा मान
सिंह दर्शन कों आवेगो सो यह जानि कें श्री ठाकुरजी
कों आछे आछे जरी के वागे बहुत आभरन पहराये
पिछवाई चंदोवा सब जरीन के बांधे इतने में राजा मान
सिंह दर्शन कों आयो सो भीतर मन्दिर के आय कें
श्री ठाकुर जी के दर्शन किये सो उष्णकाल के दिन हु
ते सो बहुत गरमी पड़े सो ता समय राजा मानसिंह पै ठा
डो न रह्यौ गयो सो ऐसे दर्शन चार पांच जगह बड़े हु
ते सो तहां सब ठौर दर्शन करि सब ठौर ते विदा होय
कें आपने डेरा में आये सो डेरा आय कें मन में विचारे
जो अबही कूंच करें सो उहां सों असवार होय कें च
ले सो तीसरे पहर गोवर्द्धनगाव आये सो मानसीगं
गा ऊपर डेरा किये सो तहां श्री हरदेवजी के दर्शन किये
सो वहां वृन्दावन के महंतन नें बड़े ठाठ बनाये हते मैसोई
यहां ठाठ बनाय राख्यो हुतो सो राजा मानसिंह तहां ते
दर्शन करि कें चले तब काहू नें कही जो महाराज यहां
श्री गोवर्द्धननाथ जी बहुत सुन्दर ठाकुर हैं तहां आप
दर्शन कों धारो तब राजा मानसिंह ने कह्यो जो यहां तो
अवश्य चलनों ये ठाकुर सब ब्रज के राजा हैं ताते इ
नके दर्शन तो अवश्य करने तब तहां ते चले सो गोप

लपुर गाम आए तब आय कें पूछी जो दर्शन कौ कहा
समय है तब काहू ने कही जो उत्थापन के दर्शन तौ
होय चुके हैं अब भोग के दर्शन होयंगे तब यह सुनिकें
राजा मान सिंह श्री गोवर्द्धननाथ जी के दर्शन कों गि
रराज ऊपर आये सो उष्णकाल के दिन मार्ग के श्रमि
त ह्वै के चले आये सो गरमी में राजा बहुत व्याकुल
भयो हुतौ इतने में भोग के किवाड़ खुले सो राजा मान
सिंह कों मणि कोठा में लेगये तिन दिनन में श्रीनाथजी
की सेवा वैभव सों होतो हुतो बड़ो मन्दिर सिद्ध भयो
हुतो श्री गोवर्द्धननाथ जी के आगें गुलाब जल कौ
सिंगार भयो हुतौ निज मन्दिर मणि कोठा निवारी स
ब जल मय होय रहे हुते सो ता समय राजामानसिंह

दर्शन कों गये हते सो श्री गोवर्द्धननाथ जी के दर्शन करि कें साष्टांग दंडवत कीनी और गरमी में राजा व्याकुल भयो हतो सो सीतलताई भई बड़ो चैन भयो और श्री गोवर्द्धननाथ जी को श्री मुख देखि कें राजा बहुत प्रसन्न भयो और कही जो साक्षात पुरुषोत्तम श्री कृष्ण वृन्दावनचन्द्र श्री गोवर्द्धननाथ जी हैं आगे श्री भागवत में सुन्यो हतो सो आज देखे आज है दिन सो धन्य है और आज मेरो बड़ो भाग्य है और मन में कह्यो जो यह भोग को समय है सो तो प्रभून को राजधानी है समय है सो वे प्रभू बिराजे हैं आगे ताल मृदंग बाजत हैं कीर्तन होत है सो कुंभनदास जी ठाड़े ठाड़े भीतर कंठा पे दर्शन करत हैं और कीर्तन गावत हैं सो राजा मानसिंह को मन या पद में गाढ़ गयो हतो जैसोई कोटि कंदर्प लावण्य स्वरूप और जैसोई कीर्तन कुंभनदास जी करत हुते सो पद ॥

राग नट ॥

रूप देखि नैना पल लागे नहीं ॥ गोवर्द्धन के अंग अंग प्रति निरखि नैन मन रहत नहीं ॥ १ ॥ कहा कहों कछु कहत न आवे चित चोरयो मेरा नंद रही ॥ कुंभनदास प्रभू के मिलन को सुन्दर बात सखिन सों कही ॥

राग धनाश्री

आवत मोहन मन जु हरयो है ॥ हौं जु अपने सदन सों बैठी निरखि बदन अरु सिखा बिसरयो है ॥ १ ॥ रूप निधान रसिक नंद नंदन निरखि बदन धीरज न धरयो है ॥ कुंभनदास प्रभू गोवर्द्धन धर अंग अंग प्रेम

पियूष भर्यो हो॥ ४॥

ऐसे पद कुंभनदासजी गावत हे इतने में राजभो
ग के दर्शन हो चुके तब राजा मान सिंह दंडौत करि
के अपने डेरा में गयो तब कुंभनदास जी संध्या आरती
के दर्शन करिकें अपनी सेवा सों पहुंचि कें अपने घर
कों गये तब राजा मानसिंह अपने डेरा में जाय कें आप
ने पास के मनुष्य हुते तिनमें श्री गोवर्द्धननाथजी के
सिंगार की वार्ता करन लागे और कह्यो जो यह श्री

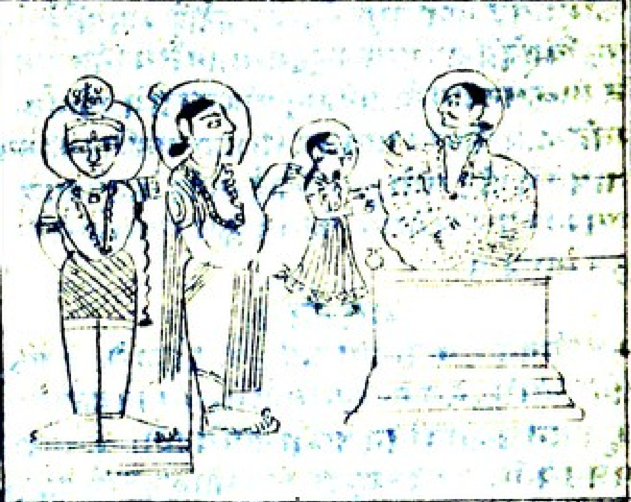

गोवर्द्धननाथ जी के आगें कौन गावत हुतो इननें ऐसे
विसन पद गाये हैं जो कछु कहिबे में नाहीं आवत
तब काहू ने कही जो महाराज एक ब्रजवासी है कुंभ
नदास नाम है सो आप सुनेही होयगे देसाधिपति सो

मिले हुते सो हैं तब राजा मानसिंह नें कही जो हम कुंभ
नसों मिलें तो आछौ तब राजा मानसिंह सवारे उठ
के श्री गिरराज की परिक्रमा कों निकसे जो परासो
ली आए सो परासोली में कुंभनदास जी न्हाय के बैठे
इतने में श्री गोवर्द्धननाथ जी पधारे सो श्री मुख सों
कहें जो कुंभनदास जी होते तौ सो एक बात कहूंगो ॥
तब इतने में राजा मानसिंह आयो सो कुंभनदास जी
कों प्रनाम करिकें बैठो और श्रीनाथ जी तो उहां तेद
रजाय ठाढे भए सो श्रीनाथ जी तो एक कुंभनदास
जी कों देखें हैं और इनकी भतीजी कों देखें हैं तब कुं
भनदास जी की दृष्टि तो श्रीनाथ जी के संग ही गई सो
श्रीनाथ जी बैठे हैं तहां कुंभनदास जी देखें सो कौन
य भतीजी बोली जो बाबा राजा बैठे हैं तब कुंभनदास
जीनें कही जो मैं कहा करूं जो बैठे हैं तो बात कह
हुते सो तो भाजि गये सो अब कहेंगे तब दूसरें श्रीना
थजी कहें जो कुंभनदास मैं बात कहूंगा तब कुंभनदा
सजी प्रसन्न भये और भतीजी सों कहौ जो आपुको
आरसी लाउ तिलक करों तब भतीजी नें कही जो
बाबा आरसी तो पड़िया पी गई तब राजा नें कुंभन
दास की भतीजी सों कही जो अरी छोरी पड़िया क
हा पी गई तब वह कटोरा में पानी लायकें कुंभन
दास जी के आगें धर्यो तब कुंभनदास जी वा में दे
खि कें तिलक करन लागे इतने में राजा मानसिंह
नें अपनी सोने की आरसी कुंभनदास जी के आगें
धरी और कह्यौ जो बाबा यामें देखिकें तिलक करि

ये तब कुंभनदास जी बोले जो। अरे भैया याकों हों क
हा करूंगो हमारे तो यहां कानि के घर हैं तातें कोउ
याके पाछें हमारो जीव लेयगो तातें हमें तो यह नाहीं
चहियत है तब राजा मानसिंह नें इनके आगे सोने
की थैली धरी तब कुंभनदास ने कह्यो जो भैया हम
कों तो यह नाहीं चहियत हमारे तो यह खेती है ता
को धन आवत है सो खात हैं तब राजा मानसिंह नें
कह्यो जो भलो आप को गांव है ताकों लिखवाहों क
रि दें तब कुंभनदास नें कह्यो जो भैया हों तो ब्राह्म
ण नाहीं जो तेरो उदक लेउं तब फेरि राजा मानसिंह
नें कह्यो जो बाबा कछु तो आज्ञा करो तब कुंभन
दास नें कह्यो जो हमारो कह्यो करोगे तब राजा मान
सिंह नें हाथ जोर कह्यो जो आप कहोगे सो करूंगो
तब कुंभनदास नें कह्यो जो फेरि मेरे पास तुम मति
आइयो तब राजा मानसिंह नें कह्यो जो धन्य है मा
या के भक्त तो सगरी पृथ्वी में फिर्यो सो बहुत देखे
परि भगवद भक्त तो एक यही देखे यह कहि कें राजा
मानसिंह कुंभनदास कों दंडौत करि कें उठि चल्यो
तब फेरि आय कें कुंभनदास नें श्रीनाथजी नें व
ह बात कही और बहुत प्रसन्न भये तब फेरि कुं
भनदास जी श्री गिरिराज ऊपर आय कें श्रीनाथजी
की सेवा में तत्पर भये॥

वार्ता प्रसंग ३

और एक समय कुंभनदास जी कों मिलिवे कों
वृन्दावन के सगरे हरिवंसभक्त आये सो यह जानि

कें आये सो महापुरुष हैं इनसों श्री ठाकुर जी बोलत हैं बातें करत हैं और काव्य इनकी सुनी सो कीर्तन बहु
समुन्दर कीये ताते ऐसे पद श्री ठाकुर जी के साक्षा
त कार बिना न होंय यह जानि कें कुंभनदास सों मि
लवे आये सो कुंभनदास जी सों मिलि कें बहुत प्रसन्न
भए और कह्यो जो कुंभनदास जी तुमनें विसन पद
बहुत कीये हैं सो हमनें आय कें सुने हैं और आप के
पद श्री स्वामिनी जी को नाहीं सुन्यो ताते आप कोई
स्वामिनी जी को पद सुनावो तब कुंभनदास जीने श्री
स्वामिनी जी को पद करि कें गायो सो पद ✣

राग राम कली

ताल चरचरी ✣

कुमरि राधिका के तुव सकल सौभाग्य की वा वदन
पर कोटि सत चंद्र वारों ॥ खंजन कुरंग सत कोटि जं
घन ऊपर सिंह सत कोटि उपन्यों छा वर उतारो मत्त स
न कोटि चालि पर कुंभ सत कोटि इन कुचन पर वारि
डारों ॥१॥ कीर दश कोटि दशनन परि कहिन वारो
पंक के दूर वहू के सत कोटि अधरन ऊपर वारि रुचिर
गर्भ टारों ॥ नाग सत कोटि वेनी उपर कपोत सत को
टि करि जुगल परवार नें नाहिन कोउ लोक उपमा जु
धारों ॥२॥ दास कुंभन स्वामिनी सुन खासिख आनि
अद्भुत सुठान कहां लगि समारों ॥ लाल गिरधर क
हत मोहि तोहि लो जीव हू रूप छिन छिन निहारों ✣
॥३॥ ✣ ✣ ✣ यह प
द कुंभनदास ने गायो सो सुनि कें महंत बहुत ही रीझे

और कहें जो हमने श्री स्वामिनी जी के पद बहुत कीये
हें परि बहां उपमा दीनी हे और वार फेरि डारी ताते कुं
भन दास जी आप बड़े महा पुरुष हो आप की सराहना
कहां तांई करिये ता महंत ने कुंभन दास की बड़ी बड़ा
ई करी बहुत रीझे ता पाछे वे महंत आदि सब कुंभन
दास जी सों बिदा होय कें अपने घर गये ॥

वार्ता प्रसंग ॥ ८ ॥

और एक समय श्री गुसांई जी श्री गोकुल में आप
ने घर ते श्री नवनीत पिया जी सों आज्ञा मांगि कें वि
देसार्थ द्वारिका कों पधारे सो श्री गुसांई जी श्री ना-
थ जी द्वार पधारे सो श्री नाथ जी कों सेवा सिंगार की
ये ता पाछे आप भोजन करि कें गादी उपर विराजे तब
सब सेवक दर्शन कों आये तब बात चलत में कुंभन
दास जी की बात चली तब काहू बैष्णव नें कह्यो जो
महाराज कुंभन दास जी कों द्रव्य को बहुत संकोच हे
सात बेटा हू हें और उपजत तो एक खेती की हे ताको
धन आवत हे तासों निर्वाह करत हे सो यह बात श्री
गुसांई जी ने अपने मन में राखी ता पाछें उत्थापन के
समय कुंभन दास जी दर्शन कों आये तब श्री गुसांई
अपने श्री मुख सों कहें जो कुंभन दास हम श्री द्वा
रिका रणछोड़ जी के दर्शन कों पधारेंगे और विदेस
हू होयगो बैस्नवन ने बहुत करि कें लिख्यो हे ताते जो
तुम संग चलो तो विदेस में भगवदीय को गह काल
बाधा न होय तब भगवदीय को काल व्यतीत हो जाय
कछू जान्यो न परे और में सुन्यो हो जो कछु तुम्हारें द्र

थ्य कौ संकोच हैं सो उहां सिद्धि होयगो ताते सर्वथा
तुम कों चल्यो चाहिये तब कुंभन दास ने कही जो आ
छो इतने में दर्शन को समय भयो सो श्री गुसांई जी
आप स्नान करिकें श्रीनाथ जी के मन्दिर में पधारे
श्रीनाथ जी की सेवा सों पहुंच कें श्रीनाथ जी कों पो
ढाय के बैठक में पधारे और कुंभनदास जी कों सीख
दीनी जो कुंभनदास जी तुम सेवा ते पहुंच कें वेग आइ
यो हम काल्हि आरती करिकें अपछरा कुंड उपर जा
यरहेंगे तब कुंभनदास जी श्री गुसांई जी को दंडोत
करकें अपने घर कों आये सवार सेवा सों पहुंचि कें
श्रीनाथ जी के दर्शन करिकें अपछरा कुंड उपर आ
ये और श्री गुसांई जी श्री नाथ सों सीख मांगि कें आ
पनीचे आये पाछें आप भोजन कीये और सब सेव
कन कों महाप्रशाद लिवायो सो पाछें ताही समय कें
महूर्त हुतो सो श्री गुसांई आप पर्वत नीचे आये सो
अपछरा कुंड उपर आये सो वहां अपछरा उपर डेरों
करे हुते सब सेवक आगाउ सो ठाढे हुते सो श्री गुसांई
जी डेरा पधारि कें पोढे इतने में सब सेवक सामान ले
कें वेउ आये सो कुंभनदास उहां बैठि कें विचारत हुते क
हिये जो कहिवे को होय प्राननाथ बिछुरन की बिरियां
जानत नाहिन कोउ यह विचार करत उत्थापन को स
मयो तब श्री गुसांई जी आप भीतर डेरा में जागे औ
र कुंभनदास जी कूं दर्शन की सुधि आई सो यहां पूं
छरी की और कोने में जाय कें बैठि कीर्तन गावत हे २
और आंखिन में ते जल को प्रवाह बहत हो सो कुंभ

नदासनें एक पद गायो सो पद ॥

राग सारंग

कैसेहूं जु रहो बिन देखें ॥ तरुण किसोर रसिक नंदनंदन
कछुक उठति मुख रेखें ॥१॥ वह सोभा वह कांतिवद
नकी कोटिक चंद विसेखें ॥ वह चितवन वह हास्य म
नोहर वह नटवर वपु भेखें ॥२॥ श्याम सुन्दर संग मिलि
खेलन की आवत जिय अपेखें ॥ कुंभनदास लालगि
रधर बिन जीवन जन्म अलेखें ॥३॥

यह पद कुंभनदास नें गायो सो श्री गुसांईजी आ
पडेरा के भीतर सुनें सो कुंभनदास जी को कहनें श्री
गुसांई जी सों सह्यो न गयो सो श्री गुसांई जी आपडे
रा के बाहर पधारे और श्री मुखनें कह्यो जो कुंभन
दास अब तुम वेगि जाउ तुम्हारो बिदेस होय चुक्यो
और जो तुम्हारी अवस्था है ऐसी उनकी अवस्था है
सो कैसें जानिये जो श्री आकाजीने गज्जन धावन को
पान लेवे को पठायो सो गज्जन कोतो भगवद आसक्
ति देखे बिना एक क्षण हूं न रह्यो जाय सो गज्जन धाव
न पान लेवे कों बाहिर गये सो थोरी सी दूर गये और ज्व
र चढि आयो सो मूर्छा खाय कें गिरे और श्री आका
जी नें श्री नवनीत प्रियाजी कों भोग समर्प्यो तब श्री न
वनीत प्रियाजी नें गज्जन धावन को बोलन सुन्यो त
ब श्री नवनीत प्रियाजी नें अपने श्री मुख सों कह्यो
जो मेरो गज्जन धावन कहां है तब श्री आकाजी नें क
ह्यो जो वह तो पान लेवे कों गयो है तब श्री नवनीत
प्रियाजी ने कह्यो जो मेरो गज्जन धावन आवेगो तब

आरोगेंगे सो श्री हस्त खैंचि कें बैठि रहे तब बेगि गज्जन धावन कों बुलायो तब गज्जन धावन नें कही जो वा बा आरोगो तब श्री नवनीत प्रिया जी आरोगें हैं यह श्री आचार्य जी महा प्रभून की मर्यादा है जो जितनों सेवक को स्वामी ऊपर स्नेह होय और भगवद गीता में भगवान कहे हैं ॥ श्लोक

ये यथा मां प्रपद्यंते ॥

तांस्तथैव भजाम्यहं

यह आधो श्लोक कह्यो तातें श्री मुख सों कहे जो इहां तुम्हारी विविस्था और उनकी विवस्था है सो ऐसो: कुंभनदास कों और श्री नाथ जी कों विरह हुतो तातें श्री गुसांई जी ने कुंभनदास कों संग दीनो तब कुंभनदास ने श्री नाथ जी के दर्शन किये तब कुंभनदास नें एक पद गायो सो पद ॥

राग सारंग

जो ये चोंप मिलन की होय ॥ तो क्यों रहे ताहि बिन देखें लाख करो जिन कोय ॥१॥ जो ये विरह परस्पर व्यापै जो कछु जीव न चैनें ॥ लोक लाज कुल की मर्यादा एकौ चित न गनें ॥२॥ कुंभनदास प्रभु जाहि तन लागी और न कछु सुहाय ॥ गिरधर लाल तोहि बिन देखें छिन छिन कलप बिहाय ॥३॥

सो यह पद कुंभनदास नें श्री नाथ जी के सन्निधान गायो सो सुनि कें श्री नाथ जी बहुत प्रसन्न भए सो कुंभनदास श्री नाथ जी कों देख कें प्रसन्न भये ॥

वार्ताप्रसंग ५

और एक समय कुंभनदासजी श्री गुसांईजी के पास बैठे हुते तब कुंभनदासनें श्री गुसांईजी सों कह्यो जो महाराज बेटा डेढ़ है और हैं तो सात तब श्री गुसांईजी नें कह्यो जो कुंभनदास डेढ़ कौ कारन कहा तब फेर कुंभनदास जी कहें जो महाराज आखो बेटा तो चत्रभुजदास है और आधो बेटा कृस्नदास है सो श्रीनाथजी की गायन की सेवा करत है तासों आधो है कुंभनदास जी कृस्नदास सों आधो क्यों कहे ताको हेत यह जो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पुष्टी मार्ग प्रगट कीयो है सो पुष्टी मार्ग कहा है जो व्रज भक्तन को हेत यह मार्ग प्रगट कीयो है सो भगवदीय गाए हैं जो सेवा रीति प्रीत व्रज जन की जन हित जग प्रगटाई सो व्रजभक्तन की कहा रीति है जो श्री ठाकुर जी के सन्निधान तो सेवा करें और श्री ठाकुर जी वन में पधारे तब गुणगान करें जो ए वस्तु होय तो आखो और इनमें ते एक होय तो आधो ताते चत्रभुजदास सेवा और गुणगान है ताते आखो और कृस्नदास में एक सेवा है सो आधो तब श्री गुसांईजी श्री मुखते कहें जो भगवदीय हैं तेई बेटा हैं और बहुत भये तो कौन काम के यह चत्रभुजदास की वार्ता में लिखे हैं ॥

अब कृस्नदास की वार्ता

सो वे कृस्नदास श्रीनाथजी की गायन के ग्वाल हुते श्री गुसांईजी नें इनको गायन की सेवा दीनी हुती सो कृस्नदास श्रीनाथजी की गायन की सेवा करते सबा

रें खिरक सेवा सों पहुंच कें फेरि गाय चरायवे कौं जा
ते सो सारे दिन कृष्णदास गायन की सेवा करते सो
एक दिन गाय चराय कें पूछरी की ओर कृष्णदास गा
यन के संग आवत हुते सो सगरी गाय तो खिरक में
आई और गाय बड़ी हुती ताकौं औन बहुत भारी हु
तो सो वह गाय बहुत हरवे चलती सो वा गाय कौं
आवत अंधियारौ परिगयो सो तहां पर्वत के नीचे
अंधियारे में एक नाहर निकस्यो सो गाय पे दौर्यो
तब कृष्णदास कहे जो अरे अधर्मी यह श्रीनाथ
जी की गाय है तू भूखो होय तो मेरे ऊपर आउ तब
इतने में गाय तो भाजि खिरक में गई और नाहर ने
कृष्णदास कौं अपराध कीयो और ऊपर कहि आ

रहैं जो गाय सव खिरक में आई तव श्रीनाथजी आ
प गाय दुहिवे कों आये सो सव गाय ग्वाल दुहत हैं।
और वह वड़ी गाय खिरक में आई सो वह गाय कों
श्री दुहिवे कों वैठें और कृस्नदास वरु गया में हैं।
और वह गाय वछरा कों चाटत हैं सो ऐसे दर्शन कुं
भनदासजी कों भये ता पाछें गोदुहन करिकें श्रीना
थजी गिरराज उपर मन्दिर में पधारे तव श्रीगुसाई
जीनें भोग समर्प्यों और कुंभनदासजी खिरक में से
आये सो दंडौती सिला पास ठाड़े भये इतने में समाचा
र आये जो कृस्नदास कों नाहर नें मारौ सो सुनि कें कुं
भन दासजी मूर्छा खाय कें गिरे सो ऐसे गिरे जो देहा
नु संधान भूलि गये तव कुंभनदासजी कों सव कोउ
वुलावें परि वोलें नाहीं तव ये समाचार काहूनें श्रीगु
साई सों कहे जो महाराज कृस्नदास कों नाहर नें मा
र्यो और गाय कों कृस्नदास नें वचाई सो कृस्नदास
उहांही परे हैं तव श्री गुसांई जी कहें जो गाय कवहूं
न छोडि आवें अंत समे गाय संकल्प करत हैं ताकों
गाय उत्तम लोक कों लै जात है और कृस्नदास नें तो
श्रीनाथजी की गाय वचाई है ताते कृस्नदास कों गाय
वैकुंठ में छोड़ आवेगी और श्री गुसांई जी नें कह्यो जो
कुंभनदासजी कहां हैं तव काहू वैस्नवन नें कही
जो महाराज कुंभनदासजी कों कलेस वहुत वाधा
कीयो है जो कुंभनदास जी उपर आवत हुते सो कुंभ
नदासजी के आगें काहू नें कृस्नदास के समाचार
कहे सो सुनत ही कुंभनदास जी मूर्छा खाय कें गिरे

सो लोग बहुत ही बुलावत हैं परि आवत नाहीं तब श्री गुसांईं जी ने आपने श्री मुख सों कह्यो जो फेरि कुंभन दास जी की खबर लावो जो कुंभनदास जी की देह कैसें है सो वे आय कें कुंभनदास जी कों पुकारे तब एक समा चार श्री गुसांईं जी सों कहे जो महाराज कुंभन दास जी तो कछु समझत नाहीं तब श्री गुसांईं जी तो सेन भोग के दर्शन करिकें श्रीनाथ जी कों पोढ़ाय कें आपनी बि पधारे सो देख कें मार्ग के साम्हे कुंभनदास जी परे हैं और लोग चारों और ठाढ़े हैं सो कहत हैं जो कुंभन दास जी कैसें भगवदीय हैं परि पुत्र को सोक बहुत बु रो होत है या पीरा सों कोई बच्यो नाहीं काहे ते जो आप नी आत्मा है तब यह बात लोगन की सुनि कें श्री गुसांईं जी मन में बिचारे जो इहां तो कारण कछु और है और लोगन कों तो कछु और भासत है ताते भगवदीय को स्वरूप करिबे के लियें श्री गुसांईं जी आपने श्री मु ख सों कहे जो कुंभनदास जी सवारें तुम बेगि आइयो तुम कों श्री गोवर्द्धननाथ जी के दर्शन करावेंगे तुम मन में खेद मति करो इतनों श्री गुसांईं जी श्री मुख सों कहे तब कुंभनदास जी उठि ठाढ़े भये और प्रसन्न भए तब श्री गुसांईं जी कों दंडोत करि कें कुंभनदास कों जो कै य करनों हो सो सब कीयो पाछें सवारें कुंभनदास जी दर्शन कों आये श्रीनाथ जी को सिंगार करि कें श्री गुसांईं जी सों कह्यो जो प्रथम कुंभनदास जी कों दर्शन कराय देउ सो कुंभन दास जी वेदमबन के ऊपर यह प्र कार कीयो जो सूतकी कों कौन मन्दिर में जान देतो सो

कुंभनदासजी के अनुग्रह ते सबकोउ दर्शन करतहैं सो कुंभनदास जी नित्य एक बेर दर्शन करिकें परासोली में जाय बैठते सो वहां बैठे बैठे विरह के पद गावते सोपद॥

राग धनाश्री

तुम्हारे मिलन बिन दुखित गुपाल॥ अति आतुर ब्रज सुन्दर प्यारे विरही बेहाल॥१॥ सीतल चन्द तपत भयो दाहत किरण कमल जनु जाल॥ चन्दन कुसुम सुहाय घनसार लगत बढ़ी ज्वाल॥२॥ कुंभनदास प्रभु नव धन तुम बिन कनक लता मानों सूखी जीवमा काल॥ अधरामृत बंसी सींचि लेउ तुम गिरगोवर्द्धन लाल॥३॥

राग धनाश्री

अब दिन रात्रि पहर से भए॥ तबते निघटत नाहिन जबते हरि मधुपुरी गये॥१॥ यह जानियें विधाता जुग सम कीने जाम नए॥ जागत जाग बिहातन के ऐसे प्रीत ठये॥ ब्रजबासी अति परमदीन भए व्याकुल से चलये॥ उन प्राण दुखित जलरुह गन दारुण हेम परे॥ कुंभनदास बिछुरत नंद नंदन बहुत संताप करे॥ अब गिरधर बिन रहत निरंतर नैनन नीर झरे॥

राग केदारो

औरन कों समीप बिछुरनों आयो मेरी हिसा॥+॥ सब कोउ सोवे सुख अपने आली मोकूं चाहन रिसा॥ नाजानों यह विधाता की गति मेरे आक लिखे ऐसो कोंन रिसा॥ कुंभनदास प्रभु गिरधर कहत

निस दिन रहज्यों चातक घन जिसा ॥२॥
ऐसे पद गाय गाय कुंभनदास जीनें मूल ते पद कीये
पाछें मुद्ध होय के कुंभनदासजी भगवद सेवा में आई
ऐसी जिनकों दर्शन की आगल सोवे कुंभनदासजी
श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसें परम कृपापात्र
भगवदीयहे ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं ताते इ
नकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥+
॥ वार्ता प्रसंग ॥६॥ वैष्णव ८३ ॥ सम्बंध १७५॥

अब श्री आचार्यजी महा
प्रभून के सेवक कृष्ण
दास अधिकारी
तिनकी वार्ता
लिख्यते

सो वे कृष्णदास शूद्र एक वेर द्वारिका गए हुते सो श्री
रणछोड जी के दर्शन करिकें तहां ते चले सो आधन
मीरा वाई के गांव आये सो वे कृष्णदास मीरा वाई के
घर गए तहां हरिवंश व्यास आदि दे विशेष सह वैष्ण
व हते सो काहू कों आये आठ दिन काहू कों आये द
श दिन काहू कों आए पंद्रह दिन भये हुते तिनकी वि
दा न भई हुती और कृष्णदास ने तो आवत ही कही
जो हूं तो चलूंगो तब मीरावाई ने कह्यो जो बैठो तब के
तनीक मोहर श्री नाथजी कों देन लागी सो कृष्णदास
नें न लीनी और कह्यो जो तू श्री आचार्य जी महाप्रभु
नकी सेवक नाहीं होत ताते तेरी भेट हम हाथते छूवेंगे
नाहीं सो ऐसें कहि के कृष्णदास उहां ते उठि चले सो

जब आगे आये तब एक वैश्नवन नें कह्यो जो तुमनें श्री नाथजी की भेट नाहीं लीनी तब कृश्नदास ने कह्यो जो भेट की कहा है परि मीराबाई के यहां जितने सेवक बैठे हुते तिन सबन की नाक नीची करिके भेट फेरी है इतने द्रुकठौरे कहां मिलते येहू जानेंगे जो एक वेर सूद्र श्री आचार्य जी महाप्रभून को सेवक आयो हुतो ताने भेट न लीनी तो तिनके गुरू की कहा बात होयगी ॥:

वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥

और प्रथम सेवा श्रीनाथ जी की बंगाली करते जो श्री आचार्यजी महाप्रभून नें मुकट काछनी हीरा के आभ रन भराय दीने हैं सो नित्य धरते सो भेट आवती सो खर्च होती कछू संग्रह न राखते सब खर्च होय जातो और बंगाली सेवा करते पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कृ श्नदास कों आज्ञा दीनी जो तुम श्री गोवर्द्धन रहो सेवा टहल करो तब कृश्नदास अधिकारी भए अधिकार करन लागे पाछें एक दिन मथुरा कों चलन लागे सो अडींग सों पहुंचे तब पेड़े में अवधूत दास मिले महापुरु ष हुते ब्रज में फिर्यो करते सो कृश्नदास कों मिले तब अवधूत दास ने कह्यो जो कृश्नदास तुम कहां चले तब कृश्नदास नें कही जो मथुरा जात हों कछू काम है तब अवधूत दास ने पूछो जो श्री नाथजी की सेवा कोन क रत है तब कृश्नदास नें कही जो बंगाली करत हैं तब अव धूतदास नें कही जो श्री नाथ जी को अपनो वैभव बढाव नो है ताते तुम बंगालीन कों दूर क्यों नाहीं करत सो अव धूतदास सों श्री नाथजी नें कह्यो जो मोकों बंगाली बहु

त दुखदेनहैं सो तब वंगाली श्री नाथजीकों भोग धरते सो उनकी चुटि में छोटो सो स्वरूप हतो देवी कौ सो सा म्हे बैठावते जब भोग सरावते यादेवीकों अपनीं चुटि या में धर लेते ऐसें सदा करते सो बात अवधूतदास ५ कों श्रीनाथजीने जनाई ताते अवधूत दासने ५ कृस्नदास सौं कह्यौ जो तुम वंगालीनकौं दूर करौ तब कृस्नदास नें कह्यौ जो श्री गुसांईजी की आज्ञा विना वैसें काढे तब अवधूतदासनें कह्यौ जो तुम अडेलमें जा यकै श्री गुसांईजी की आज्ञा लै आवौ जैसें बनें तैसें इनवंगालीकौं काढौ तब कृस्नदास अडींग ते फिरे सो श्रीगोवर्द्धन आए तब वंगालीन सौं कह्यौ जो हूं तो श्री गुसांईजी के पास अडेल जात हौं तुम श्री नाथजी की सेवा सावधानी सौं करियौं और सब सेवक हते तिनसौं कृस्नदासनें कह्यौ जो हूं तो श्री गुसांईजी के पास कछू काम है सो अडेल कौं जात हौं तुम साव धान रहियौ ता पाछें श्री नाथजी सौं विदा होय कै अ डेल कौं चले सो दिन पंद्रह में श्री गुसांईजी के पास आय पहुंचे सो आय कें श्री गुसांईजी कों दंडोत कीये तब श्री गुसांईजीने पूछौ जो कृस्नदास तुम क्यों आये तब कृस्नदास नें कह्यौ जो श्री नाथजी कौं अपनों वै भव वढावनों है और वंगालीन नें बहुत मांथौ उठायौ है जो भेट आवत है सो लै जात हैं सो सब अपने गुरू न कों देत हैं तब श्री गुसांईजी कहे जो श्री आचार्यजी महाप्रभू असुरव्यामोह लीला दिखाई ता पाछें श्री गो पीनाथजी पूरव को परदेश कीयो सो एक लक्ष की

भेट भई पाछें अडेल आये तब श्री गोपीनाथजीनें क
हीजो यह फलो परदेश है ताते यामें आयो सो सब
श्री नाथजी को है श्री नाथजी को विनियोग कीयोचा
हिये ता पाछें श्री गोपीनाथजी दिन दश बारह रह के
पाछें श्री नाथजीद्वार पधारे सो जाय पहुंचे तब श्रीगो
पीनाथजीनें दर्शन कीयो पाछें जो लाये हुते सो सब
भेट कीयो आभूखन सब जड़ाव के समराये थार कटो
रा, डवरा, चमचा, तष्टी, प्रभृत, सब सोंना रूपा के कीये
सब करिकें श्री नाथजी सों विदा होय कें श्री गोपीना
थजी अडेल आये ता पाछें बंगाली बरस एक के भीत
र सब लेगये अपने गुरू के यहां जाय कें दीयो यह बात
श्री गुसांईजीनें कृष्णदास सों कही और कह्यो जो बं
गालीननें माथो उठायो है परि वे श्री आचार्यजी महा
प्रभून के राखे हैं सो केसें निकलेंगे तब कृष्णदासनें श्री
गुसांईजी सों कह्यो जो महाराज श्री नाथजी की आ
ज्ञा है जो बंगालीन कों निकासो ताते आपया बात में
कछु मति बोलो मोकों आप आज्ञा करो तो अपनों
आप करि लेउंगो जेसें बंगाली निकसेंगे तेसें काढूं
गो तब श्री गुसांईजीनें कह्यो जो अवश्य तब कृष्ण
दासनें कह्यो जो महाराज दोय पत्र लिखिये एक राजा
टोडरमल्ल के नाम को एक बीरबल के नाम को तब श्री
गुसांईजीनें दोय पत्र लिखि दीने राजा टोडरमल्ल कों
और बीरबल कों लिखो जो कृष्णदास कों श्री नाथ
जीद्वार भेजे हैं जो तुम सों कृष्णदास कहे सो करि देउ
गे सो पत्र लेकें श्रीनाथजी द्वार कों चले सो आगरे आ

ए तहां टोडरमल्ल राजा वीरबलसों मिले पत्र श्रीगु
सांईजी के हुते सो दीये सो उन पत्र बांचि कें कृष्णदास
सों कह्यो जो तुम कहो तैसें करें तब कृष्णदासनें क
ह्यो जो अब तो में मथुरा जात हों बंगालीन कों काढि
वे कों ना पाऊं कृष्णदास राजा टोडरमल्ल सों बिदा हो
य कें श्रीनाथजी द्वार कों चले सो मथुरा आए तब मा
र्ग में अवधूतदास मिले तब कृष्णदास सों अवधूत
दासनें कही जो कृष्णदासजी ढील कहा करि राखी
है बंगालीन कों काढ़ो श्रीनाथजी की ऐसी इच्छा है
श्रीनाथजी कों अपनों वैभव बढ़ावनों है तब कृष्ण
दासनें कह्यो जो श्रीगुसांईजी की आज्ञा लेकें आयो
हों अब जाय कें बंगालीन कों काढ़त हों इतनों कहि
कें कृष्णदास चले सो श्रीनाथजीद्वार आये सो वे
बंगाली सब रुद्रकुंड ऊपर रहते सो उहां उनकी झों
परी हुती सो कृष्णदासनें जराय दीनी तब सोर भयो॥
तब बंगाली सेवा छोड़ के पर्वत के नीचें आये तब कृ
ष्णदासनें पर्वत ऊपर अपने मनुष्य पठाय दीये तब बं
गाली देखे तो कृष्णदासनें झोंपरी में आग लगाय
दीनी हैं तब सब बंगाली कृष्णदास सों लरन लागे
तब कृष्णदास नें द्वै द्वै चार चार लाठी सबन में दीनी
तब वे बंगाली तहां ते भाजे सो मथुरा आये तब रूपस
नातन के पास जाय कें सब बात कही तब इतने में कृ
ष्णदास हू आय ठाडे भये तब रूपसनातन ने कृष्णदा
स के ऊपर खीजि कें कह्यो जो वेंरारे शूद्र तू कौन जो॥
इन ब्राह्मणन कों मारें तब कृष्णदास नें कही जो हूं

सूद्र हौं परि तुमहूं तौ अग्निहोत्री नाहीं तुमहू तौ का
यस्थ हौ तब सनातन नें कह्यौ जो यह बात पात्साह
सुनेंगो तौ तू कहा जुवाब देयगो तब कृस्नदासनें क
ह्यौ जो हौं तौ नीकें जुवाब देयगो परि तुम कौं जुवाब
देत में दुख होयगो और तुम कौं जवाब न आवेगो
जो तुम कायस्थ होय कें इन ब्राह्मणान सों दंडौत करा
वत हौ तब रूप सनातन तौ चुप व्हे रहे और बंगालीन
सों कह्यौ जो तुम जानौं ए जानौं तब बंगाली मथुरा
के हाकिम पास गये तब कृस्नदास जाय ठाड़े भये
तब हाकिम नें कह्यौ जो भयो सो तो भयो परि अब इ
न कौं राखौ तब कृस्नदासनें कह्यौ जो अब तौ इन
कौं न राखेंगे ए तौ हमारे चाकर हुते सो हमनें इन कौं
सेवा सोंपी हुती सो ए सेवा छोड़ कें क्यों आये जो इन
की झोंपरी जर गई हुती तौ हम नई छवाय देते ताते
अब हम तौ न राखेंगे ता ऊपर तुम कहत हौ जो हम
श्री गुसांई जी कौं लिखेंगे वे कहेंगे तैसें करेंगे तुम
श्री गुसांई जी कौं लिखौ पाछें कृस्नदास श्रीनाथ
जीद्वार आये और बंगाली सब अपने श्री कुंड आये
तब कृस्नदासनें श्री गुसांई जी कौं पत्र लिख्यौ तामें
बंगाली काढ़े सो सब समाचार विस्तार करि कें लिखे
और लिख्यौ जो अब पधारिये तौ भलो है सो पत्र श्री
गुसांई जी के पास अडेल आयो ता पाछें श्री गुसांई
जी अडेल तें चले सो श्रीनाथजीद्वार आये तब वे बं
गाली सब आये तब श्री गुसांई जी सों कह्यौ जो हम
कौं श्री आचार्य जी महाप्रभून नें सेवा में राखे हुते सो

कृष्णदास नें हमकों काढ़े तब श्री गुसांईजी ने कह्यौ॰
जो तुम सेवा छोड़केंक्यों गये दोष तुम्हारौ है ताते अबतो
सेवा में न राखेंगे तब वे बंगाली बहुतबीनती करन लागे
जो महाराज अब हम स्वायंगे कह्या तब श्री गुसांईजीनें
इनकों श्रीनाथ जीके बदले श्री मदन मोंहन जी की सेवा
दीनी और कह्यौ जो इनकी सेवा तुम करियों जो आवै॰
सो खाइयों तब वे बंगाली श्री मदन मोहन जीकी सेवा
करन लागे ताते उन बंगालीन नें श्री गोवर्द्धन रहिवोछो-
ड़ दीयौ ता पाछें श्री नाथ जीकी सेवा में गुजरातीबास-
ण भीतरिया राखे श्री नाथ जीकों अपनों वैभव बढ़ावनो
हों सो सब भीतरियान कौ नेग और सब सेवकन कौ नेग
जो जा भांति श्री नाथ जीनें कह्यौ ता भांति श्री गुसांई
जीनें बांधी तबतें श्री नाथ जी की सेवा प्रनालिका तें हो-
न लागी और कृष्णदास अधिकार करन लागे ॥॰

वार्त्ता प्रसंग ॥२॥

बहुरि श्री नाथ जीनें कृष्णदास कों आज्ञा दीनी जो
श्यामकुमारि कों लैकें ताल पखावज लैकें तू परासो-
लीमें आइयो सो श्यामकुमर आछो मृदंग बजावते॰
सो श्री नाथ जीकी सैन आरती उपरांत अनोसर भयौ
तब कृष्णदास श्यामकुमारि के घर गये तब कृष्णदास
नें श्याम कुमारि सों कह्यौ जो श्री नाथजीनें आज्ञा क-
रीहै सो मृदंग लैकें परासोली चलौ तब श्याम कुमर
नें कह्यौ जो मोहू कों श्रीनाथ जीनें आज्ञा करीहै ताते
चलिये तब श्याम कुमर मृदंग लैकें आयौ तब कृष्ण
दास और श्याम कुमर ए दोउ जनें परासोली आए

सो देखें तो श्री नाथ जी स्वामिनीजी सहित विराजें हैं
तब श्री नाथजीने श्यामकुमर सों कह्यो जो तू तो मृदंग
बजाय और कृष्णदास सों कह्यो जो तू कीर्तन करि और
श्रीनाथजी और श्री स्वामिनीजी नृत्य कीयो तहां कृष्ण
दासनें पद गायो सो पद

राग केदारो

श्रीवृषभानुनन्दनी नाचत गिरधर संग लागडाट उरप
तिरप रास रंग राख्यौ ॥ झपताल मिल्यौ राग केदारौ
सप्त सुरन अंग धर तान रंग राख्यौ ॥१॥ पाई सुख सि
द्धि भरत काम विविधि रिद्धि अभि नव दल सत सुहाग
हुलास रंग राख्यौ ॥ वनिता सत जूथ संग लिये निर
खत कौं सघन चन्द बलिहारी कृष्णदास सुघर रंग
राख्यौ ॥२॥

यह पद कृष्णदास नें गायो श्याम कुमार नें मृदंग बजा यो श्री नाथजी और स्वामिनी जी नृत्य कीयो ताते श्री महाप्रभुजी की कानिते श्रीनाथजी कृष्णदास के ऊपर ऐसी कृपा करत हुते ॥

वार्ता प्रसंग ३ ॥

और कृष्णदास नें बहुत पद कीये तब एक समें सूर दासजी नें कृष्णदास सों पूछो जो तुम पद करत हो तामें मेरी छाया है तब कृष्णदास नें सूरदास जी सों कह्यो ॥ जो अब कें ऐसो पद करूं जो जामें तुम्हारी छाया न आवे तब कृष्णदास ए कांत में बैठि कें एकाग्रचि त करि कें नयो पद करन लागे सो जामें तीन तुक कों कीयो और चौथी तुक बनें नाहीं तब घड़ी दोय लों विचारे जो आगें तुक चलत नाहीं तो भलो फेरि प्रसाद लेकें विचारेंगें सो जा पत्र मे लिखत हुते सो पत्र तथा द्वा ति लेखनी उहांई धरिकें प्रसाद लेवे कों उठे जब कृष्ण दास प्रसाद लेवे कों बैठे तब श्रीनाथजी नें आप तीन तु क वा पत्र में अपने श्रीहस्त सों लिखि दीये कृष्णदा स नें आधो पद कियो हुतो ताकों आप श्रीनाथजी पू रो करिकें आप तो पधारे ता पाछें कृष्णदास प्रसाद ॥ लैकें आये तब देखो तो श्री नाथजी पूरो पद करि कें श्रीहस्त सों लिख गये हैं सो देख कें कृष्णदास बहुत प्रसन्न भये और कहें जो सूरदास जी आवें तो पद सु नावें तब उत्थापन के समय सूरदास जी दर्शन कों आ ये तब कृष्णदास ने कह्यो जो सूरदास जी नयो पद एक मेंनें कीयो है तामें तुम्हारी छाया नाहीं धरी तब सूरदा

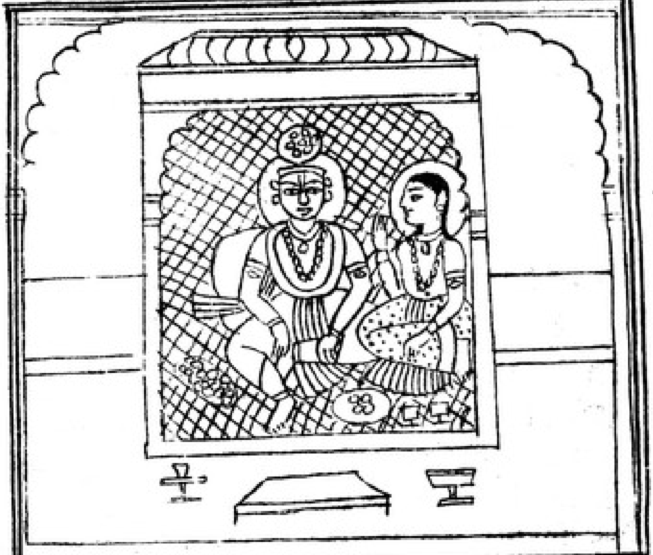

सखीनें कह्यौ जो कहौ सुनों तब जानों तब पद कह्यौ सो
पद ॥ ❁

राग गोरी ॥ ❁

आवत बनें कान्ह गोपबालक मगनें चुकी खुर रेणु
कुरलु अलकावली ॥ भौंहें मनमथ चापवक्र लोच
नबान सीस सोभित मत्त मयूर चन्द्रावली ॥ १ ॥ उदित
उडुराज सुन्दर सिरोमणि वदन निरखि फूलीनवलजु
वती कुमुदावली ॥ अरुण सकुच अधर बिंब फल
हसान कंहत कछुक प्रकटित होत कुंद दसनावली ॥
२ ॥ श्रवण कुंडल भाल तिलक बेसरि नाक कंठ कौ
स्तुभमणि सुभग त्रिबलीवली ॥ रत्नहाटक खचित उर
सि पदिक निपांति बीच राजत सुभ उलक मुक्तावली

॥३॥ अथ श्रीनाथजी कृत ॥ वलय कंकण बाजूबंद आजानु भुज मुद्रिका करतल विराजत नखावली ॥ कुणतर मुरलिका मोहित अखिल विश्व गोपिकाजनम मिरा सथित प्रेमावली ॥४॥ कटि क्षुद्र घंटिका जटित हीरा मयी नाभि अम्बुज वलित भृंग रोमावली ॥ धाय कबहुक चलन भक्त हित जानि पिय गंड मण्डल रुचिर श्रम जल कणावली ॥५॥ पीत कौसय परिधाने सुंदर अंग चरणा नूपुर वाद्य गीत सबदावली ॥ स्वरूप कृष्णदास गिरवर धरण लाल की चरणान स्व चन्द्रिका हरति तिमिरावली ॥६॥ यह पद कृष्णदास नें सूरदास जी के आगें कह्यौ सो सूरदासजी तीन तुक तोई तौ चोले नाहीं और तीन तुक के आगे कहन लागे तब सूरदासजी नें कृष्णदास सों कह्यौ जो कृष्णदास मेरें तुम सों वाद है और प्रभून सों वाद नाहीं में प्रभून की वानी पहिंचानत हों तब कृष्णदास चुप करि रहे ताते कृष्णदास असे भगवदीय हे ॥

वार्ता प्रसंग ॥४॥

और एक समय श्रीनाथजी के भंडार में कछु सामिग्री चहियत हुती सो कृष्णदास गाड़ा लैकें आगरे कों आए सो आगरे के बाजार में एक वेस्या नृत्य करत हुती ख्याल टप्पा गावत हुती और भीर हुती सब लोग तमासो देखत हुते सो कृष्णदास बाजार में तमासे में जाय ठाड़े भये तब भीर सरकि गई तब वह वेस्या कृष्णदास के आगें नृत्य करन लागी सो वह वेस्या बहुत सुन्दर और गावै बहुत आछौ नृत्य तैसो ई क

रै सो कृष्णदासवा वेस्या के ऊपर रीझे और मन में कहै
जो यह तो श्रीनाथजी के लायक है ता पाछें वा वेस्या
कों दश मुद्रा तो उहां ही दीये और कही जो रात्रि कों स
माज सहित आइयो ता पाछें कृष्णदास उहां हवेली
में उतरे सो सामिग्री चहियत हुती सो सब लेकें गाड़ा
लदाय सिद्ध करवायौ ता पाछें रात्रि पहर गई तब वे
स्या समाज सहित आई ता पाछें नृत्य भयौ गान भयौ
वापै कृष्णदास बहुत रीझे सो रुपैया सत एक दीये तब
वा वेस्या सौं कहो जो तेरौ गान हूं आछौ और नृत्य
हू आछौ परि हमारो सेठ है सो तेरे ख्याल टप्पा न ऊ
पर रीझेगो नाहीं ताते हों कहों सो गाइयो ता पाछें कृ
ष्णदास नें एक पूरवी राग में पद करिकें सिखयौ ता पा
छें दूसरे दिन वा वेस्या कों साथ लैकें चले सो आगरे ते

आए पाछें तीसरे दिन श्रीनाथजी द्वार आये सामग्री
सब भंडार में धराई ता पाछें जब उत्थापन कौ समय भ
यौ तब कीर्तनियान कहूं कौं वारो न दीये तब वा वे
श्या कौं समाज सहित लैगये श्रीगुसांईजी मन्दिर में
ठाड़े श्रीनाथजी कौं मूदा करत हैं और मणिकोठा में
वेश्या नृत्य करन लागे और यह पद गायौ ॥ सो पद

राग पूरबी ॥

मो मन गिरधर छबि पर अटक्यौ ॥ ललित त्रिभंगी अं
गन परि चलि गयौ तहांई ठटक्यौ ॥१॥ सजल श्याम
घन चरण नील है फिर चित अनित न भटक्यौ ॥ कृ
ष्णदास कियौ प्राण न्यौछावरि यह तन जग सिर प
टक्यौ ॥ यह पद वा वेश्याने गायौ सो जब गावत २
पिछली तुक आई जो कृष्णदास कियौ प्राण न्यौछा
वरि यह तन जग सिर पटक्यौ इतनौं कहत मात्र वा
वेश्या के प्रान ततकाल निकसि गये और दिव्यस्वरू
प धरिकें श्रीनाथजी की लीला में प्राप्त भई और वा
वेश्या के समाजी हुते सो मरन लागे जो हमारी तौ या
तें जीविका हुती अब हम कहा खायगे तब कृष्णदास
नें कह्यौ जो तुम कौं रोकत हो चलो नीचे खाय वे कौं
देउं तब उन समाजीन कौं नीचे लायकें कृष्णदास नें २
सहस्र रुपैया दै विदा किये कृष्णदास नें अपने मन
ते समर्पी ताते श्रीनाथजीने वा वेश्या कौं अंगीकार
करी ताते श्री आचार्यजी महाप्रभून की कानि तें
सेवक की समर्पी वस्तु या भांति सों अंगीकार कर
तहैं ॥

वार्ता प्रसंग ५

और कृष्णदास कौं गंगाबाई सों बहुत स्नेह हुतो सो श्री
गुसांई जी कों न सुहावते सो एक दिन श्री गुसांई जी श्री
नाथ जी कों भोग समर्पित हुते सो सामिग्री ऊपर गंगा
बाई की दृष्टि परी ताते श्री नाथ जी आरोगे नाहीं परि
भोग तो समर्प्यो ता पाछें समय भयो तब भोग सरायो
तब आरती करि अनोसरि करि कें श्री गुसांई जी आप
नीचें पधारे तब सेवक आदि भीतरिया सबनें प्रशाद
लीयो तब श्री गुसांई जी आप तो भोजन करि कें पो
ढे तब श्री नाथ जी नें भीतरिया कों लात मारि कें
जगायो और वासूं कहें जो हूं तो भूखो हूं तब वा भी
तरिया नें कह्यो जो महाराज श्री गुसांई जी ने भोग सम-

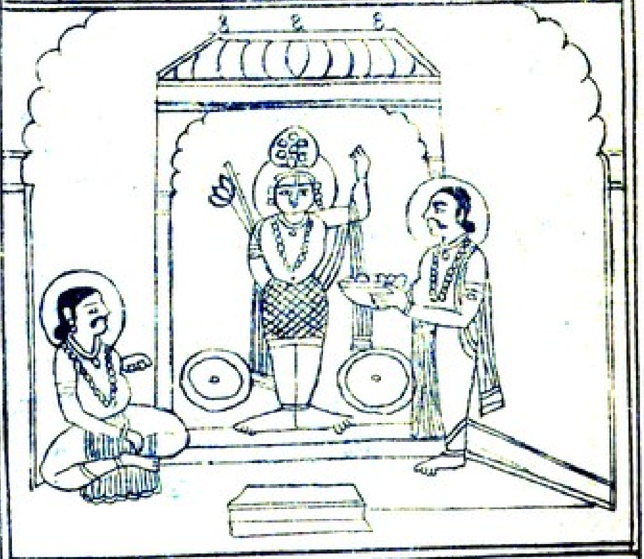

यैां है। और तुम भूखे क्यों रहे तब श्री नाथ जीनें कही
जो राज भोग में तो गंगाबाई की दृष्टी परी हुती तातें रा
ज भोग आरोग्यो नाहीं तब वह भीतरिया उठि श्री गु
सांई जी के पास आयौ सो श्री गुसांई जी भोजन कर
कें पोढ़े हुते तब भीतरिया नें आय कें श्री गुसांई जी के
चरण दाबे तब श्री गुसांई जी चौंकि उठे तब देखें तो श्
श्री नाथ जी को भीतरिया है तब वा भीतरिया सों पूछो
जो यहां इतनी बेर कहां आयौ है तब वा भीतरिया
नें कह्यो जो महाराज आज श्री नाथ जी भूखे हैं मोकों
लात मारि कें जगायौ और कह्यो जो आज तो में भूखो
हों तब मैंनें श्री नाथ जी सों कह्यो जो महाराज भोग
तो श्री गुसांई जीनें समर्प्यौ है तुम भूखे क्यों रहे तब
श्री नाथ जी नें कही जो सामग्री पर तो गंगाबाई की दृ
ष्टि परी तातें में नाहीं आरोग्यौ तब श्री गुसांई जी सुन
तही ततकाल स्नान करि कें पर्वत ऊपर पधारे सो व
ह भीतरिया हू स्नान करकें श्री गुसांई जी के साथ ही
आयौ तब श्री गुसांई जीनें वा भीतरिया सों कही
जो भात और बड़ी करो जो तत्काल सिद्ध होय आवे
तब भात और बड़ी करीं सो तत्काल सिद्ध भयो तब
श्री नाथ जी कों भोग समर्प्यौ पाछें भीतरिया रसोई
करिकें स्नान करिकें पर्वत ऊपर आये तब श्री गुसां
ई जी की आज्ञा भई जो राजभोग की सामग्री तो भई
सिद्ध ता पाछें राजभोग सैन भोग इकठेरे समर्प्यौ ता
पाछे समय भयौ तब भोग सराय सैंन आरती करी
तब श्री नाथ जी कों पोढाये भोग सरयो हतो सो प्रसाद

एक डबरा में उहांई रहि गयो तब रामदास भीतरियानें
कह्यौ जो पहलो भोग समर्प्यौ हतो सो उहांही रहि ग
यो तब श्री गुसांई जी डबरा में तें ढराय कें लेत उतरे
पाछें सब सेवकन कों वह बड़ी भात को महाप्रशाद
सेवक कों दिये तो पाछें श्री गुसांई जी आप हू
आरोगे सो वह बड़ी भात को प्रशाद अति अद्भुत भयो
अति अलौकिक स्वाद भयो सो श्री गुसांई जी आप
सराह्यो तब कृष्णदास ठाड़े हते तब कृष्णदासनें क
ही जो महाराज आप ही करनेहारे आप ही आरोग
नहारे तो कौन उत्तम होय तब श्री गुसांई जीनें हँ
सि कें कही जो तुम्हारे ही कीये भोगत हैं ॥

वार्त्ता प्रसंग ६

अब जो यह बात श्री गुसांई जीनें कही जो ये तु
म्हारे ही कीये फल भोगत हैं सो यह बात सुनि कें कृ
ष्णदासनें श्री गुसांई जी सों बिगाड़ी तब श्री गुसांई
जी सों कृष्णदास नें कह्यो जो तुम पर्वत ऊपर मति
चढ़ो तब श्री गुसांई जी आप तो तहां ते फिरे सो प
रासोली में आय रहे तब मन में बिचारे जो कृष्णदा
स कहा मनें करेगो पर श्रीनाथजी की इच्छा ऐसी
है सो श्रीनाथजी की इच्छा जानि कें कछु बोले नाहीं
सो आप परासोली में रहे सो परासोली में ध्वजा कें
साम्हें बैठ कें बिज्ञप्ति कीये और श्री गुसांई जी तीन
दिन तो श्री गोवर्द्धन रहते और तीन दिन श्री गोकुल
रहते तब ते परासोली आय रहे तब श्री गुसांई जी श्री
नाथजी के मन्दिर की ध्वजा की परासोली की ओर

पड़नी ताके साम्हें वैठिनें तव श्रीनाथजी आप खिर
कीमें आय दर्शन देनें तव यह जानि कें कृष्णदासनें
परासोली की ओर की खिरकी वनवाय दीनी तवतें
श्री गुसांई जी गोकुल तें जव परासोली आवते तव
रामदास जी सव सेवक आदि दे श्रीनाथजी को राज
भोग आरती करि कें अनोसर करिकें श्री गुसांई जी के
दर्शन कों परासोली आवते सो आय कें चरणोदक
लेंय पाछें प्रसाद लेते सो कृष्णदास कों सुहावतो
नाहीं और सव सेवक श्री गुसांई जी के दर्शन विना
महाप्रशाद कैसें लेंय परि सेवकन सों कृष्णदास
की चलें नाहीं और श्री गुसांई जी एक पत्र लिख कें
रामदास भीतरिया कों देते और कहते जो श्रीनाथ
जी कों दे दीजो सो पत्र श्रीनाथजी कों देते श्रीनाथजी
विज्ञप्ति उत्तर लिखि कें रामदास कों देते सो रामदास
श्री गुसांई जी कों देते तव श्री गुसांईजी वा पत्र कों
वांचि कें पानी में पी जाते या भांति सों छै महीना वी
ते परि श्री गुसांई जी नें श्रीनाथजी कों अधिकारी
वैष्णव जानि कें और श्री आचार्यजी महाप्रभून के
सेवक जानि कछू न कह्यो परि श्रीनाथ जी के विरह
को स्नेह वहुत करते या भांति छै महीना भए तव ए
कदिन राजा वीरवल आय निकसे तव ता दिन तो
श्री गुसांई जी परासोली हुते श्री गिरधर जी घर हुते
तव राजा वीरवल नें श्री गुसांई जी कों खवर कराई
तव पौरियान नें कही जो श्री गुसांई जी तो परासोली
हैं श्री गिरधर जी घर हैं तव राजा श्री गिरधर जी के

दर्शनकों आए तब वीरबल सों श्री गिरधर जीने क
ही जो कृष्णदास अधिकारी काकाजी कों श्रीनाथ
जी के दर्शन नाहीं करन देत सो काकाजी कों खेद ब
हुत होत है काकाजी परासौली में जाय दर्शन करत हैं
तब वीरबल नें श्री गिरधर जी सों कह्यो जो अबहूं जा
य कें कृष्णदास को काढूंगो यों कहिकें राजा वीरबल
श्री गिरधर जी सों विदा होय कें मथुरा आये और
श्री गुसांई जी परासौली ते श्री गोकुल आये और
वीरबल नें पांच सौ मनुष्य भेजे और कह्यो जो कृष्ण
दास कों पकरि लावो सो वे मनुष्य श्री गोवर्द्धन आ
य कें कृष्णदास को पकरि लाये सो वे वीरबल नें
कृष्णदास कों बन्दीखाने में दीनों तब श्री गिरधर जी
सों कहवाय पठाई जो कृष्णदास को बन्दीखाने में
दीनों है तब श्री गिरधर जीनें श्री गुसांई जी सों कह्यो
जो कृष्णदास को बन्दीखाने में दीनें है तब श्री गुसांई
जी नें कह्यो जो हाय हाय श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवकन को ऐसो कष्ट तब श्री गुसांई जी नें श्री गि
रधर जी सों कह्यो जो तुमनें कह्यो होयगो तब श्री गि
रधर जीनें कह्यो जो हमने तो वीरबल सों सहज ही क
ह्यो हतो जो काकाजी कों दर्शन नाहीं करन देत सो
काकाजी कों बहुत खेद होत है तब श्री गुसांई जी
ने कह्यो जो भोजन जब करूंगो तब कृष्णदास आ
वेगो तब श्री गिरधर जी तत्काल घोड़ा मंगाय अस
वार होयकें मथुरा कों आये तब वीरबल सों कह्यो
जो काकाजी भोजन नाहीं करत तातें कृष्णदास कों

छोड देउ तब राजा बीरबलनें कृस्नदास श्री गिरधरजीके

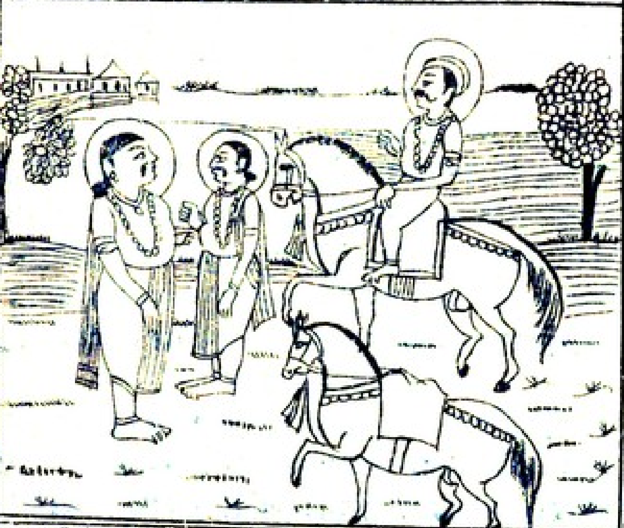

हवालें करदीयौ तब श्री गिरधरजी तत्काल संगलें श्री
गोकुल आये तब श्री गुसांईजीनें सुनी जो श्री गिरधर
जी कृस्नदासकों साथ लेकें आवतहैं सो श्री गुसांई
जी ठकुरानी घाट ऊपर पहुंचे और वा और ते कृस्नदास
आये सो श्री गुसांईजी कौ दर्शन कीयो और दंडौत
करी और एक नयौ पद करिकें गायौ सो पद ॥

राग केदारो

श्री विठ्ठल जू के चरणकी वलि ॥ हमसे पतित उधारन
कारन परम कृपालु आरग आपनचलि ॥ १ ॥ उज्वल
अरुण दया रंग रंजित दश नखचन्द्र विहरत मन निर्द
लि ॥ सुभग कर सुख कर सोभन पावन भक्त मुदित

ललितकर अंजलि ॥२॥ अति सेमर वुल सुगंध सु सीतल्ल परन त्रिविध ताप डारत मल ॥ भजि कृस्न दास चार एक सुंधि करि तेरो कहा करेंगो रिपुकल ॥३॥ +

यह पद श्री गुसांई जी के आगें गायो पाछें श्री गुसांई जी कृस्नदास कों अपने घर लै आये पाछें कृस्नदास सों श्री गुसांई जीनें कह्यो जो उठो भोजन करो तव कृस्नदास नें कह्यो महाराज आप भोजन करिये पाछें में झूंठन लेउंगो तव श्री गुसांई जी भोजन कों वैठे तव कृस्नदास ने एक पद और गायो सो पद

राग कान्हरौ

ताही कों सिर नाइये जो श्री वल्लभ सुत पद रज रति होय ॥ कीजे कहा आन ऊचे पद तिनसों कहा सगाई मोय ॥१॥ सार सार विचार मतौ करि श्रुति वद गोधन लियो निचोय ॥ तहां नवनीत प्रगट पुरुषोत्तम सहजई गोरस लियो विलोय ॥२॥ जाके मन में उपभरमहे श्री विठ्ठल श्री गिरधर दोय ॥ ताकों संग विषम विषहू ते भूलिहू चातुर करहे जिन कोय ॥३॥ जिन प्रताप देखि अपने चरन असम सा रजो भिदेन तोहि ॥ कृस्नदास ते सुर ते असुर भये असुर ते सुर भये चरणन छोह ॥४॥

यह पद सुनि कें श्री गुसांई जी वहुत प्रसन्न भये पाछें श्री गुसांई जी भोजन करिकें पधारे तव कृस्नदास सों कह्यो जो अव जाउ भोजन करौ तव कृस्नदास भीतर गये तव श्री गिरधरजी नें श्री गुसांई जी की

भूंदन की पानर कृस्नदास के आगे धरी तब कृस्न
दास ने महाप्रशाद लीनों पाछें बीड़ा दोय दीये
रात्रि कों कृस्नदास वहांई सोय रहे ता पाछें पिछ
ली रात्रि घड़ी दोय रही तब श्री गुसांई जी उठ देह कृ
त करिकें स्नान कीयो श्री नवनीतप्रिया जी के मंग
ला के दर्शन करिकें बाहिर पधारे तब श्री नाथ जी द्वार
पधारवे की तैयारी कीये तब घोड़ा दोय मंगाये ए
क घोड़ा ऊपर श्री गुसांई जी असवार भये एक घो
ड़ा ऊपर कृस्नदास असवार कीयो और श्री गोकु
ल ते चले सो श्री नाथ जी द्वार दिन पहर सवा एक
चढ़े जाय पहुंचे सो यहां श्री नाथ जी को राज भोग
आयो हुतो सो श्री गुसांई जी तत्काल स्नान करिकें
ऊपर पधारे और श्री गुसांई जी विज्ञप्त पत्र फारसी लि
खे लिखने सो रामदास भीतरिया के हाथ पठावते ताको
प्रतिउत्तर श्री नाथ जी पत्र में लिखिकें श्री गुसांई जी
कों पठावते सो श्री गुसांई जी जल में धोय पिजाते सो
पिछले दिन को पत्र श्री नाथ जी के हस्ताक्षर को सो श्री गु
सांई जी राखे हुते सो पत्र साथ ही ले आए हुते पाछें श्री
नाथ जी को राज भोग आयो हुतो सो समय भयो तब
श्री गुसांई जी भोग सराय वे कों पधारे तब श्री गुसांई
जी कों देखि कें श्री नाथ जी बहुत प्रसन्न भये और पूछी
जो नीके हो तब श्री गुसांई जी कहें जो तुम कों देखें सो
ई दिन नीके हैं पाछें परस्पर दोउ जने मुसिकाए पा
छें श्री गुसांई जी राज भोग सरायो पाछें यह पत्र हुतो
सो झांपी में धर्यो पाछें राजभोग के दर्शन खुले तब

कृस्नदास नें कीये पाछें श्री गुसांई जी राजभोग आरती करि अनोंसर करि नीचें पधारे पाछें रसोई करि भोग समर्पित भोजन करि श्री गुसांई जी पोढे सो उत्थापन ते घड़ीदोय पहिलें उठे पाछें उत्थापन को समय भयो स्नान करि ऊपर पधारे सो संखनाद करवायो श्री नाथजी के उत्थापन भए पाछें सेंन आरती उपरांत दर्शन करिकें कृस्नदास कों श्री नाथजी के सन्निधान बुलायो और कह्यो जो कृस्नदास तुम अधिकार करौ और श्री नाथजी जी की सेवा नीकी भांति सों करियों तब कृस्नदास नें श्री नाथ जी के सन्निधान एक पद गायो सो पद ॥

राग कान्हरौ

परम कृपाल श्री वल्लभनंदन करत कृपा निज हाथ दे माथे ॥ जे जन शरण आये अनुसरही गहि सोंपत श्री गोवर्द्धननाथें ॥१॥ परम उदार चतुर चिंतामणि राखत भव धारा ते साथें ॥ भजि कृस्नदास काज सब सरहीं जो जानें श्री विट्ठलनाथें ॥२॥

यह पद गायो और बीनती कीनी जो महाराज मेरौ अपराध क्षमा करौ तब श्री गुसांईजीनें कह्यो तुमारौ अपराध श्रीनाथ जी क्षमा करेंगे पाछें कृस्नदास कों बिदा कीयो पाछें श्रीनाथ जी कों पोढ़ाय कें श्री गुसांईजी नीचें उतरे श्री गुसांई जी परमदयाल कृस्नदास को कृत कछु मन में न आनों श्री आचार्य जी के सेवक जानि अनुग्रह कीयो पाछें श्री गुसांई जी दिन दोय रहे पाछें श्री गोकुल पधारे फिर कृस्नदास श्री गु

साईं जीकी आज्ञातें अधिकार करन लागे ।।

वार्ता प्रसंग ।। ७ ।।

सो वहु नवरस लों भली भांति सों अधिकार कीयौ पा
छें एक वैष्णवनें कृष्णदास सों कही जो मोकों एक कू
आ बनवावनो है और मोकों अपने देश कों जानो है
तातें द्रव्य तुमकों दे जात हों सो तुम बनवाय दीजो तब
कृष्णदासनें कही जो आछो तब वह वैष्णव तीन सो
रुपये देकें अपने देस कों गयो तब कृष्णदास ने उन
रुपैयान मेंतें एक सो रुपैया एक कुल्हड में धरि कें आ
म के वृक्ष के नीचे गाड दीये कह्यो जो दोय से रुपैया ला
गि चुकेंगे तब इनकों काढेंगे सो आछो महूर्त देखिकें
रुद्र कुंड ऊपर कूआ खुदायो तब कितेक दिन में व
ह कूआ मोंहडा ताईं बनिकें तैयार भयो और दोय से
रुपैया लगे मठोठा वाकी रह्यो तब उत्थापन के दर्शन
करिकें कृष्णदास कूआ देखन कों गये सो हाथ में
आसा हुतो सो आसा टेक कें कूआ के ऊपर ठाडे भ
ये सो वह आसा सरक्यो तब कृष्णदास कूआ में
जाय पडे तब तो मनुष्य दोय कूआ में उतरे सो बहुते
रो ढूंढे परि कृष्णदास को सरीर हू न पायो तब सब
मनुष्य उहां तें फिर आये सो ता समय श्री गुसांई
जी श्री नाथ जी कों सेन भोग धरिकें मंडप विराजे
हुते और रामदास श्री गुसांई जी के पास बैठे हुते ता
समय काहू नें आय कें कह्यो जो महाराज कृष्णदा
सनें कूआ बनवायो हो सो कृष्णदास देखन गये
हुते सो आसा टेकि कें कूआ के मौंहडे ऊपर ठाडे

हुते सो आसा सरक्यौ सो कूआ में गिरपरे और मनु
ष्य दोय रुष्मदास कों ढूंढ़वे कौं उतरे सो बहोतेरो

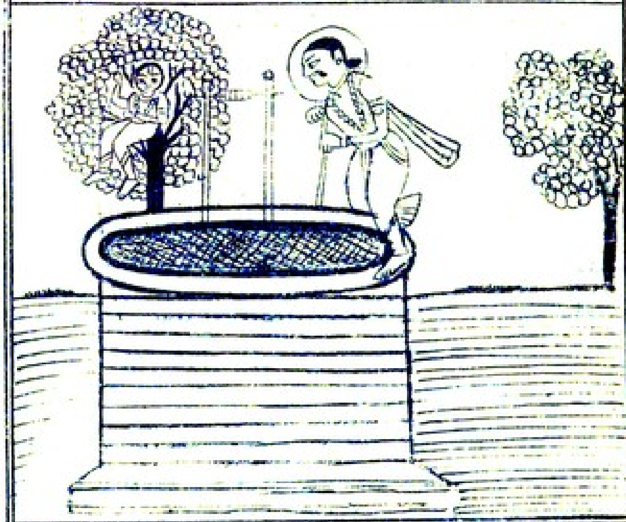

ढूंढे परि सरीरहू न पायौ कहा जानियें कहा भयौ तब
रामदास जी कहें ॥ जो

अधो गच्छन्ति तामसा:

तब श्री गुसांई जी कहें जो रामदास ऐसें न कहि अ
ब जो रुष्मदास कूआ में गिरे सो सरीर न मिल्यौ ता
कौ कारन कहा सो ताकौ कारन यह जो रुष्मदास में
कोई अलौकिक जीव हुतो सो तो श्रीनाथ जी की
सेवा में प्राप्त भयौ और रुष्मदास नें या सरीर सों
श्री गुसांई जी कौ अवज्ञा करी है जो यह सरीर अलौ
किक जीव भुगतनौं हो सो कूआ में गिरत मात्र कु

ष्णदास को सरीर लौकिक मध्य होयकें पूंछरी की
और एक वृक्ष है पीपर को तहां प्रेत होय कें रह्यो भो
ग भुगतन कों ताते कृष्णदास को सरीर कूआ में न
गिरे सो श्री गुसांई जी की आवज्ञा तें कृष्णदास को
यह गति भई जो प्रेत होय कें पूंछरी की और पीपर के
वृक्ष ऊपर बैठे रहत हैं ॥

वार्ता प्रसंग ॥ ८ ॥

और एक समय श्री नाथ जी की भैंस खोय गई हती
सो गोपीनाथ ग्वाल और चार पांच ग्वाल पूंछरी की ओ
र ढूंढवे कों गये हते सो गोपीनाथ देखें तो पूंछरी की
और श्री नाथ जी खेलत हैं और एक पीपर ऊपर कृ
ष्णदास प्रेत ह्वै कें बैठे हैं तब कृष्णदास नें गोपीनाथ
ग्वाल सों कही जो औ भैया मेरी विनती श्री गुसांई

श्री सों करियो और कहियो जो कृष्णदास नें कह्यो
है जो हों तुम्हारो अपराधी हों ताते मेरो यह अवृर्थ
है हूं श्री नाथ जी के पास हूं तोहू मेरी गति होत नहीं
ताते मेरो अपराध क्षमा करो तो मेरी गति होय औ
र बाग में एक आम के वृक्ष के नीचे कूल्हरा में एक सौ
रुपैया गड़े हैं सो काढ़ि के या कूआ को मठोठा या
फीर सों है सो बनवाओ तो मेरी गति होय सो गोपी
नाथ ग्वाल नें यह वात श्री गुसांई जी के आगें कही
जो महाराज कृष्णदास अधिकारी ने यह बीनती करी
है तब श्री गुसांई जी ने आम के नीचे ते रुपैया लाय
कें मठोठा कूआ को बनवायो तब कृष्णदास की ग
ति भई कृष्णदास कों प्रेत जोंन में श्री नाथ जी दर्शन
देते ताको कारन यह जो श्री नाथ जी के सन्निधान
श्री गुसांई जी नें कृष्णदास सों कह्यो जो कृष्णदास
तुम अधिकार करो और श्री नाथ जी की सेवा नीकी
भांति सों करियो तब कृष्णदास नें कह्यो जो महाराज
मेरो अपराध क्षमा करो तब श्री गुसांई जी नें कह्यो
जो तुम्हारो अपराध श्री नाथ जी क्षमा करेंगे सो श्री
नाथ जी की कृपा ते श्री नाथ जी नें अपराध क्षमा
करो सो प्रेत जोंन में दर्शन देते और स्पर्शन कीयो जो
स्पर्श होय तो उद्धार होय सो उद्धार तो श्री गुसांई जी के
हाथ है कृष्णदास श्री नाथ जी सों कहते जो महाराज
तुम मोकों दर्शन देत हो मोसों बोलत हो और मैं प्रे
त हों ताते मेरो उद्धार क्यों नाहीं करत तब श्री नाथ
जी नें कह्यो जो हूं तोको दर्शन देत हों बोलत हों सो तो

श्री गुसांईजी के वचन के लियें नाहीं तौ प्रेत जौन में दर्शन नाहीं देतौ और बोलतौ हू नाहीं और उद्धार तौ श्री गुसांईजी के हाथ है तैनें श्री गुसांईजी कौ अपराध कीयौ है तातें श्री गुसांईजी उद्धार करेंगे तब होयगौ ता पाछें श्री गुसांईजी आप परम कृपाल कृस्नदास के ऊपर दया आई जो अब तौ बहुत दिन भये हैं तातें अब उद्धार होय तौ भलौ तब श्री गुसांईजी ध्रु व घाट ऊपर आय कें कृस्नदास कौ कर्म करवाय उद्धार कीयौ तब कृस्नदास कौ उद्धार भयौ और लीला में प्राप्ति भयौ और श्री गुसांईजी कहें जो कृस्नदास नें तीन बात आछी करी एक तौ अधिकार कीयौ सो ऐसौ कीयौ जो फेरि ऐसौ न करौ दूसरें कीर्तन कीये सो अद्भुत कीये और तीसरे श्री आचार्यजी महाप्रभून की सेवक होय कें सेवा हू ऐसी करी जो कोउ न करैगो तातें वे कृस्नदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय है तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं तातें इन की वार्ता कहां तांई लिखियें ॥ ❖

॥ प्रसंग ॥ ६ ॥ सम्बन्ध ॥ १८४ ॥ वैस्नव ॥ ८४ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून :
के सेवक परम कृपापात्र ।
चौरासी मुख्य वैस्नव
न की लिखी सो ।
सम्पूर्णम् ॥

श्रीगणेशायनमः

अथ श्रीचौरासी वार्ता के वैष्णवों की वार्ताओं का सूचीपत्र लिख्यते॥

नाम वैष्णव	पृष्ठ	पंक्ति	नाम वैष्णव	पृष्ठ	पंक्ति
दामोदरदास हरसानी की	२	५	वेणीदास माधोदास दो	७२	४
कृष्णदास मेघन क्षत्री	१०	५	उ भाईन की वार्ता		
दामोदरदास सम्भरवार	१९	१	हरिवंश पाठक सारस्वत	७५	१६
क्षत्री की वार्ता			गोविंद दास भल्ला की वा	७७	९
पद्मनाभिदास कनौजिया	३१	१३	अम्मा क्षत्राणी की वार्ता	८१	१२
ब्राह्मण की वार्ता			गज्जन धावन क्षत्री की	८३	२४
पद्मनाभदास की बेटी तु	४३	२४	नारायनदास ब्रह्मचारी	८७	६
लसाबाई की वार्ता			सारस्वत ब्राह्मण की वार्ता		
पद्मनाभदास के बेटा की	४५	२३	महावन की वासी एक	९३	४
बहू पार्वती ताकी वार्ता			क्षत्राणी ताकी वार्ता		
पद्मनाभदास की नाती पं	४७	१३	जीवदास क्षत्री सर की	९४	१८
डनी को बेटा रघुनाथदास			देवा क्षत्री कपूर की वार्ता	९६	८
रजो क्षत्राणी अड़ेलकी	४९	४	सेठ दिनकरदास की	९७	१३
सेठ पुरुषोत्तमदास क्षत्री	५१	२०	मुकन्ददास कायस्थ की	९९	१२
बनारस के वासी की वार्ता			प्रभूदास जलोटा क्षत्री सि	१००	१८
सेठ पुरुषोत्तमदास का	६०	२५	हनंद के वासी की वार्ता		
बेटी रुक्मणी की वार्ता			प्रभूदास भाट की वार्ता	१०७	९
सेठ पुरुषोत्तमदास के बे	६३	६	पुरुषोत्तमदास आगरे में	११०	७
टा गोपालदास की वार्ता			राजघाट पै रहने ताकी		
रामदास सारस्वत ब्राह्मण	६४	१७	त्रिपुरदास कायस्थ शेर	११२	१५
गदाधरदास सारस्वत ब्रा	६९	७	गढ़ के वासी की वार्ता		

पूरनमल्ल खत्री की वार्ता	११८	२३	बाबा वेणु और कृष्णदास	१८०	६
यादवेंद्रदास कुम्हार की·	१२१	२	घघरिया तथा देवदास		
गुसांईदास सारस्वत की·	१२३	७	दून की वार्ता·		
माधोदास भट्ट काश्मीर	१२५	१८	जगतानंद सारस्वत ब्रा·	१८१	२
के वासी की वार्ता·			थानेश्वर के वासी की·		
गोपालदास की वार्ता।	१२८	२३	आनंददास विश्वंभरदा	१८३	२५
पद्मरावल सांच्योरा ब्राह्म	१३७	१८	स दोऊ भाई क्षत्रीन की·		
ण उज्जैन के वासी की वा·			एक ब्राह्मणी की वार्ता·	१८४	२०
पुरुषोत्तम जोसी की वार्ता	१४१	८	एक क्षत्राणी की वार्ता·	१८५	८
जगन्नाथ जोसी की वार्ता·	१४४	२	गोरजा, समराई, सासब	२००	११
जगन्नाथ जोसी की माता की·	१४८	११	हू सीहनंद की वासी की·		
जगन्नाथ जोसी के बड़े भा	१५२	७	रुक्मनी बहूजी की दासी	२०६	१६
ई नरहर जोसी की वार्ता·			कृष्णा दासी की वार्ता·		
राणाव्यास सांचोरा ब्राह्मण	१५७	२२	बूला मिश्र पंडित की वार्ता	२०८	२
गोधरा के वासी की वार्ता·			मीराबाई के पुरोहित राम	२११	११
रामदास सारस्वत ब्राह्मण	१६२	२४	दास की वार्ता·		
राजनगर के वासी की वार्ता			रामदास चौहान की वार्ता	२१३	२
गोविंद दुबे सांचोरा की वा·	१६५	१	रामानंद पंडित की वा·	२१४	१३
राजा दुबे माधो दुबे दोऊ	१६९	१६	विष्णुदास छीपी की वा·	२१७	१७
भाईन की वार्ता·			जीवनदास क्षत्री कपूर	२२१	५
उत्तमश्लोकदास सांचो	१७१	५	मोहनंद के वासी की वा·		
रा ब्राह्मण की वार्ता·			भगवानदास सारस्वत·	२२३	६
ईश्वर दुबे सांचोरा की वार्ता	१७७	१७	ब्राह्मण की वार्ता·		
वासदेवदास छकड़ा सा	१७८	१३	भगवानदास श्रीनाथजी	२२५	२
रस्वत ब्राह्मण की वार्ता·			के भीतरिया की वार्ता·		

अच्युतदास सनौढ़िया ब्राह्मण की वार्ता ·	२२६	११
अच्युतदास गौड़ आ· की ·	२२७	१४
अच्युतदास सारस्वत की ·	२२८	११
नारायनदास अम्बाले के वासी की वार्ता ·	२३१	१२
नारायनदास भाट मथुरा के वासी की वार्ता ·	२३३	११
नारायनदास चोहान· दहे के वासी की वार्ता ·	२३४	२३
भीमनंद की ब्राह्मणी की ·	२४०	१३
दामोदरदास कायस्थ की	२४३	४
स्त्री पुरुष दोउ क्षत्रीन की ·	२४४	१७
अडेल के सुतार कारीगर की ·	२४६	८
एक अन्य मार्गीय के सेही एक क्षत्री की वार्ता ·	२४७	७
लघु पुरुषोत्तमदास की ·	२४८	११
कविराज भाट की वार्ता ·	२४९	१३
गोपालदास गेरा के वासी की वार्ता	२५०	३
जनार्दनदास चोपड़ा की	२५०	११
गरु स्वामी सनौढ़िया की ·	२५१	१०
कन्हैया सालू क्षत्री की ·	२५२	२५
नरहरदास गौड़िया की	२५३	१४
नारायणदास की वार्ता	२५४	११
महू पांडे तथा मानिकचंद्र पांडे तथा इनकी स्त्रीन· थानरो बेटी की वार्ता ·	२५६	८
नरहरदास संन्यासी की ·	२६२	६
गोपालदास जटाधारी श्री नाथजी को खवासी के की ·	२६३	४
कृस्नदास ब्राह्मण की ·	२६५	२६
संतदास चोपड़ा क्षत्री · आगरे के वासी की वार्ता	२७१	२७
सुन्दरदास श्री जगन्नाथ जी के पास रहने वाले की वा·	२७४	९
माधव जी पटेल तथा इनकी स्त्री विरजो की वार्ता ·	२७८	८
गोपालदास गेड़ा के वासी की वार्ता	२८१	६
सूरदास जी गऊघाट के वासी तिनकी वार्ता ·	२८५	२०
परमानन्ददास कनौजिया ब्राह्मण की वार्ता	३०४	२
कुम्भनदास गोरवा की वार्ता	३३०	१४
कृस्नदास अधिकारी की वार्ता ·	३५५	९

इति सम्पूर्णम् ॥